पारा नं- 16 से 30
पेज नं- 497 से 992

كنز الايمان

कन्ज़ुल ईमान
फ़ी तर्जुमतिल
क़ुरान मजीद

मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हजरत
इमाम अहमद रजा बरैलवी
अलैहिर्रहमतो वर्रिजवान

इसलामिक पब्लिशर

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿۷۵﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿۷۶﴾ فَانْطَلَقَا
حَتّٰىٓ اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ٍاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ
اَجْرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ
اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿۷۹﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿۸۰﴾ فَاَرَدْنَآ
اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا فَاَرَادَ رَبُّكَ

क़ा–ल अ–लम् अक़ुल् ल–क इन्न–क लन् तस्ततीअ़ मअ़ि–य स़ब्रा(75)क़ा–ल इन् स–अल्तु–क अन् शैइम् बअ़्–दहा फ़ला तुस़ाहिब्नी क़द ब–लग्–त मिल्लदुन्नी अ़ुज़्रा(76)फ़न्त–लक़ा ह़त्ता इज़ा अ–तया अह्–ल क़र्–यति निस्तत्–अ़मा अह्–लहा फ़–अबौ अंय्यु–ज़य्यिफ़ू हुमा फ़–व–जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्–ज़ फ़–अक़ा–महू क़ा–ल लौ शिअ्–त लत्त–ख़ज़्–त अ़लैहि अज्रा (77)क़ा–ल हाज़ा फ़िराक़ु बैनी व बैनि–क सउ–नब्बिउ–क बि–तअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ़् अ़लैहि स़ब्रा(78)अम्मस्सफ़ी–नतु फ़कानत् लि–मसाकी–न यअ़्मलू–न फ़िल्बह़्रि फ़–अरत्तु अन् अअ़ी–बहा व का–न वरा–अहुम् मलि–कुंय्यअ़्ख़ुज़ु कुल्–ल सफ़ी–नतिन् ग़स्बा(79)व अम्मल्ग़ुलामु फ़का–न अ–बवाहु मुअ्मिनैनि फ़–ख़शीना अंय्युर् हि–क़हुमा तुग़्यानंव् व कुफ़्रा(80)फ़–अरद्ना अंय्युब्दि–लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम् मिन्हु ज़कातंव् व अक़्र–ब रुह़्मा(81)व अम्मल् जिदारु फ़का–न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्मदी–नति व का–न तह़्तहू कन्ज़ुल् लहुमा व का–न अबूहुमा स़ालिह़न् फ़–अरा–द रब्बु–क

कहा (फ़159) मैंने आपसे न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे।(75) (फ़160) कहा इसके बाद मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी तरफ़ से तुम्हारा उज़्र पूरा हो चुका।(76) फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक गांव वालों के पास आए (फ़161) उन दहक़ानियों से खाना मांगा तो उन्होंने उन्हें दावत देनी क़ुबूल न की (फ़162) फिर दोनों ने उस गाँव में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बन्दा ने (फ़163) उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते।(77) (फ़164) कहा यह (फ़165) मेरी और आपकी जुदाई है अब मैं आपको उन बातों का फेर बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका।(78) (फ़166) वह जो कश्ती थी वह कुछ मोहताजों की थी (फ़167) कि दरिया में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उनके पीछे एक बादशाह था (फ़168) कि हर साबित कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता।(79) (फ़169) और वह जो लड़का था उसके माँ बाप मुसलमान थे तो हमें डर हुआ कि वह उनको सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे।(80) (फ़170) तो हमने चाहा कि उन दोनों का रब उससे बेहतर (फ़171) सुथरा और उससे ज़्यादा मेहरबानी के क़रीब अ़ता करे।(81) (फ़172) रही वह दीवार वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी (फ़173) और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था (फ़174) और उनका बाप नेक आदमी था (फ़175) तो आपके रब ने

(फ़159) हज़रत ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा (फ़160) इसके जवाब में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़161) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उस गाँव से मुराद अन्ताकिया है वहां इन हज़रात ने (फ़162) और मेज़बानी पर आमादा न हुए हज़रत क़तादा से मरवी है कि वह बस्ती बहुत बदतर है जहां मेहमानों की मेज़बानी न की जाये (फ़163) यानी हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने अपना दस्ते मुबारक लगा कर अपनी करामत से (फ़164) क्योंकि यह हमारी तो हाजत का वक़्त है और बस्ती वालों ने हमारी कुछ मदारात नहीं की ऐसी ह़ालत में उनका काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था उस पर हज़रत ख़िज़्र ने। (फ़165) वक़्त या उस मर्तबा का इन्कार (फ़166) और उनके अन्दर जो राज़ थे उनका इज़हार कर दूंगा। (फ़167) जो दस भाई थे उन में पांच तो अपाहिज थे जो कुछ नहीं कर सकते थे और पांच तन्दुरुस्त थे जो। (फ़168) कि उन्हें वापसी में उसकी तरफ़ गुज़रना होता उस बादशाह का नाम जलन्दी था कश्ती वालों को उसका हाल मालूम न था और उसका तरीक़ा यह था। (फ़169) और अगर ऐबदार होती छोड़ देता इस लिए मैंने उस कश्ती को ऐबदार कर दिया कि वह उन ग़रीबों के लिए बच रहे (फ़170) और वह उसकी मुहब्बत में दीन से फिर जायें और गुमराह हो जायें और हज़रत ख़िज़्र का यह अन्देशा इस सबब से था कि वह ब-इअ़्लामे इलाही उसके हाले बातिन को जानते थे हदीस मुस्लिम में है कि (बक़िया सफ़हा 522 पर)

أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ
قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ
فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ
إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ
الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ

अंय्यब्लुग़ा अशुद्–दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्–ज़हुमा रह़्मतम् मिर् रब्बि–क व मा फ़–अ़ल्तुहू अ़न् अम्री ज़ालि–क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ् अ़लैहि सब्रा(82)व यस्अलू–न–क अ़न् ज़िल्क़रनैनि क़ुल् स–अत्लू अ़लैकुम् मिन्हु ज़िक्रा(83)इन्ना मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स–बबा(84)फ़–अत्ब–अ स–बबा(85)ह़त्ता इज़ा ब–ल–ग़ मग़्रिबश् शम्सि व–ज–दहा तग़रुबु फ़ी अ़ैनिन् ह़मि–अतिंव् व व–ज–द अ़िन्दहा क़ौमन् क़ुल्ना याज़ल् क़र्नैनि इम्मा अन् तु–अ़ज़्ज़ि –ब व इम्मा अन् तत्तख़ि–ज़ फ़ीहिम् हुस्ना(86)क़ा–ल अम्मा मन् ज़–ल–म फ़सौ–फ़ नुअ़ज़्ज़िबुहू सुम्–म युरद्दु इला रब्बिही फ़यु–अ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा(87)व अम्मा मन् आ–म–न व अ़मि–ल सालिह़न् फ़–लहू जज़ा–अ निल्हुस्ना व स–नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा(88)सुम्–म अत्–ब–अ स–बबा(89)ह़त्ता इज़ा ब–ल–ग़ मत्लिअ़श् शम्सि व–ज–दहा तत्लुअ़ु अ़ला क़ौमिल् लम् नज्अ़ल् लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा(90)कज़ालि–क व क़द् अह़त्ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा(91)सुम्–म अत्ब–अ स–बबा(92)ह़त्ता इज़ा ब–ल–ग़ बैनस् सद्दैनि व–ज–द मिन्

चाहा कि वह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें (फ़176) और अपना ख़ज़ाना निकालें आपके रब की रहमत से और यह कुछ मैंने अपने हुक्म से न किया (फ़177) यह फेर है उन बातों का जिस पर आप से सब्र न हो सका।(82) (फ़178) (रुकूअ़ 1) और तुम से (फ़179) ज़ुलक़रनैन को पूछते हैं (फ़180) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें उसका मज़कूर पढ़ कर सुनाता हूं।(83) बेशक हमने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अ़ता फ़रमाया।(84) (फ़181) तो वह एक सामान के पीछे चला।(85) (फ़182) यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक सियाह कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया (फ़183) और वहां (फ़184) एक क़ौम मिली (फ़185) हमने फ़रमाया ऐ ज़ुलक़रनैन या तो तू उन्हें सज़ा दे (फ़186) या उनके साथ भलाई इख़्तियार करे।(86) (फ़187) अ़र्ज़ की कि वह जिसने ज़ुल्म किया (फ़188) उसे तो हम अ़न्क़रीब सज़ा देंगे (फ़189) फिर अपने रब की तरफ़ फेरा जाएगा (फ़190) वह उसे बुरी मार देगा।(87) और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उसका बदला भलाई है (फ़191) और अ़न्क़रीब हम उसे आसान काम कहेंगे। (88) (फ़192) फिर एक सामान के पीछे चला।(89) (फ़193) यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी क़ौम पर निकलता पाया जिनके लिए हमने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी।(90) (फ़194) बात यही है और जो कुछ उसके पास था (फ़195) सबको हमारा इल्म मुहीत है।(91) (फ़196) फिर एक सामान के पीछे चला।(92) (फ़197) यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा उनसे उधर कुछ

(फ़176) और उनकी अ़क़्ल कामिल हो जाये और वह क़वी व तवाना हो जायें (फ़177) बल्कि ब–अमूरे इलाही व इल्हामे ख़ुदावन्दी किया (फ़178) बाज़े लोग वली को नबी पर फ़ज़ीलत देकर गुमराह हो गए और उन्होंने यह ख़्याल किया कि हज़रत मूसा को हज़रत ख़िज़्र से इल्म हासिल करने का हुक्म दिया गया बावजूदे कि हज़रत ख़िज़्र वली हैं और दर हक़ीक़त वली को नबी पर फ़ज़ीलत देना कुफ़्रे जली है और हज़रत ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हो जैसा कि बाज़ का गुमान है तो यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हक़ में इब्तेला है इलावा बरीं यह कि अहले किताब इसके क़ाइल हैं कि यह हज़रत मूसा पैग़म्बर बनी इसराईल का वाक़िआ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाक़िआ है और वली तो नबी पर ईमान लाने से मर्तबए विलायत पर पहुंचता है तो यह नामुमकिन है कि वह नबी से बढ़ जाये (मदारिक) अक्सर **(बक़िया सफ़हा 522 पर)**

دُوْنِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ
سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا
حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا قَالَ اٰتُوْنِىْۤ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ
دَكَّآءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ﴿١٠٠﴾
الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْۤ اَوْلِيَآءَ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا

दूनिहिमा क़ौमल् ला यकादू–न यफ़्क़हू–न क़ौला(93)क़ालू याज़ल्–क़र्नैनि इन्–न यअ्जू–ज व मअ्जू–ज मुफ़्सिदू–न फ़िलअर्ज़ि फ़–हल् नज्अलु ल–क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्अ़–ल बै–नना व बै–नहुम् सद्दा(94)क़ा–ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़–अऔनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्अ़ल् बै–नकुम् व बै–नहुम् रद्मा(95)आतूनी ज़ु–ब–रल् ह़दीदि ह़त्ता इज़ा सावा बैनस् स–दफ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू ह़त्ता इज़ा ज–अ़–लहू नारन् क़ा–ल आतूनी उफ़्रिग् अ़लैहि क़ित्रा(96)फ़–मस्ताऊ अंय्यज़्–हरूहु व मस्तताऊ लहू नक़्बा(97)क़ा–ल हाज़ा रह़्मतुम् मिर्–रब्बी फ़–इज़ा जा–अ वअ़्दु रब्बी ज–अ़–लहू दक्का–अ व का–न वअ़्दु रब्बी ह़क़्क़ा(98)व त–रक्ना बअ़्–ज़हुम् यौ–मइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ़्ज़िंव् व नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि फ़–ज–मअ़्नाहुम् जम्अ़ंव्(99)व अ़–रज़्ना जहन्न–म यौ–मइज़िल् लिल्काफ़िरी–न अ़र्ज़ा(100)अल्लज़ी–न कानत् अअ़्युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीऊ–न सम्आ़(101)अ–फ़–ह़सिबल्लज़ी–न क–फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया–अ इन्ना अअ़्तद्ना

ऐसे लोग पाए कि कोई बात समझते मालूम न होते थे।(93) (फ़ा198) उन्होंने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन बेशक याजूज माजूज (फ़ा199) ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आपके लिए कुछ माल मुक़र्रर कर दें इस पर कि आप हममें और उनमें एक दीवार बना दें।(94) (फ़ा200) कहा वह जिस पर मुझे मेरे रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है (फ़ा201) तो मेरी मदद ताक़त से करो (फ़ा202) मैं तुम में और उन में एक मज़बूत आड़ बना दूं।(95) (फ़ा203) मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ (फ़ा204) यहां तक कि वह जब दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धौंको यहां तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं उस पर गला हुआ तांबा उंडेल दूं।(96) तो याजूज व माजूज इस पर न चढ़ सके और न उसमें सुराख़ कर सके।(97) कहा (फ़ा205) यह मेरे रब की रहमत है फिर जब मेरे रब का वादा आएगा (फ़ा206) उसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है।(98) (फ़ा207) और उस दिन हम उन्हें छोड़ेंगे कि उनका एक गरोह दूसरे पर रेला देगा और सूर फूंका जाएगा (फ़ा208) तो हम उन सबको (फ़ा209) इकट्ठा कर लायेंगे।(99) और हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लायेंगे।(100) (फ़ा210) वह जिनकी आँखों पर मेरी याद से पर्दा पड़ा था (फ़ा211) और हक़ बात सुन न सकते थे।(101) (फ़ा212) (रुकूअ़ 1) तो क्या काफ़िर यह समझते हैं कि मेरे बन्दों को (फ़ा213) मेरे सिवा ह़िमायती बना लेंगे (फ़ा214) बेशक हमने काफ़िरों की मेहमानी को

(फ़ा198) क्योंकि उनकी ज़बान अ़जीबो ग़रीब थी उनके साथ इशारा वग़ैरह की मदद से ब-मशक़्क़त बात की जा सकती थी (फ़ा199) यह याफ़स बिन नूह अ़लैहिस्सलाम की औलाद से फ़सादी गरोह हैं इनकी तादाद बहुत ज़्यादा है, ज़मीन में फ़साद करते थे रबीअ़ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियां और सब्ज़े सब खा जाते थे कुछ न छोड़ते थे और ख़ुश्क चीज़ें लाद कर ले जाते थे आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों वहशी जानवरों सांपों बिच्छूओं तक को खा जाते थे हज़रत ज़ुलक़रनैन से लोगों ने उनकी शिकायत की कि वह (फ़ा200) ताकि वह हम तक न पहुंच सकें और हम उनके शर व ईज़ा से महफ़ूज़ रहें (फ़ा201) यानी अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरे पास माल कसीर और हर क़िस्म का सामान मौजूद है तुम से कुछ लेने की हाजत नहीं (फ़ा202) और जो काम मैं बताऊँ वह अन्जाम दो (फ़ा203) उन लोगों ने अ़र्ज़ किया फिर हमारे मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़िदमत है फ़रमाया। (फ़ा204) और बुनियाद खुदवाई जब पानी तक पहुंची तो उसमें पत्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन **(बक़िया सफ़हा 523 पर)**

جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ
الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ
عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝

जहन्न–म लिल्काफ़िरी–न नुज़ुला(102)क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल् अख़्सरी–न अअ्माला(103) अल्लज़ी–न ज़ल्–ल सअ्युहुम् फ़िल्हयातिद् दुन्या व हुम् यह्–सबू–न अन्नहुम् युह्सिनू–न सुन्आ(104) उलाइ–कल्लज़ी–न क–फ़रु बि–आयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़–हबितत् अअ्–मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल् क़िया–मति वज़्ना(105)ज़ालि–क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क–फ़रु वत्त–ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा(106) इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल् फ़िर्दौसि नुज़ुला(107)ख़ालिदी–न फ़ीहा ला यब्ग़ू–न अ़न्हा हि़–वला(108)क़ुल् लौ कानल् बह्रु मिदादल् लि–कलिमाति रब्बी ल–नफ़िदल् बह्रु क़ब्–ल अन् तन्फ़–द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म–ददा(109)क़ुल् इन्नमा अना ब–शरुम् मिस्लुकुम् यूहा इलय्–य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़मन् का–न यरजू लिक़ा–अ रब्बिही फ़ल्यअ्मल् अ़–म–लन् सालिहंव् व ला युश्रिक् बिअ़िबा–दति रब्बिही अ–हदा(110)

जहन्नम तैयार कर रखी है।(102) तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़ कर नाक़िस अ़मल किनके हैं।(103) (फ़215) उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई (फ़216) और वह इस ख़्याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।(104) यह लोग जिन्होंने अपने रब की आयतें और उसका मिलना न माना (फ़217) तो उनका किया धरा सब अकारत है तो हम उनके लिए क़ियामत के दिन कोई तौल न क़ाइम करेंगे।(105) (फ़218) यह उनका बदला है जहन्नम उस पर कि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई।(106) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उनकी मेहमानी है।(107) (फ़219) वह हमेशा उनमें रहेंगे उनसे जगह बदलना न चाहेंगे।(108) (फ़220) तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिए स्याही हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगरचे हम वैसा ही और उसकी मदद को ले आयें।(109) (फ़221) तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं (फ़222) मुझे 'वही़' आती है कि तुम्हारा मअ़बूद एक ही मअ़बूद है (फ़223) तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।(110) (फ़224) (रुकूअ़ 3)

(फ़215) यानी वह कौन लोग हैं जो अ़मल करके थके और मशक़्क़तें उठाईं और यह उम्मीद करते रहे कि इन आमाल पर फ़ज़्ल व नवाल से नवाज़े जायेंगे मगर बजाए इसके हलाकत व बरबादी में पड़े हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया वह यहूद व नसारा हैं। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वह राहिब लोग हैं जो सवामेअ़ में उज़लत गुज़ीन रहते थे। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह लोग अहले हरूरा यानी ख़वारिज हैं। (फ़216) और अ़मल बातिल हो गए (फ़217) रसूल व क़ुरआन पर ईमान न लाये और बअ़्स व हिसाब व सवाब के मुन्किर रहे (फ़218) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बाज़े लोग ऐसे आमाल लायेंगे जो उनके ख़्यालों में मक्का मुकर्रमा के पहाड़ों से ज़्यादा बड़े होंगे लेकिन जब वह तौले जायेंगे तो उन में वज़न कुछ न होगा (फ़219) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह से मांगो तो फ़िरदौस मांगो क्योंकि वह जन्नतों में सब के दर्मियान और सब से बुलन्द है और उस पर अ़र्शे रहमान है और उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं हज़रत कअ़्ब ने फ़रमाया कि फ़िरदौस जन्नतों में सब से आला है उसमें नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐश करेंगे (फ़220) जिस तरह दुनिया में इन्सान कैसी ही बेहतर जगह हो उससे और आला व अरफ़अ़ की तलब रखता है **(बक़िया सफ़हा 523 पर)**

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّىْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ
بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ وَّرَآءِىْ وَكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ
رَضِيًّا ۝ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ
الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

सूरतु मरय–म

(मक्की है इस 98 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

काफ़् हा–या–अ़ैन्–साद(1)ज़िक्रु रह्–मति रब्बि–क अ़ब्दहू ज़–करिय्या(2)इज़् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या(3)क़ा–ल रब्बि इन्नी व–ह–नल् अ़ज़्मु मिन्नी वश्त–अ़–लर्रासु शैबंव् व लम् अकुम् बिदुआइ–क रब्बि शक़िय्या(4)व इन्नी ख़िफ़्तुल् मवालि–य मिंव् वराई व का–नतिम्र–अती आ़क़िरन् फ़–हब्ली मिल्लदुन्–क वलिय्या(5)यरिसुनी व यरिसु मिन् आलि यअ़्क़ू–ब वज्–अ़ल्हु रब्बि रज़िय्या(6)या ज़–करिय्या इन्ना नुबश्शिरु–क बिग़ुलामि निस्मुहू यह्या लम् नज्–अ़ल् लहू मिन् क़ब्लु समिय्या(7)क़ा–ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव् व का–नतिम्र–अती आ़क़िरंव् व क़द् ब–लग़्तु मिनल् कि–बरि अ़ितिय्या(8)क़ा–ल कज़ालि–क क़ा–ल रब्बु–क हु–व अ़लय्–य हय्यिनुंव् व क़द् ख़–लक़्तु–क मिन् क़ब्लु व लम तकु शैआ(9)क़ा–ल रब्बिज् अ़ल् ली आ–य–तन् क़ा–ल आ–यतु–क अल्ला तकुल्लिमन्ना–स

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला।(फ़1)

काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद।(1)यह मज़कूर है तेरे रब की उस रहमत का जो उसने अपने बन्दा ज़करिया पर की।(2) जब उसने अपने रब को आहिस्ता पुकारा।(3) (फ़2) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई (फ़3) और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा (फ़4) और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी नामुराद न रहा।(4)(फ़5) और मुझे अपने बाद अपने क़राबत वालों का डर है (फ़6) और मेरी औरत बांझ है तू मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा ले।(5) (फ़7) वह मेरा जा-नशीन हो और औलादे याक़ूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर।(6) (फ़8) ऐ ज़करिया हम तुझे खुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिनका नाम यह्या है इसके पहले हमने इस नाम का कोई न किया।(7) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां से होगा मेरी औरत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की हालत को पहुंच गया।(8)(फ़9) फ़रमाया ऐसा ही है (फ़10) तेरे रब ने फ़रमाया वह मुझे आसान है और मैंने तो इस से पहले तुझे उस वक़्त बनाया जब तू कुछ भी न था।(9) (फ़11) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे दे (फ़12) फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तू तीन रात दिन लोगों से

(फ़1) सूरह मरयम मक्की है इसमें छः रुकूअ़ अठानवे आयतें सात सो अस्सी कलिमे हैं। (फ़2) क्योंकि अख़्फ़ा रिया से दूर और इख़्लास से मामूर होता है नीज़ यह भी फ़ाइदा था कि पीराना साली की उम्र में जब कि सिन शरीफ़ ७५ या ८० बरस का था औलाद का तलब करना एहतेमाल रखता था कि अवाम इस पर मलामत करें इस लिए भी इस दुआ़ का अख़्फ़ा मुनासिब था एक क़ौल यह भी है कि ज़ोअ़फ़े पीरी के बाइस हज़रत की आवाज़ भी ज़ईफ़ हो गई थी। (मदारिक ख़ाज़िन) (फ़3) यानी पीराना साली का ज़ोअ़फ़ ग़ायत को पहुंच गया हड्डी जो निहायत मज़बूत उज़्व है उस में कमज़ोरी आ गई तो बाक़ी आज़ा व क़ुवा का हाल मुहताजे बयान ही नहीं। (फ़4) कि तमाम सर सफ़ेद हो गया। (फ़5) हमेशा तूने मेरी दुआ़ क़बूल की और मुझे मुस्तजाबुद्दावात किया। (फ़6) चचाज़ाद वग़ैरह का कि वह शरीर लोग हैं कहीं मेरे बाद दीन में रुख़ना अन्दाज़ी न करें जैसा कि (बक़िया सफ़हा 523 पर)

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ
مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝ قَالَتْ اِنِّىْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ
تَقِيًّا ۝ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ

सला–स लयालिन् सविय्या(10)फ़–ख़–र–ज अ़ला क़ौमिही मिनल् मिह़राबि फ़औहा इलैहिम् अन्
सब्बिहू बुक्र–तंव् व अ़शिय्या(11)या यह़्या ख़ुज़िल्किता–ब बिकुव्वतिन् व आतैनाहुल्–हुक्–म
सबिय्या(12)व ह़नानम् मिल्लदुन्ना व ज़कातन् व का–न तक़िय्या(13)व बर्रम् बिवालिदैहि व लम्
यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या(14)व सलामुन् अ़लैहि यौ–म वुलि–द व यौ–म यमूतु व यौ–म युब्–असु
ह़य्या(15)वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्य–म इज़िन्–त–ब–जत् मिन् अह़्लिहा मकानन् शर्क़िय्या(16)
फ़त्त–ख़–जत् मिन् दूनिहिम् ह़िजाबन् फ़–अर्सल्ना इलैहा रू–ह़ना फ़–त–मस़्स़–ल लहा ब–श–रन्
सविय्या(17)क़ालत् इन्नी अऊ़ज़ु बिर्रह़्मानि मिन्–क इन् कुन्–त तक़िय्या(18)क़ा–ल इन्नमा अना
रसूलु रब्बिकि लि–अ–ह–ब लकि गुलामन् ज़किय्या(19)क़ालत् अन्ना यकूनु ली गुलामुंव् व लम्
यम्सस्नी ब–शरुंव् व लम् अकु बग़िय्या(20)क़ा–ल कज़ालिकि क़ा–ल रब्बुकि हुव अ़–लय्–य
हय्यिनुन् व लि–नज्–अ़–लहू आ–यतल् लिन्नासि व रह़–म–तम् मिन्ना व का–न अम्रम् मक़्ज़िय्या
(21)फ़–ह़–म–लत्हु फ़न्त–ब–ज़त् बिही मकानन् क़सिय्या(22)फ़–अजा–अहल् मख़ाज़ु इला
जिज़्अ़िन् नख़्–लति क़ालत् यालै–तनी

कलाम न करे भला चंगा होकर।(10) (फ़13) तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया (फ़14) तो उन्हें इशारा से कहा कि सुबह व शाम तस्बीह़ करते रहो।(11) (फ़15) ऐ यह़्या किताब (फ़16) मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन ही में नबुव्वत दी।(12) (फ़17) और अपनी तरफ़ से मेहरबानी (फ़18) और सुथराई (फ़19) और कमाल डर वाला था।(13) (फ़20) और अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था और ज़बरदस्त व नाफ़रमान न था।(14) (फ़21) और सलामती है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाएगा।(15) (फ़22) (रुकूअ़ 4) और किताब में मरयम को याद करो (फ़23) जब अपने घर वालों से पूरब की तरफ़ एक जगह अलग गई।(16) (फ़24) तो उनसे उधर (फ़25) एक पर्दा कर लिया तो उसकी तरफ़ हमने अपना रूहानी भेजा (फ़26) वह उसके सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुआ।(17) बोली मैं तुम से रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तुझे ख़ुदा का डर है।(18) बोला मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूं कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूं।(19) बोली मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो किसी आदमी ने हाथ न लगाया न मैं बदकार हूं।(20) कहा यूं ही है (फ़27) तेरे रब ने फ़रमाया है कि यह (फ़28) मुझे आसान है और इस लिए कि हम उसे लोगों के वास्ते निशानी (फ़29) करें और अपनी तरफ़ से एक रहमत (फ़30) और यह काम ठहर चुका है।(21) (फ़31) अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिए हुए एक दूर जगह चली गई।(22) (फ़32) फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया (फ़33) बोली हाय किसी तरह

(फ़13) सह़ी सालिम होकर बग़ैर किसी बीमारी के और बग़ैर गूंगा होने के चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उन अय्याम में आप लोगों से कलाम करने पर क़ादिर न हुए जब अल्लाह का ज़िक्र करना चाहते ज़बान खुल जाती। (फ़14) जो उसकी नमाज़ की जगह थी और लोग पसे मेहराब इन्तेज़ार में थे कि आप उनके लिए दरवाज़ा खोलें तो वह दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें जब ह़ज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम बाहर आये तो आपका रंग बदला हुआ था गुफ़्तगू नहीं फ़रमा सकते थे यह हाल देख **(बक़िया सफ़्ह़ा 524 पर)**

مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝23 فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝24 وَهُزِّىْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا
جَنِيًّا ۝25 فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ وَقَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِىْٓ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۝26 فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا
يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔـا فَرِيًّا ۝27 يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۝28 فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝29 قَالَ
اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ۭ اٰتٰىنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّا ۝30 وَّجَعَلَنِىْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝31 وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِىْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا
شَقِيًّا ۝32 وَالسَّلٰمُ عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ۝33 ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِىْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝34 مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ

*मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस्यम् मन्सिय्या(23)फ़नादाहा मिन् तह्तिहा अल्ला तह्-ज़नी क़द
ज-अ-ल रब्बुकि तह्-तकि सरिय्या(24)व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अिन् नख़्-लति तुसाक़ित् अलैकि
रु-त-बन् जनिय्या(25)फ़कुली वश्-रबी व क़र्री अैनन् फ़इम्मा त-रयिन्-न मिनल् ब-शरि
अ-ह्-दन् फ़क़ूली इन्नी न-ज़रतु लिर्रह्मानि सौमन् फ़-लन् उकल्लिमल् यौ-म इन्सिय्या(26)फ़-अ-तत्
बिही क़ौ-महा तह्मिलुहू क़ालू या मर्-यमु लक़द् जिअ्ति शैअन् फ़रिय्या(27)या उख़्-त हारू-न
मा का-न अबूकिम्र-अ सौइंव् व मा कानत् उम्मुकि बग़िय्या(28)फ़-अशारत् इलैहि क़ालू कै-फ़
नुकल्लिमु मन् का-न फ़िल्मह्दि सबिय्या(29)क़ा-ल इन्नी अब्दुल्लाहि आता-नियल् किता-ब
व ज-अ-लनी नबिय्या(30)व ज-अ-लनी मुबा-रकन् ऐ-न मा कुन्तु व औसानी बिस्सलाति वज़्ज़काति
मा दुम्तु हय्या(31)व बर्रम् बिवालि-दती व लम् यज्-अ़ल्नी जब्बारन् शक़िय्या(32)वस्सलामु
अ़-लय्-य यौ-म वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्-असु हय्या(33)ज़ालि-क अ़ीसब्नु
मर्य-म क़ौलल् हक़्क़िल् लज़ी फ़ीहि यम्तरून(34)मा का-न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि-ज मिंव्*

मैं इस से पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती।(23) तो उसे (फ़34) उसके तले से पुकारा कि ग़म न खा (फ़35) बेशक तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है।(24) (फ़36) और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी।(25) (फ़37) तो खा और पी और आँख ठंडी रख (फ़38) फिर अगर तू किसी आदमी को देखे (फ़39) तो कह देना मैंने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न करूंगी।(26) (फ़40) तो उसे गोद में ले अपनी क़ौम के पास आई (फ़41) बोले ऐ मरयम बेशक तूने बहुत बड़ी बात की।(27) ऐ हारून की बहन (फ़42) तेरा बाप (फ़43) बुरा आदमी न था और न तेरी माँ (फ़44) बदकार।(28) इस पर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया (फ़45) वह बोले हम कैसे बात करें उससे जो पालने में बच्चा है।(29) (फ़46) बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह का बन्दा (फ़47) उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।(30) (फ़48) और उसने मुझे मुबारक किया (फ़49) मैं कहीं हूं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूँ।(31) और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला (फ़50) और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया।(32) और वही सलामती मुझ पर (फ़51) जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा।(33) (फ़52) यह है ईसा मरयम का बेटा सच्ची बात जिसमें शक करते हैं।(34) (फ़53) अल्लाह को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए

(फ़34) जिबरील ने वादी के नशेब से (फ़35) अपनी तन्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों की बद गोई करने का (फ़36) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने या हज़रत जिबरील ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो आबे शीरीं का एक चश्मा जारी हो गया और खजूर का दरख़्त सरसब्ज़ हो गया फल लाया वह फल पुख़्ता और रसीदा हो गए और हज़रत मरयम से कहा गया। (फ़37) जो ज़च्चा के लिए बेहतरीन ग़िज़ा हैं। (फ़38) अपने फ़रज़न्द ईसा से (फ़39) कि तुझ से बच्चे को दरियाफ़्त करता है (फ़40) पहले ज़माना में बोलने और कलाम करने का भी रोज़ा होता था जैसा कि हमारी शरीअ़त में खाने और पीने का रोज़ा होता है हमारी शरीअ़त में चुप रहने का रोज़ मन्सूख़ हो गया हज़रत मरयम को सुकूत की नज़र मानने का इस लिए हुक्म दिया गया ताकि कलाम हज़रते ईसा फ़रमाएं और उनका कलाम हुज्जते क़विय्या हो जिससे तोहमत ज़ाइल हो जाये इससे चन्द मसले मालूम **(बक़िया सफ़हा 524 पर)**

وَلَدٍ سُبْحٰنَهٗ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۳۵﴾ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَ اَبْصِرْ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾ وَ اَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ
الْاَمْرُ وَ هُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّ هُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَ مَنْ عَلَيْهَا وَ اِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَ لَا يُبْصِرُ وَ لَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿۴۲﴾ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾
يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿۴۵﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ

व लदिन् सुब्हा–नहू इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़इन्नमा यकूलु लहू कुन् फ़–यकून(35)व इन्नल्ला–ह
रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम(36)फ़ख़्त–ल–फ़ल् अह़्ज़ाबु मिम् बैनिहिम्
फ़वैलुल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू मिम् मश्हदि यौमिन् अ़ज़ीम(37)अस्मिअ् बिहिम् व अब्सिर् यौ–म
यअ्तू–नना लाकिनिज़् ज़ालिमूनल् यौ–म फ़ी ज़लालिम् मुबीन(38)व अन्ज़िरहुम् यौमल् ह़स्–रति
इज़् क़ुज़ियल् अम्रु व हुम् फ़ी ग़फ़्–लतिंव् व हुम् ला युअ्मिनून(39)इन्ना नह़्नु नरिसुल् अर्–ज़
व मन् अ़लैहा व इलैना युर्–जअू़न(40)वज़्कुर् फ़िल्किताबि इब्राही–म इन्नहू का–न सिद्दीक़न्
नबिय्या(41)इज़् क़ा–ल लि–अबीहि या–अ–बति लि–म तअ्बुदु मा ला यस्मअु व ला युब्सिरु
व ला युग्नी अ़न्–क शैआ(42)या अ–बति इन्नी क़द् जा–अनी मिनल् अ़िल्मि मा लम् यअ्ति–क
फ़त्तबिअ्नी अह्दि–क सिरातन् सविय्या(43)या अ–बति ला तअ्बुदिश्शैता–न इन्नश्शैता–न का–न
लिर्रह़्मानि अ़सिय्या(44)या अ–बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य–मस्स–क अ़ज़ाबुम् मिनर्रह़्मानि फ़– तकू–न
लिश्शैतानि वलिय्या(45)क़ा–ल अ–रागिबुन् अन्–त

पाकी है उसको (फ़54) जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूं ही कि उससे फ़रमाता है होजा वह फ़ौरन हो जाता है।(35) और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा (फ़55) तो उसकी बन्दगी करो यह राह सीधी है।(36) फिर जमाअ़तें आपस में मुख़्तलिफ़ हो गईं (फ़56) तो ख़राबी है काफ़िरों के लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी से।(37) (फ़57) कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे (फ़58) मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।(38) (फ़59) और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का (फ़60) जब काम हो चुकेगा (फ़61) और वह ग़फ़लत में हैं (फ़62) और वह नहीं मानते।(39) बेशक ज़मीन और जो कुछ उस पर है सबके वारिस हम होंगे (फ़63) और वह हमारी ही तरफ़ फिरेंगे।(40) (फ़64) (रुकूअ़ 5) और किताब में (फ़65) इब्राहीम को याद करो बेशक वह सिद्दीक़ (फ़66) था(41) (नबी) ग़ैब की ख़बरें बताता जब अपने बाप से बोला (फ़67) ऐ मेरे बाप क्यों ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए। (42)(फ़68) ऐ मेरे बाप बेशक मेरे पास (फ़69) वह इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ (फ़70) मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं।(43) (फ़71) ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन (फ़72) बेशक शैतान रहमान का ना-फ़रमान है।(44) ऐ मेरे बाप मैं डरता हूं कि तुझे रहमान का कोई अ़ज़ाब पहुंचे तो तू शैतान का रफ़ीक़ हो जाए।(45) (फ़73) बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से

(फ़54) उससे (फ़55) और उसके सिवा कोई रब नहीं (फ़56) और हज़रत ईसा के बाब में नसारा के कई फ़िरक़े हो गए एक याकूबिया एक नस्तूरिया एक मलकानिया याकूबिया कहता था कि वह अल्लाह है ज़मीन पर उतर आया था फिर आसमान पर चढ़ गया नस्तूरिया का क़ौल है कि वह ख़ुदा का बेटा है जब तक चाहा उसे ज़मीन पर रखा फिर उठा लिया और तीसरा फ़िरक़ा यह कहता था कि वह अल्लाह के बन्दे हैं मख़्लूक़ हैं नबी हैं यह मोमिन था (मदारिक) (फ़57) बड़े दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है (फ़58) और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़ा न देगा जब उन्होंने दुनिया में दलाइले हक़ को नहीं देखा और अल्लाह के मवाईद को नहीं सुना बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि यह कलाम बतरीक़े तहदीद है कि उस रोज़ ऐसी हौलनाक बातें सुनें और देखेंगे जिन से दिल फट जायें (फ़59) न हक़ देखें न हक़ सुनें बहरे अन्धे बने हुए हैं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को इलाह और मअ़बूद ठहराते हैं बावजूदे कि उन्होंने बसराहत अपने बन्दा होने का एलान फ़रमाया (फ़60) हदीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर मनाज़िले जन्नत देखेंगे जिन से वह महरूम किये तो उन्हें नदामत व हसरत होगी कि काश वह **(बक़िया सफ़हा 525 पर)**

عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَ اهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا ۝ وَ اَعْتَزِلُكُمْ وَ مَا تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَ اَدْعُوْا رَبِّیْ ۖۗ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ۝
وَ وَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَ جَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا ۝ وَ اذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ؗ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ۝ وَ نَادَیْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَ قَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ۝ وَ وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِیًّا ۝ وَ اذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِیْلَ ؗ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ۝ وَ كَانَ
یَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ ۪ وَ كَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِیًّا ۝ وَ اذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِدْرِیْسَ ؗ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّیْقًا نَّبِیًّا ۝ وَّ رَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِیًّا ۝ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ

अ़न् आलि–हती या इब्राहीमु ल–इल्लम् तन्तहि ल–अर्जु–मन्न–क वह्जुरनी मलिय्या(46)क़ा–ल
सलामुन् अ़लै–क स–अस्तग़्फ़िरु ल–क रब्बी इन्नहू का–न बी ह़फ़िय्या(47)व अअ़्–तज़िलुकुम्
व मा तदअ़ू–न मिन् दूनिल्लाहि व अदअ़ू रब्बी अ़सा अल्ला अकू–न बिदुआ़इ रब्बी शक़िय्या(48)
फ़–लम्मअ़्–त–ज़–लहुम् व मा यअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि व हब्ना लहू इस्ह़ा–क़ व यअ़्कू–ब
व कुल्लन् ज–अ़ल्ना नबिय्या(49)व व–हब्ना लहुम् मिर्रह़्मतिना व ज–अ़ल्ना लहुम् लिसा–न
सि़दक़िन् अ़लिय्या(50)वज़्कुर् फ़िल्किताबि मूसा इन्नहू का–न मुख़्–ल–सं्व व का–न
रसूलन् नबिय्या(51)व नादैनाहु मिन् जानिबित्तूरिल् ऐ–मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या(52)व
व–हब्ना लहू मिर्रह़्मतिना अख़ाहु हारू–न नबिय्या(53)वज़्कुर् फ़िल्किताबि इस्माअ़ी–ल इन्नहू
का–न सा़दिक़ल् वअ़्दि व का–न रसूलन् नबिय्या(54)व का–न यअ्मुरु अह्–लहू बिस्स़लाति
वज़्ज़काति व का–न अ़िन्–द रब्बिही मर्ज़िय्या(55)वज़्कुर् फ़िल्किताबि इद्री–स इन्नहू का–न
सि़द्दीक़न् नबिय्या(56)व र–फ़अ़्नाहु मकानन् अ़लिय्या(57)उलाइ–कल् लज़ी–न

मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू (फ़74) बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा और मुझसे ज़माना दराज़ तक बे इलाक़ा हो जा।(46) (फ़75) कहा बस तुझे सलाम है (फ़76) क़रीब है कि मैं तेरे लिए अपने रब से माफ़ी मांगूंगा(47) (फ़77) बेशक वह मुझ पर मेहरबान है। और मैं एक किनारे हो जाऊंगा (फ़78) तुम से और उन सबसे जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूंगा (फ़79) क़रीब है कि मैं अपने रब की बन्दगी से बदबख़्त न हूं।(48) (फ़80) फिर जब उनसे और अल्लाह के सिवा उनके मअ़बूदों से किनारा कर गया (फ़81) हमने उसे इसहाक़ (फ़82) और याक़ूब (फ़83) अ़ता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।(49) और हमने उन्हें अपनी रहमत अ़ता की (फ़84) और उनके लिए सच्ची बुलन्द नामवरी रखी।(50) (फ़85) (रुकूअ़ 6) और किताब में मूसा को याद करो बेशक वह चुना हुआ था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला।(51) और उसे हमने तूर की दाहिनी जानिब से निदा फ़रमाई (फ़86) और उसे अपना राज़ कहने को क़रीब किया।(52) (फ़87) और अपनी रहमत से उसका भाई हारून अ़ता किया (ग़ैब की ख़बरें बताने वाला, नबी)।(53) (फ़88) और किताब में इसमाईल को याद करो (फ़89) बेशक वह वादे का सच्चा था (फ़90) और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता।(54) और अपने घर वालों को (फ़91) नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और अपने रब को पसन्द था।(55) (फ़92) और किताब में इदरीस को याद करो (फ़93) बेशक वह सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता।(56) और हमने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया।(57) (फ़94) यह हैं जिन पर

(फ़74) बुतों की मुख़ालफ़त और उनको बुरा कहने और उनके उयूब बयान करने से (फ़75) ताकि मेरे हाथ और ज़बान से अमन में रहे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने (फ़76) यह सलामे मुतारकत था (फ़77) कि वह तुझे तौफ़ीक़े तौबा व ईमान देकर तेरी मग़फ़िरत करे (फ़78) शहरे बाबुल से शाम की तरफ़ हिजरत करके। (फ़79) जिसने मुझे पैदा किया और मुझ पर एहसान फ़रमाये (फ़80) इसमें तअ़रीज़ है कि जैसे तुम बुतों की पूजा करके बद-नसीब हुए ख़ुदा के परिस्तार के लिए यह बात नहीं उसकी बन्दगी करने वाला शक़ी व महरूम नहीं होता (फ़81) अर्ज़े मुक़द्दसा की तरफ़ हिजरत करके (फ़82) फ़रज़न्द (फ़83) फ़रज़न्द के फ़रज़न्द यानी पोते फ़ाइदा इसमें इशारा है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की उम्र (बक़िया सफ़हा 525 पर)

اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۡ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۡ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ﴿۵۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْئًا ﴿۶۰﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿۶۱﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا

سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۶۲﴾ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿۶۳﴾ وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا

خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿۶۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿۶۵﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ

अन्–अ़–मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन् नबिय्यी–न मिन् ज़ुर्रिय्यति आ–द–म व मिम्मन् ह़–मल्ना म–अ़ नूहिन् व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही–म व इस्राई–ल व मिम्मन् हदैना वज्तबैना इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुर्रह़्मानि ख़र्रू सुज्जदंव् व बुकिय्या(58)फ़–ख़–ल–फ़ मिम् बअ़्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअुस्सला–त वत्त–बअुश् श–हवाति फ़सौ–फ़ यल्क़ौ–न ग़य्या(59)इल्ला मन् ता–ब व आ–म–न व अ़मि–ल सालिहन् फ़उलाइ–क यद्‌ख़ुलूनल् जन्न–त व ला युज़्लमू–न शैआ(60)जन्नाति अ़दनि निल्लती व–अ़–दर्रह़्मानु अ़िबा–दहू बिल्ग़ैबि इन्नहू का–न वअ़्दुहू मअ्तिय्या(61)ला यस्मअू–न फ़ीहा लग़्वन् इल्ला सलामन् व लहुम् रिज़्क़ुहुम् फ़ीहा बुक्र–तंव् व अ़शिय्या(62)तिल्कल् जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अ़िबादिना मन् का–न तक़िय्या(63)व मा न–त–नज़्ज़लु इल्ला बि–अम्रि रब्बि–क लहू मा बै–न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै–न ज़ालि–क व मा का–न रब्बु–क नसिय्या(64)रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा फ़अ़्बुद्‌हु वस्तबिर् लिअ़िबा–दतिही हल् तअ़्–लमु लहू समिय्या(65)व यक़ूलुल् इन्सानु

अल्ला ने एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से (फ़95) और उनमें जिनको हम ने नूह के साथ सवार किया था (फ़96) और इब्राहीम (फ़97) और याक़ूब की औलाद से (फ़98) और उनमें से जिन्हें हमने राह दिखाई और चुन लिया (फ़99) जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते।(58) (फ़100) तो उन के बाद उनकी जगह वह ना-ख़ल्फ़ आए (फ़101) जिन्होंने नमाज़ें गंवाईं और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए (फ़102) तो अ़न्क़रीब वह दोज़ख़ में ग़य का जंगल पायेंगे।(59) (फ़103) मगर जो तायब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो यह लोग जन्नत में जायेंगे और उनहें कुछ नक़सान न दिया जाएगा।(60) (फ़104) बसने के बाग़ जिन का वादा रहमान ने अपने (फ़105) बन्दों से ग़ैब में किया (फ़106) बेशक उसका वादा आने वाला है।(61) वह उसमें कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम (फ़107) और उन्हें उसमें उनका रिज़्क़ है सुबह व शाम।(62) (फ़108) यह वह बाग़ है जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे जो परहेज़गार है। (और जिबरईल ने महबूब से अ़र्ज़ की) (63) (फ़109) हम फ़रिश्ते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे और जो उसके दर्मियान है (फ़110) और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं।(64) (फ़111) आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उसकी बन्दगी पर साबित रहो क्या उसके नाम का दूसरा जानते हो।(65) (फ़112) (रुकूअ़ 7) और आदमी कहता है

(फ़95) यानी हज़रत इदरीस व हज़रत नूह। (फ़96) यानी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पोते और आपके फ़रज़न्दे साम के फ़रज़न्द हैं। (फ़97) की औलाद से हज़रत इसमाईल व हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब (फ़98) हज़रत मूसा और हज़रत हारून और हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया और हज़रत ईसा सलवातुल्लाहि अ़लैहिम व सलामुहू। (फ़99) शरह शरीअ़त व कशफ़े हक़ीक़त के लिए (फ़100) अल्लाह तआ़ला ने इन आयात में ख़बर दी कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम अल्लाह तआ़ला की आयतों को सुन कर ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और ख़ौफ़ से रोते और सज्दे करते थे मसला इस से साबित हुआ कि क़ुरआने पाक बख़ुशूअ़ क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तहब है। (फ़101) मिस्ले यहूद व नसारा वग़ैरह के (फ़102) और बजाए ताअ़ते इलाही के मआ़सी को इख़्तियार किया। (फ़103) हज़रत इब्ने (बक़िया सफ़हा 526 पर)

ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿66﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿67﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

جِثِيًّا ﴿68﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿69﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿70﴾ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا

مَّقْضِيًّا ﴿71﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿72﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ

مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿73﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿74﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ

اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿75﴾ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ

अ–इज़ा मा मित्तु लसौ–फ़ उख़्रजु ह़य्या(66)अ–व ला यज़्कुरुल् इन्सानु अन्ना ख़–लक़्नाहु मिन् क़ब्लु व लम् यकु शैआ(67)फ़–व रब्बि–क ल–नह़्शुरन्नहुम् वश्शयाती–न सुम्–म लनुह़्ज़िरन्नहुम् ह़ौ–ल जहन्न–म जिसिय्या(68)सुम्–म ल–नन्ज़िअ़न्–न मिन् कुल्लि शी–अ़तिन् अय्युहुम् अशद्दु अ़लर्रह़्मानि अ़ितिय्या(69)सुम्–म ल–नह़्नु अअ्–लमु बिल्लज़ी–न हुम् औला बिहा सिलिय्या(70) व इम् मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा का–न अ़ला रब्बि–क ह़त्मम् मक़्ज़िय्या(71)सुम्–म नु–नज्जिल् लज़ीनत् त–क़व् व न–ज़रुज़्ज़ालिमी–न फ़ीहा जिसिय्या(72)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आया–तुना बय्यिनातिन् क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू लिल्लज़ी–न आ–मनू अय्युल् फ़रीक़ैनि ख़ैरुम् मक़ामंव् व अह़्सनु नदिय्या(73)व कम् अह्–लक्ना क़ब्–लहुम् मिन् क़रनिन् हुम् अह्–सनु असासंव् व रिअ्या(74)क़ुल् मन् का–न फ़िज़्ज़ला–लति फ़ल्–यम्दुद् लहुर्रह़्मानु मद्दा ह़त्ता इज़ा रऔ मा यू–अ़दू–न इम्मल् अ़ज़ा–ब व इम्मस्सा–अ़–त फ़–स–यअ्लमू–न मन् हु–व शर्रुम् मकानंव् व अज़्–अ़फ़ु जुन्दा(75)व यज़ीदुल्लाहुल् लज़ी–नह्–तदौ हुदन् वल्बाक़ियातुस् सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्–द

क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अ़न्क़रीब जिला कर निकाला जाऊंगा।(66) (फ़113) और क्या आदमी को याद नहीं कि हमने इससे पहले उसे बनाया और वह कुछ न था।(67) (फ़114) तो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें (फ़115) और शैतानों सबको घेर लायेंगे (फ़116) और उन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे घुटनों के बल गिरे।(68) फिर हम (फ़117) हर गरोह से निकालेंगे जो उनमें रहमान पर सबसे ज़्यादा बेबाक होगा।(69) (फ़118) फिर हम ख़ूब जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़्यादा लायक़ हैं।(70) और तुम में कोई ऐसा नहीं जिसका गुज़र दोज़ख़ पर न हो (फ़119) तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर यह ज़रूर ठहरी हुई बात है।(71) (फ़120) फिर हम डर वालों को बचा लेंगे (फ़121) और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।(72) और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं(फ़122)काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं कौन से गरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है।(73) (फ़123) और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपा दीं (फ़124) कि वह उनसे भी सामान और नुमूद में बेहतर थे।(74) तुम फ़रमाओ जो गुमराही में हो तो उसे रहमान ख़ूब ढील दे (फ़125) यहां तक कि जब वह देखें वह चीज़ जिसका उन्हें वादा दिया जाता है या तो अ़ज़ाब (फ़126) या क़ियामत (फ़127) तो अब जान लेंगे कि किसका बुरा दर्जा है और किसकी फ़ौज कमज़ोर।(75) (फ़128) और जिन्होंने हिदायत पाई (फ़129) अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा (फ़130) और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का (फ़131) तेरे रब के यहां सब से बेहतर

(फ़113) इन्सान से यहां मुराद वह कुफ़्फ़ार हैं जो मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने के मुन्किर थे जैसे कि उबय बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा उन्हीं लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और यही इसका शाने नुज़ूल है। (फ़114) तो जिस ने मअ़दूम को मौजूद फ़रमाया उसकी क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा कर देना क्या तअ़ज्जुब। (फ़115) यानी मुन्किरीने बअ़्स को। (फ़116) यानी कुफ़्फ़ार को उनके गुमराह करने वाले शयातीन के साथ इस तरह कि हर काफ़िर शैतान के साथ एक ज़न्जीर में जकड़ा होगा (फ़117) कुफ़्फ़ार के (फ़118) यानी दुख़ूले नार में जो सब से ज़्यादा सरकश और कुफ़्र में अशद होगा वह मुक़द्दम किया जाएगा बाज़ रिवायात में है कि कुफ़्फ़ार सब के सब जहन्नम के गिर्द ज़न्जीरों में जकड़े तौक़ डाले हुए हाज़िर किये जायेंगे फिर जो कुफ़्र व सरकशी में अशद होंगे वह पहले जहन्नम में दाख़िल किये जायेंगे। (फ़119) नेक हो या **(बक़िया सफ़हा 526 पर)**

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا
يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ
وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى
الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ
شَيْئًا اِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِى
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ
وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

रब्बि–क स़वाबंव् व ख़ैरुम् म–रद्दा(76)अ–फ़–रऐ–तल्लज़ी क–फ़–र बि–आयातिना व क़ा–ल लऊ–त–यन्–न मालंव् व व–लदा(77)अत्त–ल–अ़ल् ग़ै–ब अमित्त–ख़–ज़ अ़िन्दर्रह़्मानि अ़ह्–दा(78) कल्ला स–नक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल् अ़ज़ाबि मद्दा(79)व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा(80)वत्त–ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि–ह–तल् लि–यकूनू लहुम् अ़िज़्ज़ा(81) कल्ला स–यक्फ़ुरू–न बिअ़िबा–दतिहिम् व यकूनू–न अ़लैहिम् ज़िद्दा(82)अ–लम् त–र अन्ना अर्सल्नश् शयाती–न अ़–लल्काफ़िरी–न तउज़्ज़ुहुम् अज़्ज़ा(83)फ़ला तअ़्–जल् अ़लैहिम् इन्नमा नअ़ुद्दु लहुम् अ़द्दा(84)यौ–म नह़्शुरुल् मुत्तक़ी–न इलर्रह़्मानि वफ़्दा(85)व नसूक़ुल् मुज्रिमी–न इला जहन्न–म विर्दा(86)ला यम्लिकू–नश्शफ़ा–अ़–त इल्ला मनित्त–ख़–ज़ अ़िन्दर्रह़्मानि अ़ह्दा(87)व क़ालुत्त–ख़–ज़र्रह़्मानु व–लदा(88)ल–क़द् जिअ्तुम् शैअन् इद्दा(89)तकादुस्समावातु य–त–फ़त्तर्–न मिन्हु व तन्–शक़्क़ुल् अर्ज़ु व तख़िर्रुल् जिबालु हद्दा(90)अन् दऔ लिर्रह़्मानि व लदा(91)व मा यम्बग़ी लिर्रह़्मानि अंय्यत्तख़ि–ज व लदा(92)इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह़्मानि अ़ब्दा(93)ल–क़द् अह़्साहुम् व अ़द्दहुम् अ़द्दा(94)व कुल्लुहुम् आतीहि यौमल् क़िया–मति फ़र्दा(95)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सालिहाति स–यज्अ़लु लहुमुर्रह़्मानु वुद्दा(96)फ़इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि–क लितु–बश्शि–र बिहिल् मुत्तक़ी–न व तुन्ज़ि–र बिही क़ौमल् लुद्दा(97)व कम् अह्लक्ना क़ब्–लहुम् मिन् क़र्निन् हल् तुह़िस्सु मिन्हुम् मिन् अ–ह़दिन् औ तस्मअ़ु लहुम् रिक्ज़ा(98)

सवाब और सब से भला अन्जाम।(76) (फ़ा132) तो क्या तुमने उसे देखा जो हमारी आयतों से मुनकिर हुआ और कहता है मुझे ज़रूर माल व औलाद मिलेंगे।(77) (फ़ा133) क्या ग़ैब को झांक आया है (फ़ा134) या रहमान के पास कोई क़रार रखा है।(78) हरगिज़ नहीं (फ़ा135) अब हम लिख रखेंगे जो वह कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अ़ज़ाब देंगे।(79) और जो चीज़ें कह रहा है (फ़ा136) उनके हमीं वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा।(80) (फ़ा137) और अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना लिये (फ़ा138) कि वह उन्हें ज़ोर दें।(81) (फ़ा139) हरगिज़ नहीं (फ़ा140) कोई दम जाता है कि वह (फ़ा141) उनकी बन्दगी से मुनकिर होंगे और उनके मुख़ालिफ़ हो जायेंगे।(82) (फ़ा142) (रुकूअ़ 8) क्या तुमने न देखा कि हमने काफ़िरों पर शैतान भेजे (फ़ा143) कि वह उन्हें ख़ूब उछालते हैं।(83) (फ़ा144) तो तुम उन पर जल्दी न करो हम तो उनकी गिनती पूरी करते हैं।(84) (फ़ा145) जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जायेंगे मेहमान बना कर।(85) (फ़ा146) और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हाँकेंगे प्यासे।(86) (फ़ा147) लोग शफ़ाअ़त के मालिक नहीं मगर वही जिन्होंने रहमान के पास क़रार रखा है।(87) (फ़ा148) और काफ़िर बोले (फ़ा149) रहमान ने औलाद इख़्तियार की।(88) बेशक तुम

हद की भारी बात लाए।(89) (फ़ा150) क़रीब है कि आसमान इससे फट पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जायें ढह कर।(90) (फ़ा151) इस पर कि उन्होंने रहमान के लिए औलाद बताई।(91) और रहमान के लिए लाइक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे।(92) (फ़ा152) आसमानों और ज़मीन में जितने हैं सब उसके हुज़ूर बन्दे होकर हाज़िर होंगे।(93) (फ़ा153) बेशक वह उनका शुमार जानता है और उनको एक एक कर के गिन रखा है।(94) (फ़ा154) और उनमें हर एक रोज़े क़ियामत उसके हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा।(95) (फ़ा155) बेशक वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न्क़रीब उनके लिए रहमान मुहब्बत कर देगा।(96) (फ़ा156) तो हमने यह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूंही आसान फ़रमाया कि तुम उससे डर वालों को ख़ुशख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इससे डर सुनाओ।(97) और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाई (फ़ा157) क्या तुम उनमें किसी को देखते हो या उनकी भनक (ज़रा भी आवाज़) सुनते हो।(98) (फ़ा158) (रुकूअ़ 9)

(फ़ा132) बख़िलाफ़े आमाल कुफ़्फ़ार के कि वह सब निकम्मे और बातिल हैं। (फ़ा133) शाने नुज़ूलः बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत ख़ब्बाब बिन इरत का ज़मानए जाहिलियत में आ़स बिन वाइल सहमी पर क़र्ज़ था वह उसके पास तक़ाज़े को गए तो आ़स ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ न अदा करूंगा जब तक कि तुम सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फिर न जाओ और कुफ़्र न इख़्तियार करो हज़रत ख़ब्बाब ने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता यहां तक कि तू मरे और मरने के बाद ज़िन्दा होकर उठे वह कहने लगा कि क्या मैं मरने के बाद फिर उठूंगा हज़रत ख़ब्बाब ने कहा हां, आ़स ने कहा तो फिर मुझे छोड़िये यहां तक कि मैं मर जाऊँ और मरने के बाद फिर ज़िन्दा हूं और मुझे माल व औलाद मिले जब ही आपका क़र्ज़ अदा करूंगा इस पर यह आयाते करीमा नाज़िल हुईं (फ़ा134) और उसने लौहे महफ़ूज़ में देख लिया है कि आख़िरत में उसको माल व औलाद मिलेगी। (फ़ा135) ऐसा नहीं है तो (फ़ा136) यानी माल व औलाद इन सब से उसकी मिल्क और उसका तसर्रुफ़ उसके हलाक होने से उठ जाएगा और (फ़ा137) कि न उसके पास माल होगा न औलाद और उसका यह दावा करना झूठा हो जाएगा (फ़ा138) यानी मुशरिकों ने बुतों को मअ़बूद बनाया और उनकी इबादत करने लगे इस उम्मीद पर (फ़ा139) और उनकी मदद करें और उन्हें अ़ज़ाब से बचायें (फ़ा140) ऐसा हो ही नहीं सकता (फ़ा141) बुत जिन्हें यह पूजते थे (फ़ा142) उन्हें झुठलायेंगे और उन पर लानत करेंगे अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़बान देगा और वह कहेंगे या रब इन्हें अ़ज़ाब कर (फ़ा143) यानी शयातीन को उन पर छोड़ दिया और मुसल्लत कर दिया (फ़ा144) और मआ़सी पर उभारते हैं। (फ़ा145) आमाल की जज़ा के लिए या सांसों की फ़ना के लिए या दिनों महीनों और बरसों की इस मीआ़द के लिए जो उनके अ़ज़ाब के वास्ते मुक़र्रर है (फ़ा146) हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि मोमिनीन मुत्तक़ीन हश्र में अपनी क़ब्रों से सवार करके उठाये जायेंगे और उनकी सवारियों पर तलाई मुरस्सअ़ ज़ीनें और पालान होंगे (फ़ा147) ज़िल्लत व इहानत के साथ ब-सबब उनके कुफ़्र के (फ़ा148) यानी जिन्हें शफ़ाअ़त का इज़्न मिल चुका है वही शफ़ाअ़त करेंगे या यह माना हैं कि शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिनीन की होगी और वही उससे फ़ाइदा उठायेंगे हदीस शरीफ़ में है जो ईमान लाया जिसने ला इला-ह इल्लल्लाहु कहा उसके लिए अल्लाह के नज़दीक अहद है। (फ़ा149) यानी यहूदी व नसरानी व मुशरिकीन जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहते थे कि (फ़ा150) और इन्तेहा दर्जा का बातिल व निहायत सख़्त व शनीअ़ कलिमा तुमने मुंह से निकाला। (फ़ा151) यानी यह कलिमा ऐसी बे अदबी व गुस्ताख़ी का है कि अगर अल्लाह तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाये तो उस पर तमाम जहान का निज़ाम दरहम व बरहम कर दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार ने जब यह गुस्ताख़ी की और ऐसा बे बाकाना कलिमा मुंह से निकाला तो जिन्न व इन्स के सिवा आसमान ज़मीन पहाड़ वग़ैरह तमाम ख़ल्क़ परेशानी से बेचैन हो गई और क़रीब हलाकत के पहुंच गई मलाइका को ग़ज़ब हुआ और जहन्नम को जोश आया फिर अल्लाह तआ़ला ने अपनी तन्ज़ीह बयान फ़रमाई (फ़ा152) वह इससे पाक है और उसके लिए औलाद होना मुहाल है। मुमकिन नहीं। (फ़ा153) बन्दा होने का इक़रार करते हुए और बन्दा होना और औलाद होना जमा हो ही नहीं सकता और औलाद ममलूक नहीं होती तो जो ममलूक है हरगिज़ औलाद नहीं (फ़ा154) सब उसके इल्म में महसूर व मुहात हैं। और हर एक के अनफ़ास अय्यामे आसार और तमाम अहवाल और जुमला उमूर उसके शुमार में हैं उसपर कुछ मख़्फ़ी नहीं सब उसकी तदबीर व क़ुदरत के तहत में हैं (फ़ा155) बग़ैर माल व औलाद और मुईन व नासिर के (फ़ा156) यानी अपना महबूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उनकी मुहब्बत डाल देगा बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को महबूब करता है तो जिबरील से फ़रमाता है कि फ़लाना मेरा महबूब है जिबरील उससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर हज़रत जिबरील आसमानों में निदा करते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ को महबूब रखता है सब उसको महबूब रखें तो आसमान वाले उसको महबूब रखते हैं फिर ज़मीन में उसकी मक़बूलियत आ़म कर दी जाती है। मसला इससे मालूम हुआ कि मोमिनीन सालिहीन व औलियाए कामिलीन की मक़बूलियते आ़म्मा उनकी महबूबियत की दलील है जैसे कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत सुल्तान निज़ामुद्दीन देहलवी और हज़रत सुल्तान सय्यद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और दीगर हज़रात औलियाए कामिलीन की आम मक़बूलियतें उनकी महबूबियत की दलील हैं। (फ़ा157) तकज़ीबे अम्बिया की वजह से कितनी बहुत सी उम्मतें हलाक कीं। (फ़ा158) वह सब नेस्तो नाबूद कर दिये गए इसी तरह यह लोग अगर वही तरीक़ा इख़्तियार करेंगे तो उनका भी वही अंजाम होगा

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ۝ مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَ السَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا وَ مَا تَحْتَ الثَّرٰى ۝ وَ اِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَ اَخْفٰى ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ وَ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝
اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝ اِنِّيْۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ
نَعْلَيْكَ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَ اَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝ اِنَّنِيْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

सूरतु ताहा

(मक्की है इसमें 135 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ताहा(1)मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल् कुरआ–न लितश्क़ा(2)इल्ला तज़्कि–र–तल् लिमंय्यख़्शा(3)तन्ज़ीलम्
मिम्मन् ख़–ल–क़ल् अर्–ज़ वस्समावातिल् अुला(4)अर्रह्मानु अ–लल् अ़र्शिस्तवा(5)लहू मा फ़िस्
समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा व मा तह्तस्सरा(6)व इन् तज्हर् बिल्क़ौलि फ़इन्नहू
यअ्–लमुस् सिर्–र व अख़्फ़ा(7)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व लहुल् अस्माउल् हुस्ना(8)व
हल् अता–क हदीसु मूसा(9)इज़् रआ नारन् फ़क़ा–ल लि–अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु
नारल् ल– अ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि–क़–बसिन् औ अजिदु अ़–लन्नारि हुदा(10)फ़–लम्मा
अताहा नूदि–य या मूसा(11)इन्नी अना रब्बु–क फ़ख़्लअ् नअ़लै–क इन्न–क बिल्वादिल्
मुक़द्दसि तुवा(12)व अनख़्तर्तु–क फ़स्तमिअ् लिमा यूहा(13)इन्ननी अनल्लाहु ला इला–ह
इल्ला अना फ़अ्बुद्नी व अक़िमिस्सला–त लिज़िक्री(14)इन्नस्सा–अ़–त आति–यतुन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
ताहा(1) ऐ महबूब हमने तुम पर यह कुरआन इस लिए न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो।(2) (फ़ा2)
हां उसको नसीहत जो डर रखता हो।(3) (फ़ा3) उसका उतारा हुआ जिसने ज़मीन और ऊंचे आसमान
बनाए।(4) वह बड़ी मेहर वाला उसने अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है।(5)
उसका है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच में और जो कुछ
इस गीली मिट्टी के नीचे है।(6) (फ़ा4) और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वह तो भेद को जानता
है और उसे जो उससे भी ज़्यादा छुपा है।(7) (फ़ा5) अल्लाह कि उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं
उसी के हैं सब अच्छे नाम।(8) (फ़ा6) और कुछ तुम्हें मूसा की ख़बर आई।(9) (फ़ा7) जब उसने एक
आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं तुम्हारे लिए उसमें
से कोई चिंगारी लाऊँ या आग पर रास्ता पाऊँ।(10) फिर जब आग के पास आया (फ़ा8) निदा फ़रमाई
गई कि ऐ मूसा।(11) बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल (फ़ा9) बेशक तू पाक जंगल
तुवा में है।(12) (फ़ा10) और मैंने तुझे पसन्द किया (फ़ा11) अब कान लगा कर सुन जो तुझे 'वही'
होती है।(13) बेशक मैं ही हूं अल्ला कि मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू मेरी बन्दगी कर और मेरी
याद के लिए नमाज़ क़ायम रख।(14) (फ़ा12) बेशक क़ियामत आने वाली है

(फ़ा1) सूरह ताहा मक्की है इसमें आठ रुकूअ़ 135 आयतें और 1641 कलिमे और 5242 हरफ़ हैं (फ़ा2) और तमाम शब के क़ियाम की तकलीफ़ उठाओ शाने नुज़ूल सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इबादत में बहुत जहद फ़रमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुज़ारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने हाज़िर होकर बहुक्मे इलाही अर्ज़ किया कि अपने नफ़्से पाक को कुछ राहत दीजिये उसका भी वही हक़ है एक क़ौल यह भी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों के कुफ़्र और उनके ईमान **(बक़िया सफ़हा 526 पर)**

أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ
عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٨﴾ قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ﴿١٩﴾ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا
الْأُولَىٰ ﴿٢١﴾ وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَىٰ ﴿٢٣﴾ اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي
صَدْرِي ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾ هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾ وَأَشْرِكْهُ فِي
أَمْرِي ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾ وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾ إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ

अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम् बिमा तस्आ(15)फ़ला यसुद्दन्न-क अन्हा मल्ला युअमिनु
बिहा वत्त-ब-अ हवाहु फ़-तर्दा(16)व मा तिल्-क बि-यमीनि-क या मूसा(17)क़ा-ल हि-य
असा-य अ-त-वक्कउ अलैहा व अहुश्शु बिहा अला ग़-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा
(18)क़ा-ल अल्क़िहा या मूसा(19)फ़-अल्क़ाहा फ़इज़ा हि-य हय्यतुन् तस्आ(20)क़ा-ल ख़ुज़्हा
व ला त-ख़फ़् सनुईदुहा सी-र-त-हल् ऊला(21)वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख़्रुज्
बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-य-तन् उख़्रा(22)लिनुरि-य-क मिन् आयातिनल् कुब्रा(23)इज़्हब्
इला फ़िरऔ-न इन्नहू तग़ा(24)क़ा-ल रब्बिशरह्ली सद्री(25)व यस्सिर् ली अम्री(26)वह्लुल्
उक़्द-तम् मिल् लिसानी(27)यफ़्-क़हू क़ौली(28)वज्अल् ली वज़ी-रम् मिन् अह्ली(29)हारू-न
अख़ि(30)श्दुद् बिही अज़्री(31)व अश्रिक्हु फ़ी अम्री(32)कै नुसब्बि-ह-क कसीरंव्(33)व
नज़्कु-र-क कसीरा(34)इन्न-क कुन्-त बिना बसीरा(35)क़ा-ल क़द् ऊती-त सुअ्-ल-क
या मूसा(36)व-ल-क़द् मनन्ना अलै-क मर्रतन् उख़्रा(37)इज़् औहैना इला उम्मि-क

क़रीब था कि मैं उसे सबसे छुपाऊँ (फ़13) कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए।(15) (फ़14) तो हरगिज़ तुझे (फ़15) उसके मानने से वह बाज़ न रखे जो उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला (फ़16) फिर तू हलाक होजाए।(16) और यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा।(17) (फ़17) अर्ज़ की यह मेरा असा है (फ़18) मैं इस पर तकिया लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और मेरे इसमें और काम हैं।(18) (फ़19) फ़रमाया उसे डाल दे ऐ मूसा।(19) तो मूसा ने उसे डाल दिया तो जभी वह दौड़ता हुआ सांप हो गया।(20) (फ़20) फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहली तरह कर देंगे।(21) (फ़21) और अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला (फ़22) ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मर्ज़ के(22) (फ़23) एक और निशानी। (फ़24) कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियाँ दिखायें।(23) फ़िरऔन के पास जा (फ़25) उसने सर उठाया।(24) (फ़26) (रुकूअ़ 10) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए मेरा सीना खोल दे।(25) (फ़27) और मेरे लिए मेरा काम आसान कर।(26) और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे।(27) (फ़28) कि वह मेरी बात समझें।(28) और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे।(29) (फ़29) वह कौन मेरा भाई हारून।(30) उससे मेरी कमर मज़बूत कर।(31) और उसे मेरे काम में शरीक कर।(32) (फ़30) कि हम ब-कसरत तेरी पाकी बोलें।(33) और ब-कसरत तेरी याद करें।(34) (फ़31) बेशक तू हमें देख रहा है।(35) (फ़32) फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग तुझे अता हुई।(36) और बेशक हमने (फ़33) तुझ पर एक बार और एहसान फ़रमाया।(37) जब हमने तेरी मां को इल्हाम किया

(फ़13) और बन्दों को उसके आने की ख़बर न दूं और उसके आने की ख़बर न दी जाती अगर उस ख़बर देने में यह हिकमत न होती। (फ़14) और उसके ख़ौफ़ से मआसी तर्क करे नेकियां ज़्यादा करे और हर वक़्त तौबा करता रहे। (फ़15) ऐ उम्मते मूसा ख़िताब बज़ाहिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को है और मुराद इससे आपकी उम्मत है। (मदारिक) (फ़16) अगर तू उसका कहना माने और क़ियामत पर ईमान न लाये तो (फ़17) इस सवाल की हिकमत यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने असा को देख लें और यह बात क़ल्ब में ख़ूब रासेख़ हो जाये कि यह असा है ताकि जिस वक़्त वह सांप की शक्ल में हो तो आपकी ख़ातिर मुबारक पर कोई परेशानी न हो या यह हिकमत है कि हज़रत मूसा **(बक़िया सफ़हा 527 पर)**

مَا يُوحَىٰ ۝ أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ
عَيْنِي ۝ إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ
فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ۝ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝ اذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ۝ اذْهَبَا
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۝ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ۝ قَالَ لَا تَخَافَا ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَا
أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝ فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۝ إِنَّا قَدْ

मा यूहा(38)अनिक़्ज़ि फ़ीहि फ़ित्ताबूति फ़क़्ज़ि फ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्युल्क़िहिल्–यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अ़दुव्वुल्ली व अ़दुव्वुल्लहू व अल्क़ैतु अ़लै–क महब्बतम् मिन्नी व लितुस्न–अ़ अ़ला अ़ैनी (39)इज़् तम्शी उख़्तु–क फ़–तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अ़ला मय्यक्फ़ुलुहू फ़–र जअ्ना–क इला उम्मि–क कै त–क़र्–र अ़ैनुहा व ला तह्ज़न् व क़–तल्–त नफ़्सन् फ़–नज्जैना–क मिनल् ग़म्मि व फ़–तन्ना–क फ़ुतूनन् फ़–लबिस्–त सिनी–न फ़ी अह्लि मद्–य–न सुम्–म जिअ्–त अ़ला क़–दरिंय् या मूसा(40)वस्तनअ्तु–क लिनफ़्सी(41)इज़्–हब् अन्–त व अख़ू–क बिआयाती व ला तनिया फ़ी ज़िक्री(42)इज़्–हबा इला फ़िरऔ–न इन्नहू तग़ा(43)फ़क़ूला लहू क़ौलल् लय्यिनल् ल–अ़ल्लहू य–त–ज़क्करु औ यख़्शा(44)क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु–त अ़लैना औ अंय्यत्ग़ा(45)क़ा–ल ला तख़ाफ़ा इन्ननी म–अ़कुमा अस्मअ़ु व अरा(46)फ़अ्तियाहु फ़क़ूला इन्ना रसूला रब्बि–क फ़–अर्सिल् म–अ़ना बनी इस्राई–ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम् क़द् जिअ्ना–क बिआ–यतिम् मिर्रब्बि–क वस्सलामु अ़ला मनित्त–ब–अ़ल्हुदा(47)इन्ना क़द्

जो इल्हाम करना था।(38) (फ़ा34) कि उस बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरिया में (फ़ा35) डाल दे तो दरिया उसे किनारे पर डाले कि उसे वह उठा ले जो मेरा दुश्मन और उसका दुश्मन (फ़ा36) और मैंने तुझ पर अपनी तरफ़ की मुहब्बत डाली (फ़ा37) और इस लिए कि तू मेरी निगाह के सामने तैयार हो।(39) (फ़ा38) तेरी बहन चली (फ़ा39) फिर कहा क्या मैं तुम्हें वह लोग बता दूं जो उस बच्चे की परवरिश करें (फ़ा40) तो हम तुझे तेरी माँ के पास फेर लाए कि उसकी आँख (फ़ा41) ठंडी हो और ग़म न करे (फ़ा42) और तूने एक जान को क़त्ल किया (फ़ा43) तो हमने तुझे ग़म से नजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया (फ़ा44) तो तू कई बरस मदयन वालों में रहा (फ़ा45) फिर तू एक ठहराए वादा पर हाज़िर हुआ ऐ मूसा।(40)(फ़ा46) और मैंने तुझे ख़ास अपने लिए बनाया।(41) (फ़ा47) तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियां (फ़ा48) लेकर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना।(42) दोनों फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उसने सर उठाया।(43) तो उससे नरम बात कहना (फ़ा49) इस उम्मीद पर कि वह ध्यान करे या कुछ डरे।(44) (फ़ा50) दोनों ने अ़र्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वह हम पर ज़्यादती करे या शरारत से पेश आए।(45) फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं (फ़ा51) सुनता और देखता।(46) (फ़ा52) तो उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम तेरे रब के भेजे हुए हैं तो औलादे याक़ूब को हमारे साथ छोड़ दे (फ़ा53) और उन्हें तकलीफ़ न दे (फ़ा54) बेशक हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानी लाए हैं (फ़ा55) और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे।(47) (फ़ा56) बेशक हमारी

(फ़ा34) दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रीआ से जबकि उन्हें आपकी विलादत के वक़्त फ़िरऔन की तरफ़ से आपको क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुआ (फ़ा35) यानी नील में (फ़ा36) यानी फ़िरऔन चुनान्चे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा ने एक सन्दूक़ बनाया और उसमें रूई बिछाई और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को उसमें रख कर सन्दूक़ बन्द कर दिया और उसकी दरज़ें रौग़ने क़ीर से बन्द कर दीं आप उस सन्दूक़ के अन्दर पानी में पहुंचे फिर उस सन्दूक़ को दरियाए नील में बहा दिया उस दरिया से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔन के महल में गुज़रती थी फ़िरऔन मअ़ अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारा पर बैठा था नहर में सन्दूक़ आता देख कर उसने गुलामों और कनीज़ों को उसके (बक़िया सफ़हा 527 पर)

أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝ قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يَا مُوسَى ۝ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى ۝ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَى ۝

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا

مِنْ نَبَاتٍ شَتَّى ۝ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَى ۝ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ۝

وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى ۝ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَى ۝ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝ فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ۝

ऊहि–य इलैना अन्नल्अज़ा–ब अ़ला मन् कज़्ज़–ब व त–वल्ला(48)क़ा–ल फ़–मर् रब्बुकुमा या मूसा (49)क़ा–ल रब्बुनल्लज़ी अअ्ता कुल्–ल शैइन् ख़ल्क़हू सुम्–म हदा(50)क़ा–ल फ़मा बालुल् क़ुरूनिल् ऊला(51)क़ा–ल अ़िल्मुहा अ़िन्–द रब्बी फ़ी किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला यन्–स(52)ल्लज़ी ज–अ़–ल लकुमुल् अर्–ज़ मह्दंव् व स–ल–क लकुम् फ़ीहा सुबुलंव् व अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–अख़्रज्ना बिही अज़्वाजम् मिन् नबातिन् शत्ता(53)कुलू वर्औअन्आ़–मकुम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आयातिल् लिउलिन्नुहा(54)मिन्हा ख़–लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम् व मिन्हा नुख़्रिजुकुम् ता–र–तन् उख़्रा(55)व ल–क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ़–कज़्ज़–ब व अबा(56)क़ा–ल अजिअ्–तना लितुख़्रि–जना मिन् अर्ज़िना बिसिह्रि–क या मूसा(57)फ़–ल–नअ्ति–यन्न–क बिसिह्रिम् मिस्लिही फ़ज्अ़ल् बै–नना व बै–न–क मौअ़िदल् ला नुख़्लिफ़ुहू नह्नु व ला अन्–त मकानन् सुवा(58)क़ा–ल मौअ़िदुकुम् यौमुज़् ज़ी–नति व अंय्युह्श–रन्नासु ज़ुहा(59)फ़–त–वल्ला फ़िरऔनु फ़–ज–म–अ़ कै–दहू सुम्–म अता(60)

तरफ़ 'वह़ी' हुई है कि अ़ज़ाब उस पर है जो झुठलाए (फ़ा57) और मुंह फेरे।(48) (फ़ा58) बोला तो तुम दोनों का खुदा कौन है ऐ मूसा।(49) कहा हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके लायक़ सूरत दी (फ़ा59) फिर राह दिखाई।(50) (फ़ा60) बोला (फ़ा61) अगली संगतों का क्या हाल है।(51) (फ़ा62) कहा उनका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है (फ़ा63) मेरा रब न बहके न भूले।(52) वह जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिए उसमें चलती राहें रखीं और आसमान से पानी उतारा (फ़ा64) तो हमने उससे तरह तरह के सब्ज़े के जोड़े निकाले।(53) (फ़ा65) तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ (फ़ा66) बेशक उसमें निशानियां हैं अ़क़्ल वालों को।(54) (रुकूअ़ 11) हमने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया (फ़ा67) और उसी में तुम्हें फिर ले जायेंगे (फ़ा68) और उसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।(55) (फ़ा69) और बेशक हमने उसे (फ़ा70) अपनी सब निशानियाँ (फ़ा71) दिखाईं तो उसने झुठलाया और न माना।(56) (फ़ा72) बोला क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा।(57) (फ़ा73) तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लायेंगे (फ़ा74) तो हममें और अपने में एक वादा ठहरा दो जिससे न हम बदला लें न तुम हमवार जगह हो।(58) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है (फ़ा75) और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किये जायें।(59) (फ़ा76) तो फ़िरऔन फिरा और अपने दाँव इकट्ठे किये (फ़ा77) फिर आया।(60) (फ़ा78)

(फ़ा57) हमारी नबुव्वत को और उन अहकाम को जो हम लाये (फ़ा58) हमारी हिदायत से हज़रत मूसा व हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम ने फ़िरऔन को यह पैग़ाम पहुंचा दिया तो वह (फ़ा59) हाथ को इसके लाइक़ ऐसी कि किसी चीज़ को पकड़ सके पाँव को इसके क़ाबिल कि चल सके ज़बान को इसके मुनासिब कि बोल सके आंख को इसके मुवाफ़िक़ कि देख सके कान को ऐसी कि सुन सके (फ़ा60) और उसकी मअ्.रेफ़त दी कि दुनिया की ज़िन्दगानी और आख़िरत की सआ़दत के लिए अल्लाह की अ़ता की हुई निअ्मतों को किस तरह काम में लाया जाये (फ़ा61) फ़िरऔन (फ़ा62) यानी जो उम्मतें गुज़र चुकी हैं मिस्ले क़ौमे नूह व आ़द व समूद के जो बुतों को पूजते थे और बअ्.स बादलमौत यानी मरने के बाद ज़िन्दा करके उठाये जाने के मुन्किर थे इस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा63) यानी लौहे महफ़ूज़ में उनके तमाम अहवाल मकतूब हैं रोज़े क़ियामत उन्हें उन आमाल पर जज़ा दी जाएगी। (फ़ा65) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का कलाम तो यहां **(बक़िया सफ़हा 528 पर)**

قَالَ لَهُمْ مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا النَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾
قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ أَن يُخْرِجَاكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ
أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ
مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا
صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ

*क़ा—ल लहुम् मूसा वै—लकुम् ला तफ़्तरू अ़—लल्लाहि कज़िबन् फ़युस्हि—तकुम् बि—अ़ज़ाबिन्
व क़द् ख़ा—ब मनिफ़्तरा(61)फ़—तना—ज़अू अम्र हुम् बै—नहुम् व अ—सर्रुन्नज्वा(62)क़ालू इन् हाज़ानि
लसाहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिहिमा व यज़् हबा बि—तरी—क़तिकुमुल्
मुस्ला(63)फ़—अज्मिअू कै—दकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् व क़द् अफ़्—ल—ह़ल्यौ—म मनिस्तअ्ला(64)
क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि—य व इम्मा अन् नकू—न अव्व—ल मन् अल्क़ा(65)क़ा—ल बल्
अल्क़ू फ़इज़ा ह़िबालुहुम् व अ़िसिय्युहुम् युख़य्यलु इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ(66)
फ़औ—ज—स फ़ी नफ़्सिही ख़ी—फ़—तम् मूसा(67)क़ुल्ना ला त—ख़फ़् इन्न—क अन्तल् अअ्ला(68)व
अल्क़ि मा फ़ी यमीनि—क तल्क़फ़् मा स़—नअू इन्नमा स—नअू कैदु साहिरिन् व ला युफ़्लिहुस्साहिरु
ह़ैसु अता(69)फ़उल्क़ि—यस् स—ह़—रतु सुज्ज—दन् क़ालू आमन्ना बिरब्बि हारू—न व मूसा(70)क़ा—ल
आमन्तुम् लहू क़ब्—ल अन् आ—ज़—न लकुम् इन्नहू*

उनसे मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह पर झूठ न बांधो (फ़ा79) कि वह तुम्हें अ़ज़ाब से हलाक कर दे और बेशक नामुराद रहा जिसने झूठ बांधा।(61) (फ़ा80) तो अपने मुआमले में बाहम मुख़्तलिफ़ हो गए (फ़ा81) और छुप कर मशवरत की।(62) बोले बेशक यह दोनों (फ़ा82) ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जायें।(63) तो अपना दाँव पक्का कर लो फिर परा बांध कर आओ और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब रहा।(64) बोले (फ़ा83) ऐ मूसा या तो तुम डालो (फ़ा84) या हम पहले डालें।(65) (फ़ा85) मूसा ने कहा बल्कि तुम ही डालो (फ़ा86) जभी उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनके जादू के ज़ोर से उनके ख़्याल में दौड़ती मालूम हुईं।(66) (फ़ा87) तो अपने जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया।(67) हमने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है।(68) और डाल तो दे जो तेरे दाहिने हाथ में है (फ़ा88) वह उनकी बनावटों को निगल जाएगा वह जो बनाकर लाए हैं वह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे।(69) (फ़ा89) तो सब जादूगर सज्दे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा का रब है।(70) (फ़ा90) फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वह

(फ़ा79) किसी को उसका शरीक करके (फ़ा80) अल्लाह तआ़ला पर। (फ़ा81) यानी जादूगर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का यह कलाम सुन कर आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए बाज़ कहने लगे कि यह भी हमारी मिस्ल जादूगर हैं बाज़ ने कहा कि यह बातें ही जादूगरों की नहीं वह अल्लाह पर झूठ बांधने को मना करते हैं। (फ़ा82) यानी हज़रत मूसा व हज़रत हारून। (फ़ा83) जादूगर (फ़ा84) पहले अपना अ़सा (फ़ा85) अपने सामान से इब्तेदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की राय मुबारक पर छोड़ा और उसकी बरकत से आख़िर कार अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया। (फ़ा86) यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इस लिए फ़रमाया कि जो कुछ जादू के मक्र हैं पहले वह सब ज़ाहिर कर चुकें उसके बाद आप मोअ्जेज़ा दिखायें और हक़ बातिल को मिटाये और मोअ्जेज़ा सेहर को बातिल करे तो देखने वालों को बसीरत व इबरत हासिल हो चुनांचे जादूगरों ने रस्सियां लाठियां वग़ैरह जो सामान लाये थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी। (फ़ा87) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने देखा कि ज़मीन सांपों से भर गई और मीलों के मैदान में सांप ही सांप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस बातिल नज़र बन्दी से मसहूर हो गए कहीं ऐसा न हो कि बाज़ मोअ्जेज़ा देखने से पहले ही उसके गरविदा हो जायें और मोअ्जेज़ा न देखें। (फ़ा88) यानी अपना अ़सा (फ़ा89) फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपना अ़सा डाला वह जादूगरों के तमाम अज़दहों और सांपों को निगल गया और आदमी उसके ख़ौफ़ से घबरा **(बक़िया सफ़हा 529 पर)**

لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا
لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا
وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾
وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ

ल–कबीरु कुमुल्लज़ी अ़ल्ल–म–कुमुस् सिह्–र फ–लउ क़त्तिअ़न्–न ऐदि–यकुम् व अर्जु–लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव् व लउ–सल्लि–बन्नकुम् फ़ी जुज़ूअ़िन् नख़्लि व ल–तअ़्–लमुन्–न अय्युना अ–शद्दु अ़ज़ाबंव् व अब्क़ा(71)क़ालू लन् नुअ्सि–र–क अ़ला मा जा–अना मिनल् बय्यिनाति वल्लज़ी फ़–त–रना फ़क़्ज़ि मा अन्–त क़ाज़िन् इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल् हयातद्दुन्या(72)इन्ना आमन्ना बि–रब्बिना लियग़्फ़ि–र लना ख़तायाना व मा अक्रह्–तना अ़लैहि मिनस्सिह्रि वल्लाहु ख़ैरुंव् व अब्क़ा (73)इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़इन्–न लहू जहन्न–म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या (74)व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अ़मिलस्सालिहाति फ़उलाइ–क लहुमुद् द–रजातुल् अुला(75) जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व ज़ालि–क जज़ाउ मन् त–ज़क्का (76)व लक़द् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी फ़ज़्रिब् लहुम् तरीक़न् फ़िल्बह्रि य–ब–सल् ला तख़ाफ़ु द–र–कंव् व ला तख़्शा(77)फ़–अत्ब–अहुम् फ़िरऔनु बिजुनूदिही

तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम सब को जादू सिखाया (फ़91) तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा (फ़92) और तुम्हें खजूर के डुंड पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किसका अ़ज़ाब सख़्त और देरपा है।(71) (फ़93) बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे उन रौशन दलीलों पर जो हमारे पास आईं (फ़94) हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तू तो कर चुक जो तुझे करना है (फ़95) तू इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा।(72) (फ़96) बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़तायें बख़्श दे और वह जो तूने हमें मजबूर किया जादू पर (फ़97) और अल्लाह बेहतर है (फ़98) और सब से ज़्यादा बाक़ी रहने वाला।(73) (फ़90) बेशक जो अपने रब के हुजूर मुजरिम (फ़100) होकर आए तो ज़रूर उसके लिए जहन्नम है जिस में न मरे (फ़101) न जिये।(74) (फ़102) और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों (फ़103) तो उन्हीं के दर्जे ऊंचे।(75) बसने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें हमेशा उनमें रहें और यह सिला है उसका जो पाक हुआ।(76) (फ़104) (रुकूअ़ 12) और बेशक हमने मूसा को 'वह्री' की (फ़105) कि रातों रात मेरे बन्दों को ले चल (फ़106) और उनके लिए दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे (फ़107) तुझे डर न होगा कि फ़िरऔन आ ले और न ख़तरा।(77) (फ़108) तो उनके पीछे फ़िरऔन पड़ा अपने लश्कर लेकर (फ़109)

(फ़91) यानी जादू में वह उस्तादे कामिल और तुम सब से फ़ायक़ है। (मआ़ज़ल्लाह) (फ़92) यानी दाहिने हाथ और बायें पाँव (फ़93) इससे फ़िरऔन मलऊन की मुराद यह थी कि उसका अ़ज़ाब सख़्त तर है या रब्बुल आ़लमीन का, फ़िरऔन का यह मुतकब्बिराना कलिमा सुन कर वह जादूगर (फ़94) यदे बैज़ा और असाए मूसा बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि उनका इस्तेदलाल यह था कि अगर तू हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ़्जेज़ा को भी सहर कहता है तो बता वह रस्से और लाठियां कहां गईं बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि बय्यिनात से मुराद जन्नत और उसमें अपने मनाज़िल का देखना है। (फ़95) हमें उसकी कुछ परवाह नहीं। (फ़96) आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुनिया ज़ाइल और यहां की हर चीज़ फ़ना होने वाली है तू मेहरबान भी हो तो बक़ाए दवाम नहीं दे सकता फिर ज़िन्दगानी देना और उसकी राहतों के ज़वाल का क्या ग़म बिलखुसूस इसको जो जानता है कि आख़िरत में आमाले दुनिया की जज़ा मिलेगी। (फ़97) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबले में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔन ने जब जादूगरों को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबले के लिए बुलाया था तो **(बक़िया सफ़हा 529 पर)**

فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ
هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ
اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ
اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَا

फ़–ग़शि–यहुम् मिनल् यम्मि मा ग़शि–यहुम्(78)व अ–ज़ल्–ल फ़िर्औनु क़ौ–महू व मा हदा(79) या–बनी इस्राईल–ल क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अ़दुव्विकुम् व वा–अ़दनाकुम् जानिबत् तूरिल् ऐ–म–न व नज़्ज़ल्ना अ़लैकुमुल् मन्–न वस्सलवा(80)कुलू मिन् तय्यिबाति मा र–ज़क़्नाकुम् वला तत्ग़ौ फ़ीहि फ़–यहिल्–ल अ़लैकुम् ग़–ज़बी व मंय्यह्लिल् अ़लैहि ग़–ज़बी फ़–क़द् हवा(81)व इन्नी ल–ग़फ़्फ़ारुल् लिमन् ता–ब व आ–म–न व अ़मि–ल सालिहन् सुम्मह्तदा(82)व मा अअ्–ज–ल–क अ़न् क़ौमि–क या मूसा(83)क़ा–ल हुम् उलाइ अ़ला अ–स़री व अ़जिल्तु इलै–क रब्बि लि–तर्ज़ा(84) क़ा–ल फ़इन्ना क़द् फ़तन्ना क़ौ–म–क मिम् बअ्दि–क व अ–ज़ल्ल–हुमुस् सामिरिय्यु(85)फ़–र–ज–अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा–न असिफ़न् क़ा–ल या क़ौमि अलम् यअ़िद्कुम् रब्बुकुम् वअ़्दन् ह़–स–नन् अ–फ़ता–ल अ़लैकुमुल् अ़ह्दु अम् अरत्तुम् अंय्यहिल्–ल अ़लैकुम् ग़–ज़बुम् मिर्रब्बिकुम् फ़–अख़्लफ़्तुम् मौअ़िदी(86)क़ालू मा

तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया।(78) (फ़110) और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और राह न दिखाई।(79) (फ़111) ऐ बनी इसराईल बेशक हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन (फ़112) से नजात दी और तुम्हें तूर की दाहिनी तरफ़ का वादा दिया (फ़113) और तुम पर मन और सलवा उतारा।(80) (फ़114) खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दी और उसमें ज़्यादती न करो (फ़115) कि तुम पर मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वह गिरा।(81) (फ़116) और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिसने तौबा की (फ़117) और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।(82) (फ़118) और तूने अपनी क़ौम से क्यों जल्दी की ऐ मूसा।(83) (फ़119) अ़र्ज़ की कि वह यह हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी तरफ़ मैं जल्दी करके हाज़िर हुआ कि तू राज़ी हो।(84) (फ़120) फ़रमाया तो हमने तेरे आने के बाद तेरी क़ौम को (फ़121) बला में डाला और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया।(85) (फ़122) तो मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा (फ़123) ग़ुस्सा में भरा अफ़सोस करता (फ़124) कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा न किया था (फ़125) क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुमने मेरा वादा ख़िलाफ़ किया।(86) (फ़126) बोले हमने

(फ़110) वह ग़र्क़ हो गए और पानी उनके सरों से ऊंचा हो गया। (फ़111) उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने और एहसान का ज़िक्र किया और फ़रमाया। (फ़112) यानी फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम (फ़113) कि हम मूसा अ़लैहिस्सलाम को वहां तौरेत अ़ता फ़रमायेंगे जिस पर अ़मल किया जाये। (फ़114) तीह में और फ़रमाया (फ़115) नाशुक्री और कुफ़राने निअ़मत करके उन निअ़मतों को मआ़सी और गुनाहों में ख़र्च करके या एक दूसरे पर ज़ुल्म करके (फ़116) जहन्नम में और हलाक हुआ (फ़117) शिर्क से (फ़118) ता दमे आख़िर (फ़119) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब अपनी क़ौम में से सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब करके तौरेत लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए फिर कलामे परवरदिगार के शौक़ में उन से आगे बढ़ गए उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ इस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया व मा अअ्–ज–ल–क तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़120) यानी तेरी रज़ा और ज़्यादा हो मसला इस आयत से इज्तेहाद का जवाज़ साबित हुआ (मदारिक) (फ़121) जिन्हें आप ने हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम के साथ छोड़ा है। (फ़122) गो–साला परस्ती की दावत देकर मसला इस आयत में इज़लाल यानी गुमराह करने की निस्बत सामरी की तरफ़ फ़रमाई गई क्योंकि वह उसका सबब व बाइस हुआ इससे साबित हुआ कि किसी चीज़ को सबब की तरफ़ निस्बत करना जाइज़ है इसी तरह कह सकते **(बक़िया सफ़हा 529 पर)**

أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ
فَقَالُوا هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن
قَبْلُ يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩٠﴾ قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩١﴾ قَالَ يَا هَارُونُ مَا
مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ﴿٩٢﴾ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾ قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي

अख़्लफ़्ना मौअि–द–क बि–मल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम् मिन् ज़ी–नतिल्क़ौमि फ़–क़–
ज़फ़्नाहा फ़–कज़ालि–क अल्क़स्सामिरिय्यु(87)फ़–अख़्र–ज लहुम् अिज्लन् ज–स–दल्लहू ख़ुवारुन्
फ़क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ़–नसिय(88)अ–फ़ला यरौ–न अल्ला यर्जिअु इलैहिम्
क़ौलंव् व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्–रंव् व ला नफ़्आ(89)व ल–क़द् क़ा–ल लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु
या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही व इन्–न रब्बकुमुर्–रह्मानु फ़त्तबिअूनी व अतीअू अम्री(90) क़ालू
लन् नब्–र–ह् अ़लैहि आ़किफ़ी–न ह़त्ता यर्जि–अ इलैना मूसा(91)क़ा–ल या हारूनु मा म–न–अ–क
इज़् रऐ–तहुम् ज़ल्लू(92)अल्ला तत्तबि–अ़नि अ–फ़–अ़सै–त अम्री(93)क़ा–ल यब्नउम्–म ला तअ्ख़ुज़्
बिलिह्–यती व ला बि–रअ्सी इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू–ल फ़र्रक़्–त बै–न बनी इस्राई–ल व
लम् तर्क़ुब् क़ौली(94)क़ा–ल फ़मा ख़त्बु–क या सामिरिय्यु(95)क़ा–ल बसुरतु बिमा लीम् यब्सुरू बिही
फ़–क़–बज़्तु क़ब्ज़–तम् मिन् अ–स–रिर्रसूलि फ़–नबज़्तुहा व कज़ालि–क सव्व–लत् ली

आपका वादा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हम से कुछ बोझ उठवाए गए उस क़ौम के गहने के (फ़127) तो हमने उन्हें (फ़128) डाल दिया फिर उसी तरह सामरी ने डाला।(87) (फ़129) तो उसने उनके लिए एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़ गाय की तरह बोलता (फ़130) तो बोले (फ़131) यह है तुम्हारा मअ़बूद और मूसा का मअ़बूद मूसा तो भूल गए।(88) (फ़132) तो क्या नहीं देखते कि वह (फ़133) उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उनके किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता।(89) (फ़134) (रुकूअ़ 13) और बेशक उनसे हारून ने इससे पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूं ही है कि तुम इसके सबब फ़ितने में पड़े (फ़135) और बेशक तुम्हारा रब रहमान है तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो।(90) बोले हम तो इस पर आसन मारे जमे रहेंगे (फ़136) जब तक हमारे पास मूसा लौट के आयें।(91) (फ़137) मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुमने उन्हें गुमराह होते देखा था।(92) कि मेरे पीछे आते (फ़138) तो क्या तुमने मेरा हुक्म न माना।(93) कहा ऐ मेरे माँ जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और न मेरे सर के बाल मुझे यह डर हुआ कि तुम कहोगे तुमने बनी इसराईल में तफ़रक़ा डाल दिया और तुमने मेरी बात का इन्तेज़ार न किया।(94) (फ़139) मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामरी।(95) (फ़140) बोला मैंने वह देखा जो लोगों ने न देखा (फ़141) तो एक मुट्ठी भर ली फ़रिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया (फ़142) और मेरे जी को यही

(फ़127) यानी क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़ेवरों के जो बनी इसराईल ने उन लोगों से आ़रियत के तौर पर मांग लिए थे। (फ़128) सामरी के हुक्म से आग में (फ़129) उन ज़ेवरों को जो उसके पास थे और उस ख़ाक को जो हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम के घोड़े के क़दम के नीचे से उसने हासिल की थी। (फ़130) यह बछड़ा सामरी ने बनाया और उसमें कुछ सुराख़ इस तरह रखे कि जब उनमें हवा दाख़िल हो तो उससे बछड़े की आवाज़ की तरह आवाज़ पैदा हो एक क़ौल यह भी है कि वह अस्पे जिबरील की ख़ाक ज़ेरे क़दम डालने से ज़िन्दा होकर बछड़े की तरह बोलता था। (फ़131) सामरी और उसके मुत्तबेईन (फ़132) यानी मूसा मअ़बूद को भूल गए और उसको यहां छोड़ कर उसकी जुस्तजू में तूर पर चले गए (मआ़ज़ल्लाह) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि नसी का फ़ाइल सामरी है और माना यह हैं कि सामरी ने जो बछड़े को मअ़बूद बनाया वह अपने रब को भूल गया या वह हुदूसे अजसाम से इस्तेदलाल करना भूल गया। (फ़133) बछड़ा (फ़134) ख़िताब से भी आ़जिज़ और नफ़ा व ज़रर से भी वह किस तरह मअ़बूद हो सकता है। (फ़135) तो उसे न पूजो। (फ़136) गोसाला परस्ती पर क़ाइम (**बक़िया सफ़हा 529 पर**)

نَفْسِيْ ۝96 قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ وَانْظُرْ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا
لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝97 اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝98 كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ
اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝99 مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۝100 خٰلِدِيْنَ فِيْهِ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۝101 يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ
الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝102 يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۝103 نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۝104
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝105 فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝106 لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَاۤ اَمْتًا ۝107 يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ

नफ़्सी(96)क़ा–ल फ़ज़्हब् फ़इन्–न ल–क फ़िल्हयाति अन् तक़ू–ल ला मिसा–स व इन्–न ल–क
मौअिदल् लन् तुख़्ल–फ़हू वन्ज़ुर् इला इलाहिकल् लज़ी ज़ल्–त अलैहि आकिफ़न् ल–नुहर्रि क़न्नहू
सुम्–म ल–नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा(97)इन्नमा इलाहुकुमुल्लाहुल् लज़ी ला इला–ह इल्ला
हु–व वसि–अ कुल्–ल शैइन् अिल्मा(98)कज़ालि–क नक़ुस्सु अलै–क मिन् अम्बाइ मा क़द् स–ब–क़
व क़द् आतैना–क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा(99)मन् अअ्–र–ज़ अन्हु फ़–इन्नहू यह़्मिलु यौमल्क़िया–मति
विज़्रा(100)ख़ालिदी–न फ़ीहि व सा–अ लहुम् यौमल्क़िया–मति हिम्ला(101)यौ–म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि
व नह़्शुरुल् मुज्रिमी–न यौ–मइज़िन् ज़ुरक़ंय्(102)य–तख़ा फ़तू–न बै–नहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला
अश्रा(103)नह़्नु अअ्–लमु बिमा यक़ूलू–न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् तरी–क़तन् इल्लबिस्तुम्
इल्ला यौमा(104)व यस्अलू–न–क अनिल्–जिबालि फ़क़ुल् यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा(105)फ़–य–
ज़रुहा क़ाअन् सफ़्–स–फ़(106)ल्ला तरा फ़ीहा अि–वजंव् व ला अम्ता(107)यौ– मइज़िंय्यत्तबिअूनद
दाअि–य ला अि–व–ज लहू

भला लगा।(96) (फ़143) कहा तू चलता बन (फ़144) कि दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यह है कि (फ़145) तू कहे छू न जा (फ़146) और बेशक तेरे लिए एक वादा का वक़्त है (फ़147) जो तुझ से ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मअ़बूद को देख जिसके सामने तू दिन भर आसन मारे रहा (फ़148) क़सम है हम ज़रूर इसे जलायेंगे फिर रेज़ा-रेज़ा करके दरिया में बहायेंगे।(97) (फ़149) तुम्हारा मअ़बूद तो वही अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ को उसका इल्म मुहीत है।(98) हम ऐसा ही तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं। और हमने तुमको अपने पास से एक ज़िक्र अ़ता फ़रमाया।(99) (फ़150) जो उससे मुंह फेरे (फ़151) तो बेशक वह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा।(100) (फ़152) वह हमेशा उसमें रहेंगे (फ़153) और वह क़ियामत के दिन उनके हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा।(101) जिस दिन सूर फूंका जाएगा (फ़154) और हम उस दिन मुजरिमों को (फ़155) उठायेंगे नीली आँखें।(102) (फ़156) आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुनिया में न रहे मगर दस रात।(103) (फ़157) हम ख़ूब जानते हैं जो वह (फ़158) कहेंगे जबकि उनमें सब से बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे।(104) (फ़159) (रुकूअ़ 14) और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं (फ़160) तुम फ़रमाओ उन्हें मेरा रब रेज़ा-रेज़ा कर के उड़ा देगा।(105) तो ज़मीन को पट पर हमवार करके छोड़ेगा।(106) कि तू उसमें नीचा ऊंचा कुछ न देखे।(107) उस दिन पुकारने वाले के पीछे दौड़ेंगे (फ़161) उसमें कजी न होगी (फ़162)

(फ़143) और यह फ़ेअ़्ल मैं ने अपनी ही हवाए नफ़्स से किया कोई दूसरा इसका बाइस व मुहर्रिक न था इस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़144) दूर हो जा। (फ़145) जब तुझ से कोई मिलना चाहे जो तेरे हाल से वाक़िफ़ न हो तो उससे (फ़146) यानी सब से अलाहिदा रहना न तुझ से कोई छूए न तू किसी से छूए लोगों से मिलना उसके लिए कुल्ली तौर पर ममनूअ़ क़रार दिया गया और मुलाक़ात मुकालमत ख़रीद व फ़रोख़्त हर एक के साथ हराम कर दी गई और अगर इत्तेफ़ाक़न कोई उससे छू जाता तो वह और छूने वाला दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला होते वह जंगल में यही शोर मचाता फिरता था कि कोई छू न जाना और वहशियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन निहायत तलख़ी व वहशत में गुज़ारता था। (फ़147) यानी अ़ज़ाब के वादे का आख़िरत में बाद इस अ़ज़ाबे दुनिया के तेरे शिर्क व फ़साद अंगेज़ी पर। (फ़148) और (बक़िया सफ़हा 529 पर)

وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۝١٠٨ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ۝١٠٩ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ۝١١٠ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝١١١ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ
ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ۝١١٢ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝١١٣ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۝١١٤ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۝١١٥
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ۝١١٦ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝١١٧

व ख़–श–अ़तिल् अस्वातु लिर्रह़्मानि फ़ला तस्मअु इल्ला हम्सा(108)यौ–मइज़िल् ला तन्फ़अुश्
शफ़ा–अ़तु इल्ला मन् अज़ि–न लहुर्रह़्मानु व रज़ि–य लहू क़ौला(109)यअ़्लमु मा बै–न ऐदीहिम्
व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युह़ीतू–न बिही अ़िल्मा(110)व अ़–नतिल् वुजूहु लिल्ह़य्यिल् क़य्यूमि व
क़द् ख़ा–ब मन् ह़–म–ल ज़ुल्मा(111)व मंय्यअ़्–मल् मिनस्सालिह़ाति व हु–व मुअ्मिनुन् फ़ला यख़ाफ़ु
ज़ुल्मंव् व ला हज़्मा(112)व कज़ालि–क अन्ज़ल्नाहु क़ुरआनन् अ़–रबिय्यंव् व सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्–वअ़ीदि
ल–अ़ल्लहुम् यत्तक़ू–न औ युह़्दिसु लहुम् ज़िक्रा(113)फ़–तआ़लल्लाहुल् मलिकुल्ह़क़्क़ु व
ला तअ़्–जल् बिल्क़ुरआनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलै–क वह़्युहू व क़ुर्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा(114)व
ल–क़द् अ़हिद्ना इला आ–द–म मिन् क़ब्लु फ़–नसि–य व लम् नजिद् लहू अ़ज़्मा(115)व इज़् क़ुल्ना
लिल्मलाइ–कतिस्जुदू लिआ–द–म फ़–स–जदू इल्ला इब्ली–स अबा(116)फ़क़ुल्ना या आ–दमु इन्–
न हाज़ा अ़दुव्वुल् ल–क व लिज़ौजि–क फ़ला युख़रि जन्नकुमा मिनल्जन्नति फ़–तश्क़ा(117)

और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर (फ़163) पस्त होकर रह जायेंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत आहिस्ता आवाज़।(108) (फ़164) उस दिन किसी की शफ़ाअ़त काम न देगी मगर उसकी जिसे रहमान ने (फ़165) इज़्न दे दिया है और उसकी बात पसन्द फ़रमाई।(109) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे (फ़166) और उनका इल्म उसे नहीं घेर सकता।(110) (फ़167) और सब मुंह झुक जायेंगे उस ज़िन्दा क़ाइम रखने वाले के हुज़ूर (फ़168) और बेशक नामुराद रहा जिसने ज़ुल्म का बोझ लिया।(111) (फ़169) और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसलमान तो न उसे ज़्यादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़्सान का।(112) (फ़170) और यूं ही हमने उसे अ़रबी क़ुरआन उतारा और उसमें तरह तरह से अ़ज़ाब के वादे दिये (फ़171) कि कहीं उन्हें डर हो या उनके दिल में कुछ सोच पैदा करे।(113) (फ़172) तो सब से बुलन्द है अल्लाह सच्चा बादशाह (फ़173) और क़ुरआन में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' तुम्हें पूरी न होले (फ़174) और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़्यादा दे।(114) और बेशक हमने आदम को इससे पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था (फ़175) तो वह भूल गया और हमने उसका क़स्द न पाया।(115) (रुकूअ़ 15) और जब हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दा में गिरे मगर इबलीस उसने न माना।(116) तो हमने फ़रमाया ऐ आदम बेशक यह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है (फ़176) तो ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे फिर तू मशक़्क़त में पड़े।(117) (फ़177)

(फ़163) हैबत व जलाल से (फ़164) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया ऐसी कि उस में सिर्फ़ लबों की जुम्बिश होगी। (फ़165) शफ़ाअ़त करने का (फ़166) यानी तमाम माज़ियात व मुस्तक़बिलात और जुमला उमूरे दुनिया व आख़िरत यानी अल्लाह तआ़ला का इल्म बन्दों के ज़ात व सिफ़ात और जुमला हालात को मुहीत है (फ़167) यानी तमाम कायनात का इल्म ज़ाते इलाही का इहाता नहीं कर सकता उसकी ज़ात का इदराक उलूमे कायनात की रसाई से बरतर है वह अपने अस्मा व सिफ़ात और आसारे क़ुदरत व शुयूने हिकमत से पहचाना जाता है। शेअ़्र– कुजा दरिया बद ऊरा अक़्ल चालाक+कि ऊ बाला तर अस्त अज़ हदे इदराक नज़र कुन अन्दर अस्मा व सिफ़ातश+कि वाक़िफ़ नेस्त कस अज़ कुनः ज़ातश। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के माना यह बयान किये हैं कि उलूमे ख़ल्क़ मालूमाते इलाहिया का इहाता नहीं कर सकते बज़ाहिर यह इबारतें दो हैं मगर मआल पर नज़र रखने वाले ब-आसानी समझ लेते हैं कि फ़र्क़ सिर्फ़ तअ़्बीर का है (फ़168) और हर एक शाने इज्ज़ व नियाज़ के साथ हाज़िर होगा किसी में सरकशी न रहेगी अल्लाह तआ़ला के क़हर व हुकूमत का (बक़िया सफ़हा 530 पर)

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ﴿١١٨﴾ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ﴿١٢٠﴾ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ رَبَّهُۥ فَغَوَىٰ ﴿١٢١﴾ ثُمَّ
اجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا
يَشْقَىٰ ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِى فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُۥ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىٓ أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذَٰلِكَ
أَتَتْكَ ءَايَٰتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنسَىٰ ﴿١٢٦﴾ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنۢ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ وَلَعَذَابُ الْءَاخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَىٰٓ ﴿١٢٧﴾ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

इन्–न ल–क अल्ला तजू–अ़ फ़ीहा व ला तअ़्रा(118)व अन्न–क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा (119)फ़–वस्–व–स इलैहिश्शैतानु क़ा–ल या आ–दमु हल् अदुल्लु–क अ़ला श–ज–रतिल् खुल्दि व मुल्किल् ला यबला(120)फ़–अ–कला मिन्हा फ़–ब–दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव् व रक़िल् जन्नति व अ़सा आ–दमु रब्बहू फ़–ग़वा(121)सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता–ब अ़लैहि व हदा(122)क़ालहबिता मिन्हा जमीअ़म् बअ़्ज़ुकुम् लिबअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़–मनित् त–ब–अ़ हुदा–य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा(123)व मन् अअ़्र–ज़ अ़न् ज़िक्री फ़इन्–न लहू मअ़ी–श–तन् ज़न्कंव् व नह्शुरुहू यौमल्क़िया–मति अअ़्मा(124)क़ा–ल रब्बि लि–म ह़–शर्–तनी अअ़्मा व क़द् कुन्तु बसीरा(125)क़ा–ल कज़ालि–क अ–तत्–क आयातुना फ़–नसी–तहा व कज़ालिकल् यौ–म तुन्सा(126)व कज़ालि–क नज्ज़ी मन् अस्–र–फ़ व लम् युअ्मिम् बिआयाति रब्बिही व ल–अ़ज़ाबुल् आख़ि–रति अ–शद्दु व अब्क़ा(127)अ–फ़–लम् यह्दि लहुम्

बेशक तेरे लिए जन्नत में यह है कि न तू भूखा हो और न नंगा हो।(118) और यह कि तुझे न उसमें प्यास लगे न धूप।(119) (फ़ा178) तो शैतान ने उसे वसवसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूं हमेशा जीने का पेड़ (फ़ा179) और वह बादशाही कि पुरानी न पड़े।(120) (फ़ा180) तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया अब उन पर उनकी शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुईं (फ़ा181) और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे (फ़ा182) और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़ज़िश वाक़ेअ़ हुई तो जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई।(121) (फ़ा183) फिर उसके रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रहमत से रुजूअ़ फ़रमाई और अपने कुर्बे ख़ास की राह दिखाई।(122) फ़रमाया तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो (फ़ा184) जो मेरी हिदायत का पैरो हुआ वह न बहके (फ़ा185) न बदबख़्त हो।(123) (फ़ा186) और जिसने मेरी याद से मुंह फेरा (फ़ा187) तो बेशक उस के लिए तंग ज़िन्दगानी है (फ़ा188) और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठायेंगे।(124) कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तूने क्यों अन्धा उठाया मैं तो अंखियारा था।(125) (फ़ा189) फ़रमाएगा यूं ही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं (फ़ा190) तूने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर न लेगा।(126) (फ़ा191) और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हद से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त तर और सब से देरपा है।(127) तो क्या उन्हें उससे राह न मिली कि

(फ़ा178) हर तरह का ऐश व राहत जन्नत में मौजूद है कसब व मेहनत से बिल्कुल अमन है (फ़ा179) जिसको खाकर खाने वाले को दाइमी ज़िन्दगी हासिल हो जाती है (फ़ा180) और उसमें ज़वाल न आये (फ़ा181) यानी बहिश्ती लिबास उनके जिस्म से उतर गए। (फ़ा182) सत्र छुपाने और जिस्म ढकने के लिए (फ़ा183) और उस दरख़्त के खाने से दाइमी हयात न मिली फिर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तौबा व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हुए और बारगाहे इलाही में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वसीला से दुआ़ की। (फ़ा184) यानी किताब और रसूल। (फ़ा185) यानी दुनिया में (फ़ा186) आख़िरत में क्योंकि आख़िरत की बद-बख़्ती दुनिया में तरीक़े हक़ से बहकने का नतीजा है तो जो कोई किताबे इलाही और रसूले बरहक़ का इत्तेबाअ़. करे और उनके हुक्म के मुताबिक़ चले वह दुनिया में बहकने से और आख़िरत में उसके अ़ज़ाब व (बक़िया सफ़्हा 530 पर)

كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿١٢٨﴾ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا
وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْضَىٰ ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾ وَأْمُرْ أَهْلَكَ
بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي
الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾
قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

*कम् अह्–लक्ना क़ब्–लहुम् मिनल्कुरूनि यम्शू–न फ़ी मसाकिनिहिम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क
लआयातिल् लिउलिन्नुहा(128)व लौला कलि–मतुन् स–ब–क़त् मिर्रब्बि–क लका–न लिज़ामंव् व
अ–जलुम् मुसम्–म(129)फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू–न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि–क क़ब्–ल तुलूअ़िश्
शम्सि व क़ब्–ल ग़ुरूबिहा व मिन् आनाइल् लैलि फ़–सब्बिह् व अत्राफ़न् नहारि ल–अ़ल्ल–क तर्ज़ा
(130)व ला तमुद्–दन्–न अ़ैनै–क इला मा मत्तअ़्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् ज़ह्–र–तल् ह़यातिद्
दुन्या लि–नफ़्ति–नहुम् फ़ीहि व रिज़्कु रब्बि–क ख़ैरुंव् व अब्क़ा(131)वअ़्मुर् अह्–ल–क बिस्सलाति
वस्तबिर् अ़लैहा ला नस्–अलु–क रिज़्क़न् नह़्नु नरज़ुकु–क वल्आक़ि–बतु लित्तक़्वा(132)व क़ालू
लौला यअ़्तीना बिआ–यतिम् मिर्रब्बिही अ–व लम् तअ़्तिहिम् बय्यि–नतु मा फ़िस्सुहुफ़िल् ऊला
(133)व लौ अन्ना अह्–लक्नाहुम् बि–अ़ज़ाबिम् मिन् क़ब्लिही लक़ालू रब्बना लौला अर्सल्–त इलैना
रसूलन् फ़–नत्तबि–अ़ आयाति–क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्–ल व नख़्ज़ा(134)कुल् कुल्लुम् मु–
त–रब्बिसुन् फ़–त–रब्बसू फ़–स–तअ़्लमू–न मन् अस्हाबुस् सिरातिस्सविय्यि व मनिह्तदा(135)*

हमने उनसे पहले कितनी संगतें हलक कर दीं (फ़ा192) कि यह उनके बसने की जगह चलते फिरते हैं (फ़ा193) बेशक उसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों को।(128) (फ़ा194) (रुकूअ़ 16) और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती (फ़ा195) तो ज़रूर अ़ज़ाब उन्हें (फ़ा196) लिपट जाता और अगर न होता एक वादा ठहराया हुआ।(129) (फ़ा197) तो उनकी बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले (फ़ा198) और उसके डूबने से पहले (फ़ा199) और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो (फ़ा200) और दिन के किनारों पर (फ़ा201) इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो।(130) (फ़ा202) और ऐ सुनने वाले अपनी आँखें न फैला उसकी तरफ़ जो हमने काफ़िरों के जोड़ों को बरतने के लिए दी है जीती दुनिया की ताज़गी (फ़ा203) कि हम उन्हें उसके सबब फ़ितना में डालें (फ़ा204) और तेरे रब का रिज़्क़ (फ़ा205) सब से अच्छा और सब से देरपा है।(131) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद उस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते (फ़ा206) हम तुझे रोज़ी देंगे (फ़ा207) और अन्जाम का भला परहेज़गारी के लिए।(132) और काफ़िर बोले यह (फ़ा208) अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते (फ़ा209) और क्या उन्हें इसका बयान न आया जो अगले सहीफ़ों में है।(133) (फ़ा210) और अगर हम उन्हें किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो (फ़ा211) ज़रूर कहते ऐ हमारे रब तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते क़ब्ल इसके कि ज़लील व रुसवा होते।(134) तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं (फ़ा212) तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे (फ़ा213) कि कौन है सीधी राह वाले और किसने हिदायत पाई।(135) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा192) जो रसूलों को नहीं मानती थीं (फ़ा193) यानी क़ुरैश अपने सफ़रों में उनके दयार पर गुज़रते हैं और उनकी हलाकत के निशान देखते हैं (फ़ा194) जो इबरत हासिल करें और समझें कि अम्बिया की तकज़ीब और उनकी मुख़ालफ़त का अन्जाम बुरा है (फ़ा195) यानी यह कि उम्मते मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़ज़ाब में ताख़ीर की जाएगी (फ़ा196) **(बक़िया सफ़हा 530 पर)**

(बक़िया सफ़हा 497 का) यह लड़का काफ़िर ही पैदा हुआ था इमाम सुबकी ने फ़रमाया कि हाले बातिन जान कर बच्चे को क़त्ल कर देना हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम के साथ ख़ास है उन्हें इसकी इजाज़त थी। अगर कोई वली किसी बच्चे के ऐसे हाल पर मुत्तलअ़ हो तो उसको क़त्ल जाइज़ नहीं है किताब अ़राइस में है कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र से फ़रमाया कि तुम ने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो यह उन्हें गिराँ गुज़रा और उन्होंने उस लड़के का कन्धा तोड़ कर उसका गोश्त चीरा तो उसके अन्दर लिखा हुआ था काफ़िर है कभी अल्लाह पर ईमान न लाएगा। (जुमल) (फ़171) बच्चा गुनाहों और नजासतों से पाक और (फ़172) जो वालिदैन के साथ तरीक़े अदब व हुस्ने सुलूक और मवद्दत और मुहब्बत रखता हो मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक बेटी अ़ता की जो एक नबी के निकाह में आई और उससे नबी पैदा हुए जिनके हाथ पर अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को हिदायत दी बन्दे को चाहिए कि अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहे इसी में बेहतरी होती है (फ़173) जिनके नाम असरम और सरीम थे (फ़174) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना चांदी मदफ़ून था हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उसमें सोने की एक तख़्ती थी उस पर एक तरफ़ लिखा था उसका हाल अ़जीब है जिसे मौत का यक़ीन हो उसको ख़ुशी किस तरह होती है उसका हाल अ़जीब है जो क़ज़ा व क़दर का यक़ीन रखे उसको गुस्सा कैसे आता है उसका हाल अ़जीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो वह क्यो तअ़ब में पड़ता है उसका हाल अ़जीब है जिसे हिसाब का यक़ीन हो वह कैसे ग़ाफ़िल रहता है उसका हाल अ़जीब है जिसको दुनिया के ज़वाल व तग़य्युर का यक़ीन हो वह कैसे मुतमइन होता है और उसके साथ लिखा था ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह और दूसरी जानिब उस लौह पर लिखा था मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं मैं यकता हूं मेरा कोई शरीक नहीं मैं ने ख़ैरो शर पैदा की उसके लिए ख़ुशी जिसे मैंने ख़ैर के लिए पैदा किया और उसके हाथों पर ख़ैर जारी की उसके लिए तबाही जिसको शर के लिए पैदा किया और उसके हाथों पर शर जारी की (फ़175) उसका नाम काशेह था और यह शख़्स परहेज़गार था हज़रत मुहम्मद इब्ने मुन्कदिर ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला बन्दे की नेकी से उसकी औलाद को और उसकी औलाद की औलाद को और उसके कुम्बा वालों को और उसके मुहल्लादारों को अपनी हिफ़ाज़त में रखता है। (सुब्हानल्लाह)

(बक़िया सफ़हा 498 का) उलमा इस पर हैं कि मशाइख़े सूफ़िया व असहाबे इरफ़ान का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं शैख़ अबू अ़मर बिन सलाह ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि हज़रत ख़िज़्र जम्हूर उलमा व सालेहीन के नज़दीक ज़िन्दा हैं यह भी कहा गया है कि हज़रत ख़िज़्र व इलियास दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल ज़मानए हज में मिलते हैं यह भी मन्क़ूल है कि हज़रत ख़िज़्र ने चश्मए हयात में .ग़ुस्ल फ़रमाया और उसका पानी पिया वल्लाहु तआ़ला आ़लम (ख़ाज़िन) (फ़179) अबू जहल वग़ैरह कुफ़्फ़ारे मक्का या यहूद ब-तरीक़े इम्तेहान (फ़180) ज़ुलक़रनैन का नाम इस्कन्दर है यह हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम के ख़ालाज़ाद भाई हैं उन्होंने इस्कन्दरिया बनाया और उसका नाम अपने नाम पर रखा हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम उनके वज़ीर और साहबे लवा थे दुनिया में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो तमाम दुनिया पर हुकमरान थे दो मोमिन हज़रत .ज़ुलक़रनैन और हज़रत सुलैमान अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिमुस्सलाम और दो काफ़िर नमरूद और बख़्त नसर और अ़न्क़रीब एक पांचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिनका इस्मे मुबारक हज़रत इमाम महदी है उनकी हुकूमत तमाम रूए ज़मीन पर होगी .ज़ुलक़रनैन की नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है हज़रत अली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वह न नबी थे न फ़रिश्ते अल्लाह से मुहब्बत करने वाले बन्दे थे अल्लाह ने उन्हें महबूब बनाया। (फ़181) जिस चीज़ की ख़ल्क़ को हाजत होती है और जो कुछ बादशाहें को दयार व अमसार फ़तह करने और दुश्मनों के मुहारबा में दरकार होता है वह सब इनायत किया। (फ़182) सबब वह चीज़ है जो मक़सूद तक पहुंचने का ज़रीआ़ हो ख़्वाह वह इल्म हो या क़ुदरत तो .ज़ुलक़रनैन ने जिस मक़सद का इरादा किया उसी का सबब इख़्तियार किया (फ़183) ज़ुलक़रनैन ने किताबों में देखा था कि औलादे साम में से एक शख़्स चश्मए हयात से पानी पियेगा और उसको मौत न आएगी यह देख कर वह चश्मए हयात की तलब में मग़रिब व मशरिक़ की तरफ़ रवाना हुए और आपके साथ हज़रत ख़िज़्र भी थे वह तो चश्मए हयात तक पहुंच गए और उन्होंने पी भी लिया मगर .ज़ुलक़रनैन के मुक़द्दर में न था उन्होंने न पाया उस सफ़र में जानिबे मग़रिब रवाना हुए तो जहां तक आबादी है वह सब मनाज़िल क़तअ़ कर डाले और सम्ते मग़रिब में वहां पहुंचे जहां आबादी का नाम व निशान बाक़ी न रहा वहां उन्हें आफ़ताब वक़्ते .ग़ुरूब ऐसा नज़र आया गोया कि वह सियाह चश्मा में डूबता है जैसा कि दरियाई सफ़र करने वाले को पानी में डूबता मालूम होता है। (फ़184) उस चश्मा के पास (फ़185) जो शिकार किये हुए जानवरों के चमड़े पहने थे उसके सिवा उनके बदन पर और कोई लिबास न था और दरियाई मुर्दा जानवर उनकी ग़िज़ा थे यह लोग काफ़िर थे। (फ़186) और उनमें से जो इस्लाम में दाख़िल न हो उसको क़त्ल कर दे। (फ़187) और उन्हें अहकामे शरअ़ की तालीम दे अगर वह ईमान लायें। (फ़188) यानी कुफ़्र व शिर्क इख़्तियार किया ईमान न लाया (फ़189) क़त्ल करेंगे यह तो उसकी दुनियवी सज़ा है (फ़190) क़ियामत में (फ़191) यानी जन्नत (फ़192) और उसको ऐसी चीज़ों का हुक्म देंगे जो उस पर सहल हों दुशवार न हों अब ज़ुलक़रनैन की निस्बत इरशाद फ़रमाया जाता है कि वह (फ़193) जानिबे मशरिक़ में (फ़194) उस मक़ाम पर जिसके और आफ़ताब के दर्मियान कोई चीज़ पहाड़, दरख़्त वग़ैरह हाइल न थी न वहां कोई इमारत क़ाइम हो सकती थी और वहां के लोगों का यह हाल था कि तुलूअ़े आफ़ताब के वक़्त ग़ारों में घुस जाते थे और ज़वाल के बाद निकल कर अपना काम काज करते थे (फ़195) फ़ौज लश्कर आलात हरब सामाने सल्तनत और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया सल्तनत व मुल्कदारी की क़ाबिलियत और उमूरे ममलिकत के सर-अन्जाम की लियाक़त (फ़196) मुफ़स्सिरीन ने कज़लक के माना में यह भी कहा है कि मुराद यह है कि ज़ुलक़रनैन ने जैसा मग़रबी क़ौम के साथ सुलूक किया

था ऐसा ही अहले मशरिक़ के साथ भी किया क्योंकि यह लोग भी उनकी तरह काफ़िर थे तो जो उन में से ईमान लाये उनके साथ एहसान किया और जो कुफ़्र पर मुसिर रहे उनको तअ्ज़ीब की (फ़ा197) जानिबे शुमाल में (ख़ाज़िन)

(बक़िया सफ़हा 499 का) कर उनके दर्मियान लकड़ी और कोयला भरवा दिया और आग दे दी इस तरह यह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊँची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दर्मियान कोई जगह न छोड़ी गई ऊपर से पिघलाया हुआ तांबा दीवार में पिला दिया गया यह सब मिल कर एक सख़्त जिस्म बन गया। (फ़ा205) ज़ुलक़रनैन ने कि (फ़ा206) और याजूज माजूज के ख़ुरूज का वक़्त आ पहुंचेगा क़रीब क़ियामत। (फ़ा207) हदीस शरीफ़ में है कि याजूज माजूज रोज़ाना उस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेहनत करते करते जब उसके तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उनमें कोई कहता है अब चलो बाक़ी कल तोड़ लेंगे, दूसरे रोज़ जब आते हैं तो वह बहुक्मे इलाही पहले से ज़्यादा मज़बूत हो जाती है जब उनके ख़ुरूज का वक़्त आएगा तो उन में कहने वाला कहेगा कि अब चलो बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे इन्शाअल्लाह, इन्शाअल्लाह कहने का यह समरा होगा कि उस दिन की मेहनत रायगाँ न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार इतनी टूटी मिलेगी जितनी पहले रोज़ तोड़ गए थे अब वह निकल आयेंगे और ज़मीन में फ़साद उठायेंगे क़त्ल व ग़ारत करेंगे और चश्मों का पानी पी जायेंगे जानवरों दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आयेंगे उनको खा जायेंगे मक्का मुकर्रमा मदीना तय्येबा और बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल न हो सकेंगे अल्लाह तआला ब-दुआए हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उन्हें हलाक करेगा इस तरह कि उनकी गर्दनों में कीड़े पैदा होंगे जो उनकी हलाकत का सबब होंगे (फ़ा208) इससे साबित होता है कि याजूज व माजूज का निकलना क़ुर्बे क़ियामत के अ़लामात में से है (फ़ा209) यानी तमाम ख़ल्क़ को अ़ज़ाब व सवाब के लिए रोज़े क़ियामत (फ़ा210) कि उसको साफ़ देखें (फ़ा211) और वह आयाते इलाहिया और क़ुरआन व हिदायत व बयान और दलाइल क़ुदरत व ईमान से अन्धे बने रहे और उन में से किसी चीज़ को वह न देख सके (फ़ा212) अपनी बद-बख़्ती से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अ़दावत रखने के बाइस (फ़ा213) मिस्ल हज़रत ईसा व हज़रत उज़ैर व मलायका के (फ़ा214) और उससे कुछ नफ़ा पायेंगे यह गुमान फ़ासिद है बल्कि वह बन्दे उन से बेज़ार हैं और बेशक हम उनके इस शिर्क पर अ़ज़ाब करेंगे।

(बक़िया सफ़हा 500 का) यह बात वहां न होगी क्योंकि वह जानते होंगे कि फ़ज़्ले इलाही से उन्हें बहुत आला व अरफ़अ़ मकान व मकानत हासिल है। (फ़ा221) यानी अगर अल्लाह तआला के इल्म व हिकमत के कलिमात लिखे जायें और उनके लिए तमाम समुन्दरों का पानी सियाही बना दिया जाये और तमाम ख़ल्क़ लिखे तो वह कलिमात ख़त्म न हों और यह तमाम पानी ख़त्म हो जाये और इतना ही और भी ख़त्म होजाये मुद्दआ यह है कि उसके इल्म व हिकमत की निहायत नहीं। शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यहूद ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आपका ख़्याल है कि हमें हिकमत दी गई और आपकी किताब में है कि जिसे हिकमत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई एक क़ौल यह है कि जब आयत व मा ऊतीतुम् मिनल्-इ़ल्मि इल्ला क़लीला नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि हमें तौरेत का इल्म दिया गया और उसमें हर शय का इल्म है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई मुद्दआ यह है कि कुल शय का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और इतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक क़तरे को समुन्दर से हो (फ़ा222) कि मुझ पर बशरी अअ़्राज़ व अमराज़ तारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आपका मिस्ल नहीं कि अल्लाह तआला ने आप को हुस्न व सूरत में भी सब से आला व बाला किया और हक़ीक़त व रूह व बातिन के ऐतबार से तो तमाम अम्बिया औसाफ़े बशर से आला हैं जैसा कि शिफ़ा क़ाज़ी अ़याज़ में है और शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अ़लैह ने शरह मिश्कात में फ़रमाया कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के अजसाम व ज़वाहिर तो हदे बशरियत पर छोड़े गए और उनके अरवाह व बवातिन बशरियत से बाला और मलए आला से मुतअ़ल्लिक़ हैं शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सूरह वज़्ज़ुहा की तफ़सीर में फ़रमाया कि आपकी बशरियत का वुजूद असलन न रहे और ग़लबए अनवारे हक़ आप पर अलद्दवाम हासिल हो बहरहाल आपकी ज़ात व कमालात में आपका कोई भी मिस्ल नहीं इस आयते करीमा में आपको अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिया के बयान का इज़हार तवाज़ोअ़ के लिए हुक्म फ़रमाया गया यही फ़रमाया है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने (ख़ाज़िन) मसला किसी को जाइज़ नहीं कि हुज़ूर को अपने मिस्ल बशर कहे क्योंकि जो कलिमात असहाबे इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत ब-तरीक़े तवाज़ोअ़ फ़रमाते हैं उनका कहना दूसरों के लिए रवा नहीं होता दोयम यह कि जिसको अल्लाह तआला ने फ़ज़ाइले जलीला व मरातिबे रफ़ीआ अ़ता फ़रमाए हों उसके इन फ़ज़ाइल व मरातिब का ज़िक्र छोड़ कर ऐसे वस्फ़े आम से ज़िक्र करना जो हर कह व मह में पाया जाये उन कमालात के न मानने का मुशइ़र है सोयम यह कि क़ुरआने करीम में जा बजा कुफ़्फ़ार का तरीक़ा बताया गया है कि वह अम्बिया को अपने मिस्ल बशर कहते थे और उसी से गुमराही में मुब्तला हुए फिर उसके बाद आयते यूहा इलैय्य में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मख़्सूस बिलइल्म और मुकर्रम इन्दल्लाह होने का बयान है। (फ़ा223) उसका कोई शरीक नहीं। (फ़ा224) शिर्के अक्बर से भी बचे और रिया से भी जिसको शिर्के असग़र कहते हैं मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरह कहफ़ की पहली दस आयतें हिफ़्ज़ करे अल्लाह तआला उसको फ़ित्नए दज्जाल से महफ़ूज़ रखेगा यह भी हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरह कहफ़ को पढ़े वह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहेगा।

(बक़िया सफ़हा 501 का) बनी इसराईल से मुशाहिदा में आ चुका है (फ़ा7) और मेरे इल्म का हामिल हो। (फ़ा8) कि तू अपने फ़ज़्ल से उसको नबुव्वत अ़ता फ़रमाए अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की यह दुआ क़बूल फ़रमाई और इरशाद

फ़रमाया। (फ़9) यह सवाल इस्तिबआद नहीं बल्कि मक़सूद यह दरियाफ़्त करना है कि अ़ताए फ़रज़न्द किस तरीक़ा पर होगा क्या दोबारा जवानी मरहमत होगी या इसी हाल में फ़रज़न्द अ़ता किया जाएगा (फ़10) तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है (फ़11) तो जो मअ़्दूम के मौजूद करने पर क़ादिर है उससे बुढ़ापे में औलाद अ़ता फ़रमाना क्या अ़जब (फ़12) जिससे मुझे अपनी बीबी के हामिला होने की मअ़्रेफ़त हो।

(बक़िया सफ़हा 502 का) कर लोगों ने दरियाफ़्त किया क्या हाल है। (फ़15) और हस्बे आदत फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ें अदा करते रहो अब हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आपकी बीवी साहिबा हामिला हो गईं और हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम की विलादत से दो साल बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया। (फ़16) यानी तौरेत को (फ़17) जबकि आपकी उम्र शरीफ़ तीन साल की थी उस वक़्त में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपको अक़्ले कामिल अ़ता फ़रमाई और आप की तरफ़ वही की हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा का यही क़ौल है और इतनी सी उम्र में फ़हम व फ़रासत और कमाले अक़्ल व दानिश ख़वारिक़े आ़दात में से है और जब ब-करमेही तआ़ला यह हासिल हो तो इस हाल में नबुव्वत मिलना कुछ भी बईद नहीं लिहाज़ा इस आयत में हुक्म से नबुव्वत मुराद है यही क़ौल सही है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इससे हिकमत यानी फ़हमे तौरेत और फ़िक़्ह फ़िद्दीन भी मुराद ली है। (ख़ाज़िन व मदारिक कबीर) मन्क़ूल है कि इस कम सिनी के ज़माना में बच्चों ने आपको खेल के लिए बुलाया तो आपने फ़रमाया मा लिल्लुअ़िब ख़ुलिक़्ना हम खेल के लिए पैदा नहीं किये गए। (फ़18) अ़ता की और उनके दिल में रिक़्क़त व रहमत रखी कि लोगों पर मेहरबानी करें। (फ़19) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि ज़कात से यहां ताअ़त व इख़्लास मुराद है। (फ़20) और आप ख़ौफ़े इलाही से बहुत गिरया व ज़ारी करते थे यहां तक कि आपके रुख़सार मुबारक पर आंसूओं से निशान बन गए थे (फ़21) यानी आप निहायत मुतवाज़ेअ़ और ख़लीक़ थे और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुतीअ़् (फ़22) कि यह तीनों दिन बहुत अन्देशा नाक हैं क्योंकि उनमें आदमी वह देखता है जो इससे पहले उसने नहीं देखा इस लिए उन तीनों मौक़ों पर निहायत वहशत होती है अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम का इकराम फ़रमाया कि उन्हें उन तीनों मौक़ों पर अमन व सलामती अ़ता की (फ़23) यानी ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ुरआने करीम में हज़रत मरयम का वाक़िआ़ पढ़ कर उन लोगों को सुनाये ताकि उन्हें उनका हाल मालूम हो (फ़24) अपने मकान में या बैतुल मुक़द्दस की शरक़ी जानिब में लोगों से जुदा होकर इबादत के लिए ख़लवत में बैठें (फ़25) यानी अपने और घर वालों के दर्मियान (फ़26) जिबरील अ़लैहिस्सलाम (फ़27) यही मन्ज़ूरे इलाही है कि तुम्हें बग़ैर मर्द के छूए ही लड़का इनायत फ़रमाए। (फ़28) यानी बग़ैर बाप के बेटा देना (फ़29) और अपनी क़ुदरत की बुरहान (फ़30) उनके लिए जो उसके दीन का इत्तेबाअ़् करें उस पर ईमान लायें (फ़31) इल्मे इलाही में अब न रद्द हो सकता है न बदल सकता है जब हज़रत मरयम को इत्मीनान हो गया और उनकी परेशानी जाती रही तो हज़रत जिबरील ने उनके गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वह ब-क़ुदरते इलाही फ़िलहाल हामिला हो गईं उस वक़्त हज़रत मरयम की उम्र तेरह साल या दस साल की थी (फ़32) अपने घर वालों से और वह जगह बैते लहम थी। वहब का क़ौल है कि सब से पहले जिस शख़्स को हज़रत मरयम के हमल का इल्म हुआ वह उनका चचाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार है जो मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस का ख़ादिम था और बहुत बड़ा आबिद शख़्स था उसको जब मालूम हुआ कि मरयम हामला हैं तो निहायत हैरत हुई जब चाहता था कि उन पर तोहमत लगाये तो उनकी इबादत व तक़्वा और हर वक़्त का हाज़िर रहना किसी वक़्त ग़ाइब न होना याद कर के ख़ामोश हो जाता था और जब हमल का ख़्याल करता था तो उनको बुरी समझना मुश्किल मालूम होता था बिलआख़िर उसने हज़रत मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है हर चन्द चाहता हूं कि ज़बान पर न लाऊँ मगर अब सब्र नहीं होता है आप इजाज़त दीजिये कि मैं कह गुज़रूं ताकि मेरे दिल की परेशानी रफ़अ़ हो। हज़रत मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो तो उसने कहा कि ऐ मरयम मुझे बताओ कि क्या खेती बग़ैर तुख़्म और दरख़्त बग़ैर बारिश के और बच्चा बग़ैर बाप के हो सकता है। हज़रत मरयम ने फ़रमाया कि हां तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने जो सब से पहले खेती पैदा की बग़ैर तुख़्म ही के पैदा की और दरख़्त अपनी क़ुदरत से बग़ैर बारिश के उगाये क्या तू यह कह सकता है कि अल्लाह तआ़ला पानी की मदद के बग़ैर दरख़्त पैदा करने पर क़ादिर नहीं यूसुफ़ ने कहा मैं यह तो नहीं कहता बेशक मैं इसका क़ाइल हूं कि अल्लाह हर शय पर क़ादिर है जिसे कुन फ़रमाये वह हो जाती है हज़रत मरयम ने कहा कि क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम और उनकी बीबी को बग़ैर मां बाप के पैदा किया हज़रत मरयम के इस कलाम से यूसुफ़ का शुबहा रफ़अ़ हो गया और हज़रत मरयम हमल के सबब से ज़ईफ़ हो गईं थीं इस लिए वह ख़िदमत मस्जिद में उनकी नियाबत अन्जाम देने लगा अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मरयम को इल्हाम किया कि वह अपनी क़ौम से अलाहिदा चली जायें इस लिए वह बैते लेहम में चली गईं। (फ़33) जिस का दरख़्त जंगल में ख़ुश्क हो गया था वक़्त तेज़ सर्दी का था आप उस दरख़्त की ज़ड में आईं ताकि उससे टेक लगायें और फ़ज़ीहत के अन्देशा से।

(बक़िया सफ़हा 503 का) हुए मसला: सफ़िया के जवाब में सुकूत व अअ़्राज़ चाहिए -जवाबे जाहिलां बाशद ख़मूशी मसला कलाम को अफ़ज़ल शख़्स की तरफ़ तफ़वीज़ करना औला है हज़रत मरयम ने यह भी इशारा से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी (फ़41) जब लोगों ने हज़रत मरयम को देखा कि उनकी गोद में बच्चा है तो रोए और ग़मगीन हुए क्योंकि वह सालेहीन के घराने के लोग थे (फ़42) और हारून या तो हज़रत मरयम के भाई का नाम था या बनी इसराईल में और निहायत बुज़ुर्ग और सालेह शख़्स का नाम था जिनके तक़्वा और परहेज़गारी से तश्बीह देने के लिए उन लोगों ने हज़रत मरयम को हारून की बहन कहा या हज़रत हारून बिरादरे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ही की तरफ़ निस्बत की बावजूदे कि उनका ज़माना बहुत बईद था और हज़ार बरस का अर्सा हो चुका था मगर चूंकि यह उनकी नसल से थीं इस लिए हारून की बहन

कह दिया जैसा कि अरबों का मुहावरा है कि वह तमीमी को या अख़ातमीम कहते हैं (फ़43) यानी इमरान (फ़44) हन्ना (फ़45) कि जो कुछ कहना है ख़ुद उनसे कहो इस पर क़ौम के लोगों को ग़ुस्सा आया और (फ़46) यह गुफ़्तगू सुनकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बायें हाथ पर टेक लगा कर क़ौम की तरफ़ मुतवज्जह हुए और दाहिने दस्ते मुबारक से इशारा कर के कलाम शुरू किया (फ़47) पहले अपने बन्दा होने का इक़रार फ़रमाया ताकि कोई उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा न कहे क्योंकि आप की निस्बत यह तोहमत लगाई जाने वाली थी और यह तोहमत अल्लाह तबारक व तआ़ला पर लगती थी इस लिए मन्सबे रिसालत का इक़्तेज़ा यही था कि वालिदा की बराअ्त बयान करने से पहले उस तोहमत को रफ़अ् फ़रमा दें जो अल्लाह तआ़ला के जनाबे पाक में लगाई जाएगी और उसी से वह तोहमत भी रफ़अ् हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला इस मर्तबए अ़ज़ीमा के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है बिलयक़ीन उसकी विलादत और उसकी सरिश्त निहायत पाक व ताहिर है। (फ़48) किताब से इन्जील मुराद है हसन का क़ौल है कि आप बतने वालिदा ही में थे कि आप को तौरेत का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आपको नबुव्वत अ़ता कर दी गई और इस हालत में आपका कलाम फ़रमाना आपका मोअ्जेज़ा है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत के माना में यह भी बयान किया है कि यह नबुव्वत और किताब के मिलने की ख़बर थी जो अ़न्क़रीब आपको मिलने वाली थी। (फ़49) यानी लोगों के लिए नफ़ा पहुंचाने वाला और ख़ैर की तालीम देने वाला और अल्लाह तआ़ला और उसकी तौहीद की दावत देने वाला। (फ़50) बनाया (फ़51) जो हज़रत यहया पर हुई (फ़52) जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह कलाम फ़रमाया तो लोगों को हज़रत मरयम की बराअ्त व तहारत का यक़ीन हो गया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम इतना फ़रमा कर ख़ामोश हो गए और उसके बाद कलाम न किया जब तक कि उस उम्र को पहुंचे जिस में बच्चे बोलने लगते हैं (ख़ाज़िन) (फ़53) कि यहूद तो उन्हें साहिरे कज़्ज़ाब कहते हैं (मआ़ज़ल्लाह) और नसारा उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं तआ़-लल्लाहु अ़म्मा यक़ूलू-न उलूव्वन् कबीरा इसके बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी तन्ज़ीह बयान फ़रमाता है

(बक़िया सफ़हा 504 का) दुनिया में ईमान ले आये होते। (फ़61) और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे ऐसा सख़्त दिन दरपेश है। (फ़62) और उस दिन के लिए कुछ फ़िक्र नहीं करते। (फ़63) यानी सब फ़ना हो जायेंगे हम ही बाक़ी रहेंगे। (फ़64) हम उन्हें उनके आमाल की जज़ा देंगे। (फ़65) यानी क़ुरआन में (फ़66) यानी कसीरुस्सिद्क़ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि सिद्दीक़ के माना हैं कसीरुत्तसदीक़ जो अल्लाह तआ़ला और उसकी वहदानियत और उसके अम्बिया और उसके रसूलों की और मरने के बाद उठने की तस्दीक़ करे और अहकामे इलाहिया बजा लाये। (फ़67) यानी आज़र बुत-परस्त से। (फ़68) यानी इबादत मअ्बूद की ग़ायत ताज़ीम है उसका वही मुस्तहिक़ हो सकता है जो साहबे औसाफ़े कमाल और वली निअ्म हो न कि बुत जैसी नाकरा मख़्लूक़ मुद्दआ़ यह है कि अल्लाह वाहिद ला शरीक लहू के सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं। (फ़69) मेरे रब की तरफ़ से मअ्रेफ़ते इलाही का (फ़70) मेरा दीन क़बूल कर (फ़71) जिस से तू क़ुर्बे इलाही की मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंच सके। (फ़72) और उसकी फ़रमांबरदारी करके कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला न हो। (फ़73) और लानत व अ़ज़ाब में उसका साथी हो इस नसीहत लुत्फ़ आमेज़ और हिदायते दिलपज़ीर से आज़र ने नफ़ा न उठाया और उसके जवाब में

(बक़िया सफ़हा 505 का) शरीफ़ इतनी दराज़ हुई कि आपने अपने पोते हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को देखा इस आयत में यह बताया गया कि अल्लाह के लिए हिजरत करने और अपने घर बार छोड़ने की यह जज़ा मिली कि अल्लाह तआ़ला ने बेटे और पोते अ़ता फ़रमाये (फ़84) कि अमवाल व औलाद बकसरत इनायत किये (फ़85) कि हर दीन वाले मुसलमान हों ख़्वाह यहूदी ख़्वाह नसरानी सब उनकी सना करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उनकी आल पर दुरूद पढ़ा जाता है (फ़86) तूर एक पहाड़ का नाम है जो मिस्र व मदयन के दर्मियान है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को मदयन से आते हुए तूर की उस जानिब से जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के दाहिनी तरफ़ थी एक दरख़्त से निदा दी गई या मूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल्आ़लमीन ऐ मूसा मैं ही अल्लाह हूं तमाम जहानों का पालने वाला (फ़87) मर्तबए क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया हिजाब मुरतफ़अ् कि यहां तक कि आपने सरीरे अक़्लाम सुनी और आपकी क़दरो मन्ज़िलत बुलन्द की गई और आप से अल्लाह तआ़ला ने कलाम फ़रमाया। (फ़88) जबकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की कि या रब मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से यह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को आपकी दुआ़ से नबी किया हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बड़े थे (फ़89) जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के फ़रज़न्द और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जद् हैं (फ़90) अम्बिया सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस वस्फ़ में ख़ास शोहरत रखते हैं एक मर्तबा किसी मक़ाम पर आपसे कोई शख़्स कह गया था कि आप यहीं ठहरे रहिये जब तक मैं वापस आऊँ आप उस जगह उसके इन्तेज़ार में तीन रोज़ ठहरे रहे आपने सब्र का वादा किया था ज़बह के मौक़ा पर इस शान से उसको वफ़ा फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह (फ़91) और अपनी क़ौम जुरहम को जिनकी तरफ़ आप मबऊस थे (फ़92) ब-सबब अपने ताअ़त व आमाल व सब्र व इस्तेक़लाल व अहवाल व ख़िसाल के (फ़93) आपका नाम अख़्नूख़ है आप हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के वालिद के दादा हैं हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बाद आप ही पहले रसूल हैं आप के वालिद हज़रत शीस बिन आदम अ़लैहिस्सलाम हैं सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वह आप ही हैं कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की इब्तेदा भी आप ही से हुई आप से पहले लोग खालें पहनते थे सब से पहले हथियार बनाने वाले तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं यह सब काम आप ही से शुरू हुए अल्लाह तआ़ला ने आप पर

तीस सहीफ़े नाज़िल किये और कुतुबे इलाहिया की कसरते दर्स के बाइस आपका नाम इदरीस हुआ (फ़ा94) दुनिया में उन्हें उलूमे मर्तबत अ़ता किया या यह माना हैं कि आसमान पर उठा लिया और यही सही तर है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शबे मेअ़्राज हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम को आसमाने चहारुम पर देखा हज़रत कअ़्ब अहबार वग़ैरह से मरवी है कि हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं कैसा होता है तुम मेरी रूह क़ब्ज़ करके दिखाओ उन्हों ने इस हुक्म की तअ़मील की और रूह क़ब्ज़ करके उसी वक़्त आपकी तरफ़ लौटा दी आप ज़िन्दा होगए फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़्यादा हो चुनान्चे यह भी किया गया जहन्नम देख कर आपने मालिक दारोग़ए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो मैं उस पर गुज़रना चाहता हूं चुनांचे ऐसा ही किया गया और आप उस पर से गुज़रे फिर आपने मलकुलमौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ वह आपको जन्नत में ले गए आप दरवाज़े खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुए थोड़ी देर इन्तेज़ार करके मलकुल मौत ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये फ़रमाया अब मैं यहां से कहीं न जाऊँगा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-कतिल्-मौत वह मैं चख ही चुका हूं और यह फ़रमाया है व इम्-मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है व मा हुम्-मिन्हा बिमुख़्रजीन कि वह जन्नत से निकाले न जायेंगे अब मुझे जन्नत से चलने के लिए क्यों कहते हो अल्लाह तआ़ला ने मलकुल-मौत को वही फ़रमाई कि हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम ने जो कुछ किया मेरे इज़्न से किया और वह मेरे इज़्न से जन्नत में दाख़िल हुए उन्हें छोड़ दो वह जन्नत ही में रहेंगे चुनान्चे आप वहां ज़िन्दा हैं।

(बक़िया सफ़हा 506 का) अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया ग़य जहन्नम में एक वादी है जिस की गर्मी से जहन्नम के वादी भी पनाह मांगते हैं यह उन लोगों के लिए है जो ज़िना के आ़दी और उस पर मुसिर हों और जुआ शराब के आ़दी हों और जो सूद ख़्वार सूद के ख़ूगर हों और जो वालिदैन की नाफ़रमानी करने वाले हों और जो झूठी गवाही देने वाले हों। (फ़ा104) और उनके आमाल की जज़ा में कुछ भी कमी न की जायेगी (फ़ा105) ईमानदार सालेह व ताइब (फ़ा106) यानी इस हाल में कि जन्नत उन से ग़ाइब है उनकी नज़र के सामने नहीं या इस हाल में कि वह जन्नत से ग़ाइब हैं इसका मुशाहदा नहीं करते (फ़ा107) मलायका का या आपस में एक दूसरे का (फ़ा108) यानी अ़लद्दवाम क्योंकि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं अहले जन्नत हमेशा नूर ही में रहेंगे या मुराद यह है कि दुनिया के दिन की मिक़दार में दो मर्तबा बहिश्ती निअ़्मतें उनके सामने पेश की जायेंगी (फ़ा109) **शाने नुज़ूलः** बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिबरील से फ़रमाया ऐ जिबरील तुम जितना हमारे पास आया करते हो उससे ज़्यादा क्यों नहीं आते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा110) यानी तमाम अमाकिन का वही मालिक है हम एक मकान से दूसरे मकान की तरफ़ नक़्लो हरकत करने में उसके हुक्म व मशियत के ताबेअ़ हैं वह हर हरकत व सुकून का जानने वाला और ग़फ़लत व निस्यान से पाक है (फ़ा111) जब चाहे हमें आपकी ख़िदमत में भेजे। (फ़ा112) यानी किसी को उसके साथ इस्मी शिरकत भी नहीं और उसकी वहदानियत इतनी ज़ाहिर है कि मुशरिकीन ने भी अपने किसी मअ़्बूद का नाम अल्लाह नहीं रखा

(बक़िया सफ़हा 507 का) बद मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उनका गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। हसन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है। (फ़ा120) यानी वुरूदे जहन्नम क़ज़ाए लाज़िम है जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है (फ़ा121) यानी ईमानदारों को। (फ़ा122) मिस्ल नज़र बिन हारिस वग़ैरह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बनाव व सिंगार करके बालों में तेल डाल कर कंघियां करके उमदा लिबास पहन कर फ़ख़्र व तकब्बुर के साथ ग़रीब फ़क़ीर। (फ़ा123) मुद्दआ़ यह है कि जब आयात नाज़िल की जाती हैं और दलाइल व बराहीन पेश किये जाते हैं तो कुफ़्फ़ार उनमें तो फ़िक्र नहीं करते और उन से फ़ाइदा नहीं उठाते और बजाए उसके दौलत व माल और लिबास व मकान पर फ़ख़्र व तकब्बुर करते हैं। (फ़ा124) उम्मतें हलाक कर दीं। (फ़ा125) दुनिया में उसकी उम्र दराज़ करके और उसको उसकी गुमराही व तुग़ियान में छोड़ कर। (फ़ा126) दुनिया का क़त्ल व गिरिफ़्तारी (फ़ा127) जो तरह तरह की रुसवाई और अ़ज़ाब पर मुश्तमिल है। (फ़ा128) कुफ़्फ़ार की शैतानी फ़ौज या मुसलमानों का मुल्की लश्कर उसमें मुशरिकीन के इस क़ौल का रद्द है जो उन्होंने कहा था कि कौन से गरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है। (फ़ा129) और ईमान से मुशर्रफ़ हुए (फ़ा130) इस पर इस्तेक़ामत अ़ता फ़रमा कर और मज़ीद बसीरत व तौफ़ीक़ देकर। (फ़ा131) ताअ़तें और आख़िरत के तमाम आमाल और पंजगाना नमाज़ें और अल्लाह की तस्बीह व तहमीद और उसका ज़िक्र और तमाम आमाले सालिहा यह सब बाक़ियात सालिहात हैं कि मोमिन के लिए बाक़ी रहते हैं और काम आते हैं।

(बक़िया सफ़हा 510 का) से महरूम रहने पर बहुत ज़्यादा मुतअस्सिफ़ व मुतहस्सिर रहते थे और ख़ातिरे मुबारक पर इस सबब से रन्ज व मलाल रहा करता था इस आयत में फ़रमाया गया कि आप रन्ज व मलाल की कोफ़्त न उठायें कुरआन पाक आपकी मशक़्क़त के लिए नाज़िल नहीं किया गया है। (फ़ा3) वह इससे नफ़ा उठाएगा और हिदायत पाएगा (फ़ा4) जो सातों ज़मीनों के नीचे है मुराद है कि कायनात में जो कुछ है अर्श व समावात ज़मीन व तहतुस्सरा कुछ हो कहीं हो सब का मालिक अल्लाह है (फ़ा5) सिर्र यानी भेद वह है जिसको आदमी रखता और छुपाता है और उससे ज़्यादा पोशीदा वह है जिसको इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उससे उसका इरादा मुतअ़ल्लिक़ हुआ न उस तक ख़्याल पहुंचा एक क़ौल यह

है कि भेद से मुराद वह है जिसको इन्सानों से छुपाता है और उससे ज़्यादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है एक क़ौल यह है कि भेद बन्दा का वह है जिसे बन्दा ख़ुद जानता है और अल्लाह तआला जानता है उससे ज़्यादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिनको अल्लाह जानता है बन्दा नहीं जानता आयत में तम्बीह है कि आदमी को क़बाएह अफ़आल से परहेज़ करना चाहिए वह ज़ाहिर हों या बातिना क्योंकि अल्लाह तआला से कुछ छुपा नहीं और उसमें नेक आमाल पर तरग़ीब भी है कि ताअत ज़ाहिर हो या बातिन अल्लाह से छुपी नहीं वह जज़ा अता फ़रमाएगा तफ़सीर बैज़ावी में क़ौल से ज़िक्रे इलाही और दुआ मुराद ली है और फ़रमाया है कि इस आयत में उस पर तम्बीह की गई है कि ज़िक्र व दुआ में जहर अल्लाह तआला को सुनाने के लिए नहीं है बल्कि ज़िक्र को नफ़्स में रासेख़ करने और नफ़्स को ग़ैर के साथ मश्ग़ूली से रोकने और बाज़ रखने के लिए है (फ़ा6) वह वाहिद बिज़्ज़ात है और असमा व सिफ़ात इबारात हैं और ज़ाहिर है कि तअद्दुद इबारात तअद्दुद माना को मुक़तज़ी नहीं (फ़ा7) हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के अहवाल का बयान फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम जो दर्जए उलिया पाते हैं वह अदाए फ़राइज़े नबुव्वत व रिसालत में किस क़दर मुशक़्क़तें बरदाश्त करते और कैसे कैसे शदाइद पर सब्र फ़रमाते हैं यहां हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के उस सफ़र का वाक़िआ बयान फ़रमाया जाता है जिस में आप मदयन से मिस्र की तरफ़ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलातु वस्सलाम से इजाज़त लेकर अपनी वालिदा माजिदा से मिलने के लिए रवाना हुए थे आपके अहले बैत हमराह थे और आपने बादशाहाने शाम के अन्देशा से सड़क छोड़ कर जंगल में क़तए मसाफ़त इख़्तियार फ़रमाई बीबी साहिबा हामिला थीं चलते चलते तूर के ग़रबी जानिब पहुंचे यहां रात के वक़्त बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरू हुआ यह रात अंधेरी थी बरफ़ पड़ रहा था सर्दी शिद्दत की थी आपको दूर से आग मालूम हुई (फ़ा8) वहां एक दरख़्त सर सब्ज़ व शादाब देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रौशन था जितना उसके क़रीब जाते हैं दूर होता है जब ठहर जाते हैं क़रीब होता है उस वक़्त आपको (फ़ा9) कि उसमें तवाज़ोअ़ और बुक़्क़अए मुअ़ज़्ज़मा का एहतेराम और वादीए मुक़द्दस की ख़ाक से हुसूले बरकत का मौक़ा है। (फ़ा10) तुवा वादी मुक़द्दस का नाम है जहां यह वाक़िआ पेश आया। (फ़ा11) तेरी क़ौम में से नबुव्वत व रिसालत व शरफ़े कलाम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाया यह निदा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने हर जुज़्वे बदन से सुनी और क़ुव्वते सामेआ ऐसी आम हुई कि तमाम जिस्मे अक़दस कान बन गया सुबहानल्लाह। (फ़ा12) ताकि तू उसमें मुझे याद करे और मेरी याद में इख़्लास और मेरी रज़ा मक़सूद हो कोई दूसरी ग़रज़ न हो इसी तरह रिया का दख़ल न हो या यह माना हैं कि तू मेरी नमाज़ क़ाइम रख ताकि मैं तुझे अपनी रहमत से याद फ़रमाऊँ फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि ईमान के बाद आज़म फ़राइज़ नमाज़ है।

(बक़िया सफ़हा 511 का) अलैहिस्सलातु वस्सलाम को मानूस किया जाये ताकि हैबत मकालमत का असर कम हो (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा18) उस असा में ऊपर की जानिब दो शाख़ें थीं और उसका नाम नबआ था। (फ़ा19) मिस्ल तोशा और पानी उठाने और मूज़ी जानवरों को दफ़अ़ करने और आदाअ़ से मुहारबा में काम लेने वग़ैरह के उन फ़वाइद का ज़िक्र करना बतरीक़े शुक्र निअ़मे इलाहिया था अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से। (फ़ा20) और क़ुदरते इलाही दिखाई गई कि जो असा हाथ में रहता था और इतने कामों में आता था अब अचानक वह ऐसा हैबतनाक अज़दहा बन गया यह हाल देख कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़ौफ़ हुआ तो अल्लाह तआला ने उन से (फ़ा21) यह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा हत्ता कि आपने अपना दस्ते मुबारक उसके मुंह में डाल दिया और वह आपके हाथ लगाते ही मिस्ले साबिक़ असा बन गया अब उसके बाद एक और मोअ़जेज़ा अता फ़रमाया जिसकी निस्बत इरशाद फ़रमाया (फ़ा22) यानी कफ़े दस्ते रास्त बायें बाज़ू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो आफ़ताब की तरह चमकता निगाहों को ख़ीरा करता और (फ़ा23) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक से रात व दिन में आफ़ताब की तरह नूर ज़ाहिर होता था और यह मोअ़जेज़ा आपके आज़म मोअ़जेज़ात में से है जब आप दोबारा अपना दस्ते मुबारक बग़ल के नीचे रख कर बाज़ू से मिलाते तो वह दस्ते अक़दस हालते साबिक़ा पर आ जाता (फ़ा24) आपके सिद्क़े नबुव्वत की असा के बाद उस निशानी को भी लीजिये (फ़ा25) रसूल होकर (फ़ा26) और कुफ़्र में हद से गुज़र गया और उलूहियत का दावा करने लगा (फ़ा27) और उसे तहम्मुले रिसालत के लिए वसीअ़ फ़रमा दे। (फ़ा28) जो ख़ुर्द-साली में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है और उसका वाक़िआ यह था कि बचपन में आप एक रोज़ फ़िरऔन की गोद में थे आपने उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसके मुंह पर ज़ोर से तमांचा मारा इस पर उसे ग़ुस्सा आया और उसने आपके क़त्ल का इरादा किया आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह यह नादान बच्चा है क्या समझे तू चाहे तो तजरबा करले उस तजरबा के लिए एक तश्त में आग और एक तश्त में याक़ूत सुर्ख़ आपके सामने पेश किये गए आपने याक़ूत लेना चाहा मगर फ़रिश्ता ने आपका हाथ अंगारा पर रख दिया और वह अंगारा आपके मुंह में दे दिया इससे ज़बान मुबारक जल गई और लुकनत पैदा हो गई उसके लिए आपने यह दुआ की (फ़ा29) जो मेरा मुआविन व मोअ़तमिद हो (फ़ा30) यानी अम्रे नबुव्वत व तबलीग़े रियासत में (फ़ा31) नमाज़ों में भी और ख़ारिजे नमाज़ भी (फ़ा32) हमारे अहवाल का आलिम है हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की इस दरख़्वास्त पर अल्लाह तआला ने (फ़ा33) इससे क़ब्ल

(बक़िया सफ़हा 512 का) निकालने का हुक्म दिया वह सन्दूक़ निकाल कर सामने लाया गया खोला तो उसमें एक नूरानी शक्ल फ़रज़न्द जिसकी पेशानी से वजाहत व इक़बाल के आसार नमूदार थे नज़र आया देखते ही फ़िरऔन के दिल में ऐसी मुहब्बत पैदा हुई कि वह वारफ़्ता हो गया और अक़्ल व हवास बजा न रहे अपने इख़्तियार से बाहर हो गया उसकी निस्बत अल्लाह

तबारक व तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा37) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें महबूब बनाया और ख़ल्क़ का महबूब कर दिया और जिसको अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी महबूबियत से नवाज़ता है क़ुलूब में उसकी मुहब्बत पैदा हो जाती है जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ यही हाल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का था जो आपको देखता था उसी के दिल में आपकी मुहब्बत पैदा हो जाती थी क़तादा ने कहा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की आंखों में ऐसी मलाहत थी जिसे देख कर हर देखने वाले के दिल में मुहब्बत जोश मारने लगती थी (फ़ा38) यानी मेरी हिफ़ाज़त व निगहबानी में परवरिश पाए (फ़ा39) जिसका नाम मरयम था ताकि वह आपके हाल का तजस्सुस करे और मालूम करे कि सन्दूक़ कहां पहुंचा आप किसके हाथ आए जब उसने देखा कि सन्दूक़ फ़िरऔ़न के पास पहुंचा और वहां दूध पिलाने के लिए दाईयां हाज़िर की गईं और आपने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आपकी बहन ने (फ़ा40) उन लोगों ने उसको मन्ज़ूर किया वह अपनी वालिदा को ले गईं आपने उनका दूध क़बूल फ़रमाया। (फ़ा41) आपके दीदार से (फ़ा42) यानी ग़मे फ़िराक़ दूर हो उसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के एक और वाक़िआ़ का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा43) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़िरऔ़न की क़ौम के एक काफ़िर को मारा था वह मर गया कहा गया है कि उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल की थी इस वाक़िआ़ पर आपको फ़िरऔ़न की तरफ़ से अन्देशा हुआ (फ़ा44) मेहनतों में डाल कर और उनसे ख़लासी अ़ता फ़रमा कर। (फ़ा45) मदयन एक शहर है मिस्र से आठ मन्ज़िल फ़ासिला पर यहां हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम रहते थे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम मिस्र से मदयन आये और कई बरस तक हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पास इक़ामत फ़रमाई और उनकी साहबज़ादी सफ़ूरा के साथ आपका निकाह हुआ (फ़ा46) यानी अपनी उम्र के चालीसवें साल और यह वह सिन है कि अम्बिया की तरफ़ इस सिन में वही की जाती है (फ़ा47) अपनी वही और रिसालत के लिए ताकि तू मेरे इरादा और मेरी मुहब्बत पर तसर्रुफ़ करे और मेरी हुज्जत पर क़ाइम रहे और मेरी और मेरी ख़ल्क़ के दर्मियान ख़िताब पहुंचाने वाला हो (फ़ा48) यानी मोअ़जेज़ात (फ़ा49) यानी उसको ब-नर्मी नसीहत फ़रमाना और नर्मी का हुक्म इस लिए था कि उसने बचपन में आपकी ख़िदमत की थी और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नर्मी से मुराद यह है कि आप उससे वादा करें कि अगर वह ईमान क़बूल करेगा तो तमाम उम्र जवान रहेगा कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उसकी सल्तनत बाक़ी रहेगी और खाने पीने और निकाह की लज़्ज़तें ता दमे मर्ग बाक़ी रहेंगी और बाद मौत के दुख़ूले जन्नत मुयस्सर आएगा जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔ़न से यह वादा किये तो उसको यह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वह किसी काम पर बग़ैर मशवरा हामान के क़तई फ़ैसला नहीं करता था हामान मौजूद न था जब वह आया तो फ़िरऔ़न ने उसको यह ख़बर दी और कहा कि मैं चाहता हूं कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की हिदायत पर ईमान क़बूल कर लूं हामान कहने लगा मैं तो तुझको आक़िल व दाना समझता था तू रब है बन्दा बनना चाहता है तू मअ़बूद है आ़बिद बनने की ख़्वाहिश करता है फ़िरऔ़न ने कहा तूने ठीक कहा और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम मिस्र में थे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्म किया कि वह हज़रत हारून के पास आयें और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को वही की कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से मिलें चुनान्चे वह एक मन्ज़िल चल कर आप से मिले और जो वही उन्हें हुई थी उसकी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को इत्तलाअ़ दी। (फ़ा50) यानी आपकी तालीम व नसीहत इस उम्मीद के साथ होनी चाहिए ताकि आप के लिए अज्र और उस पर इलज़ामे हुज्जत और क़तअ़े उज़्र हो जाये और हक़ीक़त में होना तो वही है जो तक़दीरे इलाही है। (फ़ा51) अपनी मदद से (फ़ा52) उसके क़ौलो फ़ेअ़्ल को (फ़ा५३) और उन्हें बन्दगी व असीरी से रिहा कर दे (फ़ा54) मेहनत व मशक़्क़त के सख़्त काम लेकर (फ़ा55) यानी मोअ़्जेज़े जो हमारे सिद्क़े नबुव्वत की दलील हैं फ़िरऔ़न ने कहा वह क्या हैं तो आपने मोअ़्जेज़ा यदे बैज़ा दिखाया (फ़ा56) यानी दोनों जहान में उसके लिए सलामती है वह अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा

(बक़िया सफ़हा 513 का) तमाम हो गया अब अल्लाह तआ़ला अहले मक्का को ख़िताब करके उसकी ततमीम फ़रमाता है। (फ़ा65) यानी क़िस्म क़िस्म के सब्ज़े मुख़्तलिफ़ रंगतों ख़ुश्बूओं शक्लों के बाज़ आदमियों के लिए बाज़ जानवरों के लिए। (फ़ा66) यह अमर इबाहत और तज़कीरे नेअ़्मत के लिए है यानी हमने यह सब्ज़े निकाले तुम्हारे लिए उनका खाना और अपने जानवरों को चराना मुबाह करके। (फ़ा67) तुम्हारे जद्दे आला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उससे पैदा करके। (फ़ा68) तुम्हारी मौत व दफ़न के वक़्त। (फ़ा69) रोज़े क़ियामत (फ़ा70) यानी फ़िरऔ़न को। (फ़ा71) यानी कुल आयाते तिसअ़् जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अ़ता फ़रमाई थीं। (फ़ा72) और इन आयात को सहर बताया और क़बूले हक़ से इन्कार किया और (फ़ा73) यानी हमें मिस्र से निकाल कर ख़ुद उस पर क़ब्ज़ा करो और बादशाह बन जाओ। (फ़ा74) और जादू में हमारा तुम्हारा मुक़ाबला होगा। (फ़ा75) उस मेला से फ़िरऔ़नियों का मेला मुराद है जो उनकी ईद थी और उसमें वह ज़ीनतें कर करके जमा होते थे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह दिन आशूरा यानी दसवीं मुहर्रम का था और इस साल यह तारीख़ सनीचर को वाक़ेअ़ हुई थी उस रोज़ को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस लिए मुअ़य्यन फ़रमाया कि यह रोज़ उन की ग़ायत शौकत का दिन था उसको मुक़र्रर करना अपने कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है नीज़ उसमें यह भी हिकमत थी कि हक़ का ज़हूर और बातिन की रुसवाई के लिए ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जबकि अतराफ़ व जवानिब के तमाम लोग मुजतमअ़् हों (फ़ा76) ताकि ख़ूब रौशनी फैल जाये और देखने वाले बइत्मीनान देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए (फ़ा77) कसीरुत्तादाद जादूगरों को जमा किया (फ़ा78) वादा के दिन उन सब को लेकर

(बक़िया सफ़हा 514 का) गए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसे अपने दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया यह देख कर जादूगरों को यक़ीन हुआ कि यह मोअ्जेज़ा है जिससे सेहर मुक़ाबला नहीं कर सकता और जादू की फ़रेबकारी उसके सामने क़ाइम नहीं रह सकती। (फ़ा90) सुबहानल्लाह क्या अ़जीब हाल था जिन लोगों ने अभी कुफ़्र व जुहूद के लिए रस्सियां और अ़सा डाले थे अभी मोअ्‌जेज़ा देख कर उन्होंने शुक्र व सुजूद के लिए सर झुका दिये और गर्दनें डाल दीं मन्क़ूल है कि उस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और उन्होंने जन्नत में अपने मनाज़िल देख लिये।

(बक़िया सफ़हा 515 का) जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा था कि हम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को सोता हुआ देखना चाहते हैं चुनान्चे इसकी कोशिश की गई और उन्हें ऐसा मौक़ा बहम पहुंचा दिया गया उन्होंने देखा कि हज़रत ख़्वाब में हैं और अ़साए शरीफ़ पहरा दे रहा है यह देख कर जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्योंकि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उसका जादू काम नहीं करता मगर फ़िरऔ़न ने उन्हें जादू करने पर मजबूर किया उसकी मग़फ़िरत के वह अल्लाह तआ़ला से तालिब और उम्मीदवार हैं (फ़ा98) फ़रमांबरदारों को सवाब देने में (फ़ा99) बलिहाज़ अ़ज़ाब करने के नाफ़रमानों पर (फ़ा100) यानी काफ़िर मिस्ल फ़िरऔ़न के (फ़ा101) कि मर कर ही उससे छूट सके (फ़ा102) ऐसा जीना जिससे कुछ नफ़ा उठा सके (फ़ा103) यानी जिनका ईमान पर ख़ात्मा हुआ हो और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में नेक अमल किये हों फ़राइज़ और नवाफ़िल बजा लाये हों (फ़ा104) कुफ़्र की नजासत और मआ़सी की गन्दगी से। (फ़ा105) जबकि फ़िरऔ़न मोअ्जेज़ात देख कर राह पर न आया और पन्द पज़ीर न हुआ और बनी इसराईल पर ज़ुल्म व सितम और ज़्यादा करने लगा (फ़ा106) मिस्र से और जब दरिया के किनारे पहुंचें और फ़िरऔ़नी लश्कर पीछे से आये तो अन्देशा न कर (फ़ा107) अपना अ़सा मार कर। (फ़ा108) दरिया में ग़र्क़ होने का मूसा अ़लैहिस्सलाम हुक्मे इलाही पाकर शब के अव्वल वक़्त सत्तर हज़ार बनी इसराईल को हमराह लेकर मिस्र से रवाना हो गए (फ़ा109) जिन में छः लाख क़िबती थे।

(बक़िया सफ़हा 516 का) हैं कि मां बाप ने परवरिश की दीनी पेशवाओं ने हिदायत की औलिया ने हाजत-रवाई फ़रमाई बुज़ुर्गों ने बला दफ़अ्‌ की। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि उमूरे ज़ाहिर में मन्शा व सबब की तरफ़ मन्सूब कर दिये जाते हैं अगरचे हक़ीक़त में उनका मूजिद अल्लाह तआ़ला है और क़ुरआने करीम में ऐसी निस्बतें बकसरत वारिद हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा123) चालीस दिन पूरे करके तौरेत लेकर (फ़ा124) उनके हाल पर। (फ़ा125) कि वह तुम्हें तौरेत अ़ता फ़रमाएगा जिस में हिदायत है नूर है हज़ार सूरतें हैं हर सूरत में हज़ार आयतें हैं (फ़ा126) और ऐसा नाक़िस काम किया कि गो-साला को पूजने लगे तुम्हारा वादा तो मुझ से यह था कि मेरे हुक्म की इताअ़त करोगे और मेरे दीन पर क़ायम रहोगे।

(बक़िया सफ़हा 517 का) रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे। (फ़ा137) इस पर हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम उनसे अलाहिदा हो गए और उनके साथ बारह हज़ार वह लोग जिन्होंने बछड़े की परस्तिश न की थी जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम वापस तशरीफ़ लाये तो आपने उनके शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के गिर्द नाचते थे तब आपने अपने सत्तर हमराहियों से फ़रमाया यह फ़ित्ना की आवाज़ है जब क़रीब पहुंचे और हज़रत हारून को देखा तो ग़ैरते दीनी से जो आपकी सरिश्त थी जोश में आकर उनके सर के बाल दाहिने हाथ में और दाढ़ी बायें में पकड़ी और (फ़ा138) और मुझे ख़बर दे देते यानी जब उन्होंने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यों नहीं आ मिले कि तुम्हारा उन से जुदा होना भी उनके हक़ में एक ज़जर होता। (फ़ा139) यह सुनकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए चुनान्चे (फ़ा140) तूने ऐसा क्यों किया इसकी वजह बता (फ़ा141) यानी मैंने हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम को देखा और उनको पहचान लिया वह अस्पे हयात पर सवार थे मेरे दिल में यह बात आई कि मैं उनके घोड़े के निशाने क़दम की ख़ाक ले लूं (फ़ा142) उस बछड़े में जिसको बनाया था।

(बक़िया सफ़हा 518 का) उसकी इबादत पर क़ाइम रहा (फ़ा149) चुनांचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलम ने ऐसा किया और जब आप सामरी के इस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इसराईल से मुख़ातबा फ़रमा कर दीने हक़ का बयान फ़रमाया और इरशाद किया (फ़ा150) यानी क़ुरआने पाक कि वह ज़िक्रे अ़ज़ीम है और जो इसकी तरफ़ मुतवज्जह हो उसके लिए इस किताबे करीम में नजात और बरकतें हैं और इस किताबे मुक़द्दस में उममे माज़िया के ऐसे हालात का ज़िक्र व बयान है जो फ़िक्र करने और इबरत हासिल करने के लायक़ हैं (फ़ा151) यानी क़ुरआन से और इस पर ईमान न लाये और उसकी हिदायतों से फ़ायदा न उठाये (फ़ा152) गुनाहों का बारे गिरां (फ़ा153) यानी उस गुनाह के अ़ज़ाब में। (फ़ा154) लोगों को महशर में हाज़िर करने के लिए मुराद इससे नफ़ख़ए सानिया है (फ़ा155) यानी काफ़िरों को इस हाल में (फ़ा156) और काले मुंह (फ़ा157) आख़िरत के अहवाल और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िल देख कर उन्हें ज़िन्दगानीए दुनिया की मुद्दत बहुत क़लील मालूम होगी। (फ़ा158) आपस में एक दूसरे से (फ़ा159) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वह उस दिन के शदाइद देख कर अपने दुनिया में रहने की मिक़दार भूल जायेंगे। (फ़ा160) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि क़बीला सक़ीफ़ के एक आदमी ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क़ियामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा161) जो उन्हें रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ की तरफ़ बुलाएगा और निदा करेगा कि चलो रहमान के हुज़ूर पेश होने को और यह पुकारने वाले हज़रत इसराफ़ील होंगे। (फ़ा162) और उस दावत से कोई इनहेराफ़ न कर सकेगा।

(बक़िया सफ़हा 519 का) ज़ुहूरे ताम होगा (फ़ा169) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने इसकी तफ़सीर में फ़रमाया जिसने शिर्क किया टोटे में रहा और बेशक शिर्क शदीद तरीन ज़ुल्म है और जो उस ज़ुल्म का ज़ेरबार होकर मौक़फ़े क़ियामत में आये उससे बढ़ कर नामुराद कौन (फ़ा170) **मसला:** इस आयत से मालूम हुआ कि ताअ़त और नेक आमाल सब की क़बूलियत ईमान के साथ मशरूत है कि ईमान हो तो सब नेकियां कारआमद हैं और ईमान न हो तो सब अमल बेकार। (फ़ा171) फ़रायज़ के छोड़ने और ममनूआ़त का इरतेकाब करने पर। (फ़ा172) जिससे उन्हें नेकियों की रग़बत और बदियों से नफ़रत हो और वह पन्द व नसीहत हासिल करें। (फ़ा173) जो असल मालिक है और तमाम बादशाह उसके मोहताज। (फ़ा174) **शाने नुज़ूल:** जब हज़रत जिबरील क़ुरआने करीम लेकर नाज़िल होते थे तो हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम उनके साथ साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाये इस पर यह आयत नाज़िल हुई फ़रमाया गया कि आप मशक़्क़त न उठायें और सूरह क़ियामा में अल्लाह तआ़ला ने खुद ज़िम्मा लेकर आपकी और ज़्यादा तसल्ली फ़रमा दी। (फ़ा175) कि शजरे ममनूआ़ के पास न जायें (फ़ा176) इससे मालूम हुआ कि साहबे फ़ज़्लो शरफ़ की फ़ज़ीलत को तस्लीम न करना और उसकी ताज़ीम व एहतेराम बजा लाने से एअ़राज़ करना दलील हसद व अ़दावत है इस आयत में शैतान का हज़रत आदम को सजदा न करना आपके साथ उसकी दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया। (फ़ा177) और अपनी ग़िज़ा और ख़ुराक के लिए ज़मीन जोतने खेती करने दाना निकालने पीसने पकाने की मेहनत में मुब्तला हो और चूंकि औरत का नफ़्क़ा मर्द के ज़िम्मा है इस लिए इस तमाम मेहनत की निस्बत सिर्फ़ आदम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ फ़रमाई गई।

(बक़िया सफ़हा 520 का) वबाल से नजात पायेगा। (फ़ा187) और मेरी हिदायत से रूगरदानी की (फ़ा188) दुनिया में या क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या उन सब में दुनिया की तंग ज़िन्दगानी यह है कि हिदायत का इत्तेबाअ़ न करने से अ़मले बद और हराम में मुब्तला हो या क़नाअ़त से महरूम होकर गिरिफ़्तारे हिर्स हो जाये और कसरते माल व अस्बाब से भी उसको फ़राग़े ख़ातिर और सुकूने क़ल्ब मुयस्सर न हो दिल हर चीज़ की तलब में आवारा हो और हिर्स के ग़मों से कि यह नहीं वह नहीं हाल तारीक और वक़्त ख़राब रहे और मोमिने मुतवक्किल की तरह उसको सुकून व फ़राग़ हासिल ही न हो जिसको हयाते तय्येबा कहते हैं *क़ा-ल तआ़ला फ़-ल-नुहयि-यन्नहू ह़यातन् तय्यि-बतन्* और क़ब्र की तंग ज़िन्दगानी यह है कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ कि काफ़िर पर निन्नानवे अज़दहे उसकी क़ब्र में मुसल्लत किये जाते हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया **शाने नुज़ूल:** यह आयत असवद बिन अब्दुलउज़्ज़ा मख़्ज़ूमी के हक़ में नाज़िल हुई और क़ब्र की ज़िन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिससे एक तरफ़ की पसलियां दूसरी तरफ़ आ जाती हैं और आख़िरत में तंग ज़िन्दगानी जहन्नम के अ़ज़ाब हैं जहां ज़क़्क़ूम (थोहड़) और खौलता पानी और जहन्नमियों के ख़ून और उनके पीप खाने पीने को दी जाएगी और दीन में तंग ज़िन्दगानी यह है कि नेकी की राहें तंग हो जायें और आदमी कसबे हराम में मुब्तला हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत अगर ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो उसमें कुछ भलाई नहीं और यह तंग ज़िन्दगानी है। (तफ़सीर कबीर व ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह) (फ़ा189) दुनिया में (फ़ा190) तो उन पर ईमान न लाया और (फ़ा191) जहन्नम की आग में जला करेगा

(बक़िया सफ़हा 521 का) दुनिया ही में (फ़ा197) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा198) इससे नमाज़े फ़ज्र मुराद है (फ़ा199) इससे ज़ुहर व अस्र की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के निस्फ़ आख़ीर में आफ़ताब के ज़वाल व ग़ुरूब के दर्मियान वाक़ेअ़ हैं (फ़ा200) यानी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो (फ़ा201) फ़ज्र व मग़रिब की नमाज़ें इनकी ताकीदन तकरार फ़रमाई गई और बाज़ मुफ़स्सिरीन क़बल ग़ुरूब से नमाज़े अस्र और अतराफ़े निहार से ज़ुहर मुराद लेते हैं उनकी तौजीह यह है कि नमाज़े ज़ुहर ज़वाल के बाद है और उस वक़्त दिन के निस्फ़े अव्वल और निस्फ़े आख़िर के अतराफ़ मिलते निस्फ़े अव्वल की इन्तेहा है और निस्फ़े आख़िर की इब्तेदा (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा202) अल्लाह के फ़ज़्ल व अ़ता और उसके इनाम व इकराम से तुम्हें उम्मत के हक़ में शफ़ीअ़ बना कर तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी करे जैसा कि उसने फ़रमाया है व ल-सौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़तर्ज़ा। (फ़ा203) यानी असनाफ़ व अक़साम कुफ़्फ़ार यहूद व नसारा वग़ैरह को जो दुनियवी साज़ो सामान दिया है मोमिन को चाहिए कि उसको इस्तेहसान व एअ़्जाब की नज़र से न देखे हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नाफ़रमानों के तुमतराक़ न देखो लेकिन यह देखो कि गुनाह और मअ़सियत की ज़िल्लत किस तरह उनकी गर्दनों से नमूदार है। (फ़ा204) इस तरह कि जितनी उन पर नेअ़्मत ज़्यादा हो उतनी ही उनकी सरकशी और उनका तुग़ियान बढ़े और वह सज़ाए आख़िरत के सज़ावार हों। (फ़ा205) यानी जन्नत और उसकी निअ़्मतें (फ़ा206) और उसका मुकल्लफ़ नहीं करते कि हमारी ख़ल्क़ को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने अहल की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो बल्कि। (फ़ा207) और उन्हें भी तू रोज़ी के ग़म में न पड़ अपने दिल को अमरे आख़िरत के लिए फ़ारिग़ रख कि जो अल्लाह के काम में होता है अल्लाह उसकी कार-साज़ी करता है। (फ़ा208) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा209) जो उनकी सेहते नबुव्वत पर दलालत करे बावजूदेकि आयाते कसीरा आ चुकी थीं और मोअ़जेज़ात का मुतवातिर ज़हूर हो रहा था फिर कुफ़्फ़ार इन सब से अन्धे बने और उन्होंने हुज़ूर की निस्बत यह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते उसके जवाब में अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है (फ़ा210) यानी क़ुरआन और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बशारत और आपकी नबुव्वत व बेअ़सत का ज़िक्र यह कैसे आज़म आयात हैं उनके होते हुए और किसी निशानी की तलब करने का क्या मौक़ा है (फ़ा211) रोज़े क़ियामत शाने नुज़ूल मुशरिकीन ने कहा था कि हम ज़माना के हवादिस और इन्क़लाब का इन्तेज़ार करते हैं कि कब मुसलमानों पर आयें और उनका क़िस्सा तमाम हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि तुम मुसलमानों की तबाही व बरबादी का इन्तेज़ार कर रहे हो और मुसलमान तुम्हारे उक़ूबत व अ़ज़ाब का इन्तेज़ार कर रहे हैं (फ़ा212) जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़ियामत क़ायम होगी।

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاۤءِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝ مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ اَفَتَأْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
بَلْ قَالُوْآ اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْ اِلَيْهِمْ فَسْئَلُوْآ اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

सूरत अम्बियाइ

मक्की है इसमें 112 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

इक़्त–र–ब लिन्नासि ह़िसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिम् मुअ़्रिजू़न(1)मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम् मिर्रब्बिहिम् मुह़्दसिन् इल्लस्त–मअू़हु व हुम् यल्–अ़बून(2)लाहि–यतन् कुलूबुहुम् व अ–सर्रुन् नज्वल् लज़ी–न ज–लमू हल् हाज़ा इल्ला ब–शरुम् मिस्लुकुम् अ–फ़–तअ्तूनस् सिह्–र व अन्तुम् तुब्सिरून(3)क़ा–ल रब्बी यअ्–लमुल् कौ़–ल फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि व हुवस्समीअुल् अ़लीम(4)बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह़्लामिम् बलिफ़्तराहु बल् हु–व शाअ़िरुन् फ़ल्यअ्तिना बिआ–यतिन् कमा उर्सिलल् अव्वलून(5)मा आ–म–नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्–यतिन् अह्लक्नाहा अ–फ़हुम् युअ्मिनून(6)व मा अर्सल्ना क़ब्–ल–क इल्ला रिजालन् नूह़ी इलैहिम् फ़स्–अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्–लमून(7)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

लोगों का हिसाब नज़दीक और वह ग़फ़लत में मुंह फेरे हैं।(1) (फ़2) जब उनके रब के पास से उन्हें कोई नई नसीहत आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए।(2) (फ़3) उनके दिल खेल में पड़े हैं (फ़4) और ज़ालिमों ने आपस में खुफ़िया मश्वरत की (फ़5) कि यह कौन हैं एक तुम्ही जैसे आदमी तो हैं (फ़6) क्या जादू के पास जाते हो देख भाल कर।(3) नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आसमानों और ज़मीन में हर बात को और वही है सुनता जानता।(4) (फ़7) बल्कि बोले परेशान ख़्वाबें हैं (फ़8) बल्कि उनकी गढ़त है(फ़9) बल्कि यह शायर हैं (फ़10) तो हमारे पास कोई निशानी लायें जैसे अगले भेजे गए थे।(5) (फ़11) इनसे पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हमने हलाक किया तो क्या यह ईमान लायेंगे।(6) (फ़12) और हमने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम 'वही' करते (फ़13) तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो।(7) (फ़14)

(फ़1) सूरत अम्बिया मक्की है इस में सात रुकूअ़ और एक सौ बारह आयतें और 1186 कलिमे और 4890 हरफ़ हैं (फ़2) यानी ह़िसाबे आमाल का वक़्त रोज़े क़ियामत क़रीब आगया और लोग अभी तक ग़फ़लत में हैं शाने नुज़ूल यह आयत मुन्किरीने बअ़्स के हक़ में नाज़िल हुई जो मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और रोज़े क़ियामत को गुज़रे हुए ज़माना के ऐतबार से क़रीब फ़रमाया गया क्योंकि जितने दिन गुज़रते जाते हैं आने वाला दिन क़रीब होता जाता है। (फ़3) न उससे पन्द पज़ीर हों न इबरत हासिल करें न आने वाले वक़्त के लिए कुछ तैयारी करें। (फ़4) अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं। (फ़5) और उसके इख़्फ़ा में बहुत मुबालग़ा किया मगर अल्लाह तआ़ला ने उनका राज़ फ़ाश कर दिया और बयान फ़रमा दिया कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत यह कहते हैं। (फ़6) यह कुफ़्र का एक उसूल था कि जब यह बात लोगों के ज़ेहन नशीन कर दी जाएगी कि वह तुम जैसे बशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान नहीं लाएगा हुज़ूर के ज़माना के कुफ़्फ़ार ने यह बात कही और उसको छुपाया लेकिन आज कल के बाज़ बेबाक यह कलिमा एलान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते कुफ़्फ़ार यह मक़ूला कहते वक़्त जानते थे कि उनकी बात किसी के दिल में जमेगी नहीं क्योंकि लोग रात दिन मोअ़जेज़ात देखते हैं वह किस तरह बावर कर सकेंगे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारी तरह बशर हैं इस (बक़िया सफ़हा 556 पर)

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا
هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ
دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ
اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

व मा ज–अ़ल्नाहुम् ज–स–दंल् ला यअ्कुलूनत्–तआ–म व मा कानू ख़ालिदीन(8)सुम्–म स़– दक़्नाहुमुल् वअ्–द फ़–अन्जैनाहुम् व मन् नशाउ व अह्लक्नल् मुस्रिफ़ीन(9)ल–क़द अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम् अ–फ़ला तअ्क़िलून(10)व कम् क़–स़म्ना मिन् क़र्–यतिन् कानत् ज़ालि–म–तंव व अन्शअ्ना बअ्–दहा क़ौमन् आ–ख़रीन(11)फ़–लम्मा अ–ह़स्सू बअ्–सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून (12)ला तर्कुज़ू वर्जिऊ इला मा उतरिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् ल–अ़ल्लकुम् तुस्अलून(13)क़ालू या वै–लना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(14)फ़मा ज़ालत् तिल्–क दअ्वाहुम् ह़त्ता ज–अ़ल्नाहुम् ह़सीदन् ख़ामिदीन(15)व मा ख़–लक़्–नस्समा–अ वल्–अर्–ज़ व मा बै–नहुमा लाअ़िबीन(16)लौ अ–रद्ना अन् नत्तख़ि–ज लह्वल् लत्–त– ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना इन् कुन्ना फ़ाअ़िलीन(17)बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्ह़क़्क़ि अ़–लल्बातिलि फ़–यद–मग़ुहू फ़इज़ा हु–व ज़ाहिक़ुन् व लकुमुल्वैलु मिम्मा तसिफ़ून(18)व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि

और हमने उन्हें (फ़15) ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खायें (फ़16) और न वह दुनिया में हमेशा रहें।(8) फिर हमने अपना वादा उन्हें सच्चा कर दिखाया (फ़17) तो उन्हें नजात दी और जिनको चाही (फ़18) और हद से बढ़ने वालों को (फ़19) हलाक कर दिया।(9) बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ (फ़20) एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है (फ़21) तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं!(10) (फ़22) (रुकूअ़ 1)और कितनी ही बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं कि वह सितमगार थीं (फ़23) और उनके बाद और क़ौम पैदा की।(11) तो जब उन्होंने (फ़24) हमारा अ़ज़ाब पाया जभी वह उससे भागने लगे।(12) (फ़25) न भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की तरफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की तरफ़ शायद तुम से पूछना हो।(13) (फ़26) बोले हाय ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे।(14) (फ़27) तो वह यही पुकारते रहे यहां तक कि हमने उन्हें कर दिया काटे हुए बुझे हुए।(15) (फ़28) और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके दर्मियान है अ़बस न बनाए।(16) (फ़29) अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते (फ़30) तो अपने पास से इख़्तियार करते अगर हमें करना होता।(17)(फ़31)बल्कि हम हक़ को बातिल पर फेंक मारते हैं तो वह उसका भेजा निकाल देता है तो जभी वह मिट कर रह जाता है (फ़32) और तुम्हारी ख़राबी है (फ़33) उन बातों से जो बनाते हो। (18) (फ़34) और उसी के हैं जितने आसमानों

(फ़15) यानी अम्बिया को (फ़16) तो उन पर खाने पीने का एतेराज़ करना और यह कहना कि *मा-लिहाज़र्-रसूलि या कुलुत्-तआ़म* महज़ बेजा है तमाम अम्बिया का यही हाल था वह सब खाते भी थे पीते भी थे (फ़17) उनके दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें नजात देने का (फ़18) यानी ईमानदारों को जिन्होंने अम्बिया की तस्दीक़ की। (फ़19) जो अम्बिया की तकज़ीब करते थे। (फ़20) ऐ गरोहे क़ुरैश। (फ़21) अगर तुम इस पर अमल करो या यह माना हैं कि वह किताब तुम्हारी ज़बान में है या यह कि इसमें तुम्हारे लिए नसीहत है या यह कि इसमें तुम्हारे दीन और दुनियवी उमूर और हवाइज का बयान है। (फ़22) कि ईमान लाकर इस इज़्ज़त व करामत और सआ़दत को हासिल करो। (फ़23) यानी काफ़िर थीं। (फ़24) यानी उन ज़ालिमों ने। (फ़25) शाने नुज़ूलः मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि सरज़मीने यमन में एक बस्ती है जिसका नाम हसूर है वहां के रहने वाले अ़रब थे उन्होंने अपने नबी की तकज़ीब की और उनको क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर बुख़्त नसर को मुसल्लत किया उसने उन्हें क़त्ल किया और गिरिफ़्तार किया और उसका यह अमल जारी रहा तो यह लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो मलाइका ने उनसे बतरीक़े तन्ज़ कहा (जो अगली आयत में है)। (फ़26) कि तुम पर क्या गुज़री **(बक़िया सफ़हा 556 पर)**

وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ
هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۚ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ

व मन् अ़िन्दहू ला यस्तक्बिरू–न अ़न् अ़िबा–दतिही व ला यस्तह़्सिरून(19)युसब्बिहूनल् लै–ल वन्नहा–र ला यफ़्तुरून(20)अमित्त–ख़ज़ू आलि–हतम् मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून(21)लौ का–न फ़ीहिमा आलि–हतुन् इल्लल्लाहु ल–फ़–स–दता फ़सुब्हानल्लाहि रब्बिल् अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून(22)ला युस्अलु अ़म्मा यफ़्अ़लु व हुम् युस्अलून(23)अमित्त–ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि–ह–तन् क़ुल् हातू बुर्हा–नकुम् हाज़ा ज़िक्रु मम्–मअ़ि–य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्–लमूनल् हक़्–क़ फ़हुम् मुअ़्रिज़ून(24)व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला–ह इल्ला अना फ़अ़्बुदून(25)व क़ालुत्त–ख़–ज़र्–रह़्मानु व–ल–दन् सुब्हा– नहू बल् अ़िबादुम् मुक्रमून(26)ला यस्बिक़ू–नहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ़्–मलून(27) यअ़्–लमु मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यश्फ़अ़ून इल्ला लि–मनिर्तज़ा व हुम् मिन् ख़श्–यतिही मुश्फ़िक़ून(28)व मंय्यक़ुल्

और ज़मीन में हैं (फ़ा35) और उसके पास वाले (फ़ा36) उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें।(19) रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते।(20) (फ़ा37) क्या उन्होंने ज़मीन में से कुछ ऐसे खुदा बना लिए हैं (फ़ा38) कि वह कुछ पैदा करते हैं।(21) (फ़ा39) अगर आसमान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और खुदा होते तो ज़रूर वह (फ़ा40) तबाह हो जाते (फ़ा41) तो पाकी है अल्लाह अ़र्श के मालिक को उन बातों से जो यह बनाते हैं।(22) (फ़ा42) उससे नहीं पूछा जाता जो वह करे (फ़ा43) और इन सब से सवाल होगा।(23) (फ़ा44) क्या अल्लाह के सिवा और खुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ (फ़ा45) अपनी दलील लाओ (फ़ा46) यह कुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है (फ़ा47) और मुझसे अगलों का तज़किरा (फ़ा48) बल्कि उनमें अक्सर हक़ को नहीं जानते तो वह रूगरदाँ हैं।(24) (फ़ा49) और हमने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर यह कि हम उसकी तरफ़ 'वही' फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तो मुझी को पूजो।(25) और बोले रहमान ने बेटा इख़्तियार किया (फ़ा50) पाक है वह (फ़ा51) बल्कि बन्दे हैं इज़्ज़त वाले।(26) (फ़ा52) बात में उससे सबक़त नहीं करते और वह उसी के हुक्म पर कारबन्द होते हैं।(27) वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है (फ़ा53) और शफ़ाअ़त नहीं करते मगर उसके लिए जिसे वह पसन्द फ़रमाए (फ़ा54) और वह उसके ख़ौफ़ से डर रहे हैं।(28) और उनमें जो कोई कहे

(फ़ा35) वह सब का मालिक है और सब उसके ममलूक तो कोई उसकी औलाद कैसे हो सकता है ममलूक होने और औलाद होने में मुनाफ़ात है (फ़ा36) उसके मुक़र्रबीन जिन्हें उसके करम से उसके हुज़ूर क़ुर्ब व मन्ज़िलत हासिल है (फ़ा37) हर वक़्त उसकी तस्बीह में रहते हैं हज़रत कअ़ब अहबार ने फ़रमाया कि मलाइका के लिए तस्बीह ऐसी है जैसी कि बनी आदम के लिए सांस लेना। (फ़ा38) जवाहिरे अरज़िया से मिस्ल सोने चांदी पत्थर वग़ैरह के (फ़ा39) ऐसा तो नहीं है और न यह हो सकता है कि खुद बे जान हो और वह किसी को जान दे सके तो फिर उसको मअ़बूद ठहराना और इलाह क़रार देना कितना खुला बातिल है इलाह वही है जो हर मुमकिन पर क़ादिर हो जो क़ादिर नहीं वह इलाह कैसा। (फ़ा40) आसमान व ज़मीन (फ़ा41) क्योंकि अगर खुदा से वह खुदा मुराद लिए जायें जिनकी खुदाई के बुत परस्त मोअ़तक़िद हैं तो फ़साद आ़लम का लुज़ूम ज़ाहिर है क्योंकि वह जमादात हैं तदबीरे आ़लम पर असलन क़ुदरत नहीं रखते और अगर तअ़मीम की जाये तो भी लुज़ूमे फ़साद यक़ीनी है क्योंकि अगर दो खुदा फ़र्ज़ किये जायें तो दो हाल से ख़ाली नहीं या वह दोनों मुत्तफ़िक़ होंगे या मुख़्तलिफ़ अगर शय वाहिद **(बक़िया सफ़हा 556 पर)**

يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّیْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِیْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۹﴾ اَوَلَمْ یَرَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا
رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَجَعَلْنَا فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِیْهَا فِجَاجًا سُبُلًا
لَّعَلَّهُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰیٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿۳۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ
وَالْخَیْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَیْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ یَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِیْ یَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ

मिन्हुम् इन्नी इलाहुम् मिन् दूनिही फ़ज़ालि–क नज्ज़ीहि जहन्न–म कज़ालि–क नज्ज़िज़्–ज़ालिमीन (29)अ–व लम् य–रल्लज़ी–न क–फ़रू अन्नस्–समावाति वल्अर्–ज़ का–नता रत्क़न् फ़–फ़–तक़्नाहुमा व ज–अ़ल्ना मिनल्माइ कुल्–ल शैइन् ह़य्यिन् अ–फ़ला युअ्मिनून(30)व ज–अ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि–य अन् तमी–द बिहिम् व ज–अ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल् ल–अ़ल्लहुम् यह्–तदून(31)व ज–अ़ल्नस्समा–अ सक़्फ़म् मह़्फ़ूज़ंव् व हुम् अ़न् आयातिहा मुअ्रिज़ून(32)व हुवल्लज़ी ख़–ल–क़ल्लै–ल वन्नहा–र वश्शम्–स वल्क़–म–र कुल्लुन् फ़ी फ़–लकिंय्यस्बहून(33)व मा ज–अ़ल्ना लि–ब–शरिम् मिन् क़ब्लिकल् ख़ुल्–द अ–फ़इम् मित्–त फ़हुमुल्–ख़ालिदून(34) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ–क़तुल् मौति व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्ख़ैरि फ़ित्–न–तन् व इलैना तुर्–जअून(35) व इज़ा रआ–कल्लज़ी–न क–फ़रू इंय्यत्तख़िज़ू–न–क इल्ला हुज़ुवन् अहाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलि–ह–तकुम् व हुम् बिज़िक्रिर् रह़्मानि

कि मैं अल्लाह के सिवा मअ़बूद हूं (फ़55) तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को।(29) (रुकूअ़ 2) क्या काफ़िरों ने यह ख़्याल न किया कि आसमान और ज़मीन बन्द थे तो हमने उन्हें खोला (फ़56) और हमने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई (फ़57) तो क्या वह ईमान न लायेंगे।(30) और ज़मीन में हमने लंगर डाले (फ़58) कि उन्हें लेकर न काँपे और हमने उसमें कुशादा राहें रखीं कि कहीं वह राह पायें।(31) (फ़59) और हमने आसमान को छत बनाया निगाह रखी गई (फ़60) और वह (फ़61) उसकी निशानियों से रूगरदाँ हैं।(32) (फ़62)और वही है जिसने बनाए रात (फ़63) और दिन (फ़64) और सूरज और चाँद हर एक एक घेरे में पैर रहा है।(33) (फ़65) और हमने तुमसे पहले किसी आदमी के लिए दुनिया में हमेशगी न बनाई (फ़66) तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो यह हमेशा रहेंगे।(34) (फ़67) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़माइश करते हैं बुराई और भलाई से (फ़68) जांचने को (फ़69) और हमारी ही तरफ़ तुम्हें लौट कर आना है।(35) (फ़70) और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा (फ़71) क्या यह हैं वह जो तुम्हारे ख़ुदाओं को बुरा कहते हैं और वह (फ़72) रहमान ही की याद से

(फ़55) यह कहने वाला इबलीस है जो अपने इबादत की दावत देता है फ़रिश्तों में और कोई ऐसा नहीं जो यह कलिमा कहे। (फ़56) बन्द होना या तो यह है कि एक दूसरे से मिला हुआ था उनमें फ़सल पैदा करके उन्हें खोला या यह माना हैं कि आसमान बन्द था बईं माना कि उससे बारिश नहीं होती थी ज़मीन बन्द थी बईं माना कि उससे रोएदगी पैदा नहीं होती थी तो आसमान का खोलना यह है कि उससे बारिश होने लगी और ज़मीन का खोलना यह है कि उससे सब्ज़ा पैदा होने लगा। (फ़57) यानी पानी को जानदारों की हयात का सबब किया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा माना यह हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुआ है और बाज़ों ने कहा इससे नुत्फ़ा मुराद है। (फ़58) मज़बूत पहाड़ों के (फ़59) अपने सफ़रों में और जिन मक़ामात का क़स्द करें वहां तक पहुंच सकें (फ़60) गिरने से (फ़61) यानी कुफ़्फ़ार (फ़62) यानी आसमानी कायनात सूरज चांद सितारे और अपने अपने अफ़लाक में उनकी हरकतों की कैफ़ियत और अपने अपने मतालेअ़ से उनके तुलूअ़ और गुरूब और उनके अ़जाइबे अहवाल जो सानेअ़ आ़लम के वुजूद और उसकी वहदत और उसके कमाले कुदरत व हिकमत पर दलालत करते हैं कुफ़्फ़ार इन सब से एअ़राज़ करते हैं और इन दलाइल से फ़ाइदा नहीं उठाते। (फ़63) तारीक कि उसमें आराम करें (फ़64) रौशन कि उसमें मआ़श वग़ैरह के काम अन्जाम दें। (फ़65) जिस तरह कि तैराक पानी में (फ़66) **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दुश्मन अपने ज़लाल व इनाद से कहते थे कि हम हवादिसे ज़माना का इन्तेज़ार कर रहे हैं अ़न्क़रीब ऐसा वक़्त आने वाला **(बक़िया सफ़हा 556 पर)**

هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٣٦ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِیْكُمْ اٰیٰتِیْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝٣٧ وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝٣٨ لَوْ یَعْلَمُ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا حِیْنَ لَا یَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ۝٣٩ بَلْ تَاْتِیْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ
یُنْظَرُوْنَ ۝٤٠ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِیْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٤١ قُلْ مَنْ یَّكْلَؤُكُمْ بِالَّیْلِ
وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٤٢ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا یُصْحَبُوْنَ ۝٤٣
بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰی طَالَ عَلَیْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا یَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِی الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝٤٤ قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْیِ ؗ

हुम् काफ़िरून(36)ख़ुलिक़ल् इन्सानु मिन् अ़-जलिन् सउरीकुम् आयाती फ़ला
तस्तअ्जिलून(37)व यक़ूलू-न मता हाज़ल् वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(38)लौ यअ्-लमुल्लज़ी-न
क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहिहिमुन्ना-र व ला अ़न् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून(39)बल्
तअ्तीहिम् बग़्त-तन् फ़-तब्-हतुहुम् फ़ला यस्त-तीऊ-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून(40)व
ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम् मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा
कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(41)क़ुल् मंय्यक्लउकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर्-रह़्मानि बल् हुम्
अ़न् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ़्रिज़ून(42)अम् लहुम् आलि-हतुन् तम्नअुहुम् मिन् दूनिना ला
यस्ततीऊ-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्ह़बून(43)बल् मत्तअ्ना हाउलाइ व आबा-
अहुम् हत्ता ता-ल अ़लैहिमुल् अ़ुमुरु अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ्तिल् अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन्
अत्राफ़िहा अ-फ़हुमुल् ग़ालिबून(44)क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह़्यि

मुन्किर हैं।(36) (फ़ा73) आदमी जल्द बाज़ बनाया गया अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊँगा मुझ से जल्दी न करो। (37) (फ़ा74) और कहते हैं कब होगा यह वादा (फ़ा75) अगर तुम सच्चे हो।(38) किसी तरह जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे अपने मुंहों से आग (फ़ा76) और न अपनी पीठों से और न उनकी मदद हो।(39) (फ़ा77) बल्कि वह उन पर अचानक आ पड़ेगी (फ़ा78) तो उन्हें बे हवास कर देगी फिर न वह उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत दी जाएगी।(40) (फ़ा79) और बेशक तुम से अगले रसूलों के साथ ठट्टा किया गया (फ़ा80) तो मसख़रगी करने वालों का ठट्टा उन्हीं को ले बैठा।(41) (फ़ा81) (रुकूअ़ 3) तुम फ़रमाओ शबाना रोज़ तुम्हारी कौन निगहबानी करता है रहमान से (फ़ा82) बल्कि वह अपने रब की याद से मुँह फेरे हैं।(42) (फ़ा83) क्या उनके कुछ ख़ुदा हैं (फ़ा84) जो उनको हम से बचाते हैं (फ़ा85) वह अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते (फ़ा86) और न हमारी तरफ़ से उनकी यारी हो।(43) बल्कि हमने उनको (फ़ा87) और उनके बाप दादा को बरतावा दिया (फ़ा88) यहां तक कि ज़िन्दगी उन पर दराज़ हुई (फ़ा89) तो क्या नहीं देखते कि हम (फ़ा90) ज़मीन को उसके किनारों से घटाते आ रहे हैं (फ़ा91) तो क्या यह ग़ालिब होंगे।(44) (फ़ा92) तुम फ़रमाओ कि मैं तुमको सिर्फ़ 'वही' से डराता हूं (फ़ा93)

(फ़ा73) कहते हैं कि हम रहमान को जानते ही नहीं इस जहल व ज़लाल में मुब्तला होने के बावजूद आपके साथ तमस्ख़ुर करते हैं और नहीं देखते कि हंसी के क़ाबिल ख़ुद उनका अपना हाल है। (फ़ा74) **शाने नुज़ूलः** यह आयत नज़र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्द अ़ज़ाब नाज़िल कराइये इस आयत में फ़रमाया गया कि अब तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा यानी जो वादे अ़ज़ाब के दिये गए हैं उनका वक़्त क़रीब आ गया है चुनांचे रोज़े बद्र वह मन्ज़र उनके नज़र के सामने आ गया। (फ़ा75) अ़ज़ाब का या क़ियामत का यह उनके इस्तेअ्जाल का बयान है। (फ़ा76) दोज़ख़ की (फ़ा77) अगर वह यह जानते होते तो कुफ़्र पर क़ाइम न रहते और अ़ज़ाब में जल्दी न करते। (फ़ा78) क़ियामत (फ़ा79) तौबा व मअ्ज़रत की (फ़ा80) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा81) और वह अपने इस्तेहज़ा और मसख़रगी के वबाल व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए इस में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि आपके साथ इस्तेहज़ा करने वालों का भी यही अन्जाम होना है। (फ़ा82) यानी उसके अ़ज़ाब से (फ़ा83) जब ऐसा है तो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही का क्या ख़ौफ़ हो और वह अपनी हिफ़ाज़त करने वाले को क्या पहचानें। (फ़ा84) हमारे सिवा उनके ख़्याल में (फ़ा85) और हमारे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ
الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ

व ला यस्मअुस् सुम्मुद्दुआ–अ इज़ा मा युन्ज़रून(45)व लइम् मस्सत्हुम् नफ़्हतुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बि–क ल–यकूलुन्–न या वै–लना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(46)व न–ज़अुल् मवाज़ीनल् क़िस्–त लियौमिल् क़िया–मति फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन् व इन् का–न मिस्क़ा–ल ह़ब्बतिम् मिन् ख़र्–दलिन् अतैना बिहा व कफ़ा बिना ह़ासिबीन(47)व ल–क़द् आतैना मूसा व हारूनल् फ़ुर्क़ा–न व ज़ियाअंव् व ज़िक्रल् लिल्मुत्तक़ीन(48)अल्लज़ी–न यख़्शौ–न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्सा–अ़ति मुश्फ़िक़ून(49)व हाज़ा ज़िक्रुम् मुबा–रकुन् अन्ज़ल्नाहु अ–फ़–अन्तुम् लहू मुन्किरून(50)व ल–क़द् आतैना इब्राही–म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आ़लिमीन(51)इज़् क़ा–ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित् तमासीलुल् लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून(52)क़ालू व–जद्ना आबा–अना लहा आ़बिदीन(53)क़ा–ल ल–क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम् मुबीन(54)क़ालू अजिअ्–तना बिल्ह़क़्क़ि अम् अन्–त मिनल्लाअ़िबीन(55)क़ा–ल बर्रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति

और बहरे पुकारना नहीं सुनते जब डराए जयें।(45) (फ़94) और अगर उन्हें तुम्हारे रब के अ़ज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाय ख़राबी हमारी, बेशक हम ज़ालिम थे।(46) (फ़95) और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ (फ़96) राई के दाना के बराबर हो तो हम उसे ले आयेंगे और हम काफ़ी हैं हिसाब को।(47) और बेशक हमने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया (फ़97) और उजाला (फ़98) और परहेज़गारों को नसीहत।(48) (फ़99) वह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़ियामत का अन्देशा लगा हुआ है।(49) और यह है बरकत वाला ज़िक्र कि हमने उतारा (फ़100) तो क्या तुम इसके मुन्किर हो।(50) (रुकूअ़ 4) और बेशक हमने इब्राहीम को (फ़101) पहले ही से उसकी नेक राह अ़ता कर दीं और हम उससे ख़बरदार थे।(51) (फ़102) जब उसने अपने बाप और क़ौम से कहा यह मूरतें क्या हैं (फ़103) जिनके आगे तुम आसन मारे हो।(52) (फ़104) बोले हमने अपने बाप दादा को इनकी पूजा करते पाया।(53) (फ़105) कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब खुली गुमराही में हो।(54) बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूंही खेलते हो।(55) (फ़106) कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो रब है आसमानों

(फ़94) यानी काफ़िर हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के कलाम से नफ़ा न उठाने में बहरे की तरह हैं (फ़95) नबी की बात पर कान न रखा और उन पर ईमान न लाये। (फ़96) आमाल में से (फ़97) यानी तौरेत अ़ता की जो हक़ व बातिल में तफ़रक़ा करने वाली है। (फ़98) यानी रौशनी है कि उससे नजात की राह मालूम होती है (फ़99) जिससे वह पन्द पज़ीर होते हैं और दीनी उमूर का इल्म हासिल करते हैं (फ़100) अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर यानी क़ुरआन पाक यह कसीरुल ख़ैर है और ईमान लाने वालों के लिए इसमें बड़ी बरकतें हैं (फ़101) उनकी इब्तेदाई उम्र में बालिग़ होने के। (फ़102) कि वह हिदायत व नबुव्वत के अहल हैं (फ़103) यानी बुत जो दरिन्दों परिन्दों और इन्सानों की सूरतों के बने हुए हैं (फ़104) और उनकी इबादत में मश्गूल हो (फ़105) तो हम भी उनकी इक़्तेदा में वैसा ही करने लगे। (फ़106) चूंकि उन्हें अपने तरीक़ा का गुमराही होना बहुत बईद मालूम होता था और उसका इन्कार करना वह बहुत बड़ी बात जानते थे इस लिए उन्होंने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से यह कहा कि क्या आप यह बात वाक़ेई तौर पर हमें बता रहे हैं या बतरीक़े खेल के फ़रमाते हैं उसके जवाब में आपने हज़रत मलिके अल्लाम की रबूबियत का इस्बात फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप खेल के तरीक़े पर कलाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि हक़ का इज़्हार फ़रमाते हैं चुनांचे आपने।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِىْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿56﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿57﴾ فَجَعَلَهُمْ

جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿58﴾ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿59﴾ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِيْمُ ﴿60﴾ قَالُوْا

فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿61﴾ قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿62﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا

يَنْطِقُوْنَ ﴿63﴾ فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿64﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَاۤءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿65﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿66﴾ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿67﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ

वल्अर्ज़िल् लज़ी फ़–त–रहुन्–न व अना अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन(56)व तल्लाहि ल–अकीदन्–न अस्ना–मकुम् बअ़्–द अन् तुवल्लू मुदबिरीन(57)फ़–ज–अ़–लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल् लहुम् ल–अ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिअ़ून(58)क़ालू मन् फ़–अ़–ल हाज़ा बिआलि–हतिना इन्नहू लमिनज़्–ज़ालिमीन(59)क़ालू समिअ़्ना फ़–तंय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम(60)क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला अअ़्युनिन्नासि ल–अ़ल्लहुम् यश्हदून(61)क़ालू अ–अन्–त फ़–अ़ल्–त हाज़ा बि–आलि–हतिना या इब्राहीम(62)क़ा–ल बल् फ़–अ़–लहू कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून(63)फ़–र–जअ़ू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़् ज़ालिमून(64)सुम्–म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम् ल–क़द् अ़लिम्–त मा हाउलाइ यन्तिक़ून(65)क़ा–ल अ–फ़–तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुकुम् शैअंव् व ला यज़ुर्रुकुम्(66)उफ़्फ़िल् लकुम् व लिमा तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि अ–फ़ला तअ़्क़िलून(67)क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि–ह–तकुम्

और ज़मीन का जिसने उन्हें पैदा किया और मैं उस पर गवाहों में से हूं।(56) और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बाद इसके कि तुम फिर जाओ पीठ देकर।(57) (फ़107) तो उन सब को (फ़108) चूरा कर दिया मगर एक को जो इन सबका बड़ा था (फ़109) कि शायद वह उससे कुछ पूछें।(58) (फ़110) बोले किसने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया बेशक वह ज़ालिम है।(59) उनमें के कुछ बोले हमने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं।(60) (फ़111) बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ शायद वह गवाही दें।(61) (फ़112) बोले क्या तुमने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया ऐ इब्राहीम।(62) (फ़113) फ़रमाया बल्कि उनके उस बड़े ने किया होगा (फ़114) तो उनसे पूछो अगर बोलते हों।(63) (फ़115) तो अपने जी की तरफ़ पलटे (फ़116) और बोले बेशक तुम्हीं सितमगार हो।(64) (फ़117) फिर अपने सरों के बल औंधाए गए (फ़118) कि तुम्हें ख़ूब मालूम है यह बोलते नहीं(65) (फ़119) कहा तो क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे (फ़120) और न नुक़्सान पहुंचाए।(66) (फ़121) तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(67) (फ़122) बोले इनको जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो

(फ़107) अपने मेले को वाक़िआ़ यह है कि उस क़ौम का सालाना एक मेला लगता था जंगल में जाते थे और शाम तक वहां लह्व व लइब में मश्ग़ूल रहते थे वापसी के वक़्त बुत ख़ाना में आते थे और बुतों की पूजा करते थे उसके बाद अपने मकानों को वापस जाते थे जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उनकी एक जमाअ़त से बुतों के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा किया तो उन लोगों ने कहा कि कल को हमारी ईद है आप वहां चलें देखें कि हमारे दीन और तरीक़े में क्या बहार है और कैसे लुत्फ़ आते हैं जब वह मेले का दिन आया और आप से उस मेले में चलने को कहा गया तो आप उज़्र करके रह गए वह लोग रवाना हो गए जब उनके बाक़ी मांदा और कमज़ोर लोग आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे गुज़रे तो आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा उसको बाज़ लोगों ने सुना और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बुत ख़ाना की तरफ़ लौटे (फ़108) यानी बुतों को तोड़ कर (फ़109) छोड़ दिया और बसूला उसके कांधे पर रख दिया (फ़110) यानी बड़े बुत से कि उन छोटे बुतों का क्या हाल है यह क्यों टूटे और बसूला तेरी गर्दन पर कैसा रखा है और उन्हें इसका इज्ज़ ज़ाहिर हो और उन्हें होश आये कि ऐसे आजिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते या यह माना हैं कि वह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त करें और आपको हुज्जत क़ाइम करने का मौक़ा मिले चुनान्चे जब क़ौम के लोग शाम को वापस हुए और बुत ख़ाने में पहुंचे और **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝ قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝ وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ۝ وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى
الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا لَنَا عَابِدِينَ ۝ وَلُوطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي
كَانَت تَّعْمَلُ الْخَبَائِثَ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَاسِقِينَ ۝ وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ
وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ وَدَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ

इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन(68)कुल्ना यानारु कूनी बर्दंव् व सलामन् अ़ला इब्राहीम(69)व अरादू बिही कैदन् फ़–ज–अ़ल्नाहुमुल् अख़्सरीन(70)व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्अर्ज़िल् लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़–लमीन(71)व व–हब्ना लहू इस्हा–क़ व यअ़्कू–ब नाफ़ि–ल–तन् व कुल्लन् ज–अ़ल्ना सालिहीन (72)व ज–अ़ल्नाहुम् अइम्मतंय्यह्दू–न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ़्–लल्–ख़ैराति व इक़ामस्–सलाति व ईताअज्–ज़काति व कानू लना आ़बिदीन(73)व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव् व अ़िल्मंव् व नज्जैनाहु मिनल्–क़र्यतिल् लती कानत् तअ़्–मलुल् ख़बाइ–स इन्नहुम् कानू क़ौ–म सौइन् फ़ासिक़ीन (74)व अद्ख़ल्नाहु फ़ी रह़्मतिना इन्नहू मिनस् सालिहीन(75)व नूहन् इज् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्त–जब्ना लहू फ़–नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्–कर्बिल् अ़ज़ीम(76)व न–सर्नाहु मिनल् क़ौमिल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना इन्नहुम् कानू क़ौ–म सौइन् फ़–अग्रक़्नाहुम् अज्मईन(77)व दावू–द व सुलैमा–न

अगर तुम्हें करना है।(68) (फ़123) हमने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।(69) (फ़124) और उन्होंने उसका बुरा चाहा तो हमने उन्हें सब से बढ़कर ज़ियांकार कर दिया।(70) (फ़125) और हमने उसे और लूत को (फ़126) नजात बख़्शी (फ़127) उस ज़मीन की तरफ़ (फ़128) जिस में हमने जहान वालों के लिए बरकत रखी।(71) (फ़129) और हमने उसे इसहाक़ अ़ता फ़रमाया (फ़130) और याकूब पोता और हमने उन सब को अपने कुर्बे ख़ास का सज़ावार किया।(72) और हमने उन्हें इमाम किया कि (फ़131) हमारे हुक्म से बुलाते हैं और हमने उन्हें 'वही' भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने की और वह हमारी बन्दगी करते थे।(73) और लूत को हमने हुकूमत और इल्म दिया और उसे उस बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी (फ़132) बेशक वह बुरे लोग बे हुक्म थे।(74) और हमने उसे (फ़133) अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है।(75) (रुकूअ़ 5) और नूह को जब इससे पहले उसने हमें पुकारा तो हमने उसकी दुआ़ क़बूल की और उसे और उसके घर वालों को बड़ी सख़्ती से नजात दी।(76) (फ़134) और हमने उन लोगों पर उसको मदद दी जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं बेशक वह बुरे लोग थे तो हमने उन सबको डुबो दिया।(77) और दाऊद और सुलैमान

(फ़123) नमरूद और उसकी क़ौम हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जला डालने पर मुत्तफ़िक़ हो गई और उन्होंने आपको एक मकान में क़ैद कर दिया और क़रिया कोसा में एक इमारत बनाई और एक महीना तक बकोशिश तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियां जमा कीं और एक अ़ज़ीम आग जलाई जिसकी तपिश से हवा में परवाज़ करने वाले परिन्दे जल जाते थे और एक मुन्जनीक़ (गोफन) खड़ी की और आपको बांध कर उस में रख कर आग में फेंका उस वक़्त आपकी ज़बाने मुबारक पर था हस्बि-यल्लाहु व निअ़्मल् वकीलु जिबरील अमीन ने आप से अ़र्ज़ किया कि क्या कुछ काम है आपने फ़रमाया तुम से नहीं जिबरील ने अ़र्ज़ किया तो अपने रब से सवाल कीजिये फ़रमाया सवाल करने से उसका मेरे हाल को जानना मेरे लिए किफ़ायत करता है (फ़124) तो आग ने सिवा आपकी बन्दिश के और कुछ न जलाया और आग की गर्मी ज़ाइल हो गई और रौशनी बाक़ी रही (फ़125) कि उनकी मुराद पूरी न हुई और सई नाकाम रही और अल्लाह तआ़ला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उनके गोश्त खा गए और ख़ून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग़ में घुस गया और उसकी हलाकत का सबब हुआ (फ़126) जो उनके भतीजे उनके भाई हारान के फ़रज़न्द थे नमरूद और उसकी क़ौम से (फ़127) और इराक़ से (फ़128) रवाना किया (फ़129) उस ज़मीन से ज़मीने शाम मुराद है उसकी बरकत यह है कि यहां कसरत से अम्बिया हुए और तमाम जहान में उनके दीनी बरकात पहुंचे और सरसब्ज़ी व शादाबी के ऐतबार से भी यह ख़ित्ता दूसरे ख़ित्तों **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا
مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ
الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا
دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ
ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

इज़् यह्कुमानि फ़िल्हर्सि इज़् न–फ़–शत् फ़ीहि ग़–नमुल् क़ौमि व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन(78) फ़–फ़ह्–हम्नाहा सुलैमा–न व कुल्लन् आतैना हुक्मंव् व अ़िल्मंव् व सख़्ख़रना म–अ़ दावूदल् जिबा–ल युसब्बिह्–न वत्तै–र व कुन्ना फ़ाअ़िलीन(79)व अ़ल्लम्नाहु सन्–अ़–त लबूसिल् लकुम् लितुह्सि–नकुम् मिम् बअ्सिकुम् फ़–हल् अन्तुम् शाकिरून(80)व लिसुलैमानर् री–ह आ़सि–फ़तन् तज्री बिअम्रिही इलल् अर्ज़िल् लती बारक्ना फ़ीहा व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन(81)व मिनश् शयातीनि मंय्यग़ूसू–न लहू व यअ्–मलू–न अ़–मलन् दू–न ज़ालि–क व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन (82)व अय्यू–ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनि–यज़्ज़ुर्रु व अन्–त अर्हमुर् राहिमीन(83)फ़स्त –जब्ना लहू फ़–क–शफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव् व आतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम् म–अ़हुम् रह्–म–तम् मिन् अ़िन्दिना व ज़िक्रा लिल्आ़बिदीन(84)व इस्माअ़ी–ल व इद्री–स व ज़ल्किफ़्लि कुल्लुम् मिनस्–साबिरीन(85)

को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते थे जब रात को उसमें कुछ लोगों की बकरियां छुटीं (फ़्135) और हम उनके हुक्म के वक़्त हाज़िर थे।(78) हमने वह मुआ़मला सुलैमान को समझा दिया (फ़्136) और दोनों को हुकूमत और इल्म अ़ता किया (फ़्137) और दाऊद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह़ करते और परिन्दे (फ़्138) और यह हमारे काम थे।(79) और हमने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें तुम्हारी आँच से बचाए (फ़्139) तो क्या तुम शुक्र करोगे।(80) और सुलैमान के लिए तेज़ हवा मुसख़्ख़र कर दी कि उसके हुक्म से चलती उस ज़मीन की तरफ़ जिसमें हमने बरकत रखी (फ़्140) और हमको हर चीज़ मालूम है।(81) और शैतानों में से वह जो उसके लिए ग़ोता लगाते (फ़्141) और उसके सिवा और काम करते (फ़्142) और हम उन्हें रोके हुए थे।(82) (फ़्143) और अय्यूब को (याद करो) जब उसने अपने रब को पुकारा (फ़्144) कि मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला है।(83) तो हमने उसकी दुआ़ सुन ली तो हमने दूर कर दी जो तकलीफ़ उसे थी (फ़्145) और हमने उसे उसके घर वाले और उनके साथ उतने ही और अ़ता किये (फ़्146) अपने पास से रहमत फ़रमा कर और बन्दगी वालों के लिए नसीहत।(84) (फ़्147) और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल को (याद करो) वह सब सब्र वाले थे।(85) (फ़्148)

(फ़्135) उनके साथ कोई चराने वाला न था वह खेती खा गईं यह मुक़द्दमा हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के सामने पेश हुआ आपने तजवीज़ की कि बकरियां खेती वाले को दे दी जायें बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़सान के बराबर थी। (फ़्136) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के समाने जब यह मुआ़मला पेश हुआ तो आपने फ़रमाया कि फ़रीक़ैन के लिए इससे ज़्यादा आसानी की शक्ल भी हो सकती है उस वक़्त हज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने आप पर लाज़िम किया कि वह सूरत बयान फ़रमायें हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने यह तजवीज़ पेश की कि बकरी वाला काश्त करे और जब तक खेती उस हालत को पहुंचे जिस हालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरह से नफ़ा उठाये और खेती उस हालत पर पहुंच जाने के बाद खेती वाले को खेती दे दी जाये बकरी वाले को उसकी बकरियां वापस कर दी जावें यह तजवीज़ हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने पसन्द फ़रमाई इस मुआ़मला में यह दोनों हुक्म इज्तेहादी थे और उस शरीअ़त के मुताबिक़ थे हमारी शरीअ़त में हुक्म यह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर जो नुक़सानात करे उसका ज़िमान लाज़िम नहीं मुजाहिद का क़ौल है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने जो फ़ैसला किया था वह इस (बक़िया सफ़हा 557 पर)

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿٨٦﴾ وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَیْهِ فَنَادٰی فِی الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖۗ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٨٧﴾ۚۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗ
رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿٨٩﴾ۚۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ یَحْیٰی وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ
وَیَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ﴿٩٠﴾ وَالَّتِیْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِیْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَاۤ اٰیَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖۤ
اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖؗ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَیْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَیْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ یَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ

व अद्‌–ख़ल्नाहुम् फ़ी रह्‌मतिना इन्नहुम् मिनस् सालिहीन(86)व ज़न्नूनि इज़् ज़–ह–ब मुग़ाज़िबन् फ़–ज़न्–न अल्लन् नक़्दि–र अ़लैहि फ़नादा फ़िज़्ज़ुलुमाति अल्–ला इला–ह इल्ला अन्–त सुब्हा–न–क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन(87)फ़स्–त–जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनल्ग़म्मि व कज़ालि–क नुन्जिल् मुअ्‌मिनीन(88)व ज़–करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला त–ज़र्नी फ़र्– दंव् व अन्–त ख़ैरुल् वारिसीन (89)फ़स्त–जब्ना लहू व व–हब्ना लहू यह्‌या व अस्लह्‌ना लहू ज़ौ–जहू इन्नहुम् कानू युसारिअू–न फ़िल्ख़ैराति व यद्अू–नना र–ग़–बंव् व र–ह–बन् व कानू लना ख़ाशिअ़ीन(90)वल्लती अह्–सनत् फ़र्–जहा फ़–न–फ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व ज–अ़ल्नाहा वब्–नहा आ–यतल् लिल्आ़–लमीन(91)इन्–न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव् वाहि–द–तंव् व अना रब्बुकुम् फ़अ्‌बुदून(92)व त–क़त्तअूअम्–रहुम् बै–नहुम् कुल्लुन् इलैना राजिअून(93)फ़–मंय्यअ्‌मल् मिनस्–सालिहाति व हु–व मुअ्‌मिनुन् फ़ला कुफ़्रा–न

और उन्हें हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं।(86) और ज़ुन्नून को (याद करो) (फ़ा149) जब चला गुस्सा में भरा (फ़ा150) तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे (फ़ा151) तो अन्धेरियों में पुकारा (फ़ा152) कोई मअ्‌बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझको बेशक मुझ से बेजा हुआ।(87) (फ़ा153) तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे ग़म से नजात बख़्शी (फ़ा154) और ऐसी ही नजात देंगे मुसलमानों को।(88) (फ़ा155) और ज़करिया को जब उसने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ (फ़ा156) और तू सबसे बेहतर और वारिस।(89) (फ़ा157) तो हमने उसकी दुआ क़बूल की और उसे (फ़ा158) यह्‌या अता फ़रमाया और उसके लिए उसकी बीबी संवारी (फ़ा159) बेशक वह (फ़ा160) भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं।(90)और उस औरत को जिसने अपनी पारसाई निगाह रखी (फ़ा161) तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकी (फ़ा162) और उसे और उसके बेटे को सारे जहान के लिए निशानी बनाया।(91) (फ़ा163) बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है (फ़ा164) और मैं तुम्हारा रब हूं (फ़ा165) तो मेरी इबादत करो।(92)और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिए(फ़ा166) सब को हमारी तरफ़ फिरना है।(93)(फ़ा167)(रुकूअ़ 6) तो जो कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उसकी कोशिश की

(फ़ा149) यानी हज़रत यूनुस इब्ने मत्ता को। (फ़ा150) अपनी क़ौम से जिसने उनकी दावत न क़बूल की थी और नसीहत न मानी थी और कुफ़्र पर क़ाइम रही थी आपने गुमान किया कि यह हिजरत आपके लिए जायज़ है क्योंकि इसका सबब सिर्फ़ कुफ़्र और अहले कुफ़्र के साथ बुग़्ज़ और अल्लाह के लिए ग़ज़ब करना है लेकिन आपने इस हिजरत में हुक्मे इलाही का इन्तेज़ार न किया। (फ़ा151) तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मछली के पेट में डाला। (फ़ा152) कई क़िस्म की अंधेरियां थीं दरिया की अंधेरी रात की अंधेरी मछली के पेट की अंधेरी उन अंधेरियों में हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपने परवरदिगार से इस तरह दुआ की कि- (फ़ा153) कि मैं अपनी क़ौम से क़बल तेरा इज़्न पाने के जुदा हुआ हदीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत ज़दा बारगाहे इलाही में इन कलिमात से दुआ करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ क़बूल फ़रमाता है। (फ़ा154) और मछली को हुक्म दिया तो उसने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को दरिया के किनारे पर पहुंचा दिया। (फ़ा155) मुसीबतों और तकलीफ़ों से जब वह हम से फ़रियाद करें और दुआ करें (फ़ा156) यानी बे औलाद बल्कि वारिस अ़ता फ़रमा (फ़ा157) ख़ल्क़ की फ़ना के बाद बाक़ी रहने वाला मुद्दआ यह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तो भी कुछ ग़म नहीं क्योंकि तू बेहतर वारिस है (फ़ा158) फ़रज़न्दे सईद (फ़ा159) जो बांझ थी उसको क़ाबिले विलादत किया (फ़ा160) यानी अम्बिया मज़कूरीन (फ़ा161) पूरे तौर पर कि किसी तरह कोई बशर उसकी पारसाई को छू न सका मुराद इससे हज़रत मरयम हैं। (फ़ा162) और उसके पेट **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

لِسَعْيِهٖ ۚ وَ اِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝ وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝
وَ اقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ وَ مَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ هٰۤؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَ كُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ هُمْ
فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَ هُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۝
لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا

लिसअ्यिही व इन्ना लहू कातिबून(94)व ह़रामुन् अ़ला क़र्यतिन् अह्–लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून (95)ह़त्ता इज़ा फुतिह़त् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह़–दबिंय्यन्सिलून(96)वक़्त– र–बल् वअ़्दुल् ह़क़्क़ु फ़इज़ा हि–य शाख़ि–सतुन् अब्सारुल्लज़ी–न क–फ़रू या वै–लना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ़्–लतिम् मिन् हाजा बल् कुन्ना ज़ालिमीन(97)इन्नकुम् व मा तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि ह़–सबु जहन्न –म अन्तुम् लहा वारिदून(98)लौ का–न हाउलाइ आलि–ह–तम् मा व–रदूहा व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून (99)लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव् व हुम् फ़ीहा ला यस्मअून(100)इन्नल्लज़ी–न स–ब–क़त् लहुम् मिन्नल् हुस्ना उलाइ–क अ़न्हा मुब्अ़दून(101)ला यस्मअू–न ह़सी–सहा व हुम् फ़ी मश्–तहत् अन्फ़ुसुहुम् ख़ालिदून(102)ला यह़्ज़ुनुहुमुल् फ़–ज़अुल् अक्बरु व त–त–लक़्क़ाहुमुल् मलाइ–कतु हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तू–अदून(103)यौ–म नत्विस् समा–अ क–तय्यिस् सिजिल्लि लिल्कुतुबि कमा

बे क़दरी नहीं और हम उसे लिख रहे हैं।(94) और हराम है उस बस्ती पर जिसे हमने हलाक कर दिया कि फिर लौट कर आयें।(95) (फ़ा168) यहां तक कि जब खोले जायेंगे याजूज व माजूज (फ़ा169) और वह हर बुलन्दी से ढुलकते होंगे।(96) और क़रीब आया सच्चा वादा (फ़ा170) तो जभी आँखें फट कर रह जायेंगी काफ़िरों की (फ़ा171) कि हाय हमारी ख़राबी बेशक हम (फ़ा172) इससे ग़फ़लत में थे। बल्कि हम ज़ालिम थे।(97) (फ़ा173) बेशक तुम (फ़ा174) और जो कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो (फ़ा175) सब जहन्नम के ईंधन हो तुम्हें उसमें जाना(98) अगर यह (फ़ा176) ख़ुदा होते जहन्नम में न जाते और उन सबको हमेशा उसमें रहना।(99) (फ़ा177) वह उसमें रेकेंगे (फ़ा178) और वह उसमें कुछ न सुनेंगे।(100) (फ़ा179) बेशक वह जिनके लिए हमारा वादा भलाई का हो चुका वह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।(101) (फ़ा180) वह उसकी भनक न सुनेंगे (फ़ा181) और वह अपनी मन मानती ख़्वाहिशों में (फ़ा182) हमेशा रहेंगे।(102) उन्हें ग़म में न डालेगी वह सबसे बड़ी घबराहट (फ़ा183) और फ़रिश्ते उनकी पेशवाई को आयेंगे (फ़ा184) कि यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुम से वादा था।(103) जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे जैसे सिजिल फ़रिश्ता (फ़ा185) नामए आमाल को लपेटता है हमने

(फ़ा168) दुनिया की तरफ़ तलाफ़ी आमाल व तदारुके अहवाल के लिए यानी इस लिए कि उनका वापस आना नामुमकिन है मुफ़स्सिरीन ने इसके यह माना भी बयान किये हैं कि जिस बस्ती वालों को हम ने हलाक किया उनका शिर्क व कुफ़्र से वापस आना मुहाल है यह माना इस तक़दीर पर हैं जबकि ला को ज़ाइदा क़रार दिया जाये और अगर ला ज़ायदा न हो तो माना यह होंगे कि दारे आख़िरत में उनका हयात की तरफ़ न लौटना नामुमकिन है इस में मुन्किरीने बअ्.स का इबताल है और ऊपर जो *कुल्लुन् इलैना राजिऊ–न* और *ला कुफ़रा–न लि–सअ्यिही* फ़रमाया गया इकसी ताकीद है। (तफ़सीर कबीर वग़ैरह) (फ़ा169) क़रीब क़ियामत और याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं (फ़ा170) यानी क़ियामत (फ़ा171) उस दिन के हौल और दहशत से और कहेंगे (फ़ा172) दुनिया के अन्दर (फ़ा173) कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुठलाते थे। (फ़ा174) ऐ मुशरिको (फ़ा175) यानी तुम्हारे बुत (फ़ा176) बुत जैसा कि तुम्हारा गुमान है (फ़ा177) बुतों को भी और उनके पूजने वालों को भी। (फ़ा178) और अ़ज़ाब की शिद्दत से चीख़ेंगे और दहाड़ेंगे। (फ़ा179) जहन्नम के शिद्दते जोश की वजह से हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जब जहन्नम में वह लोग रह जायेंगे जिन्हें उसमें हमेशा रहना है तो वह आग के ताबूतों में बन्द किये जायेंगे वह ताबूत और ताबूतों में फिर वह ताबूत और ताबूतों में और उन ताबूतों पर आग की मेख़ें जड़ दी जायेंगी तो वह कुछ न सुनेंगे और न कोई उनमें किसी को देखेगा। (फ़ा180) इसमें ईमान वालों के लिए बशारत है हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने यह आयत पढ़ कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में से हूं और अबू बकर और उमर और उसमान और **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

بَدَأْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ فِىْ
هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾
وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾

बदअ्ना अव्व–ल ख़ल्क़िन् नुअ़ीदुहू वअ़्दन् अ़लैना इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन(104)व ल–क़द क– तब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम् बअ़्दिज़् ज़िक्रि अन्नल् अर्–ज़ यरिसुहा अ़िबादि–यस् सालिहून (105)इन्–न फ़ी हाज़ा ल–बलाग़ल् लिक़ौमिन् आ़बिदीन(106)व मा अर्सल्ना–क इल्ला रह्–मतल् लिल्–आ़–लमीन(107)कुल् इन्नमा यूहा इलय्–य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़–हल् अन्तुम् मुस्लिमून(108)फ़–इन् त–वल्लौ फ़कुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवाइन् व इन् अदरी अ–क़रीबुन् अम् बअ़ीदुम् मा तू–अ़दून(109)इन्नहू यअ़्लमुल् जह्–र मिनल्क़ौलि व यअ़्लमु मा तक्तुमून(110)व इन् अदरी ल–अ़ल्लहू फ़ित्–नतुल् लकुम् व मताअुन् इला हीन(111) क़ा–ल रब्बिह्कुम् बिल्हक़्क़ि व रब्बुनर् रह्मानुल् मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून(112)

जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे (फ़186) यह वादा है हमारे ज़िम्मा हम को इसका ज़रूर करना।(104) और बेशक हमने ज़बूर में नसीहत के बाद लिख दिया कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।(105) (फ़187) बेशक यह कुरआन काफ़ी है इबादत वालों को।(106) (फ़188) और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिए।(107) (फ़189) तुम फ़रमाओ मुझे तो यही 'वही' होती है कि तुम्हारा खुदा नहीं मगर एक अल्लाह तो क्या तुम मुसलमान होते हो।(108) फिर अगर वह मुँह फेरें (फ़190) तो फ़रमा दो मैंने तुम्हें लड़ाई का एलान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं (फ़191) कि पास है या दूर है वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है।(109) (फ़192) बेशक अल्लाह जानता है आवाज़ की बात (फ़193) और जानता है जो तुम छुपाते हो।(110) (फ़194) और मैं क्या जानूं शायद वह (फ़195) तुम्हारी जांच हो (फ़196) और एक वक़्त तक बरतवाना।(111) (फ़197) नबी ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब हक़ फ़ैसला फ़रमा दे (फ़198) और हमारे रब रहमान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो।(112) (फ़199) (रुकूअ़ 7)

(फ़ा186) यानी हमने जैसे पहले अ़दम से बनाया था वैसे ही फिर मअ़्दूम करने के बाद पैदा कर देंगे या यह माना हैं कि जैसा मां के पेट से बरहना ग़ैर मख़्तून पैदा किया था ऐसा ही मरने के बाद उठायेंगे। (फ़ा187) इस ज़मीन से मुराद ज़मीने जन्नत है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की ज़मीनें मुराद हैं जिनको मुसलमान फ़तह करेंगे और एक क़ौल यह है कि ज़मीने शाम मुराद है। (फ़ा188) कि जो उसका इत्तेबाअ़ करे और उसके मुताबिक़ अमल करे जन्नत पाये और मुराद को पहुंचे और इबादत वालों से मोमिनीन मुराद हैं और एक क़ौल यह है कि उम्मते मुहम्मदिया मुराद है जो पांचों नमाज़ें पढ़ते हैं रमज़ान के रोज़े रखते हैं हज करते हैं। (फ़ा189) कोई हो जिन्न हो या इन्स मोमिन हो या काफ़िर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रहमत होना आम है ईमान वाले के लिए भी और उसके लिए भी जो ईमान न लाया और मोमिन के लिए तो आप दुनिया व आख़िरत दोनों में रहमत हैं और जो ईमान न लाया उसके लिए आप दुनिया में रहमत हैं कि आपकी बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़स्फ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए तफ़सीर रूहुल बयान में इस आयत की तफ़सीर में अकाबिर का यह क़ौल नक़ल किया है कि आयत के माना यह हैं कि हमने आपको नहीं भेजा मगर रहमते मुतलक़ा ताम्मा कामिला आम्मा शामिला जामिआ़ मुहीता बर जमीअ़. मुक़ीदाते रहमत ग़ैबिया व शहादते इल्मिया व अ़ैनिया व वुजूदिया व शुहूदिया व साबिक़ा व लाहिक़ा वग़ैर ज़ालिक तमाम जहानों के लिए आ़लमे अरवाह हों या आ़लमे अजसाम ज़विलउक़ूल हों या ग़ैर ज़विलउक़ूल और जो तमाम आ़लमों के लिए रहमत हो लाज़िम है कि वह तमाम जहान से अफ़ज़ल हो (फ़ा190) और इस्लाम न लायें (फ़ा191) बे ख़ुदा के बताये यानी यह बात अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नहीं है यहां दरायत की नफ़ी फ़रमाई गई दरायत कहते हैं अन्दाज़े और क़ियास से जानने को जैसा कि मुफ़र्रिदात राग़िब और रद्दुल मुहतार में है इसी लिए अल्लाह तआ़ला के वास्ते लफ़्ज़ दरायत इस्तेमाल नहीं किया जाता और क़ुरआने करीम के इत्लाक़ात इस पर दलालत करते हैं जैसा कि फ़रमाया *मा कुन्–त तद्री मल्किताबु वलल्–ईमानु* लिहाज़ा यहां **(बक़िया सफ़्हा 543 पर)**

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا

وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

सूरतुल हज्जि

(मदनी है इसमें 78 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् इन्–न ज़ल्–ज़–ल–तस् सा–अ़ति शैउन् अ़ज़ीम(1)यौ–म तरौ–नहा तज़्हलु कुल्लु मुरज़ि–अ़तिन् अ़म्मा अर्–ज़–अ़त् व त–ज़अ़ु कुल्लु ज़ाति हम्लिन् हम्–लहा व त–रन्ना–स सुकारा व माहुम् बिसुकारा व लाकिन्–न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद(2)व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव् व यत्तबिअ़ु कुल्–ल शैतानिम् मरीद(3)कुति–ब अ़लैहि अन्नहू मन् त–वल्लाहु फ़–अन्नहू युज़िल्लुहू व यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर(4)या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिनल्–बअ़्सि फ़इन्ना ख़–लक़्नाकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ लोगो अपने रब से डरो (फ़ा2) बेशक क़ियामत का ज़लज़ला (फ़ा3) बड़ी सख़्त चीज़ है।(1) जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली (फ़ा4) अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभनी (फ़ा5) अपना गाभ डाल देगी (फ़ा6) और तू लोगों को देखेगा जैसे नशा में हैं और वह नशा में न होंगे (फ़ा7) मगर है यह कि अल्लाह की मार कड़ी है।(2)और कुछ लोग वह हैं कि अल्लाह के मुआ़मला में झगड़ते हैं बे जाने बूझे और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं।(3)(फ़ा8)जिस पर लिख दिया गया है कि जो इसकी दोस्ती करेगा तो यह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की राह बताएगा।(4) (फ़ा9)ऐ लोगो अगर तुम्हें क़ियामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो यह ग़ौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया

(फ़ा1) सूरह हज बक़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा व मुजाहिद मक्की है सिवाए छः आयतों के जो हाज़ानि ख़स्मानि से शुरू होती हैं इस सूरत में दस रुकूअ़ और अठहत्तर आयतें और 1291 कलिमात और 5075 हरफ़ हैं। (फ़ा2) उसके अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करो और उसकी ताअ़त में मश्ग़ूल हो। (फ़ा3) जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत आफ़ताब के मग़रिब से तुलूअ़ होने के नज़्दीक वाक़ेअ़ होगा (फ़ा4) उसकी हैबत से (फ़ा5) यानी हमल वाली उस दिन के हौल से (फ़ा6) हमल साक़ित हो जायेंगे। (फ़ा7) बल्कि अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से लोगों के होश जाते रहेंगे। (फ़ा8)**शाने नुज़ूलः** यह आयत नज़्र बिन हारिस के बारे में नाज़िल हुई जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां और क़ुरआन को पहलों के क़िस्से बताता था और मौत के बाद उठाये जाने का मुन्किर था। (फ़ा9) शैतान के इत्तेबाअ़ से ज़जर फ़रमाने के बाद मुन्किरीने बअ़्स पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाई जाती है।

(बक़िया सफ़हा 542 का) बे तालीमे इलाही महज़ अपने अक़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि मुतलक़ इल्म की और मुतलक़ इल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जबकि इसी रुकूअ़ के अव्वल में आ चुका है *वक़्तर्र-बल् वअ़्दुल् हक़्क़ु* यानी क़रीब आया सच्चा वादा तो कैसे कहा जा सकता है कि वादे का क़ुर्ब व बुअ़्द किसी तरह मालूम नहीं ख़ुलासा यह है कि अपने अक़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि तालीमे इलाही से जानने की (फ़ा192) अ़ज़ाब का या क़ियामत का। (फ़ा193) जो ऐ कुफ़्फ़ार तुम एलान के साथ इस्लाम पर बतरीक़े तअ़्न कहते हो। (फ़ा194) अपने दिलों में यानी नबी की अ़दावत और मुसलमानों से हसद जो तुम्हारे दिलों में पोशीदा है अल्लाह उसको भी जानता है सब का बदला देगा। (फ़ा195) यानी दुनिया में अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना (फ़ा196) जिस से तुम्हारा हाल ज़ाहिर हो जाये (फ़ा197) यानी वक़्ते मौत तक। (फ़ा198) मेरे और उनके दर्मियान जो मुझे झुठलाते हैं इस तरह कि मेरी मदद कर और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा यह दुआ़ मुस्तजाब हुई और कुफ़्फ़ारे बद्र व अहज़ाब व हुनैन वग़ैरह में मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। (फ़ा199) शिर्क व कुफ़्र और बे ईमानी की।

مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ
وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ
الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝

मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म मिम् मुज़्ग़तिम् मुख़ल्ल-क़तिंव् व ग़ैरि मुख़ल्ल-क़तिल् लिनुबय्यि-न लकुम् व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा नशाउ इला अ-जलिम् मुसम्मन् सुम्-म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्-लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ़्फ़ा व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्-ज़लिल् अ़ुमुरि लिकैला यअ़्-ल-म मिम् बअ़्दि अ़िल्मिन् शैअन् व त-रल् अर्-ज़ हामि-द-तन् फ़इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल् मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत् व अम्ब-तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम् बहीज(5)ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल् ह़क़्क़ु व अन्नहू युह़्यिल् मौता व अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(6)व अन्नस्सा-अ़-त आति-यतुल् लारै-ब फ़ीहा व अन्नल्ला-ह यब्-असु मन् फ़िल्क़ुबूरि(7)व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव् व ला हुदंव् व ला किताबिम् मुनीर(8)सानि-य अ़ित्फ़िही लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव् व नुज़ीक़ुहू यौमल् क़िया-मति अ़ज़ाबल् ह़रीक़(9)

मिट्टी से (फ़10) फिर पानी की बूंद से (फ़11) फिर ख़ून की फुटक से (फ़12) फिर गोश्त की बोटी से नक़्शा बनी और बे बनी (फ़13) ताकि हम तुम्हारे लिए अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमायें (फ़14) और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक मुक़र्रर मीआ़द तक (फ़15) फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा फिर(फ़16) इस लिए कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो (फ़17) और तुम में कोई पहले ही मर जाता है और कोई सब में निकम्मी उम्र तक डाला जाता है (फ़18) कि जानने के बाद कुछ न जाने (फ़19) और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई (फ़20) फिर जब हमने उस पर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई और उभर आई और हर रौनक़दार जोड़ा (फ़21) उगा लाई।(5) (फ़22) यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है (फ़23) और यह कि वह मुर्दे जिलाएगा और यह कि वह सब कुछ कर सकता है।(6) और इसलिए कि क़ियामत आने वाली इसमें कुछ शक नहीं और यह कि अल्लाह उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं।(7) और कोई आदमी वह है कि अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इल्म न कोई दलील और न कोई रौशन नविश्ता।(8) (फ़24) हक़ से अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह की राह से बहका दे (फ़25) उसके लिए दुनिया में रुसवाई है (फ़26) और क़ियामत के दिन हम उसे आग का अ़ज़ाब चखायेंगे।(9) (फ़27)

(फ़10) तुम्हारी नस्ल की असल यानी तुम्हारे जद्दे आला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उससे पैदा करके। (फ़11) यानी क़तरए मनी से उनकी तमाम ज़ुर्रियत को (फ़12) कि नुत्फ़ए ख़ूने ग़लीज़ हो जाता है। (फ़13) यानी मुसव्विर और ग़ैर मुसव्विर बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोगों का माद्दए पैदाइश मां के शिकम में चालीस रोज़ तक नुत्फ़ा रहता है फिर उतनी ही मुद्दत ख़ून बस्ता हो जाता है फिर उतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की तरह रहता है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़्क़ उसकी उम्र उसके अमल उसका शक़ी या सईद होना लिखता है फिर उसमें रूह फूंकता है (हदीस) अल्लाह तआ़ला इन्सान की पैदाईश इस तरह फ़रमाता है और उसको एक हाल से दूसरे के हाल की तरफ़ मुन्तक़िल करता है यह इस लिए बयान फ़रमाया गया। (फ़14) और तुम अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत व हिकमत को जानो और अपनी इब्तेदाए पैदाइश के हालात पर नज़र करके समझ लो कि जो क़ादिरे बरहक़ बे जान मिट्टी में इतने इन्क़लाब करके जानदार आदमी बना देता है वह मरे हुए इन्सान को ज़िन्दा करे तो उसकी क़ुदरत से क्या बईद। (फ़15) यानी वक़्ते विलादत तक (फ़16) तुम्हें उम्र देते हैं। (फ़17) और तुम्हारी अ़क़्ल व क़ुव्वत कामिल **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝۱۰ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ
اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝۱۱ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ
هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝۱۲ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝۱۳ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝۱۴ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ ثُمَّ
لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝۱۵ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ۝۱۶ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

ज़ालि–क बिमा क़द्–द–मत् यदा–क व अन्नल्ला–ह लै–स बिज़ल्लामिल् लिल् अबीद(10)व मिनन्नासि मंय्यअ्बुदुल्ला–ह अ़ला ह़रफ़िन् फ़इन् असा–बहू ख़ैरु नित्म–अन्–न बिही व इन् असाबत्हु फ़ित्–नतु निन्क़–ल–ब अ़ला वज्हिही ख़सिरद्दुन्या वल् आख़ि–र–त ज़ालि–क हुवल् ख़ुस्रानुल् मुबीन(11)यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यजुर्रुहू व मा ला यन्फ़अ़ुहू ज़ालि–क हुवज़्ज़लालुल् बअ़ीद(12)यद्अू ल–मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अ़िही लबिअ्सल् मौला व लबिअ्सल् अ़शीर(13)इन्नल्ला–ह युद्ख़िलुल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिह़ाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल् अन्हारु इन्नल्ला–ह यफ़्अ़लु मा युरीद(14)मन् का–न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सु–रहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल् आख़ि–रति फ़ल्यम्दुद् बि–स–बबिन् इलस्समाइ सुम्मल् यक़्तअ़् फ़ल्–यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्–न कैदुहू मा यग़ीज़(15)व कज़ालि–क अन्ज़ल्लाहु आ–यतिम् बय्यिनातिंव् व अन्नल्ला–ह यह्दी मंय्युरीद(16)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू वल्लज़ी–न हादू

यह उसका बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा (फ़ा28) और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।(10) (फ़ा29) (रुकूअ़8) और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं (फ़ा30) फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच आ पड़ी (फ़ा31) मुंह के बल पलट गए (फ़ा32) दुनिया और आख़िरत दोनों का घाटा (फ़ा33) यही है सरीह़ नुक़्सान।(11) (फ़ा34) अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो उनका बुरा भला कुछ न करे (फ़ा35) यही है दूर की गुमराही।(12) ऐसे को पूजते हैं जिसके नफ़ा से (फ़ा36) नक़सान की तवक़्क़ोअ़ ज़्यादा है (फ़ा37) बेशक (फ़ा38) क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा रफ़ीक़।(13) बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बाग़ों में जिनके नीचे नहरें रवाँ बेशक अल्लाह करता है जो चाहे।(14) (फ़ा39) जो यह ख़्याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी (फ़ा40) की मदद न फ़रमाएगा दुनिया (फ़ा41) और आख़िरत में (फ़ा42) तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आप को फाँसी देले फिर देखे कि उसका यह दाँव कुछ ले गया उस बात को जिसकी उसे जलन है।(15) (फ़ा43) और बात यही है कि हमने यह क़ुरआन उतारा रौशन आयतें और यह कि अल्लाह राह देता है जिसे चाहे।(16) बेशक मुसलमान और यहूदी

(फ़ा28) यानी जो तूने दुनिया में किया कुफ़्र व तकज़ीब (फ़ा29) और किसी को बे जुर्म नहीं पकड़ता। (फ़ा30) इसमें इत्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उनहें सबात व क़रार हासिल नहीं होता शक व तरद्दुद में रहते हैं जिस तरह पहाड़ के किनारे खड़ा हुआ शख़्स तज़लज़ुल की हालत में होता है। **शाने नुज़ूलः यह** आयत अअ़्राबियों की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो अतराफ़ से आकर मदीना में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे उनकी हालत यह थी कि अगर वह ख़ूब तन्दुरुस्त रहे और उनकी दौलत बढ़ी और उनके बेटा हुआ तब तो कहते थे इस्लाम अच्छा दीन है इसमें आकर हमें फ़ाइदा हुआ और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ पेश आई मसलन बीमार हो गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जब से हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़सान ही हुआ और दीन से फिर जाते थे यह आयत उनके हक़ में नाज़िल हुई और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में सबात ही हासिल नहीं हुआ उनका हाल यह है (फ़ा31) किसी क़िस्म की सख़्ती पेश आई (फ़ा32) मुरतद हो गए और कुफ़्र की तरफ़ लौट गए (फ़ा33) दुनिया का घाटा तो यह कि जो उनकी उम्मीदें थीं वह पूरी न हुईं और इरतेदाद की वजह से उनका ख़ून मुबाह हुआ और आख़िरत का घाटा हमेशा का अ़ज़ाब (फ़ा34) वह लोग मुरतद होने के बाद बुत परस्ती करते हैं और (फ़ा35) क्योंकि वह बेजान है (फ़ा36) यानी जिस की परस्तिश के ख़्याली नफ़ा से उसको पूजने के। (फ़ा37) यानी अ़ज़ाबे दुनिया व आख़िरत की (फ़ा38) वह बुत (फ़ा39) फ़रमांबरदारों पर इनाम और **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

وَ الصّٰبِـِٕيْنَ وَ النَّصٰرٰى وَ الْمَجُوْسَ وَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا ۖۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۷﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ
لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ
وَ مَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۱۸﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِیْ رَبِّهِمْ ؗ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ
يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿۱۹﴾ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِیْ بُطُوْنِهِمْ وَ الْجُلُوْدُ ﴿۲۰﴾ وَ لَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿۲۱﴾ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ
غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا

वस्साबिई–न वन्नसारा वल्मजू–स वल्लज़ी–न अश्–रकू इन्नल्ला–ह यफ़्सिलु बै–नहुम् यौमल्क़िया –मति इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(17)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्–क़्–मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श–जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम् मिनन्नासि व कसीरुन् हक़्–क़ अ़लैहिल् अ़ज़ाबु व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम् मुक्रिमिन् इन्नल्ला–ह यफ़्अ़लु मा यशाउ(18)हाज़ानि ख़स्मानिख़्–त–समू फ़ी रब्बिहिम् फ़ल्लज़ी–न क–फ़रु क़ुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम् मिन् नारिन् युसब्बु मिन् फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल् हमीम(19)युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्–जुलूद(20)व लहुम् मक़ामिउ मिन् हदीद(21)कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उओदू फ़ीहा व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल् हरीक़(22)इन्नल्ला–ह युद्ख़िलुल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्–सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्–अन्हारु युहल्लौ–न फ़ीहा

और सितारा परस्त और नसरानी और आतिश परस्त और मुशरिक बेशक अल्लाह इन सब में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा (फ़ा44) बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(17) क्या तुमने न देखा (फ़ा45) कि अल्लाह के लिए सजदा करते हैं वह जो आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चाँद और तारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए (फ़ा46) और बहुत आदमी (फ़ा47) और बहुत वह हैं जिन पर अ़ज़ाब मुक़र्रर हो चुका (फ़ा48) और जिसे अल्लाह ज़लील करे (फ़ा49) उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं बेशक अल्लाह जो चाहे करे।(18) यह दो फ़रीक़ हैं (फ़ा50) कि अपने रब में झगड़े (फ़ा51) तो जो काफ़िर हुए उनके लिए आग के कपड़े बियोंते गए हैं (फ़ा52) और उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।(19) (फ़ा53) जिससे गल जाएगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खालें।(20) (फ़ा54) और उनके लिए लोहे के गुर्ज़ हैं।(21) (फ़ा55) जब घुटन के सबब उसमें से निकलना चाहेंगे (फ़ा56) फिर उसमें लौटा दिये जायेंगे और हुक्म होगा कि चखो आग का अ़ज़ाब।(22) (रुकूअ़ 9) बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बेहिश्तों मे जिनके नीचे नहरें बहें उसमें पहनाए जायेंगे

(फ़ा44) मोमिनीन को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और कुफ़्फ़ार को किसी क़िस्म के भी हों जहन्नम में दाख़िल करेगा। (फ़ा45) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा46) सजदए ख़ुज़ूअ़ जैसा अल्लाह चाहे (फ़ा47) यानी मोमिनीन मज़ीद बर आँ सज्दए ताअ़त व इबादत भी। (फ़ा48) यानी कुफ़्फ़ार (फ़ा49) उसकी शक़ावत के सबब। (फ़ा50) यानी मोमिनीन और पांचों क़िस्म के कुफ़्फ़ार जिनका ऊपर ज़िक्र किया गया। (फ़ा51) यानी उसके दीन के बारे में और उसकी सिफ़ात में (फ़ा52) यानी आग उन्हें हर तरफ़ से घेर लेगी। (फ़ा53) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया ऐसा तेज़ गरम कि अगर उसका एक क़तरा दुनिया के पहाड़ों पर डाल दिया जाये तो उनको गला डाले। (फ़ा54) हदीस शरीफ़ में है फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा। (तिर्मिज़ी) (फ़ा55) जिनसे उनको मारा जाएगा। (फ़ा56) यानी दोज़ख़ में से तो गुरज़ों से मार कर।

(बक़िया सफ़हा 549 का) हुक्म नहीं दिया गया है जब हुज़ूर ने मदीना तय्येबा को हिजरत फ़रमाई तब यह आयत नाज़िल हुई और यह वह पहली आयत है जिस में कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है। (फ़ा105) और बे वतन किये गए। (फ़ा106) और यह कलामे हक़ है और हक़ पर घरों से निकालना और बे वतन करना क़तअ़न नाहक़ (फ़ा107) जिहाद की इजाज़त देकर और हुदूद क़ाइम फ़रमा कर तो नतीजा यह होता कि मुशरिकीन का इस्तीला हो जाता और कोई दीन व मिल्लत वाला उनके दस्ते तअ़द्दी से न बचता। (फ़ा108) राहिबों की। (फ़ा109) नसरानियों के। (फ़ा110) यहूदियों के। (फ़ा111) मुसलमानों की

مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ لُؤْلُؤًا ؕ وَ لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝٢٣ وَ هُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚۖ وَ هُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ۝٢٤ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَ الْبَادِ ؕ وَ مَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ
مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٢٥ وَ اِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْئًا وَّ طَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْقَآئِمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝٢٦
وَ اَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۝٢٧ لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ يَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ
اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ۝٢٨ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَ لْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَ لْيَطَّوَّفُوْا

मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व लूअ्-लुअन् व लिबासुहुम् फ़ीहा ह़रीर(23)व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्क़ौलि व हुदू इला सिरातिल् ह़मीद(24)इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्मस्जिदिल् ह़रामिल् लज़ी ज-अ़ल्नाहु लिन्नासि सवा-अ निल्आ़किफ़ु फ़ीहि वल्बादि व मंय्युरिद् फ़ीहि बिइल्ह़ादिम् बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम(25)व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही-म मकानल् बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव् व त़ह्हिर् बैति-य लित्ताइफ़ी-न वल्क़ाइमी-न वर्रुक्कअि़स्सुजूद (26)व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्ह़ज्जि यअ्तू-क रिजालंव् व अ़ला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अ़मीक़िल्(27)लि-यश्हदू मनाफ़ि-अ़ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी अय्यामिम् मअ्लूमातिन् अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम् बही-मतिल् अन्आ़मि फ़कुलू मिन्हा व अत़्अिमुल् बाइसल् फ़क़ीर(28)सुम्मल् यक़्ज़ू त-फ़-सहुम् वल्यूफ़ू नुज़ू-रहुम् वल्यत्तव्वफ़ू

सोने के कंगन और मोती (फ़ा57) और वहां उनकी पोशाक रेशम है।(23) (फ़ा58) और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई (फ़ा59) और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई।(24)(फ़ा60) बेशक वह जिन्होंने कुफ़्र किया और रोकते हैं अल्लाह की राह (फ़ा61) और उस अदब वाली मस्जिद से (फ़ा62) जिसे हम ने सब लोगों के लिए मुक़र्रर किया कि उसमें एक सा हक़ है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उसमें किसी ज़्यादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखायेंगे।(25) (फ़ा63)(रुकूअ़10) और जबकि हमने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया (फ़ा64) और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर सुथरा रख (फ़ा65) तवाफ़ वालों और एतेकाफ़ वालों और रुकूअ़ सज्दे वालों के लिए।(26) (फ़ा66) और लोगों में हज की आ़म निदा कर दे (फ़ा67) वह तेरे पास हाज़िर होंगे पियादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं।(27) (फ़ा68) ताकि वह अपना फ़ाइदा पायें (फ़ा69) और अल्लाह का नाम लें (फ़ा70) जाने हुए दिनों में (फ़ा71) इस पर कि उन्हें रोज़ी दी बे ज़बान चौपाए (फ़ा72) तो उनमें से खुद खाओ और मुसीबत ज़दा मोहताज को खिलाओ।(28) (फ़ा73) फिर अपना मैल कुचेल उतारें (फ़ा74) और अपनी मिन्नतें पूरी करें (फ़ा75) और उस आज़ाद घर का

(फ़ा57) ऐसे जिनकी चमक मशरिक़ से मग़रिब तक रौशन कर डाले। (तिर्मिज़ी) (फ़ा58) जिसका पहनना दुनिया में मर्दों को हराम है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने दुनिया में रेशम पहना आख़िरत में न पहनेगा। (फ़ा59) यानी दुनिया में और पाकीज़ा बात से कलिमए तौहीद मुराद है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा क़ुरआन मुराद है। (फ़ा60) यानी अल्लाह का दीन इस्लाम (फ़ा61) यानी उसके दीन और उसकी इताअ़त से (फ़ा62) यानी उसमें दाख़िल होने से **शाने नुज़ूलः** यह आयत सुफ़ियान बिन हरब वग़ैरह के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था मस्जिदे हराम से या ख़ास कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा मुराद है जैसा कि इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि वह तमाम लोगों का क़िबला है वहां के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं सब के लिए उसकी ताज़ीम व हुरमत और उसमें अदाए मनासिके हज यकसाँ है और तवाफ़ व नमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नज़दीक यहां मस्जिदे हराम से मक्का मुकर्रमा यानी जमीअ़े ह़रम मुराद है इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि हरम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिए यकसाँ है उसमें रहने और ठहरने का सब किसी को हक़ है बजुज़ इसके कि कोई किसी को निकाले नहीं इसी लिए इमाम साहब मक्का मुकर्रमा की आराज़ी की बैअ़ और उसके किराया को मना फ़रमाते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मक्का मुकर्रमा हराम है उसकी अराज़ी फ़रोख़्त न **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ
تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ
اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

बिल्बैतिल् अ़तीक़(29)ज़ालि–क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु–व ख़ैरुल् लहू अ़िन्–द रब्बिही व उहिल्लत् लकुमुल् अन्आ़मु इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् फ़ज्–तनिबुर् रिज्–स मिनल् औसानि वज्–तनिबू क़ौलज़्ज़ूर(30)हु–नफ़ा–अ लिल्लाहि ग़ै–र मुश्रिकी–न बिही व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़–क–अन्नमा ख़र्–र मिनस् समाइ फ़–तख़्तफ़ुहुत्–तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़ (31)ज़ालि–क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़इरल्लाहि फ़–इन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूब(32)लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु इला अ–जलिम् मुसम्मन् सुम्–म महिल्लुहा इलल् बैतिल् अ़तीक़(33)व लिकुल्लि उम्मतिन् ज–अ़ल्ना मन्स–कल् लि–यज़्कुरुस्–मल्लाहि अ़ला मा र–ज़–क़हुम् मिम् बही–मतिल् अन्आ़मि फ़इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़–लहू अस्लिमू व बश्शिरिल् मुख़्बितीन(34)अल्लज़ी–न इज़ा ज़ुकि–रल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी–न अ़ला मा असा–बहुम् वल्मुक़ी–मिस्सलाति व मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून(35)

तवाफ़ करें।(29) (फ़ा76) बात यह है और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे (फ़ा77) तो वह उसके लिए उसके रब के यहां भला है और तुम्हारे लिए हलाल किये गए बे ज़बान चौपाए (फ़ा78) सिवा उनके जिनकी मुमानअ़त तुम पर पढ़ी जाती है (फ़ा79) तो दूर हो बुतों की गन्दगी से (फ़ा80) और बचो झूठी बात से।(30) एक अल्लाह के होकर कि उसका साझी किसी को न करो और जो अल्लाह का शरीक करे वह गोया गिरा आसमान से कि परिन्दे उसे उचक ले जाते हैं (फ़ा81) या हवा उसे किसी दूर जगह फेंकती है।(31) (फ़ा82) बात यह है और जो अल्लाह के निशानों की ताज़ीम करे तो यह दिलों की परहेज़गारी से है।(32) (फ़ा83) तुम्हारे लिए चौपायों में फ़ाइदे हैं (फ़ा84) एक मुक़र्ररा मीआ़द तक (फ़ा85) फिर उनका पहुंचना है उस आज़ाद घर तक।(33) (फ़ा86) (रुकूअ़ 11) और हर उम्मत के लिए (फ़ा87) हमने एक क़ुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि अल्लाह का नाम लें उसके दिए हुए बे ज़बान चौपायों पर (फ़ा88) तो तुम्हारा मअ़बूद एक मअ़बूद है (फ़ा89) तो उसी के हुज़ूर गर्दन रखो (फ़ा90) और ऐ महबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।(34) कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उनके दिल डरने लगते हैं (फ़ा91) और जो उफ़्ताद पड़े उसके सहने वाले और नमाज़ बरपा रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च करते हैं।(35) (फ़ा92)

(फ़ा76) इससे तवाफ़े ज़ियारत मुराद है मसाइले हज बित्तफ़सील सूरह बक़र पारह दो में ज़िक्र हो चुके। (फ़ा77) यानी उसके अहकाम की ख़्वाह वह मनासिके हज हों या उनके सिवा और अहकाम बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उससे मनासिके हज मुराद लिये हैं और बाज़ ने बैते हराम व मुशअ़रे हराम व शहरे हराम व बलदे हराम व मस्जिदे हराम मुराद लिये हैं (फ़ा78) कि उन्हें ज़बह करके खाओ (फ़ा79) क़ुरआन पाक में जैसे कि सूरह माइदा की आयत हुर्रिमत् अ़लैकुम् में बयान फ़रमाई गई। (फ़ा80) जिनकी परस्तिश करना बदतरीन गन्दगी से आलूदा होना है। (फ़ा81) और बोटी बोटी करके खा जाते हैं (फ़ा82) मुराद यह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बदतरीन हलाकत में डालता है ईमान को बुलन्दी में आसमान से तश्बीह दी गई और ईमान तर्क करने वाले को आसमान से गिरने वाले के साथ और उसकी ख़्वाहिशाते नफ़सानिया को जो उसकी फ़िक्रों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परिन्दे के साथ और शयातीन को जो उसको वादीए ज़लालत में फेंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और उस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया। (फ़ा83) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि शआइरिल्लाह से मुराद बुदने और हदाया हैं और उनकी ताज़ीम यह है कि फ़रबा ख़ूबसूरत क़ीमती लिये जायें। (फ़ा84) वक़्ते ज़रूरत उन पर सवार होने और वक़्ते हाजत उनके दूध पीने के (फ़ा85) यानी उनके ज़बह के वक़्त तक (फ़ा86) यानी हरम शरीफ़ तक जहां वह ज़बह किये जायें। (फ़ा87) पिछली ईमानदार उम्मतों में से (फ़ा88) उनके ज़बह के वक़्त (फ़ा89) तो ज़बह के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो इस आयत में **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا
الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ
كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ
كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا
رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ

वल्बुद्–न ज–अ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआइरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कु–रुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्–फ़ फ़–इज़ा व–ज–बत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत्ज़िमुल् क़ानि–अ़ वल्मुअ़्–तर्–र कज़ालि–क सख़्ख़रनाहा लकुम् ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(36)लंय्यनालल्ला–ह लुहूमुहा व ला दिमाउहा वलाकिंय्यनालुहुत् तक़्वा मिन्कुम् कज़ालि–क सख़्–ख़–रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला–ह अ़ला मा हदाकुम् व बश्शिरिल् मुह्सिनीन(37)इन्नल्ला–ह युदाफ़िअ़ु अ़निल्लज़ी–न आ–मनू इन्नल्ला–ह ला युहिब्बु कुल्–ल ख़व्वानिन् कफ़ूर(38)उज़ि–न लिल्लज़ी–न युक़ा–तलू–न बि–अन्नहुम् ज़ुलिमू व इन्नल्ला–ह अ़ला नस्रिहिम् ल–क़दीर(39)अल्लज़ी–न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अंय्यकूलू रब्बु–नल्लाहु व लौला दफ़्अ़ुल्ला–हिन्ना–स बअ़्–ज़हुम बि–बअ़्ज़िल् लहुद्दिमत् सवामिअ़ु व बि–यअ़ुंव् व स़–ल–वातुंव् व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन्

और कुरबानी के डीलदार जानवर ऊंट और गाय हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों से किये (फ़93) तुम्हारे लिए उनमें भलाई है (फ़94) तो उन पर अल्लाह का नाम लो (फ़95) एक पांव बंधे तीन पाँव से खड़े (फ़96) फिर जब उनकी करवटें गिर जायें (फ़97) तो उनमें से खुद खाओ (फ़98) और सब्र से बैठने वाले और भीक मांगने वाले को खिलाओ हमने यूंही उनको तुम्हारे बस में दे दिया कि तुम एहसान मानो।(36) अल्लाह को हरगिज़ न उनके गोश्त पहुंचते हैं न उनके ख़ून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है (फ़99) यूं ही उनको तुम्हारे बस में कर दिया कि तुम अल्लाह की बड़ाई बोलो उस पर कि तुम को हिदायत फ़रमाई और ऐ महबूब खुशख़बरी सुनाओ नेकी वालों को।(37) (फ़100) बेशक अल्लाह बलायें टालता है मुसलमानों की (फ़101) बेशक अल्लाह दोस्त नहीं रखता हर बड़े दग़ाबाज़ ना शुकरे को।(38) (फ़102) (रुकूअ़ 12) परवानगी अ़ता हुई उन्हें जिनसे काफ़िर लड़ते हैं (फ़103) इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुआ (फ़104) और बेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है।(39) वह जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए (फ़105) सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है (फ़106) और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दूसरे से दफ़ा न फ़रमाता (फ़107) तो ज़रूर ढा दी जातीं ख़ानक़ाहें (फ़108) और गिरजा (फ़109) और कलीसे (फ़110) और मस्जिदें (फ़111) जिन में अल्लाह का बकसरत नाम लिया जाता है और बेशक अल्लाह ज़रूर

(फ़93) यानी उसके अ़लामे दीन से (फ़94) दुनिया में नफ़ा और आख़िरत में अज्र व सवाब। (फ़95) उनके ज़बह के वक़्त जिस हाल में कि वह हों (फ़96) ऊंट के ज़बह का यही मस्नून तरीक़ा है(फ़97) यानी बाद ज़िबह उनके पहलू ज़मीन पर गिरें और उनकी हरकत साकिन हो जाये (फ़98) अगर तुम चाहो (फ़99) यानी कुरबानी करने वाले सिर्फ़ नीयत के इख़्लास और शुरूते तक़्वा की रिआ़यत से अल्लाह तआ़ला को राज़ी कर सकते हैं **शाने नुज़ूलः** ज़मानए जाहिलियत के कुफ़्फ़ार अपनी क़ुरबानियों के ख़ून से कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की दीवारों को आलूदा करते थे और उसको सबबे तक़र्रुब जानते थे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़100) सवाब की (फ़101) और उनकी मदद फ़रमाता है। (फ़102) यानी कुफ़्फ़ार को जो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत और खुदा की निअ़मतों की नाशुक्री करते हैं (फ़103) जिहाद की (फ़104) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे मक्का असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को रोज़मर्रा हाथ और ज़बान से शदीद ईज़ायें देते और आज़ार पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है किसी का हाथ टूटा है किसी का पांव बंधा हुआ है रोज़मर्रा इस क़िस्म की शिकायतें बारगाहे अक़्दस में पहुंचती थीं और असहाबे किराम कुफ़्फ़ार के मज़ालिम की हुज़ूर के दरबार में फ़रियादें करते हुज़ूर यह फ़रमा दिया करते कि सब्र करो मुझे अभी जिहाद का **(बक़िया सफ़हा 546 पर)**

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ
يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ

व ल–यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहु इन्नल्ला–ह ल–क़विय्युन् अ़ज़ीज़(40)अल्लज़ी–न इम्मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अक़ामुस्सला–त व–आ–तवुज़्ज़का–त व अ–मरू बिल्मअ़्रूफ़ि व नहौ अ़निल्मुन्करि व लिल्लाहि आ़क़ि–बतुल् उमूर(41)व इंय्युकज़्ज़िबू–क फ़–क़द् कज़्ज़बत् क़ब्–लहुम् क़ौमु नूहिंव् व आ़दुंव् व समूद(42)व क़ौमु इब्राही–म व क़ौमु लूतिंव्(43)व अस्हाबु मद्–य–न व कुज़्ज़ि–ब मूसा फ़–अम्लैतु लिल् काफ़िरी–न सुम्–म अ–ख़ज़्तुहुम् फ़कै–फ़ का–न नकीर(44)फ़–क–अय्यिम् मिन् क़र्–यतिन् अह्–लक्नाहा व हि–य ज़ालि–मतुन् फ़हि–य ख़ावि–यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा व बिअ़्रिम् मुअ़त्त–लतिंव् व क़स्रिम् मशीद(45)अ–फ़–लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–तकू–न लहुम् क़ुलूबुंय्यअ़्क़िलू–न बिहा औ आज़ानुंय्यस्मअ़ू–न बिहा फ़–इन्नहा ला तअ़्मल् अब्सारु व लाकिन् तअ़्मल् क़ुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर(46)व यस्तअ़्जिलू–न–क बिल्अ़ज़ाबि

मदद फ़रमाएगा उसकी जो उसके दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर अल्लाह क़ुदरत वाला ग़ालिब है।(40) वह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें (फ़ा112) तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें (फ़ा113) और अल्लाह ही के लिए सब कामों का अन्जाम।(41) और अगर यह तुम्हारी तकज़ीब करते हैं (फ़ा114) तो बेशक उनसे पहले झुठला चुकी है नूह की क़ौम और आ़द (फ़ा115) और समूद।(42) (फ़ा116) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम।(43) और मदयन वाले (फ़ा117) और मूसा की तकज़ीब हुई (फ़ा118) तो मैंने काफ़िरों को ढील दी (फ़ा119) फिर उन्हें पकड़ा (फ़ा120) तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब।(44) (फ़ा121) और कितनी ही बस्तियाँ हमने खपा दीं (फ़ा122) कि वह सितमगार थीं (फ़ा123) तो अब वह अपनी छतों पर डही पड़ी हैं और कितने कुएं बेकार पड़े (फ़ा124) और कितने महल गच किये हुए।(45) (फ़ा125) तो क्या ज़मीन में न चले (फ़ा126) कि उनके दिल हों जिनसे समझें (फ़ा127) या कान हों जिनसे सुनें (फ़ा128) तो यह कि आँखें अन्धी नहीं होतीं (फ़ा129) बल्कि वह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं।(46) (फ़ा130) और यह तुम से अ़ज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं (फ़ा131)

(फ़ा112) और उनके दुश्मनों के मुक़ाबिल उनकी मदद फ़रमायें। (फ़ा113) इसमें ख़बर दी गई है कि आइन्दा मुहाजरीन को ज़मीन में तसर्रुफ़ अ़ता फ़रमाने के बाद उनकी सीरतें ऐसी पाकीज़ा रहेंगी और वह दीन के कामों में इख़्लास के साथ मश्ग़ूल रहेंगे इसमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन महदीईन के अ़द्ल और उनके तक़वा व परहेज़गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तमकीन व हुकूमत अ़ता फ़रमाई और सीरते आ़दला अ़ता की। (फ़ा114) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (फ़ा115) हज़रत हूद की क़ौम (फ़ा116) हज़रत सालेह की क़ौम। (फ़ा117) यानी हज़रत शुऐब की क़ौम (फ़ा118) यहां मूसा की क़ौम न फ़रमाया क्योंकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम बनी इसराईल ने आपकी तकज़ीब न की थी बल्कि फ़िरऔ़न की क़ौम क़िबतियों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की थी उन क़ौमों का तज़किरा और हर एक के अपने रसूल की तकज़ीब करने का बयान सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तस्कीन ख़ातिर के लिए है कि कुफ़्फ़ार का यह क़दीमी तरीक़ा है पिछले अम्बिया के साथ भी यही दस्तूर रहा है (फ़ा119) और उनके अ़ज़ाब में ताख़ीर की और उन्हें मुहलत दी (फ़ा120) और उनके कुफ़्र व सरकशी की सज़ा दी (फ़ा121) आपकी तकज़ीब करने वालों को चाहिए कि अपने अन्जाम को सोचें और इबरत हासिल करें (फ़ा122) और वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया। (फ़ा123) यानी वहां के रहने वाले काफ़िर थे (फ़ा124) कि उनसे कोई पानी भरने वाला नहीं (फ़ा125) वीरान पड़े हैं (फ़ा126) कुफ़्फ़ार के उन हालात का मुशाहिदा करें। (फ़ा127) कि अम्बिया की तकज़ीब का क्या अन्जाम हुआ और इबरत हासिल करें (फ़ा128) पिछली उम्मतों के **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

وَلَنۡ يُّخۡلِفَ اللّٰهُ وَعۡدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوۡمًا عِنۡدَ رَبِّكَ كَاَلۡفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ ۝ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ اَمۡلَيۡتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
اَخَذۡتُهَا ۚ وَاِلَىَّ الۡمَصِيۡرُ ۝ قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَـكُمۡ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۝ فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ
كَرِيۡمٌ ۝ وَالَّذِيۡنَ سَعَوۡا فِىۡۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيۡنَ اُولٰۤـئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَحِيۡمِ ۝ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّلَا نَبِىٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلۡقَى
الشَّيۡطٰنُ فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنۡسَخُ اللّٰهُ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ ثُمَّ يُحۡكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ۝ لِّيَجۡعَلَ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ فِتۡنَةً
لِّلَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡقَاسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَفِىۡ شِقَاقٍۢ بَعِيۡدٍ ۝ وَّلِيَـعۡلَمَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ اَنَّهُ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكَ

व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ़्–दहू व इन्–न यौमन् अ़िन्–द रब्बि–क क–अल्फ़ि स–नतिम् मिम्मा तअ़ुद्दून(47)व क–अय्यिम् मिन् क़र्–यतिन् अम्लैतु लहा व हि–य ज़ालि–मतुन् सुम्–म अ–ख़ज़्तुहा व इलय्यल् मसीर(48)क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नमा अना लकुम् नज़ीरुम् मुबीन(49) फ़ल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव् व रिज़्क़ुन् करीम(50)वल्लज़ी–न सऔ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी–न उलाइ–क अस्हाबुल् जहीम(51)व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क मिर्रसूलिंव् व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा त–मन्ना अल्क़श्–शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही फ़–यन्सख़ुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम्–म युह्किमुल्लाहु आयातिही वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(52)लि–यज्अ़–ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्नतल् लिल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रज़ुंव् वल्क़ासि–यति क़ुलूबुहुम् व इन्नज़्ज़ालिमी–न लफ़ी शिक़ाक़िम् बअ़ीद(53)व लियअ़्ल–मल्लज़ी–न ऊतुल्अ़िल्–म अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बि–क

और अल्लाह हरगिज़ अपना वादा झूठा न करेगा (फ़ा132) और बेशक तुम्हारे रब के यहां (फ़ा133) एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिन्ती में हज़ार बरस।(47) (फ़ा134) और कितनी बस्तियाँ कि हमने उनको ढील दी इस हाल पर कि वह सितमगार थीं फिर मैंने उन्हें पकड़ा (फ़ा135) और मेरी ही तरफ़ पलट कर आना है।(48) (फ़ा136) (रुकूअ़ 13) तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगों मैं तो यही तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(49) तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।(50) (फ़ा137) और वह जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादा से (फ़ा138) वह जहन्नमी हैं।(51) और हमने तुम से पहले जितने रसूल या नबी भेजे (फ़ा139) सब पर यह वाक़ेआ़ गुज़रा है कि जब उन्होंने पढ़ा तो शैतान ने उनके पढ़ने में लोगों पर कुछ अपनी तरफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है अल्लाह उस शैतान के डाले हुए को फिर अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है (फ़ा140) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(52) ताकि शैतान के डाले हुए को फ़ित्ना कर दे (फ़ा141) उनके लिए जिनके दिलों में बीमारी है (फ़ा142) और जिनके दिल सख़्त हैं (फ़ा143) और बेशक सितमगार (फ़ा144) धुर के झगड़ालू हैं।(53) और इस लिए कि जान लें वह जिनको इल्म मिला है (फ़ा145) कि वह (फ़ा146) तुम्हारे रब के पास से

(फ़ा132) और ज़रूर हस्बे वादा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा चुनांचे यह वादा बद्र में पूरा हुआ (फ़ा133) आख़िरत में अ़ज़ाब का। (फ़ा134) तो यह कुफ़्फ़ार क्या समझ कर अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। (फ़ा135) और दुनिया में उनपर अ़ज़ाब नाज़िल किया (फ़ा136) आख़िरत में (फ़ा137) जो कभी मुन्क़तअ़ न हो वह जन्नत है। (फ़ा138) कि कभी इन आयात को सेहर कहते हैं कभी शेअ़्र कभी पिछलों के क़िस्से और वह यह ख़्याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उनका यह मक्र चल जाएगा। (फ़ा139) नबी और रसूल में फ़र्क़ है नबी आम है और रसूल ख़ास बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि रसूल शरअ़ के वाज़ेअ़ होते हैं और नबी उसके हाफ़िज़ व निगहबान। शाने नुज़ूल जब सूरए वन्नज्म नाज़िल हुई तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिदे हराम में इसकी तिलावत फ़रमाई और बहुत आहिस्ता आहिस्ता आयतों के दर्मियान वक़्फ़ा फ़रमाते हुए जिससे सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले जब आपने आयत व मनातस्सालि-स-तल्-उख़्रा पढ़ कर हस्बे दस्तूर वक़्फ़ा फ़रमाया तो शैतान ने मुशरिकीन के कान में इससे मिलाकर दो कलिमे ऐसे कह दिये जिनसे बुतों की तारीफ़ निकलती थी जिबरील अमीन ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह हाल अर्ज़ किया इससे हुज़ूर को रन्ज हुआ अल्लाह तआ़ला ने आपकी तसल्ली के लिए यह आयत नाज़िल फ़रमाई। (फ़ा140) जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ
حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝ الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي
جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ
عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ

फ़युअ्मिनू बिही फ़–तुख़्बि–त लहू कुलूबुहुम् व इन्नल्ला–ह लहादिल्लज़ी–न आ–मनू इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(54)व ला यज़ालुल्लज़ी–न क–फ़रू फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु हत्ता तअ्ति–यहुमुस् सा–अ़तु बग़्त–तन् औ यअ्ति–यहुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़क़ीम(55)अल्मुल्कु यौ–मइज़िल् लिल्लाहि यह्कुमु बै–नहुम् फ़ल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन् नअ़ीम(56)वल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़उलाइ–क लहुम् अ़ज़ाबुम् मुहीन(57)वल्लज़ी–न हा–जरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्–म कुतिलू औ मातू ल–यर्ज़ुक़न्–नहुमुल्लाहु रिज़्–क़न् ह–स–नन् व इन्नल्ला–ह लहु–व ख़ैरुर्–राज़िक़ीन(58)लयुदख़िलन्नहुम् मुदख़–लंय्यर्ज़ौ–नहू व इन्नल्ला–ह ल–अ़लीमुन् हलीम(59)ज़ालि–क व मन् आ–क़–ब बिमिस्लि मा ऊक़ि–ब बिही सुम्–म बुग़ि–य अ़लैहि ल–यन्सुरन्नहुल्लाहु इन्नल्ला–ह ल–अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर(60)ज़ालि–क बि–अन्नल्ला–ह यूलिजुल्लै–ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा–र

हक़ है तो उस पर ईमान लायें तो झुक जायें उसके लिए उनके दिल और बेशक अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह चलाने वाला है।(54) और काफ़िर उससे (फ़ा147) हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उन पर क़ियामत आ जाए अचानक (फ़ा148) या उन पर ऐसे दिन का अ़ज़ाब आए जिसका फल उनके लिए कुछ अच्छा न हो।(55) (फ़ा149) बादशाही उस दिन (फ़ा150) अल्लाह ही की है वह उनमें फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और (फ़ा151) अच्छे काम किये वह चैन के बाग़ों में हैं।(56) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाई उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।(57) (रुकूअ़ 14) और वह जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घर बार छोड़े (फ़ा152) फिर मारे गए या मर गए तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा (फ़ा153) और बेशक अल्लाह की रोज़ी सबसे बेहतर है।(58) ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वह पसन्द करेंगे (फ़ा154) और बेशक अल्लाह इल्म व हिल्म वाला है।(59) बात यह है और जो बदला ले (फ़ा155) जैसी तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उस पर ज़्यादती की जाए (फ़ा156) तो बेशक अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएगा (फ़ा157) बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।(60) यह (फ़ा158) इस लिए कि अल्लाह तआ़ला रात को डालता है दिन के हिस्सा में और दिन को लाता है

(फ़ा147) यानी क़ुरआन से या दीने इस्लाम से। (फ़ा148) या मौत कि वह भी क़ियामते सुग़रा है। (फ़ा149) इससे बद्र का दिन मुराद है जिस में काफ़िरों के लिए कुछ कशाइश व राहत न थी और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इससे रोज़े क़ियामत मुराद है (फ़ा150) यानी क़ियामत के दिन (फ़ा151) उन्होंने (फ़ा152) और उसकी रज़ा के लिये अ़ज़ीज़ व अक़ारिब को छोड़ कर वतन से निकले और मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्येबा की तरफ़ हिजरत की। (फ़ा153) यानी रिज़्क़े जन्नत जो कभी मुन्क़तअ़ न हो (फ़ा154) वहां उनकी हर मुराद पूरी होगी और कोई नागवार बात पेश न आएगी। शाने नुज़ूलः नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आपके बाज़ असहाब ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे जो असहाब शहीद हो गए हम जानते हैं कि बारगाहे इलाही में उनके बड़े दर्जे हैं और हम जिहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे लेकिन अगर हम आपके साथ रहे और बे शहादत के मौत आई तो आख़िरत में हमारे लिए क्या है इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं *वल्लज़ी–न हा–जरू फ़ी सबीलिल्लाहि* (फ़ा155) कोई मोमिन ज़ुल्म का मुशरिक से (फ़ा156) ज़ालिम की तरफ़ से उसको बे वतन करके। (फ़ा157) शाने नुज़ूलः यह आयत मुशरिकीन के हक़ में नाज़िल हुई जो माहे मुहर्रम की अख़ीर तारीख़ों में मुसलमानों पर हमला आवर हुए और मुसलमानों ने माहे मुबारक की हुरमत के ख़्याल से लड़ना न चाहा मगर मुशरिक न माने और **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

فِى الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ
تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾

फ़िल्लैलि व अन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर(61)ज़ालि–क बि–अन्नल्ला–ह हुवल्–हक़्कु व अन्–न मा यद्अू–न मिन् दूनिही हुवल्बातिलु व अन्नल्ला–ह हुवल्–अ़लिय्युल् कबीर(62)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़तुस्बिहुल् अर्ज़ु मुख़्ज़र्र–तन् इन्नल्ला–ह लतीफ़ुन् ख़बीर(63)लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन्नल्ला–ह लहुवल् ग़निय्युल् हमीद(64)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह सख़्ख़–र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि वल्फ़ुल्–क तज्री फ़िल्बह्रि बिअम्रिही व युम्सि– कुस्समा–अ अन् त–क़–अ़ अ़–लल्अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही इन्नल्ला–ह बिन्नासि ल–रऊफ़ुर्रहीम (65)व हुवल्लज़ी अह्याकुम् सुम्–म युमीतुकुम् सुम्–म युह्यीकुम् इन्नल्इन्सा–न ल–कफ़ूर (66)लिकुल्लि उम्मतिन् ज–अ़ल्ना मन्स–कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअुन्न–क फ़िल्अम्रि वद्अु इला रब्बि–क इन्न–क ल–अ़ला हुदम् मुस्तक़ीम(67)व इन् जा–दलू–क फ़क़ुलिल्लाहु अअ्–लमु बिमा तअ्–मलून(68)

रात के हिस्सा में (फ़्र159) और इस लिए कि अल्लाह सुनता देखता है।(61) यह इस लिए (फ़्र160) कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिसे पूजते हैं (फ़्र161) वही बातिल है और इस लिए कि अल्लाह ही बुलन्दी बड़ाई वाला है।(62) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो सुबह को ज़मीन (फ़्र162) हरियाली हो गई बेशक अल्लाह पाक ख़बरदार है।(63) उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है।(64) (रुकूअ़ 15) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है (फ़्र163) और कश्ती कि दरिया में उसके हुक्म से चलती है (फ़्र164) और वह रोके हुए है आसमान को कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उसके हुक्म से बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर वाला मेहरबान है।(65) (फ़्र165) और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दा किया (फ़्र166) फिर तुम्हें मारेगा (फ़्र167) फिर तुम्हें जिलाएगा (फ़्र168) बेशक आदमी बड़ा ना शुकरा है।(66) (फ़्र169) हर उम्मत के लिए (फ़्र170) हमने इबादत के क़ाइदे बना दिये कि वह उन पर चले (फ़्र171) तो हरगिज़ वह तुम से इस मुआ़मले में झगड़ा न करें (फ़्र172) और अपने रब की तरफ़ बुलाओ (फ़्र173) बेशक तुम सीधी राह पर हो।(67) और अगर वह (फ़्र174) तुम से झगड़ें तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे कोतक।(68)

(फ़ा159) यानी कभी दिन को बढ़ाता रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है उसके सिवा कोई उस पर क़ुदरत नहीं रखता जो ऐसा क़ुदरत वाला है वह जिसकी चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहे ग़ालिब करे। (फ़ा160) यानी और यह मदद इस लिए भी है (फ़ा161) यानी बुत (फ़ा162) सब्ज़े से। (फ़ा163) जानवर वग़ैरह जिन पर तुम सवार होते हो और जिन से तुम काम लेते हो तुम्हारे लिए उसके चलाने के वास्ते हवा और पानी को मुसख़्ख़र किया (फ़ा164) कि उसने उनके लिए मनफ़अ़तों के दरवाज़े खोले और तरह तरह की मुज़र्रतों से उनको महफ़ूज़ किया (फ़ा165) बेजान नुत्फ़ा से पैदा फ़रमा कर। (फ़ा166) तुम्हारी उम्रें पूरी होने पर (फ़ा167) रोज़े बअ़्स सवाब व अ़ज़ाब के लिए (फ़ा168) कि बावजूद इतनी नेअ़मतों के उसकी इबादत से मुंह फेरता है और बेजान मख़्लूक़ की परस्तिश करता है (फ़ा169) अहले दीन व मलल में से (फ़ा170) और आ़मिल हो (फ़ा171) यानी अम्रे दीन में या ज़बीहा के अम्र में (फ़ा172) **शाने नुज़ूलः** यह आयत बदील बिन वरक़ा और बशर बिन सुफ़ियान और यज़ीद बिन ख़नीस के हक़ में नाज़िल हुई इन लोगों ने असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि क्या सबब है जिस जानवर को तुम ख़ुद क़त्ल करते हो उसे तो खाते हो और जिसको अल्लाह मारता है उसको नहीं **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

اللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۭ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۭ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ
مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ اَلنَّارُ ۭ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ۭ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـــًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ۭ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا

अल्लाहु यह्कुमु बै–नकुम् यौमल् क़िया–मति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून(69)अ–लम् तअ्–लम् अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि इन्–न ज़ालि–क फ़ी किताबिन् इन्–न ज़ालि–क अ–लल्लाहि यसीर(70)व यअ्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव् व मा लै–स लहुम् बिही अिल्मुन् व मा लिज़्ज़ालिमी–न मिन् नसीर(71)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्रिफु फ़ी वुजूहिल् लज़ी–न क–फ़रुल्मुन्क–र यकादू–न यस्तू–न बिल्लज़ी–न यत्लू–न अ़लैहिम् आयातिना क़ुल् अ–फ़उ–नब्बिउकुम् बिशर्रिम् मिन् ज़ालिकुम् अन्नारु व– अ़–द–हल्लाहुल् लज़ी–न क–फ़रू व बिअ्सल् मसीर(72)या–अय्युहन्नासु ज़ुरि–ब म–सलुन् फ़स्तमिअू लहू इन्नल्लज़ी–न तद्अू–न मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव् व लविज्त–मअू लहू व इंय्यस्लुब्–हुमुज़् ज़ुबाबु शैअल्ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु ज़अुफ़त्तालिबु वल्मत्लूब(73)मा क़–दरुल्ला–ह

अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ कर रहे हो।(69) (फ़175) क्या तूने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक यह सब एक किताब में है (फ़176) बेशक यह (फ़177) अल्लाह पर आसान है।(70) (फ़178) और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं (फ़179) जिनकी कोई सनद उसने न उतारी और ऐसों को जिनका खुद उन्हें कुछ इल्म नहीं (फ़180) और सितमगारों का (फ़181) कोई मददगार नहीं।(71) (फ़182) और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जायें (फ़183) तो तुम उनके चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखो जिन्होंने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उनको जो हमारी आयतें उन पर पढ़ते हैं तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे उस हाल से भी (फ़184) बदतर है वह आग है अल्लाह ने उसका वादा दिया है काफ़िरों को और क्या ही बुरी पलटने की जगह।(72) (रुकूअ् 16) ऐ लोगो एक कहावत फ़रमाई जाती है उसे कान लगा कर सुनो (फ़185) वह जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो (फ़186) एक मक्खी न बना सकेंगे अगरचे सब उस पर इकट्ठे हो जायें (फ़187) और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन कर ले जाए (फ़188) तो उससे छुड़ा न सकें (फ़189) कितना कमज़ोर चाहने वाला और वह जिसको चाहा।(73) (फ़190) अल्लाह की क़दर

(फ़ा175) और तुम पर हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर हो जाएगी (फ़ा176) यानी लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा177) यानी इन सब का इल्म या तमाम हवादिस का लौहे महफ़ूज़ में सब्त फ़रमाना (फ़ा178) इसके बाद कुफ़्फ़ार की जहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वह ऐसों की इबादत करते हैं जो इबादत के मुस्तहिक़ नहीं (फ़ा179) यानी बुतों को (फ़ा180) यानी उनके पास अपने इस फ़ेअ्ल की न कोई दलील अ़क़्ली है न नक़्ली महज़ जहल व नादानी से गुमराही में पड़े हुए हैं और जो किसी तरह पूजे जाने के मुस्तहिक़ नहीं उनको पूजते हैं यह शदीद ज़ुल्म है (फ़ा181) यानी मुशरिकीन का (फ़ा182) जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। (फ़ा183) और क़ुरआने करीम उन्हें सुनाया जाये जिसमें बयाने अहकाम और तफ़सील हलाल व हराम है (फ़ा184) यानी तुम्हारे इस ग़ैज़ व नागवारी से भी जो क़ुरआने पाक सुनकर तुम में पैदा होती है। (फ़ा185) और उसमें ख़ूब ग़ौर करो वह कहावत यह है कि तुम्हारे बुत। (फ़ा186) उनकी आ़जिज़ी और बे क़ुदरती का यह हाल है कि वह निहायत छोटी से चीज़ (फ़ा187) तो आ़क़िल को कब शायाँ है कि ऐसे को मअ्बूद ठहराये ऐसे को पूजना और इलाह क़रार देना कितना इन्तेहा दर्जे का जहल है। (फ़ा188) वह शहद व ज़ाफ़रान वग़ैरह जो मुशरिकीन बुतों के मुंह और सरों पर मलते हैं जिस पर मक्खियां भनकती हैं (फ़ा189) ऐसे को ख़ुदा बनाना और मअ्बूद ठहराना कितना अ़जीब और अ़क़्ल से दूर है। (फ़ा190) चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है या चाहने वाले से मक्खी मुराद है जो बुत पर से शहद व ज़ाफ़रान की तालिब है और मतलूब से बुत और बाज़ ने कहा कि तालिब से बुत मुराद है और मतलूब से मक्खी।

اللّٰہَ حَقَّ قَدْرِہٖ ۭ اِنَّ اللّٰہَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ ۝ اَللّٰہُ یَصْطَفِیْ مِنَ الْمَلٰٓئِکَۃِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰہَ سَمِیْعٌ ۢ بَصِیْرٌ ۝ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْہِمْ
وَمَا خَلْفَہُمْ ۭ وَ اِلَی اللّٰہِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ یٰٓاَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ارْکَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّکُمْ وَافْعَلُوا الْخَیْرَ لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَجَاہِدُوْا
فِی اللّٰہِ حَقَّ جِہَادِہٖ ۭ ہُوَ اجْتَبٰکُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَیْکُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّۃَ اَبِیْکُمْ اِبْرٰہِیْمَ ۭ ہُوَ سَمّٰکُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ۥ مِنْ قَبْلُ
وَفِیْ ہٰذَا لِیَکُوْنَ الرَّسُوْلُ شَہِیْدًا عَلَیْکُمْ وَتَکُوْنُوْا شُہَدَآءَ عَلَی النَّاسِ ۚ فَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰہِ ۭ ہُوَ
مَوْلٰکُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِیْرُ ۝

हक़्–क़ क़दरिही इन्नल्ला–ह ल–क़वियुन् अज़ीज़(74)अल्लाहु यस्तफ़ी मिनल् मलाइ–कति रुसुलंव् व मिनन्नासि इन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर(75)यअ्–लमु मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व इलल्लाहि तुर्–जअुल् उमूर(76)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुर्–कअू वस्जुदू वअ्बुदू रब्बकुम् वफ़्–अलुल् ख़ै–र ल–अल्लकुम् तुफ़्लिहून(77)व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्–क़ जिहादिही हुवज्तबाकुम् व मा ज–अ–ल अलैकुम् फ़िद्दीनि मिन् ह–रजिन् मिल्–ल–त अबीकुम् इब्राही–म हु–व सम्माकुमुल् मुस्लिमी–न मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि–यकूनर्रसूलु शहीदन् अलैकुम् व तकूनू शु–हदा–अ अ–लन्नासि फ़–अक़ीमुस् सला–त व आतुज़्ज़का–त वअ्–तसिमु बिल्लाहि हु–व मौलाकुम् फ़–लिअ्मल् मौला व निअ्–मन्नसीर(78)

जानी जैसी चाहिये थी (फ़ा191) बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है।(74) अल्लाह चुन लेता है फ़रिश्तों में से रसूल (फ़ा192) और आदमियों में से (फ़ा193) बेशक अल्लाह सुनता देखता है।(75) जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है (फ़ा194) और सब कामों की रुजूअ् अल्लाह की तरफ़ है।(76) ऐ ईमान वालो रुकूअ् और सज्दा करो (फ़ा195) और अपने रब की बन्दगी करो (फ़ा196) और भले काम करो (फ़ा197) इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो। (77) और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का (फ़ा198) उसने तुम्हें पसन्द किया (फ़ा199) और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी (फ़ा200) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (फ़ा201) अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है अगली किताबों में और इस कुरआन में ताकि रसूल तुम्हारा निगेहबान व गवाह हो (फ़ा202) और तुम और लोगों पर गवाही दो (फ़ा203) तो नमाज़ बरपा रखो (फ़ा204) और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो (फ़ा205) वह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार।(78) (रुकूअ् 17)

(फ़ा191) और उसकी अज़मत पहचानी जिन्होंने ऐसों को खुदा का शरीक किया जो मक्खी से भी कमज़ोर हैं मअ्बूद वही है जो कुदरते कामिला रखे। (फ़ा192) मिस्ल जिबरील व मीकाईल वग़ैरह के (फ़ा193) मिस्ल हज़रत इब्राहीम व हज़रत मूसा व हज़रत ईसा व हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन कुफ़्फ़ार के रद में नाज़िल हुई जिन्होंने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर कैसे रसूल हो सकता है इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह मालिक है जिसे चाहे अपना रसूल बनाये वह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और मलाइका में से भी जिन्हें चाहे। (फ़ाफ़ा194) यानी उमूरे दुनिया को भी और उमूरे आख़िरत को भी या उनके गुज़रे हुए आमाल को भी और आइन्दा के अहवाल को भी (फ़ा195) अपनी नमाज़ों में इस्लाम के अव्वल अहद में नमाज़ बग़ैर रुकूअ् व सुजूद के थी फिर नमाज़ में रुकूअ. व सुजूद का हुक्म फ़रमाया गया। (फ़ा196) यानी रुकूअ. व सुजूद ख़ास अल्लाह के लिए हों और इबादत में इख़्लास इख़्तियार करो (फ़ा197) सिला रहमी व मकारिमे अख़्लाक़ वग़ैरह नेकियां (फ़ा198) यानी नीयते सादिक़ा ख़ालिसा के साथ एअ्लाए दीन के लिए (फ़ा199) अपने दीन व इबादत के लिए (फ़ा200) बल्कि ज़रूरत के मौक़ों पर तुम्हारे लिए सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी के ज़रर करने की हालत में गुस्ल और वुज़ू की जगह तयम्मुम तो तुम दीन की पैरवी करो (फ़ा201) जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है (फ़ा202) रोज़े क़ियामत कि तुम्हारे पास खुदा का पयाम पहुंचा दिया। (फ़ा203) कि उन्हें इन रसूलों ने अहकामे खुदावन्दी पहुंचा दिये अल्लाह तआला ने तुम्हें यह इज़्ज़त व करामत अता फ़रमाई। (फ़ा204) इस पर मदावमत करो (फ़ा205) और उसके दीन पर क़ायम रहो।

(बक़िया सफ़हा 531 का) लिए उन्होंने मोअ्.जेज़ात को जादू बता दिया और कहा (फ़ा7) उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती ख़्वाह कितने ही पर्दा और राज़ में रखी गई हो उनका राज़ भी इसमें ज़ाहिर फ़रमा दिया उसके बाद क़ुरआने करीम से उन्हें सख़्त परेशानी व हैरानी लाहक़ थी कि इसका किस तरह इन्कार करें वह ऐसा बैय्यन मोअ्जेज़ा है जिसने तमाम मुल्क के माया नाज़ माहिरों को आ़जिज़ व मुतहय्यर कर दिया है और वह इसकी दो चार आयतों की मिस्ल कलाम बना कर नहीं ला सके इस परेशानी में उन्होंने क़ुरआन की निस्बत मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें कहीं जिनका बयान अगली आयत में है (फ़ा8) उनको नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह्ीए इलाही समझ गए हैं कुफ़्फ़ार ने यह कह कर सोचा कि यह बात चस्पाँ नहीं हो सकेगी तो अब उसको छोड़ कर कहने लगे (फ़ा9) यह कहकर ख़्याल हुआ कि लोग कहेंगे कि अगर यह कलाम हज़रत का बनाया हुआ है और तुम उन्हें अपने मिस्ल बशर भी कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यों नहीं बना सकते यह ख़्याल करके इस बात को भी छोड़ा और कहने लगे। (फ़ा10) और यह कलाम शेअ्.र है इसी तरह की बातें बनाते रहे किसी एक बात पर क़ाइम न रह सके और अहले बातिल कज़्ज़ाबों का यही हाल होता है अब उन्होंने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे (फ़ा11) इसके रद् व जवाब में अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा12) माना यह हैं कि उन से पहले लोगों के पास जो निशानियां आईं तो वह उन पर ईमान न लाये और उनकी तकज़ीब करने लगे और इस सबब से हलाक कर दिये गए तो क्या यह लोग निशानी देख कर ईमान ले आयेंगे बावजूदेकि इनकी सरकशी उनसे बढ़ी हुई है (फ़ा13) यह उनके कलामे साबिक़ का रद् है कि अम्बिया का सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमाना नबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं हमेशा ऐसा ही होता रहा है। (फ़ा14) क्योंकि नावाक़िफ़ को इससे चारा ही नहीं कि वाक़िफ़ से दरियाफ़्त करे और मर्ज़े जहल का इलाज यही है कि आलिम से सवाल करे और उसके हुक्म पर आ़मिल हो। **मसलाः** इस आयत से तक़लीद का वुजूब साबित होता है यहां उन्हें इल्म वालों से पूछने का हुक्म दिया गया कि उनसे दरियाफ़्त करो कि अल्लाह के रसूल सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमा हुए थे या नहीं इससे तुम्हारे तरद्दुद का ख़ात्मा हो जाएगा।

(बक़िया सफ़हा 532 का) और तुम्हारे अमवाल क्या हुए तो तुम दरियाफ़्त करने वाले को अपने इल्म व मुशाहदे से जवाब दे सको। (फ़ा27) अ़ज़ाब देखने के बाद उन्होंने गुनाह का इक़रार किया और नादिम हुए इस लिए यह एतेराफ़ उन्हें काम न आया। (फ़ा28) खेत की तरह कि तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की तरह होगए। (फ़ा29) कि उनसे कोई फ़ाइदा न हो बल्कि उसमें हमारी हिकमतें हैं मिनजुमला उनके यह है कि हमारे बन्दे उन से हमारी क़ुदरत व हिकमत पर इस्तेदलाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ व कमाल की मअ्.रेफ़त हो (फ़ा30) मिस्ल ज़न व फ़रज़न्द के जैसा कि नसारा कहते हैं और हमारे लिए बीबी और बेटियां बताते हैं अगर यह हमारे हक़ में मुमकिन होता (फ़ा31) क्योंकि ज़न व फ़रज़न्द वाले ज़न व फ़रज़न्द अपने पास रखते हैं मगर हम इससे पाक हैं हमारे लिए यह मुमकिन ही नहीं (फ़ा32) माना यह हैं कि हम अहले बातिल के किज़्ब को बयाने हक़ से मिटा देते हैं(फ़ा33)ऐ कुफ़्फ़ार नाबकार (फ़ा34)शाने इलाही में कि उसके लिए बीवी व बच्चा ठहराते हो

(बक़िया सफ़हा 533 का) पर मुत्तफ़िक़ हुए तो लाज़िम आएगा कि एक चीज़ दोनों की मक़दूर हो और दोनों की क़ुदरत से वाक़ेअ्. हो यह मुहाल है और अगर मुख़्तलिफ़ हुए तो एक शय के मुतअ़ल्लिक़ दोनों के इरादे या मअ़न वाक़ेअ्. होंगे और एक ही वक़्त में वह मौजूद व मअ्.दूम दोनों हो जाएगी या दोनों के इरादे वाक़ेअ्. न हों और शय न मौजूद हो न मअ्दूम या एक का इरादा वाक़ेअ् हो दूसरे का वाक़ेअ्. न हो यह तमाम सूरतें मुहाल हैं तो साबित हुआ कि फ़साद हर तक़दीर पर लाज़िम है तौहीद की यह निहायत क़वी बुरहान है और उसकी तक़रीरें बहुत बस्त के साथ अइम्मए कलाम की किताबों में मज़कूर हैं यहां इख़्तेसारन इसी क़दर पर इक्तेफ़ा किया गया (तफ़सीर कबीर वग़ैरह) (फ़ा42) कि उसके लिए औलाद व शरीक ठहराते हैं (फ़ा43) क्योंकि वह मालिके हक़ीक़ी है जो चाहे करे जिसे चाहे इज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआ़दत दे जिसे चाहे शक़ी करे वह सब का हाकिम है कोई उसका हाकिम नहीं जो उससे पूछ सके (फ़ा44) क्योंकि सब उसके बन्दे हैं ममलूक हैं सब पर उसकी फ़रमांबरदारी और इताअ़त लाज़िम है इससे तौहीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है जब सब ममलूक हैं तो उन में से कोई ख़ुदा कैसे हो सकता है उसके बाद बतरीक़े इस्तिफ़हाम तौबीख़न फ़रमाया (फ़ा45) ऐ हबीब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उन मुशरिकीन से कि तुम अपने इस बातिल दावा पर (फ़ा46) और हुज्जत क़ायम करो ख़्वाह अक़्ली हो या नक़्ली मगर न कोई दलील अ़क़्ली ला सकते हो जैसा कि बराहीन मज़कूरा से ज़ाहिर हो चुका और न कोई दलील नक़्ली पेश कर सकते हो क्योंकि तमाम कुतुबे समाविया में अल्लाह तआ़ला की तौहीद का बयान है और सब में शिर्क का इबताल किया गया है (फ़ा47) साथ वालों से मुराद आपकी उम्मत है क़ुरआने करीम में इसका ज़िक्र है कि उसको ताअ़त पर क्या सवाब मिलेगा और मअ्.सियत पर क्या अ़ज़ाब किया जाएगा। (फ़ा48) यानी पहले अम्बिया की उम्मतों का और इसका कि दुनिया में उनके साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा। (फ़ा49) और ग़ौर व तअम्मुल नहीं करते और नहीं सोचते कि तौहीद पर ईमान लाना उनके लिए ज़रूरी है। (फ़ा50) **शाने नुज़ूलः** यह आयत ख़ुज़ाआ़ के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां कहा था। (फ़ा51) उसकी ज़ात इससे मुनज़्ज़ा है कि उसके औलाद हो। (फ़ा52) यानी फ़रिश्ते उसके बरगुज़ीदा और मुकर्रम बन्दे हैं। (फ़ा53) यानी जो कुछ उन्होंने किया और जो कुछ वह आईन्दा करेंगे। (फ़ा54) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यानी जो तौहीद का क़ायल हो।

(बक़िया सफ़हा 534 का) है कि हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात हो जाएगी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि दुश्मनाने रसूल के लिए यह कोई ख़ुशी की बात नहीं हमने दुनिया में किसी आदमी के लिए हमेशगी नहीं रखी। (फ़ा67) और उन्हें मौत के पंजे से रिहाई मिल जाएगी जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते

हैं हक़ीक़त यह है कि (फ़ा68) यानी राहत व तकलीफ़ तन्दुरुस्ती व बीमारी दौलतमन्दी व नादारी नफ़ा और नुक़सान से (फ़ा69) ताकि ज़ाहिर हो जाये कि सब्र व शुक्र में तुम्हारा क्या दर्जा है। (फ़ा70) हम तुम्हें तुम्हारे आमाल की जज़ा देंगे। (फ़ा71) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अबू जहल के हक़ में नाज़िल हुई हुज़ूर तशरीफ़ लिए जाते थे वह आपको देख कर हंसा और कहने लगा कि यह बनी अब्द मनाफ़ के नबी हैं और आपस में एक दूसरे से कहने लगे (फ़ा72) कुफ़्फ़ार

(बक़िया सफ़हा 535 का) रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वह अपने बुतों की निस्बत यह एतेक़ाद रखते हैं तो उनका हाल यह है कि (फ़ा86) अपने पूजने वालों को क्या बचा सकेंगे। (फ़ा87) यानी कुफ़्फ़ार को (फ़ा88) और दुनिया में उन्हें निअ़मत व मुहलत दी। (फ़ा89) और वह उससे और मग़रूर हुए और उन्होंने गुमान किया कि वह हमेशा ऐसे ही रहेंगे। (फ़ा90) कुफ़्रिस्तान की (फ़ा91) रोज़ बरोज़ मुसलमानों को उस पर तसल्लुत दे रहे हैं और एक शहर के बाद दूसरा शहर फ़तह होता चला आ रहा है हुदूदे इस्लाम बढ़ रही हैं और सरज़मीने कुफ़्र घटती चली आती है और हवालीए मक्का मुकर्रमा पर मुसलमानों का तसल्लुत होता जाता है क्या मुशरिकीन जो अ़ज़ाब तलब करने में जल्दी करते हैं उसको नहीं देखते और इबरत हासिल नहीं करते (फ़ा92) जिनके क़ब्ज़ा से ज़मीन दम ब-दम निकलती जा रही है या रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और उनके असहाब जो ब-फ़ज़्ले इलाही फ़तह पर फ़तह पा रहे हैं और उनके मक़बूज़ात दम ब-दम बढ़ते चले जाते हैं (फ़ा93) और अ़ज़ाबे इलाही का उसी की तरफ़ से ख़ौफ़ दिलाता हूं।

(बक़िया सफ़हा 537 का) उन्होंने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो (फ़ा111) यह ख़बर नमरूद व जब्बार और उसके उमरा को पहुंची तो। (फ़ा112) कि यह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ही का फ़ेअ़ल है या उन से बुतों की निस्बत ऐसा कलाम सुना गया है मुद्दआ़ यह था कि शहादत क़ाइम हो तो वह आपके दरपै हों चुनान्चे हज़रत बुलाए गए और वह लोग (फ़ा113) आपने इसका तो कुछ जवाब न दिया और शाने मुनाज़रा ना से तअ़रीज़ के तौर पर एक अ़जीब व ग़रीब हुज्जत क़ायम की (फ़ा114) इस गुस्सा से कि उसके होते तुम उसके छोटों को पूजते हो उसके कन्धे पर बसूला होने से ऐसा ही क़ियास किया जा सकता है मुझसे क्या पूछना पूछना हो (फ़ा115) वह खुद बतायें कि उनके साथ यह किसने किया मुद्दआ़ यह था कि क़ौम ग़ौर करे कि जो बोल नहीं सकता जो कुछ कर नहीं सकता वह खुदा नहीं हो सकता उसकी खुदाई का एतेक़ाद बातिल है चुनान्चे आपने यह फ़रमाया (फ़ा116) और समझे कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हक़ पर हैं (फ़ा117) जो ऐसे मजबूरों और बे इख़्तियारों को पूजते हो जो अपने कांधे से बसूला न हटा सके वह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सके और उसके क्या काम आ सके। (फ़ा118) और कलिमए हक़ कहने के बाद फिर उनकी बदबख़्ती उनके सरों पर सवार हुई और वह कुफ़्र की तरफ़ पलटे और बातिल मुजादला व मुक़ाबरा शुरू किया और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से कहने लगे। (फ़ा119) तो हम उनसे कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम तुम हमें उनसे पूछने का कैसे हुक्म देते हो। (फ़ा120) अगर इसे पूजो। (फ़ा121) अगर इसका पूजना मौक़ूफ़ कर दो। (फ़ा122) कि इतना भी समझ सको कि यह बुत पूजने के क़ाबिल नहीं जब हुज्जत तमाम हो गई और वह लोग जवाब से आ़जिज़ आये तो

(बक़िया सफ़हा 538 का) पर फ़ाइक़ है यहां कसरत से नहरें हैं पानी पाकीज़ा और खुशगवार है अश्जार व समार की कसरत है हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने मक़ामे फ़लस्तीन में नुज़ूल फ़रमाया और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने मोतफ़िका में (फ़ा130) और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से बेटे की दुआ़ की थी। (फ़ा131) लोगों को हमारे दीन की तरफ़। (फ़ा132) उस बस्ती का नाम सुदूम था (फ़ा133) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा134) यानी तूफ़ान से और तकज़ीब अहले तुग़यान से

(बक़िया सफ़हा 539 का) मसला का हुक्म था और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने जो तजवीज़ फ़रमाई यह सूरते सुलह थी। (फ़ा137) वुजूहे इज्तेहाद व तरीक़े अहकाम वग़ैरह का मसला जिन उलमा को इज्तेहाद की अहलियत हासिल हो उन्हें इन उमूर में इज्तेहाद का हक़ है जिस में वह किताब व सुन्नत का हुक्म न पावें और अगर इज्तेहाद में ख़ता भी हो जावे तो भी उन पर मुआख़ज़ा नहीं बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्तेहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में मुसीब हो तो उस के लिए दो अज्र हैं और अगर इज्तेहाद में ख़ता वाक़ेअ़ हो जाये तो एक अज्र (फ़ा138) पत्थर और परिन्दे आपके साथ आपकी मुवाफ़क़त में तस्बीह करते थे। (फ़ा139) यानी जंग में दुश्मन के मुक़ाबिल काम आये और वह ज़िरह है सब से पहले ज़िरह बनाने वाले हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम हैं (फ़ा140) उस ज़मीन से मुराद शाम है जो आपका मसकन था। (फ़ा141) दरिया की गहराई में दाख़िल होकर समुन्दर की तह से आपके लिए जवाहर निकाल कर लाते। (फ़ा142) अ़जीब अ़जीब सनअ़तें इमारतें महल बर्तन शीशे की चीज़ें साबुन वग़ैरह बनाना। (फ़ा143) कि आपके हुक्म से बाहर न हों (फ़ा144) यानी अपने रब से दुआ़ की हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं अल्लाह तआ़ला ने आपको हर तरह की निअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं हुस्ने सूरत भी कसरते औलाद भी कसरते अमवाल भी अल्लाह तआ़ला ने आपको इब्तेला में डाला और आपके फ़रज़न्द व औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए तमाम जानवर जिस में हज़ारहा ऊँट हज़ारहा बकरियां थीं सब मर गए तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को इन चीज़ों से हलाक होने और ज़ाया होने की ख़बर दी जाती थी तो आप हम्दे इलाही बजा लाते थे और फ़रमाते थे मेरा क्या है जिस का था उसने लिया जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उसका शुक्र ही अदा नहीं हो सकता मैं उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हूं फिर आप बीमार हुए तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़े बदन मुबारक सब का सब ज़ख़्मों से भर गया सब लोगों ने छोड़ दिया बजुज़ आप की बीवी साहिबा के कि वह आपकी ख़िदमत करती रहीं और यह हालत सालहा

साल रही आख़िरकार कोई ऐसा सबब पेश आया कि आपने बारगाहे इलाही में दुआ की (फ़ा145) इस तरह से कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि आप ज़मीन में पांव मारिये उन्होंने पाँव मारा एक चश्मा ज़ाहिर हुआ हुक्म दिया गया इससे ग़ुस्ल कीजिये ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं फिर आप चालीस क़दम चले फिर दोबारा ज़मीन में पाँव मारने का हुक्म हुआ फिर आपने पाँव मारा उससे भी एक चश्मा ज़ाहिर हुआ जिसका पानी निहायत सर्द था आपने बहुक्मे इलाही पिया इससे बातिन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं और आपको आला दर्जा की सेहत हासिल हुई (फ़ा146) हज़रत इब्ने मसऊद व इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी तमाम औलाद को ज़िन्दा फ़रमा दिया और आपको उतनी ही औलाद और इनायत की हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने आप की बीबी साहिबा को दोबारा जवानी इनायत की और उनके कसीर औलादें हुईं (फ़ा147) कि वह इस वाक़िआ़ से बलाओं पर सब्र करने और उसके सवाबे अ़ज़ीम से बाख़बर हों और सब्र करें और सवाब पायें। (फ़ा148) कि उन्होंने मेहनतों और बलाओं और इबादतों की मशक़्क़तों पर सब्र किया।

(बक़िया सफ़हा 540 का) में हज़रत ईसा को पैदा किया (फ़ा163) अपने कमाले क़ुदरत की कि हज़रत ईसा को उसके बतन से बग़ैर बाप के पैदा किया (फ़ा164) दीने इस्लाम यही तमाम अम्बिया का दीन है इसके सिवा जितने अदियान हैं सब बातिल, सबको इसी दीन पर क़ाइम रहना लाज़िम है। (फ़ा165) न मेरे सिवा कोई दूसरा रब न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन (फ़ा166) यानी दीन में इख़्तिलाफ़ किया और फ़िरक़े फ़िरक़े हो गए (फ़ा167) हम उन्हें उनके आमाल की जज़ा देंगे।

(बक़िया सफ़हा 541 का) तलहा और ज़ुबैर और सअ़द और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़। **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक रोज़ कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए उस वक़्त क़ुरैश के सरदार हतीम में मौजूद थे और कअ़्बा शरीफ़ के गिर्द तीन सौ साठ बुत थे नज़र बिन हारिस सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने आया और आप से कलाम करने लगा हुज़ूर ने उसको जवाब देकर साकित कर दिया और यह आयत तिलावत फ़रमाई *इन्नकुम् व मा तअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह़-स-बु जहन्न-म* कि तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं यह फ़रमा कर हुज़ूर तशरीफ़ ले आये फिर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबअ़री सहमी आया उसको वलीद बिन मुग़ीरा ने इस गुफ़्तगू की ख़बर दी कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम मैं होता तो उन से मुबाहसा करता इस पर लोगों ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बुलाया इब्ने ज़ुबअ़री यह कहने लगा कि आपने यह फ़रमाया है कि तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि हां, कहने लगा यहूद तो हज़रत उज़ैर को पूजते हैं और नसारा हज़रत मसीह को पूजते हैं और बनी मलीह फ़रिश्तों को पूजते हैं इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और बयान फ़रमा दिया कि हज़रत उज़ैर और मसीह और फ़रिश्ते वह हैं जिनके लिए भलाई का वादा हो चुका और वह जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दर हक़ीक़त यहूद व नसारा वग़ैरह शैतान की परस्तिश करते हैं इन जवाबों के बाद उसको मजाले दम ज़दन न रही और वह साकित रह गया और दर हक़ीक़त उसका एतेराज़ कमाले इनाद से था क्योंकि जिस आयत पर उसने एतेराज़ किया उसमें *मा तअ़्बुदू-न* है और मा ज़बाने अ़रबी में ग़ैर ज़विल उक़ूल के लिए बोला जाता है यह जानते हुए उसने अन्धा बन कर एतेराज़ किया यह एतेराज़ तो अहले ज़बान की निगाहों में खुला हुआ बातिल था मगर मज़ीद बयान के लिए इस आयत में तौज़ीह फ़रमा दी गई। (फ़ा181) और उसके जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी वह मनाज़िले जन्नत में आराम फ़रमा होंगे (फ़ा182) ख़ुदावन्दी निअ़्मतों और करामतों में (फ़ा183) यानी नफ़ख़ए अख़ीरा (फ़ा184) क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारकबादें देते तहनियत पेश करते और यह कहते (फ़ा185) जो कातिबे आमाल है आदमी की मौत के वक़्त उसके

(बक़िया सफ़हा 544 का) हो। (फ़ा18) और उसको इतना बुढ़ापा आ जाता है कि अक़्ल व हवास बजा नहीं रहते और ऐसा हो जाता है (फ़ा19) और जो जानता हो वह भूल जाये इकरमा ने कहा जो क़ुरआन की मदावमत रखेगा इस हालत को न पहुंचेगा इसके बाद अल्लाह तआ़ला बअ़्स यानी मरने के बाद उठने पर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है (फ़ा20) ख़ुश्क बे ग्याह (फ़ा21) यानी हर क़िस्म का ख़ुशनुमा सब्ज़ा (फ़ा23) यह दलीलें बयान फ़रमाने के बाद नतीजा मुरत्तब फ़रमाया जाता है (फ़ा२३) और यह जो कुछ ज़िक्र किया गया आदमी की पैदाइश और ख़ुश्क बे-ग्याह ज़मीन को सरसब्ज़ व शादाब कर देना उसके वजूद व हिकमत की दलीलें हैं उनसे उसका वजूद भी साबित होता है। (फ़ा24) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अबू जहल वग़ैरह एक जमाअ़ते कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई जो अल्लाह तबारक व तआ़ला की सिफ़ात में झगड़ा करते थे और उसकी तरफ़ ऐसे औसाफ़ की निस्बत करते थे जो उसकी शान के लायक़ नहीं इस आयत में बताया गया कि आदमी को कोई बात बग़ैर इल्म और बे सनद व दलील के कहनी न चाहिए ख़ास कर शाने इलाही में और जो बात इल्म वाले के ख़िलाफ़ बे इल्मी से कही जाएगी वह बातिल होगी फिर उस पर यह अन्दाज़ कि इसरार करे और बराहे तकब्बुर। (फ़ा25) और उसके दीन से मुनहरिफ़ कर दे। (फ़ा26) चुनांचे बद्र में वह ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ क़त्ल हुआ (फ़ा27) और उससे कहा जाएगा

(बक़िया सफ़हा 545 का) नाफ़रमानों पर अ़ज़ाब। (फ़ा40) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा41) मैं उनके दीन को ग़लबा अ़ता फ़रमाकर (फ़ा42) उनके दर्जे बुलन्द करके (फ़ा43) यानी अल्लाह तआ़ला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा जिसे उससे जलन हो वह अपनी इन्तेहाई सई ख़त्म करदे और जलन में मर भी जाये तो भी कुछ नहीं कर सकता।

(बक़िया सफ़हा 547 का) की जायें। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा63) इल्हादिम् बिज़ुल्मिन् नाहक़ ज़्यादती से या शिर्क व बुत परस्ती मुराद है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि हर ममनूअ़ क़ौल व फ़ेअ़्ल मुराद है हत्ता कि ख़ादिम को गाली देना भी बाज़ ने कहा इससे मुराद है हरम में बग़ैर एहराम के दाख़िल होना या ममनूआ़ते हरम का इरतेकाब करना मिस्ल शिकार मारने और दरख़्त काटने के और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मुराद यह है कि जो तुझे न क़त्ल करे तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर ज़ुल्म न करे तू उस पर ज़ुल्म करे शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाजिर था दूसरा अन्सारी उन लोगों ने अपने अपने मफ़ाख़िरे नसब बयान किये तो अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस को गुस्सा आया और उसने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और ख़ुद मुरतद होकर मक्का मुकर्रमा की तरफ़ भाग गया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा64) तामीरे कअ़्बा शरीफ़ के वक़्त पहले इमारते कअ़्बा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने बनाई थी और तूफ़ाने नूह के वक़्त वह आसमान पर उठा ली गई अल्लाह तआ़ला ने एक हवा मुक़र्रर की जिस ने उसकी जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने एक अब्र भेजा जो ख़ास उस बुक़आ़ के मुक़ाबिल था जहां कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा की इमारत थी इस तरह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को कअ़्बा शरीफ़ की जगह बताई गई और आपने उसकी क़दीम बुनियाद पर इमारते कअ़्बा तामीर की और अल्लाह तआ़ला ने आपको वही फ़रमाई। (फ़ा65) शिर्क से और बुतों से और हर क़िस्म की नजासतों से (फ़ा66) यानी नमाज़ियों के (फ़ा67) चुनांचे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अबू क़ुबैस पहाड़ पर चढ़ कर जहान के लोगों को निदा कर दी कि बैतुल्लाह का हज करो जिनके मक़दूर में हज है उन्होंने बापों की पुश्तों और माओं के पेटों से जवाब दिया लब्बै-क अल्लाहुम्-म लब्बै-क हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि इस आयत में अ़ज़्ज़िन् का ख़िताब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को है चुनान्चे हज्जतुल विदाअ़ में एलान फ़रमा दिया और इरशाद किया कि ऐ लोगो अल्लाह ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया तो हज करो (फ़ा68) और कसरते सैरो सफ़र से दुबली हो जाती हैं (फ़ा69) दीनी भी दुनियवी भी जो इस इबादत के साथ ख़ास हैं दूसरी इबादत में नहीं पाये जाते (फ़ा70) वक़्ते ज़बह (फ़ा71) जाने हुए दिनों से ज़िलहिज्जा का अ़शरा मुराद है जैसा कि हज़रत अली और इब्ने अ़ब्बास व हसन व क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का क़ौल है और यही मज़हब है हमारे इमामे आज़म हज़रत अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का और साहिबीन के नज़दीक जाने हुए दिनों से अय्यामे नह्र मुराद हैं यह क़ौल है हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का और हर तक़दीर पर यहां इन दिनों से ख़ास रोज़े ईद मुराद है। (तफ़सीरे अहमदी) (फ़ा72) ऊंट गाय बकरी भेड़ (फ़ा73) ततव्वुअ़ ओर मुतआ़ व क़िरान व हर एक हदी से जिनका इस आयत में बयान है खाना जाइज़ है बाक़ी हिदाया से जायज़ नहीं (तफ़सीर अहमदी व मदारिक) (फ़ा74) मूंछें कतरवायें नाखुन तराशें बग़लों और ज़ेरे नाफ़ के बाल दूर करें (फ़ा75) जो उन्होंने मानी हों

(बक़िया सफ़हा 548 का) दलील है इस पर कि नामे ख़ुदा का ज़िक्र करना ज़बह के लिए शर्त है अल्लाह तआ़ला ने हर एक उम्मत के लिए मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि उसके लिए ब-तरीक़े तक़र्रुब क़ुरबानी करें और तमाम क़ुरबानियों पर उसी का नाम लिया जाये (फ़ा90) और इख़्लास के साथ उसकी इताअ़त करो। (फ़ा91) उसके हैबत व जलाल से (फ़ा92) यानी सदक़ा देते हैं

(बक़िया सफ़हा 550 का) हालात और उनका हलाक होना और उनकी बस्तियों की वीरानी कि उससे इबरत हासिल हो (फ़ा129) यानी कुफ़्फ़ार की ज़ाहिरी हिस बातिल नहीं हुई है वह इन आंखों से देखने की चीज़ें देखते हैं। (फ़ा130) और दिलों ही का अन्धा होना ग़ज़ब है इसी लिए आदमी दीन की राह पाने से महरूम रहता है। (फ़ा131) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का मिस्ल नज़र बिन हारिस वग़ैरह के और यह जल्दी करना उनका इस्तेहज़ा के तरीक़ा पर था।

(बक़िया सफ़हा 551 का) उन्हें शैतानी कलिमात के ख़ल्त से महफ़ूज़ फ़रमाता है। (फ़ा141) और इब्तेला व आज़माईश बना दे। (फ़ा142) शक और निफ़ाक़ की (फ़ा143) हक़ को क़बूल नहीं करते और यह मुशरिकीन हैं (फ़ा144) यानी मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन (फ़ा145) अल्लाह के दीन का और उसकी आयात का (फ़ा146) यानी क़ुरआन शरीफ़

(बक़िया सफ़हा 552 का) उन्होंने क़िताल शुरू कर दिया मुसलमान उन के मुक़ाबिल साबित रहे अल्लाह तआ़ला ने उनकी मदद फ़रमाई। (फ़ा158) यानी मज़लूम की मदद फ़रमाना इस लिए है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर है और उसकी क़ुदरत की निशानियां ज़ाहिर हैं।

(बक़िया सफ़हा 553 का) खाते उस पर यह यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा173) और लोगों को उस पर ईमान लाने और उसका दीन क़बूल करने और उसकी इबादत में मशग़ूल होने की दावत दो। (फ़ा174) बावजूद तुम्हारे तरह देने के भी

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ
حٰفِظُوْنَ ۝ إِلَّا عَلٰى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ
سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

सूरत मुअ्मिनून

मक्की है इसमें 118 आयतें और 6 रुकूअ् हैं

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़द् अफ़्-ल-ह़ल् मुअ्मिनून(1)अल्लज़ी-न हुम् फ़ी स़लातिहिम् ख़ाशिऊन(2)वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग़्वि मुअ्रिज़ून(3)वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून(4)वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून(5)इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन(6) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्आ़दून(7)वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राऊन(8)वल्लज़ी-न हुम् अ़ला स़-लवातिहिम् युहाफ़िज़ून(9)उलाइ-क हुमुल् वारिसून(10)अल्लज़ी-न यरिसूनल् फ़िर्दौ-स हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(11)व ल-क़द ख़-लक़्नल् इन्सा-न मिन् सुला-लतिम् मिन् त़ीन(12)सुम्-म ज-अ़ल्नाहु नुत्फ़तन् फ़ी क़रारिम् मकीन(13)सुम्-म ख़-लक़्नन् नुत्फ़-त अ़-ल-क़-तन् फ़-ख़-लक़्नल् अ़-ल-क़-त मुज़्-ग़-तन् फ़-ख़-लक़्नल् मुज़्-ग़-त अ़िज़ामन् फ़-कसौनल् अ़िज़ा-म

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1) बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले।(1) जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।(2) (फ़ा2) और वह जो किसी बेहूदा बात की तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते।(3) (फ़ा3) और वह कि ज़कात देने का काम करते हैं।(4) (फ़ा4) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।(5) मगर अपनी बीबियों या शरई बान्दियों पर जो उनके हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं।(6) (फ़ा5) तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वही ह़द से बढ़ने वाले हैं।(7) (फ़ा6) और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की रिआ़यत करते हैं।(8) (फ़ा7) और वह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं।(9) (फ़ा8) यही लोग वारिस हैं।(10) कि फ़िरदौस की मीरास पायेंगे वह उसमें हमेशा रहेंगे।(11) और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया।(12) (फ़ा9) फिर उसे (फ़ा10) पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में।(13) (फ़ा11) फिर हमने उस पानी की बूंद को ख़ून की फुटक किया फिर ख़ून की फुटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया

(फ़ा1) सूरह मूअ्मिनून मक्की है इसमें छः रुकूअ़ और 118 आयतें हैं 1840 कलिमे और 4802 हरफ़ हैं। (फ़ा2) उनके दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता हे और उनके आज़ा साकिन होते हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ्. यह है कि उसमें दिल लगा हो और दुनिया से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाये नमाज़ से बाहर न जाये और गोशए चश्म से किसी तरफ़ न देखे और कोई अ़बस काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाये इस तरह कि उसके दोनों किनारे लटकते हों और आपस में मिले न हों और उंगलियां न चटखाये और इस क़िस्म के हरकात से बाज़ रहे बाज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ्. यह है कि आसमान की तरफ़ नज़र न उठाए। (फ़ा3) हर लह्व व बातिल से मुजतनिब रहते हैं। (फ़ा4) यानी उसके पाबन्द हैं और मुदावमत करते हैं। (फ़ा5) अपनी बीबियों और बांदियों के साथ जाइज़ तरीक़े पर क़ुरबत करने में (फ़ा6) कि हलाल से हराम की तरफ़ तजावुज़ करते हैं मसलाः इससे मालूम हुआ कि हाथ से क़ज़ाए शह्वत करना हराम है सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को अ़ज़ाब किया जो अपनी शर्मगाहों से खेल **(बक़िया सफ़हा 580 पर)**

لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝١٤ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝١٥ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝١٦ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ
وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝١٧ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝١٨ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝١٩ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝٢٠ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا
فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٢١ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝٢٢ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا
لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٢٣ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً مَّا

लह्मन् सुम्–म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आ–ख़–र फ़–त–बा–र–कल्लाहु अह्सनुल् ख़ालिक़ीन(14) सुम्–म इन्नकुम् बअ्–द ज़ालि–क ल–मय्यितून(15)सुम्–म इन्नकुम् यौमल् क़िया–मति तुब्–असून(16) व ल– क़द् ख़–लक़्ना फ़ौ–क़कुम् सब्–अ तराइ–क़ व मा कुन्ना अ़निल्ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन(17)व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ मा–अम् बि–क़–दरिन् फ़–अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम् बिही लक़ादिरून(18)फ़–अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव् व अअ्नाबिन् लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसी–रतुंव् व मिन्हा तअ्कुलून(19)व श–जर–तन् तख़्रुजु मिन् तूरि सैना– अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्ग़िल् लिल्–आकिलीन(20)व इन्–न लकुम् फ़िल् अन्आमि लअिब्– र–तन् नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु कसी–रतुंव् व मिन्हा तअ्कुलून (21)व अ़लैहा व अ़–लल्फ़ुल्कि तुह्मलून(22)व ल–क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा–ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू अ–फ़ला तत्तकून(23)फ़क़ालल् म–लउल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा इल्ला ब–शरुम् मिस्लुकुम् युरीदु अंय्य–त–फ़ज़्ज़–ल अ़लैकुम् व लौ शाअल्लाहु ल–अन्ज़–ल मलाइ–क–तम् मा

फिर उसे और सूरत में उठान दी (फ़12) तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सबसे बेहतर बनाने वाला है।(14) फिर उसके बाद तुम ज़रूर (फ़13) मरने वाले हो।(15) फिर तुम सब क़ियामत के दिन (फ़14) उठाए जाओगे।(16) और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं (फ़15) और हम ख़ल्क़ से बे-ख़बर नहीं।(17) (फ़16) और हमने आसमान से पानी उतारा (फ़17) एक अन्दाज़ा पर (फ़18) फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उसके लेजाने पर क़ादिर हैं।(18) (फ़19) तो उससे हमने तुम्हारे लिए बाग़ पैदा किये खजूरों और अंगूरों के तुम्हारे लिए उनमें बहुत से मेवे हैं (फ़20) और उनमें से खाते हो।(19) (फ़21) और वह पेड़ पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है (फ़22) लेकर उगता है तेल और खाने वालों के लिए सालन।(20) (फ़23) और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में समझने का मक़ाम है हम तुम्हें पिलाते हैं उसमें से जो उनके पेट में है (फ़24) और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फ़ाइदे हैं (फ़25) और उनसे तुम्हारी ख़ुराक है।(21) (फ़26) और उन पर (फ़27) और कश्ती पर (फ़28) सवार किये जाते हो।(22) (रुकूअ़ 1) और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।(23) (फ़29) तो उसकी क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले (फ़30) यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने (फ़31) और अल्लाह चाहता (फ़32) तो फ़रिश्ते उतारता

(फ़12) यानी उसमें रूह डाली इस बेजान को जानदार किया नुत्क़ और समअ् और बसर इनायत की। (फ़13) अपनी उम्रें पूरी होने पर (फ़14) हिसाब व जज़ा के लिए (फ़15) इनसे मुराद सात आसमान हैं जो मलाइका के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं। (फ़16) सब के आमाल अक़्वाल ज़माइर को जानते हैं कोई चीज़ हमसे छुपी नहीं। (फ़17) यानी मेंह बरसाया (फ़18) जितना हमारे इल्म व हिकमत में ख़ल्क़ की हाजतों के लिए चाहिए (फ़19) जैसा अपनी क़ुदरत से नाज़िल फ़रमाया ऐसा ही उस पर भी क़ादिर हैं कि उसको ज़ाइल कर दें तो बन्दों को चाहिए कि उस निअ्मत की शुक्र-गुज़ारी से हिफ़ाज़त करें।(फ़20) तरह तरह के (फ़21) जाड़े और गर्मी वग़ैरह मौसमों में और ऐश करते हो। (फ़22) उस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है। (फ़23) **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

سَمِعۡنَا بِهٰذَا فِیۡۤ اٰبَآئِنَا الۡاَوَّلِیۡنَ ۚ﴿۲۴﴾ اِنۡ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوۡا بِهٖ حَتّٰی حِیۡنٍ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبِّ انۡصُرۡنِیۡ بِمَا کَذَّبُوۡنِ ﴿۲۶﴾ فَاَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡهِ اَنِ اصۡنَعِ الۡفُلۡکَ بِاَعۡیُنِنَا

وَ وَحۡیِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوۡرُ ۙ فَاسۡلُکۡ فِیۡهَا مِنۡ کُلٍّ زَوۡجَیۡنِ اثۡنَیۡنِ وَ اَهۡلَکَ اِلَّا مَنۡ سَبَقَ عَلَیۡهِ الۡقَوۡلُ مِنۡهُمۡ ۚ وَ لَا تُخَاطِبۡنِیۡ فِی الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ۚ

اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۲۷﴾ فَاِذَا اسۡتَوَیۡتَ اَنۡتَ وَ مَنۡ مَّعَکَ عَلَی الۡفُلۡکِ فَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِیۡ نَجّٰنَا مِنَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۲۸﴾ وَ قُلۡ رَّبِّ اَنۡزِلۡنِیۡ مُنۡزَلًا مُّبٰرَکًا وَّ اَنۡتَ

خَیۡرُ الۡمُنۡزِلِیۡنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ وَّ اِنۡ کُنَّا لَمُبۡتَلِیۡنَ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ اَنۡشَاۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ قَرۡنًا اٰخَرِیۡنَ ﴿۳۱﴾ فَاَرۡسَلۡنَا فِیۡهِمۡ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ اَنِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَکُمۡ

مِّنۡ اِلٰهٍ غَیۡرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۳۲﴾ وَ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِهِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَ کَذَّبُوۡا بِلِقَآءِ الۡاٰخِرَةِ وَ اَتۡرَفۡنٰهُمۡ فِی الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ ۙ یَاۡکُلُ مِمَّا

समिअ्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल् अव्वलीन(24)इन् हु–व इल्ला रजुलुम् बिही जिन्नतुन् फ़–त –रब्बसू बिही ह़त्ता ह़ीन(25)क़ा–ल रब्बिन्सुरनी बिमा कज़्ज़बून(26)फ़औहैना इलैहि अनिस्–नअ़िल् फ़ुल्–क बि–अअ्युनिना व वह़्यिना फ़इज़ा जा–अ अम्रुना व फ़ारत्–तन्नूरु फ़स्लुक् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्–ल–क इल्ला मन् स–ब–क़ अ़लैहिल्क़ौलु मिन्हुम् व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी–न ज़–लमू इन्नहुम् मुग्–रक़ून(27)फ़इज़स् तवै–त अन्–त व मम्–म–अ़–क अ़–लल्फ़ुल्कि फ़क़ुलिल् ह़म्दु लिल्लाहिल् लज़ी नज्जाना मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन(28)व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़–लम् मुबा–रकंव् व अन्–त ख़ैरुल् मुन्ज़िलीन(29)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिंव् व इन् कुन्ना लमुब्तलीन(30)सुम्–म अन्शअ्ना मिम् बअ़्दिहिम् क़र्–नन् आ–ख़रीन(31)फ़–अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् अनिअ़्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू अ–फ़ला तत्तक़ून(32)व क़ालल् म–लउ मिन् क़ौमिहिल् लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल् आख़ि–रति व अतरफ़्नाहुम् फ़िल्–ह़यातिद्दुन्या मा हाज़ा इल्ला ब–शरुम् मिस्लुकुम् यअ्कुलु मिम्मा

हमने तो यह अपने अगले बाप दादाओं में न सुना।(24) (फ़ा33) वह तो नहीं मगर एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माना तक उसका इन्तेज़ार किये रहो।(25) (फ़ा34) नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा (फ़ा35) इस पर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।(26) तो हमने उसे 'वह़ी' भेजी कि हमारी निगाह के सामने (फ़ा36) और हमारे हुक्म से कश्ती बना फिर जब हमारा हुक्म आये (फ़ा37) और तन्नूर उबले (फ़ा38) तो उसमें बिठाले (फ़ा39) हर जोड़े में से दो (फ़ा40) और अपने घर वाले (फ़ा41) मगर उनमें से वह जिन पर बात पहले पड़ चुकी (फ़ा42) और उन ज़ालिमों के मुआमला में मुझसे बात न करना (फ़ा43) यह ज़रूर डुबोए जायेंगे।(27) फिर जब ठीक बैठे कश्ती पर तू और तेरे साथ वाले तो कह सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमें इन ज़ालिमों से नजात दी।(28) और अ़र्ज़ कर (फ़ा44) कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है।(29) बेशक इसमें(फ़ा45) ज़रूर निशानियां हैं(फ़ा46)और बेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे।(30)(फ़ा47)फिर उनके(फ़ा48)बाद हमने और संगत पैदा की।(31) (फ़ा49) तो उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा (फ़ा50)कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोइ ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।(32) (फ़ा51) (रुकूअ़ 2)और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्होंने कुफ़्र किया और आखिरत की हाज़िरी (फ़ा52)को झुठलाया और हमने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में चैन दिया(फ़ा53)कि यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम खाते हो

(फ़ा33) कि बशर भी रसूल होता है यह उनकी कमाले हिमाक़त थी कि बशर का रसूल होना तो तस्लीम न किया पत्थरों को ख़ुदा मान लिया और उन्होंने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की निस्बत यह भी कहा। (फ़ा34) ता आंकि उसका जुनून दूर हो ऐसा हुआ तो ख़ैर वरना उसको क़त्ल कर डालना जब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उनके हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो हज़रत (फ़ा35) और इस क़ौम को हलाक कर (फ़ा36) यानी हमारी हिमायत व हिफ़ाज़त में (फ़ा37) उनकी हलाकत का और आसारे अ़ज़ाब नमूदार हों। (फ़ा38) और उसमें से पानी बरआमद हो तो यह अलामत है अ़ज़ाब के शुरू होने की। (फ़ा39) यानी कश्ती में हैवानात के। (फ़ा40) नर और मादा (फ़ा41) यानी अपनी मोमिना बीबी और ईमानदार औलाद या तमाम मोमिनीन (फ़ा42) और कलामे अज़ली में उनका अ़ज़ाब व हलाक मुअ़य्यन हो चुका वह आपका एक बेटा था कनआ़न नाम और एक औरत कि यह दोनों काफ़िर थे आपने अपने तीन फ़रज़न्दों साम **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿٣٤﴾ أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾
قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿٤٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُثَاءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن
بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّ مَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۚ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا
وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا

तअ्कुलू–न मिन्हु व यश्–रबु मिम्मा तश्–रबून(33)व लइन् अ–तअ्तुम् ब–श–रम् मिस्लकुम् इन्नकुम् इज़ल् लख़ासिरून(34)अ–यअिदुकुम् अन्नकुम् इजा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव् व अिज़ामन् अन्नकुम् मुख़्रजून(35)हैहा–त हैहा–त लिमा तू–अ्दून(36)इन् हि–य इल्ला ह़यातु –नद्दुन्या नमूतु व नह़्या व मा नह़्नु बि–मब्अूसीन(37)इन् हु–व इल्ला रजुलु–निफ़्तरा अ़–लल्लाहि कज़िबंव् व मा नह़्नु लहू बिमु–अ्मिनीन(38)क़ा–ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून(39) क़ा–लअ़म्मा क़लीलिल् लयुस्बिहुन्–न नादिमीन(40)फ़–अ–ख़–ज़त्हुमुस्सै–ह़तु बिल् ह़क़्क़ि फ़–ज–अ़ल्नाहुम् ग़ुसाअन् फ़बुअ्–दल् लिल्क़ौ–मिज़्ज़ालिमीन(41)सुम्–म अन्शअ्ना मिम् बअ्दिहिम् क़ुरूनन् आ–ख़रीन(42)मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ–ज–लहा व मा यस्तअ्ख़िरून(43) सुम्–म अर्सल्ना रुसु–लना तत्रा कुल्लमा जा–अ उम्म–तर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़–अत्बअ्ना बअ्–ज़हुम् बअ्ज़ंव् व ज–अ़ल्नाहुम् अह़ादी–स फ़बुअ्दल् लिक़ौमिल् ला युअ्मिनून(44)सुम्–म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू–न बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन(45)इला फ़िरऔ–न व म–लइही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन्

उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है।(33) (फ़ा54) और अगर तुम किसी अपने जैसे आदमी की इताअ़त करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो।(34) क्या तुम्हें यह वादा देता है कि तुम जब मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे उसके बाद फिर (फ़ा55) निकाले जाओगे।(35) कितनी दूर है कितनी दूर है जो तुम्हें वादा दिया जाता है।(36) (फ़ा56) वह तो नहीं मगर हमारी दुनिया की ज़िन्दगी (फ़ा57) की हम मरते जीते हैं (फ़ा58) और हमें उठना नहीं।(37) (फ़ा59) वह तो नहीं मगर एक मर्द जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा (फ़ा60) और हम उसे मानने के नहीं।(38) (फ़ा61) अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इस पर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।(39) अल्लाह ने फ़रमाया कुछ देर जाती है कि ये सुबह करेंगे पछताते हुए।(40) (फ़ा62) तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने (फ़ा63) तो हमने उन्हें घास कूड़ा कर दिया (फ़ा64) तो दूर हों (फ़ा65) ज़ालिम लोग।(41) फिर उनके बाद हमने और संगतें पैदा कीं।(42) (फ़ा66) कोई उम्मत अपनी मीआ़द से न पहले जाये न पीछे रहे।(43) (फ़ा67) फिर हमने अपने रसूल भेजे एक पीछे दूसरा जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया उन्होंने उसे झुठलाया (फ़ा68) तो हमने अगलों से पिछले मिला दिये (फ़ा69) और उन्हें कहानियाँ कर डाला (फ़ा70) तो दूर हों वह लोग कि ईमान नहीं लाते।(44) फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतों और रौशन सनद (फ़ा71) के साथ भेजा।(45) फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों की तरफ़ तो उन्होंने ग़ुरूर किया (फ़ा72) और वह लोग ग़लबा

(फ़ा54) यानी यह अगर नबी होते तो मलाइका की तरह खाने पीने से पाक होते इन बातिन के अन्धों ने कमालाते नबुव्वत को न देखा और खाने पीने के औसाफ़ देख कर नबी को अपनी तरह बशर कहने लगे यह बुनियाद उनकी गुमराही की हुई चुनान्चे इसी से उन्होंने यह नतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे। (फ़ा55) क़ब्रों से ज़िन्दा (फ़ा56) यानी उन्होंने मरने के बाद ज़िन्दा होने को बहुत बईद जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी ख़्याले बातिल की बिना पर कहने लगे। (फ़ा57) इससे उनका मतलब यह था कि इस दुनियवी ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं सिर्फ़ इतना ही है (फ़ा58) कि हम में कोई मरता है कोई पैदा होता है (फ़ा59) मरने के बाद और अपने रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत उन्होंने **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

عَالِيْنَ ﴿۴۶﴾ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿۴۸﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾
وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿۵۰﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۵۱﴾
وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿۵۲﴾ فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۵۴﴾ اَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿۵۵﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۸﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿۶۰﴾ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿۶۱﴾

आ़लीन(46)फ़क़ालू अनुअ्मिनु लि–ब–शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा लना आ़बिदून(47)फ़–कज़्ज़बूहुमा फ़कानू मिनल् मुह्लकीन(48)व ल–क़द् आतैना मूसल्किता–ब ल–अ़ल्लहुम् यह्तदून(49)व ज–अ़ल्–नब्–न मर्य–म व उम्महू आ–यतंव् व आवैनाहुमा इला रब्–वतिन् ज़ाति क़रारिंव् व मअ़ीन(50)या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ़्–मलू सालिहन् इन्नी बिमा तअ़्–मलू–न अ़लीम(51)व इन्–न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव् वाहि–द–तंव् व अना रब्बुकुम् फ़त्तकून(52) फ़–त–क़त्तअू अम्–रहुम् बै–नहुम् ज़ुबुरन् कुल्लु हिज़्बिम् बिमा लदैहिम् फ़रिहून(53)फ़–ज़रहुम् फ़ी ग़म्–रतिहिम् हत्ता हीन(54)अ–यह्सबू–न अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम् मालिंव् व बनीन (55)नुसारिअु लहुम् फ़िल्–ख़ैराति बल् ला यश्अुरून(56)इन्नल्लज़ी–न हुम् मिन् ख़श्यति रब्बिहिम् मुश्फ़िकून(57)वल्लज़ी–न हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून(58)वल्लज़ी–न हुम् बिरब्बिहिम् ला युश्रिकून(59)वल्लज़ी–न युअ्तू–न मा आतव् व कुलूबुहुम् वजि–लतुन् अन्नहुम् इला रब्बिहिम् राजिअून(60)उलाइ–क युसारिअू–न फ़िल्ख़ैराति व हुम् लहा साबिकून(61)

पाये हुए थे।(46) (फ़73) तो बोले क्या हम ईमान ले आयें अपने जैसे दो आदमियों पर (फ़74) और उनकी क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है।(47) (फ़75) तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया तो हलाक किये हुओं में हो गए।(48) (फ़76) और बेशक हमने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई (फ़77) कि उनको (फ़78) हिदायत हो।(49) और हमने मरयम और उसके बेटे को (फ़79) निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द ज़मीन (फ़80) जहां बसने का मक़ाम (फ़81) और निगाह के सामने बहता पानी।(50) (रुकूअ़ 3) ऐ पैग़म्बरो, पाकीज़ा चीज़ें खाओ (फ़82) और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं।(51) (फ़83) और बेशक यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है (फ़84) और मैं तुम्हारा रब हूं तो मुझ से डरो।(52) तो उनकी उम्मतों ने अपना काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया (फ़85) हर गरोह जो उसके पास है उस पर खुश है।(53) (फ़86) तो तुम उनको छोड़ दो उनके नशा में (फ़87) एक वक़्त तक।(54) (फ़88) क्या यह ख़्याल कर रहे हैं कि वह जो हम उनकी मदद कर रहे हैं माल और बेटों से।(55) (फ़89) यह जल्द जल्द उनको भलाईयां देते हैं (फ़90) बल्कि उन्हें ख़बर नहीं।(56) (फ़91) बेशक वह जो अपने रब के डर से सहमे हुए हैं।(57) (फ़92) और वह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं।(58) (फ़93) और वह जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते।(59) और वह जो देते हैं जो कुछ दें (फ़94) और उनके दिल डर रहे हैं यूं कि उनको अपने रब की तरफ़ फिरना है।(60) (फ़95) यह लोग भलाईयों में जल्दी करते हैं और यही सब से पहले उन्हें पहुंचे।(61) (फ़96)

(फ़73) बनी इसराईल पर अपने ज़ुल्म व सितम से जब हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम ने उन्हें ईमान की दावत दी (फ़74) यानी हज़रत मूसा व हज़रत हारून पर (फ़75) यानी बनी इसराईल हमारे ज़ेरे फ़रमान हैं तो यह कैसे गवारा हो कि उसी क़ौम के दो आदमियों पर ईमान लाकर उनके मुतीअ़ बन जायें। और ग़र्क़ कर डाले गए (फ़76) और ग़र्क़ कर डाले गए (फ़77) यानी तौरेत शरीफ़ फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम की हलाकत के बाद (फ़78) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम बनी इसराईल को (फ़79) यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा फ़रमा कर अपनी क़ुदरत की। (फ़80) **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾
حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْــَٔـرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْــَٔـرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾
مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْــَٔـلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

व ला नुकल्लिफु नफ़्सन् इल्ला वुस्–अ़हा व लदैना किताबुंय्यन्तिकु बिल्ह़क़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून(62)बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी ग़म्–रतिम् मिन् हाज़ा व लहुम् अअ़्मालुम् मिन् दूनि ज़ालि–क हुम् लहा आ़मिलून(63)ह़त्ता इज़ा अ–ख़ज़्ना मुत्–रफ़ीहिम् बिल्अ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्अरून(64)ला तज्अरुल् यौ–म इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून(65)क़द् कानत् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ़्क़ाबिकुम् तन्किसून (66)मुस्तक्बिरी–न बिही सामिरन् तह्जुरून(67)अ–फ़–लम् यद्दब्बरुल् क़ौ–ल अम् जा–अहुम् मा लम् यअ्ति आबा–अहुमुल् अव्वलीन(68)अम् लम् यअ़्रिफ़ू रसू–लहुम् फ़हुम् लहू मुन्किरून (69)अम् यक़ूलू–न बिही जिन्नतुन् बल् जा–अहुम् बिल्ह़क़्क़ि व अक्स़रुहुम् लिल्ह़क़्क़ि कारिहून(70) व लवित्त–ब–अ़ल्ह़क़्क़ु अह्वा–अहुम् ल–फ़–स–दतिस् समावातु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्–न बल् अतैनाहुम् बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अ़न् ज़िक्रिहिम् मुअ़्रिज़ून(71)अम् तस्–अलुहुम् ख़र्जन् फ़–ख़राजु रब्बि–क ख़ैरुंव् व हु–व ख़ैरुर् राज़िक़ीन(72)व इन्न–क ल–तद्अूहुम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(73)व इन्नल्लज़ी–न

और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उसकी ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है कि हक़ बोलती है (फ़ा97) और उनपर ज़ुल्म न होगा।(62) (फ़ा98) बल्कि उनके दिल उससे (फ़ा99) ग़फ़लत में हैं और उनके काम उन कामों से जुदा हैं (फ़ा100) जिन्हें वह कर रहे हैं।(63) यहां तक कि जब हमने उनके अमीरों को अ़ज़ाब में पकड़ा (फ़ा101) तो जभी वह फ़रियाद करने लगे।(64) (फ़ा102) आज फ़रियाद न करो हमारी तरफ़ से तुम्हारी मदद न होगी।(65) बेशक मेरी आयतें (फ़ा103) तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल उलटे पलटते थे।(66) (फ़ा104) ख़िदमते ह़रम पर बड़ाई मारते हो (फ़ा105) रात को वहां बेहूदा कहानियां बकते(67) (फ़ा106) हक़ को छोड़े हुए। (फ़ा107) क्या उन्होंने बात को सोचा नहीं (फ़ा108) या उनके पास वह आया जो उनके बाप दादा के पास न आया था।(68) (फ़ा109) या उन्होंने अपने रसूल को न पहचाना (फ़ा110) तो वह उसे बेगाना समझ रहे हैं।(69) (फ़ा111) या कहते हैं उसे सौदा है (फ़ा112) बल्कि वह तो उनके पास हक़ लाये (फ़ा113) और उनमें अक्सर को हक़ बुरा लगता है।(70) (फ़ा114) और अगर हक़ (फ़ा115) उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करता (फ़ा116) तो ज़रूर आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें हैं सब तबाह हो जाते (फ़ा117) बल्कि हम तो उनके पास वह चीज़ लाये (फ़ा118) जिसमें उनकी नामवरी थी तो वह अपनी इज़्ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं।(71) क्या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो (फ़ा119) तो तुम्हारे रब का अज्र सबसे भला और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला।(72) (फ़ा120) और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो।(73) (फ़ा121) और बेशक जो

(फ़ा97) इसमें हर शख़्स का अ़मल मकतूब है और वह लौहे महफ़ूज़ है (फ़ा98) न किसी की नेकी घटाई जाएगी न बदी बढ़ाई जाएगी उसके बाद कुफ़्फ़ार का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा99) यानी क़ुरआन शरीफ़ से (फ़ा100) जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए (फ़ा101) और वह रोज़ बरोज़ तहे तेग़ किये गए और एक क़ौल यह है कि उस अ़ज़ाब से मुराद फ़ाक़ों और भूक की वह मुसीबत है जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से उन पर मुसल्लत की गई थी और उस क़हत से उनकी हालत यहां तक पहुंच गई थी कि वह कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे (फ़ा102) अब उनका जवाब यह है कि (फ़ा103) यानी आयाते क़ुरआन मजीद (फ़ा104) और उन आयात को न मानते थे और उन पर ईमान न लाते थे **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ۝ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا

لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا

مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ بَلْ قَالُوْا

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ

لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا

ला युअ्मिनू–न बिल्–आख़ि–रति अ़निस्सिराति लना किबून(74)व लौ रहिम्नाहुम् व क–शफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल् ल–लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्–महून(75)व ल–क़द अ–ख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि फ़–मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य–त–ज़र्रअून(76)हत्ता इज़ा फ़–तह्ना अ़लैहिम् बबान् ज़ा अ़ज़ाबिन् शदीदिन् इज़ा हुम् फ़ीहि मुब्लिसून(77)व हुवल्लज़ी अन्श–अ लकुमुस्सम्–अ़ वल्अब्सा–र वल्–अफ़्इ–द–त क़लीलम् मा तश्कुरून(78)व हुवल्लज़ी ज़–र–अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्–शरून(79)व हुवल्लज़ी युह़्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्–लैलि वन्नहारि अ–फ़ला तअ्क़िलून(80)बल् क़ालू मिस्–ल मा क़ालल् अव्वलून(81)क़ालू अ–इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव् व अ़िज़ामन् अ–इन्ना ल–मब्अूसून(82)ल–क़द वुअ़िद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन(83)क़ुल् लि–मनिल् अरज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्लमून(84) स–यक़ूलू–न लिल्लाहि क़ुल् अ–फ़ला त–ज़क्करून(85)क़ुल् मर्रब्बुस् समावातिस् सब्इ़ व रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम(86)स–यक़ूलू–न लिल्लाहि क़ुल् अ–फ़ला

आख़िरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से (फ़122) कतराए हुए हैं।(74) और अगर हम उन पर रहम करें और जो मुसीबत (फ़123) उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भट पना ढिठाई करेंगे अपनी सरकशी में बहकते हुए।(75) (फ़124) और बेशक हमने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा (फ़125) तो न वह अपने रब के हुज़ूर में झुके और न गिड़गिड़ाते हैं।(76) (फ़126) यहां तक कि जब हमने उन पर खोला किसी सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा (फ़127) तो वह अब उसमें ना उम्मीद पड़े हैं।(77) (रुकूअ़ 4) और वही है जिसने बनाए तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल (फ़128) तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो।(78) (फ़129) और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठना है।(79) (फ़130) और वही जिलाये और मारे और उसी के लिए हैं रात और दिन ो तबदीलें (फ़131) तो क्या तुम्हें समझ नहीं।(80) (फ़132) बल्कि उन्होंने वही कही जो अगले (फ़133) कहते थे।(81) बोले क्या जब हम मर जायें और मिट्टी और हड्डियां होजायें क्या फिर निकाले जायेंगे।(82) बेशक यह वादा हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादा को दिया गया यह तो नहीं मगर वही अगली दास्तानें।(83) (फ़134) तुम फ़रमाओ किसका माल है ज़मीन और जो कुछ उसमें है अगर तुम जानते हो।(84) (फ़135) अब कहेंगे कि अल्लाह का (फ़136) तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं सोचते।(85) (फ़137) तुम फ़रमाओ कौन है मालिक सातों आसमानों का और मालिक बड़े अ़र्श का।(86) अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर

(फ़ा122) यानी दीने हक़ से (फ़ा123) हफ़्त साला क़हत साली की (फ़ा124) यानी अपने कुफ़्र व इनाद और सरकशी की तरफ़ लौट जायेंगे और यह तमल्लुक़ व चापलोसी जाती रहेगी और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मोमिनीन की अ़दावत और तकब्बुर जो उनका पहला तरीक़ा था वही इख़्तियार करेंगे शाने नुज़ूलः जब क़ुरैश सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से सात बरस के क़हत में मुब्तला हुए और उनकी हालत बहुत अबतर हो गई तो अबू सुफ़ियान उनकी तरफ़ से नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि क्या आप अपने ख़्याल में रहमतुल लिलआ़लमीन बना कर नहीं भेजे गए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक अबू सुफ़ियान ने कहा कि बड़ों को तो आपने बद्र में तहे तेग़ कर दिया औलाद जो रही वह आपकी बद दुआ़ से इस हालत को पहुंची कि मुसीबते क़हत में मुब्तला हुई फ़ाक़ों से तंग आगई लोग भूख की बेताबी से हड्डियां चाब गए मुर्दार तक खा गए मैं आपको अल्लाह की (बक़िया सफ़हा 583 पर)

تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ ۢبِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍ ۢبِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّیْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ

*तत्तकून(87)कुल् मम् बि–यदिही म–लकूतु कुल्लि शैइंव् व हु–व युजीरु व ला युजारु अ़लैहि इन्
कुन्तुम् तअ्लमून(88)स–यकूलू–न लिल्लाहि कुल् फ़–अन्ना तुस्–ह़रून(89)बल् अतैनाहुम् बिल्ह़क़्क़ि
व इन्नहुम् ल–काज़िबून(90)मत्त–ख़–ज़ल्लाहु मिंव् व–लदिंव् व मा का–न म–अ़हू मिन् इलाहिन्
इज़ल् ल–ज़–ह–ब कुल्लु इलाहिम् बिमा ख़–ल–क़ व ल–अ़ला बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िन् सुब्ह़ानल्लाहि
अ़म्मा यसिफ़ून(91)आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहा–दति फ़–तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून(92) क़ुर्रब्बि इम्मा
तुरियन्नी मा यू–अ़दून(93)रब्बि फ़ला तज्–अ़ल्नी फ़िल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन(94)व इन्ना
अ़ला अन् नुरि–य–क मा नअि़दुहुम् लक़ादिरून(95)इद्–फ़अ् बिल्लती हि–य अह़्सनुस्–सय्यि–अ–त
नह़्नु अअ्लमु बिमा यसिफ़ून(96)व क़ुर्रब्बि अऊ़ज़ुबि–क मिन् ह–मज़ातिश् शयातीन(97)व अऊ़ज़ुबि–क
रब्बि अंय्यह़्ज़ुरून(99)ह़त्ता इज़ा जा–अ अ–ह़–दहुमुल् मौतु क़ा–ल रब्बिर्जिऊन(99)ल–अ़ल्ली
अअ्–मलु सालिह़न् फ़ीमा त–रक्तु कल्ला इन्नहा कलि–मतुन् हुव क़ाइलुहा व मिंव्
वराइहिम् बर्ज़खुन् इला यौमि युब्अ़सून(100)फ़–इज़ा नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि*

क्यों नहीं डरते।(87) (फ़ा138) तुम फ़रमाओ किसके हाथ है हर चीज़ का क़ाबू (फ़ा139) और वह पनाह देता है और उसके ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें इल्म हो।(88) (फ़ा140) अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है, तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के फ़रेब में पड़े हो।(89) (फ़ा141) बल्कि हम उनके पास ह़क़ लाए (फ़ा142) और वह बेशक झूठे हैं।(90) (फ़ा143) अल्लाह ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया (फ़ा144) और न उसके साथ कोई दूसरा ख़ुदा (फ़ा145) यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ ले जाता (फ़ा146) और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअ़ल्ली चाहता (फ़ा147) पाकी है अल्लाह को उन बातों से जो यह बनाते हैं।(91) (फ़ा148) जानने वाला हर निहां व अयां का तो उसे बुलन्दी है उनके शिर्क से।(92) (रुकूअ़ 5) तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाये(93) (फ़ा149) जो उन्हें वादा दिया जाता है। तो ऐ मेरे रब मुझे उन ज़ालिमों के साथ न करना।(94) (फ़ा150) और बेशक हम क़ादिर हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वादा दे रहे हैं।(95) (फ़ा151) सबसे अच्छी भलाई से बुराई को दफ़अ़ करो (फ़ा152) हम ख़ूब जानते हैं जो बातें यह बनाते हैं।(96) (फ़ा153) और तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयातीन के वसवसों से।(97) (फ़ा154) और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वह मेरे पास आयें।(98) यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए (फ़ा155) तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये।(99) (फ़ा156) शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊँ उसमें जो छोड़ आया हूं (फ़ा157) हिश्त यह तो एक बात है जो वह अपने मुंह से कहता है (फ़ा158) और उनके आगे एक आड़ है (फ़ा159) उस दिन तक जिसमें उठाये जायेंगे।(100) तो जब सूर फूंका जाएगा (फ़ा160)

(फ़ा138) उसके ग़ैर को पूजने और शिर्क करने से और उसके मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर होने का इन्कार करने से (फ़ा139) और हर चीज़ पर हक़ीक़ी क़ुदरत व इख़्तियार किसका है (फ़ा140) तो जवाब दो (फ़ा141) यानी किस शैतानी धोखे में हो कि तौहीद व ताअ़ते इलाही को छोड़ कर हक़ को बातिल समझ रहे हो जब तुम इक़रार करते हो कि क़ुदरते हक़ीक़ी उसी की है और उसके ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता तो दूसरे की इबादत क़तअ़न बातिल है। (फ़ा142) कि अल्लाह के न औलाद हो सकती है न उसका शरीक यह दोनों बातें मुहाल हैं। (फ़ा143) जो उसके लिए शरीक और औलाद ठहराते हैं **(बक़िया सफ़हा 583 पर)**

فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ
عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ۝ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ۝ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ
بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ۝ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ۝ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا
لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ۝ وَمَنْ
يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

फ़ला अन्सा–ब बै–नहुम् यौ–मइज़िंव् व ला य–तसा–अलून(101)फ़–मन् स़कुलत् मवाज़ीनुहू फ़उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहून(102)व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़उलाइ–कल् लज़ी–न ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् फ़ी जहन्न–म ख़ालिदून(103)तल्फ़हु वुजू–हहुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून(104)अ–लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून(105)क़ालू रब्बना ग़–ल–बत् अ़लैना शिक़्–वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ाल्लीन(106)रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़इन् अ़ुदना फ़– इन्ना ज़ालिमून(107)क़ालख़्–सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून(108)इन्नहू का–न फ़रीक़ुम् मिन् अ़िबादी यक़ूलू–न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्–लना वर्हम्ना व अन्–त ख़ैरुर्–राहिमीन(109) फ़त्त–ख़ज़्तुमूहुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्–हकून(110) इन्नी जज़ैतुहुमुल् यौ–म बिमा स–बरू अन्नहुम् हुमुल् फ़ाइज़ून(111)क़ा–ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ़–द–दसिनीन(112) क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ़्–ज़ यौमिन् फ़स्अलिल् आ़द्दीन(113)क़ा–ल इंल्–लबिस्तुम् इल्ला क़लीलल् लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ़्–लमून(114)अ–फ़–हसिब्तुम् अन्नमा ख़–लक़्नाकुम् अ़–ब–संव् व अन्नकुम् इलैना ला तुर्–जअून(115)फ़–तआ़लल्लाहुल् मलिकुल् हक़्क़ु ला इला–ह इल्ला हु–व रब्बुल् अ़र्शिल् करीम(116)व मंय्यद्अु म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र ला बुर्हा–न लहू बिही फ़इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्–द रब्बिही इन्नहू ला युफ़्लिहुल् काफ़िरून(117)व क़ुर्–रब्बिग़्फ़िर् वर्हम् व अन्–त ख़ैरुर्–राहिमीन(118)

तो न उनमें रिश्ते रहेंगे (फ़ा161) और न एक दूसरे की बात पूछे।(101) (फ़ा162) तो जिन की तौलें (फ़ा163) भारी होलीं वही मुराद को पहुंचे।(102) और जिनकी तौलें हलकी पड़ीं (फ़ा164) वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।(103) उनके मुंह पर आग लपट मारेगी और वह उसमें मुंह चिड़ाए होंगे।(104) (फ़ा165) क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं (फ़ा166) तो तुम उन्हें झुठलाते थे।(105) कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे।(106) ऐ रब हमारे हमको दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं।(107) (फ़ा167) रब फ़रमाएगा दुतकारे पड़े रहो इसमें और मुझ से बात न करो।(108) (फ़ा168) बेशक मेरे बन्दों का एक गरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाये तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है।(109) तो तुमने उन्हें ठट्ठा बना लिया (फ़ा169) यहां तक कि उन्हें बनाने के शुग़्ल में (फ़ा170) मेरी याद भूल गए और तुम उनसे हंसा करते।(110) बेशक आज मैं ने उनके सब्र का उन्हें यह बदला दिया कि वही कामयाब हैं।(111) फ़रमाया (फ़ा171) तुम ज़मीन में कितना ठहरे (फ़ा172)बरसों की गिनती से।(112) बोले हम एक दिन रहे या दिन का हिस्सा (फ़ा173) तू गिनने वालों से दरियाफ़्त फ़रमा।(113) (फ़ा174) फ़रमाया तुम न ठहरे मगर थोड़ा (फ़ा175) अगर तुम्हें इल्म होता।(114) तो क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें **(बक़िया सफ़हा 584 पर)**

سُورَةُ النُّورِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ
فِي دِينِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَا
إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ
شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ
شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ ۙ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَدْرَأُ عَنْهَا

सूरह नूर

(मदनी है इस सूरह में 64 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

***सू–रतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़–रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् बय्यिनातिल् ल–अ़ल्लकुम् त–
ज़क्करून(1)अज़्ज़ानि–यतु वज़्ज़ानी फज्लिदू कुल्–ल वाह़िदिम् मिन्हुमा मि–अ–त जल्दतिंव् व
ला तअ्खुज़्–कुम् बिहिमा रअ्–फतुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू–न बिल्लाहि वल्
यौमिल् आख़िरि वल्–यश्–हद् अ़ज़ा–बहुमा ताइ–फतुम् मिनल् मुअ्मिनीन(2)अज़्ज़ानी ला यन्किहु
इल्ला ज़ानि–य–तन् औ मुश्रि–क–तंव् वज़्ज़ानि–यतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् व हुर्रि–
म ज़ालि–क अ़–लल् मुअ्मिनीन(3)वल्लज़ी–न यरमूनल् मुह़्–सनाति सुम्–म लम् यअ्तू बि–अर्
–ब–अ़ति शु–हदा–अ फ़ज्लिदूहुम् समानी–न जल्दतंव् व ला तक़्बलू लहुम् शहा–द–तन् अ–ब
–दन् व उलाइ–क हुमुल् फ़ासिकून(4)इल्लल्लज़ी–न ताबू मिम् बअ्दि ज़ालि–क व अस्लहू फ़इन्नल्ला
–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(5)वल्लज़ी–न यरमू–न अज़्वा–जहुम् व लम् यकुल्लहुम् शु–हदाउ इल्ला
अन्फ़ुसुहुम् फ़–शहा–दतु अ–ह़दिहिम् अर्बअु शहादातिम् बिल्लाहि इन्नहू लमिनस् सादिक़ीन(6)
वल्ख़ामि–सतु अन्–न लअ्–नतल्लाहि अ़लैहि इन् का–न मिनल् काज़िबीन(7)व यदरऊ अ़न्हल्***

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
यह एक सूरत है कि हमने उतारी और हमने उसके अहकाम फ़र्ज़ किये (फ़ा2) और हमने उसमें रौशन आयतें नाज़िल फ़रमाईं कि तुम ध्यान करो।(1) जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उनमें हर एक को सौ कोड़े लगाओ (फ़ा3) और तुम्हें उन पर तरस न आये अल्लाह के दीन में (फ़ा4) अगर तुम ईमान लाते हो अल्लाह और पिछले दिन पर और चाहिये कि उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गरोह हाज़िर हो।(2) (फ़ा5) बदकार मर्द निकाह न करे मगर बदकार औरत या शिर्क वाली से और बदकार औरत से निकाह न करे मगर बदकार मर्द या मुशरिक (फ़ा6) और यह काम (फ़ा7) ईमान वालों पर हराम है।(3) (फ़ा8) और जो पारसा औरतों को ऐब लगायें फिर चार गवाह मोआ़इना के न लायें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो (फ़ा9) और वही फ़ासिक़ हैं।(4) मगर जो उसके बाद तौबा कर लें और संवर जायें (फ़ा10) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(5) और वह जो अपनी औरतों को ऐब लगायें (फ़ा11) और उनके पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की गवाही यह है कि चार बार गवाही दे अल्लाह के नाम से कि वह सच्चा है।(6) (फ़ा12) और पांचवीं यह कि अल्लाह की लानत हो उस पर अगर झूठा हो।(7) और औरत से यूं

(फ़ा1) सूरए नूर मदनी है इसमें नौ रुकूअ़ चौसठ आयतें हैं (फ़ा2) और उन पर अमल करना बन्दों पर लाज़िम किया (फ़ा3) यह ख़िताब हुक्काम को है कि जिस मर्द या औरत से ज़िना सरज़द हो उसकी हद यह है कि **(बक़िया सफ़हा 584 पर)**

الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝٨ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝٩ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝١٠ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ
وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝١١ لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا إِفْكٌ مُبِينٌ ۝١٢ لَوْلَا جَاءُوا
عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝١٣ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا
أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝١٤ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۝١٥ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ

अ़जा–ब अन् तश्–ह–द अर्ब–अ़ शहादातिम् बिल्लाहि इन्नहू लमिनल् काज़िबीन(8)वल्ख़ामि–स–त अन्–न ग़–ज़–बल्लाहि अ़लैहा इन् का–न मिनस्–स़ादिक़ीन(9)व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू व अन्नल्ला–ह तव्वाबुन् ह़कीम(10)इन्नल्लज़ी–न जाऊ बिल् इफ़्कि अ़ुस्बतुम् मिन्कुम् ला तह़्सबूहु शर्रल् लकुम् बल् हु–व ख़ैरुल् लकुम् लिकुल्लिम्रिइम् मिन्हुम् मक्–त–स–ब मिनल् इस्मि वल्लज़ी त–वल्ला किब्रहू मिन्हुम् लहू अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(11)लौला इज़् समिअ़्तुमूहु ज़न्नल् मुअ़्मिनू–न वल्मुअ़्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरंव् व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम् मुबीन(12)लौला जाऊ अ़लैहि बि–अर्–ब–अ़ति शु–हदा–अ फ़इज़् लम् यअ़्तू बिश्शु–हदाइ फ़उलाइ–क अ़िन्दल्लाहि हुमुल् काज़िबून(13)व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू फ़िद्दुन्या वल्आख़ि–रति ल–मस्सकुम् फ़ी मा अ–फ़ज़्तुम् फ़ीहि अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(14)इज़् त–लक़्क़ौ–नहू बिअल्सि–नतिकुम् व तक़ूलू–न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै–स लकुम् बिही अ़िल्मुंव् व तह़्सबू–नहू हय्यिनंव् व हु–व अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीम(15)व लौला इज़् समि–अ़्तुमूहु

सज़ा टल जाएगी कि वह अल्लाह का नाम लेकर चार बार गवाही दे कि मर्द झूठा है।(8) (फ़ा13)और पांचवीं यूं कि औरत पर ग़ज़ब अल्लाह का अगर मर्द सच्चा हो।(9) (फ़ा14) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाता हिकमत वाला है (10) (रुकूअ़ 7)तो तुम्हारा पर्दा खोल देता। बेशक वह कि यह बड़ा बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअ़त है (फ़ा15) उसे अपने लिए बुरा न समझो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है (फ़ा16) उनमें हर शख़्स के लिए वह गुनाह है जो उसने कमाया (फ़ा17) और उनमें वह जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया (फ़ा18) उसके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(11) (फ़ा19)क्यों न हुआ जब तुमने उसे सुना था कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता (फ़ा20) और कहते यह खुला बोहतान है।(12) (फ़ा21) उस पर चार गवाह क्यों न लाए तो जब गवाह न लाए तो वही अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं।(13) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर दुनिया और आख़िरत में न होती (फ़ा22) तो जिस चर्चे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता।(14) जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुनकर लाते थे और अपने मुंह से वह निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म नहीं और उसे सहल समझते थे (फ़ा23) और वह अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात है।(15) (फ़ा24) और क्यों न हुआ जब तुमने

(फ़ा13) उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में (फ़ा14) इसको लेआ़न कहते हैं मसलाः जब मर्द अपनी बीबी पर ज़िना की तोहमत लगाये तो अगर मर्द व औरत दोनों शहादत के अहल हों और औरत उस पर मुतालबा करे तो मर्द पर लेआ़न वाजिब हो जाता है अगर वह लेआ़न से इन्कार करे तो उसको उस वक़्त तक क़ैद रखा जाएगा जब तक वह लेआ़न करे या अपने झूठ का मुक़िर हो अगर झूठ का इक़रार करे तो उसको हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी जिसका बयान ऊपर गुज़र चुका है और अगर लेआ़न करना चाहे तो उसको चार मर्तबा अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि वह इस औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है और पाँचवीं मर्तबा कहना होगा कि अल्लाह की लअ़्नत मुझ पर अगर मैं यह इल्ज़ाम लगाने में झूठा हूं इतना करने के बाद मर्द परसे हद्दे क़ज़फ़ साक़ित हो जाएगी और औरत पर लेआ़न वाजिब होगा इन्कार करेगी तो क़ैद की जाएगी यहां तक कि लेआ़न मन्जूर करे या शौहर के इल्ज़ाम लगाने की तस्दीक़ करे अगर तस्दीक़ की तो औरत **(बक़िया सफ़हा 585 पर)**

قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۱﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ
يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

कुल्तुम् मा यकूनु लना अन् न–त–कल्ल–म बिहाज़ा सुब्हा–न–क हाज़ा बुह्तानुन् अज़ीम(16) यअिज़ुकुमुल्लाहु अन् तअूदू लिमिस्लिही अ–ब–दन् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन(17)व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल् आयाति वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(18)इन्नल्लज़ी–न युहिब्बू–न अन् तशीअ़ल् फ़ाहि–शतु फ़िल्लज़ी–न आ–मनू लहुम् अज़ाबुन् अलीमुन् फ़िद्दुन्या वल् आख़ि–रति वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्–लमून(19)व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला–ह रऊफ़ुर् रहीम(20)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश् शैतानि व मंय्यत्तबिअ् ख़ुतुवातिश्–शैतानि फ़इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह्शाइ वल्मुन्करि व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ–ह़दिन् अ–ब–दंव् व ला–किन्नल्ला–ह युज़क्की मंय्यशाउ वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(21)व ला यअ्तलि उलुल् फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स–अ़ति अंय्यूअ्तू उलिल्क़ुर्बा वल्म–साकी–न वल्मुहाजिरी–न फ़ी सबी–लिल्लाहि वल्–यअ्फ़ू वल्–यस्फ़हू. अला तुहिब्बू–न अंय्यग़्फ़ि–रल्लाहु लकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(22)इन्नल्लज़ी–न यर्मूनल्

सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात कहें (फ़ा25) इलाही पाकी है तुझे (फ़ा26) यह बड़ा बोहतान है।(16) अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो।(17) और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(18) वह लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है दुनिया (फ़ा27) और आख़िरत में (फ़ा28) और अल्लाह जानता है (फ़ा29) और तुम नहीं जानते।(19) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तुम पर निहायत मेहरबान मेहर वाला है तो तुम उसका मज़ा चखते।(20)(फ़ा30)(रुकूअ़ 8) ऐ ईमान वालों शैतान के क़दमों पर न चलो और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा (फ़ा31) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता (फ़ा32)हां अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे (फ़ा33)और अल्लाह सुनता जानता है।(21) और क़सम न खायें वह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले (फ़ा34)और गुन्जाइश वाले हैं(फ़ा35) क़राबत वालों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि माफ़ करें और दरगुज़रें क्या तुम उसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी बख़्शिश करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(22) (फ़ा36) बेशक वह जो ऐब

(फ़ा25) यह हमारे लिए रवा नहीं क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता (फ़ा26) इससे कि तेरे नबी की हरम को फ़ुजूर की आलूदगी पहुंचे मसला यह मुमकिन ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके अगरचे उसका मुब्तलाए कुफ़्र होना मुमकिन है क्योंकि अम्बिया कुफ़्फ़ार की तरफ़ मबऊस होते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ कुफ़्फ़ार के नज़दीक भी क़ाबिले नफ़रत हो उससे वह पाक हों और ज़ाहिर है कि औरत की बदकारी उनके नज़दीक क़ाबिले नफ़रत है (कबीर वग़ैरह) (फ़ा27) यानी इस जहान में और वह हद क़ाइम करना है चुनान्चे इब्ने उबय और हस्सान और मिस्तह के हद लगाई गई (मदारिक) (फ़ा28) दोज़ख़ अगर बे तौबा मर जायें (फ़ा29) दिलों के राज़ और बातिन के अहवाल (फ़ा30) और अ़ज़ाबे इलाही तुम्हें मोहलत न देता (फ़ा31) उसके वसवसों में न पड़ो और बोहतान उठाने वालों की बातों पर कान न लगाओ (फ़ा32) और अल्लाह तआ़ला उसको तौबा व हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ न देता और अ़फ़्व व मग़फ़िरत न फ़रमाता (फ़ा33) तौबा क़बूल फ़रमा कर **(बक़िया सफ़हा 586 पर)**

الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ يَوْمَىِٕذٍ
يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ۝ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ
اُولٰٓىِٕكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا

मुह्-स़नातिल् ग़ाफ़िलातिल् मुअ्मिनाति लुअ़िनू फ़िद्दुन्या वल् आख़ि-रति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(23)यौ-म तश्हदु अ़लैहिम् अल्सि-नतुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअ़्-मलून(24)यौ-मइज़िंय्युवफ़्-फ़ीहिमुल्लाहु दी-नहुमुल् ह़क़्-क़ व यअ़्-लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल् ह़क़्क़ुल् मुबीन(25)अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी-न वल्ख़बीसू-न लिल्ख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्त-य्यिबी-न वत्तय्यिबू-न लित्तय्यिबाति उलाइ-क मुबर्रऊ-न मिम्मा यक़ूलू-न लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव् व रिज़्क़ुन् करीम(26)या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र बुयूतिकुम् ह़त्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (27)फ़इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ-ह़-दन् फ़ला तद्ख़ुलूहा ह़त्ता युअ्ज-न लकुम् व इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअ़ूर्जिअ़ू हु-व अज़्का लकुम् वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न अ़लीम(28)लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कू-नतिन् फ़ीहा मताअ़ुल् लकुम् वल्लाहु यअ़्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून(29)क़ुल् लिल्मुअ्मिनी-न यग़ुज़्ज़ू

लगाते हैं अनजान (फ़ा37) पारसा ईमान वालियों को (फ़ा38) उन पर लानत है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(23) (फ़ा39) जिस दिन (फ़ा40) उन पर गवाही देंगी उनकी ज़बानें (फ़ा41) और उनके हाथ और उनके पाँव जो कुछ करते थे।(24) उस दिन अल्लाह उन्हें उनकी सच्ची सज़ा पूरी देगा (फ़ा42) और जान लेंगे कि अल्लाह ही सरीह़ हक़ है।(25) (फ़ा43) गन्दियाँ गन्दों के लिए और गन्दे गन्दियों के लिए (फ़ा44) और सुथरियां सुथरों के लिए और सुथरे सुथरियों के लिए वह (फ़ा45) पाक हैं उन बातों से जो यह (फ़ा46) कह रहे हैं उनके लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है।(26) (फ़ा47) (रुकूअ़ 9) ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ जब तक इजाज़त न ले लो (फ़ा48) और उनके साकिनों पर सलाम न कर लो (फ़ा49) यह तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम ध्यान करो।(27) फिर अगर उनमें किसी को न पाओ (फ़ा50) जब भी बे मालिकों की इजाज़त के उनमें न जाओ (फ़ा51) और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो (फ़ा52) यह तुम्हारे लिए बहुत सुथरा है अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।(28) उसमें तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं (फ़ा53) और उनके बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।(29) मुसलमान मर्दों को हुक्म दो

(फ़ा37) औरतों को जो बदकारी और फ़ुजूर को जानती भी नहीं और बुरा ख़्याल उनके दिल में भी नहीं गुज़रता। (फ़ा38) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अज़्वाजे मुतह्हरात के औसाफ़ हैं। एक क़ौल यह है कि इससे तमाम ईमानदार पारसा औरतें मुराद हैं उनके ऐब लगाने वालों पर अल्लाह तआ़ला लानत फ़रमाता है। (फ़ा39) यह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन उबय सलूल मुनाफ़िक़ के हक़ में है (ख़ाज़िन) (फ़ा40) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा41) ज़बानों का गवाही देना तो उनके मुंहों पर मुहरें लगाये जाने से क़बल होगा और उसके बाद मुंहों पर मुहरें लगा दी जायेंगी जिससे ज़बानें बन्द हो जायेंगी और आज़ा बोलने लगेंगे और दुनिया में जो अमल किये थे उनकी ख़बर देंगे जैसे कि आगे इरशाद है (फ़ा42) जिसके वह मुस्तहिक़ हैं (फ़ा43) यानी मौजूद ज़ाहिर है उसी की क़ुदरत से हर चीज़ का वुजूद है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि माना यह हैं कि कुफ़्फ़ार दुनिया में अल्लाह तआ़ला के वादों में शक करते थे अल्लाह तआ़ला आख़िरत में उन्हें उनके आमाल की जज़ा देकर उन वादों का हक़ होना ज़ाहिर फ़रमा देगा फ़ाइदा क़ुरआने करीम में **(बक़िया सफ़हा 587 पर)**

مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ لْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ وَ لَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَ اَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَ لْيَسْتَعْفِفِ

मिन् अब्सारिहिम् व यह्फ़ज़ू फ़ुरू–जहुम् ज़ालि–क अज़्का लहुम् इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा यस्–नअून(30)व क़ुल् लिल्मुअ्मिनाति यग्ज़ुज़्–न मिन् अब्सारि हिन्–न व यह्–फ़ज़्–न फ़ुरू–जहुन्–न व ला युब्दी–न ज़ी–न–तहुन्–न इल्ला मा ज़–ह–र मिन्हा वल् यज़्रिब्–न बिख़ुमुरि हिन्–न अ़ला जुयूबिहिन्–न व ला युब्दी–न ज़ी–न–तहुन्–न इल्ला लिबुअू–लतिहिन्–न औ आबाइहिन्–न औ आबाइ बुअू–लतिहिन्–न औ अब्नाइहिन्–न औ अब्नाइ बुअू–लतिहिन्–न औ इख़्वानिहिन्–न औ बनी इख़्वा–निहिन्–न औ बनी अ–ख़वातिहिन्–न औ निसाइहिन्–न औ मा म–ल–कत् ऐमानुहुन्–न अवित्ताबिअ़ी–न ग़ैरि उलिल्इर्–बति मिनर्रिजालि अवित्–तिफ़्लिल् लज़ी–न लम् यज़्हरू अ़ला औरातिन्निसाइ व ला यज़्रिब्–न बि–अर्जुलिहिन्–न लियुअ्ल–म मा युख़्फ़ी–न मिन् ज़ी–नतिहिन्–न व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल् मुअ्मिनू–न ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (31)व अन्किहुल् अयामा मिन्कुम् वस्सालिही–न मिन् अ़िबादिकुम् व इमाइकुम् इंय्यकूनू फ़ु–क़रा –अ युग्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम(32)वल्–यस्तअ़्फ़िफ़िल्

अपनी निगाहें कुछ नीची रखें (फ़ा54) और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें (फ़ा55) यह उनके लिए बहुत सुथरा है बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है।(30) और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें (फ़ा56) और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखायें (फ़ा57) मगर जितना ख़ुद ही ज़ाहिर है और दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप (फ़ा58) या शौहरों के बाप (फ़ा59) या अपने बेटे (फ़ा60) या शौहरों के बेटे (फ़ा61) या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भांजे (फ़ा62) या अपने दीन की औरतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों (फ़ा63) या नौकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों (फ़ा64) या वह बच्चे जिन्हें औरतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं (फ़ा65) और ज़मीन पर पाँव ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उनका छुपा हुआ सिंगार (फ़ा66) और अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानों सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ।(31) और निकाह कर दो अपनों में उनका जो बे निकाह हों (फ़ा67) और अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का अगर वह फ़क़ीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल के सबब (फ़ा68) और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।(32) और चाहिये कि बचे रहें(फ़ा69)

(फ़ा54) और जिस चीज़ का देखना जाइज़ नहीं उस पर नज़र न डालें मसाइल मर्द का बदन ज़ेरे नाफ़ से घुटने के नीचे तक औरत है उसका देखना जाइज़ नहीं और औरतों में से अपने महारिम और ग़ैर की बांदी का भी यही हुक्म है मगर इतना और है कि उनके पेट और पीठ का देखना भी जाइज़ नहीं और हुर्रा अजनबिया के तमाम बदन का देखना ममनूअ़् है *इल्लम् या मम्–मिनश्शह्वति व इन् अमि–न मिन्हा फ़ल्मम्नूअुन् न–ज़रु इला मा सिवल् वज्हि वल्कफ़्फ़ि वल्–क़–दमि व मंय्या–मनु फ़इन्–नज़्ज़मान ज़मानुल् फ़सादि फ़ला य–हिल्लुन्–न–ज़रु इलल्–हुर्रतिल् अज्नबिय्यति मुत्लक़म्–मिन् ग़ैरि .ज़ुरू–रतिन्* मगर बहालते ज़रूरत क़ाज़ी व गवाह को और उस औरत से निकाह की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जाइज़ है और अगर किसी औरत के ज़रीआ़ से हाल मालूम कर सकता हो तो न देखे और तबीब को मौज़ए मर्ज़ का बक़द्रे ज़रूरत देखना जाइज़ है मसला अमरद लड़के की तरफ़ भी शहवत से देखना हराम है (मदारिक व अहमदी) (फ़ा55) और ज़िना व हराम से बचें या यह माना हैं कि अपनी शर्मगाहों और उनके लवाहिक़ यानी तमाम बदने औरत को छुपायें और पर्दा (बक़िया सफ़हा 587 पर)

الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم
مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾ اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ
نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾ فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ

लज़ी–न ला यजिदू–न निकाहन् हत्ता युग्नि–यहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही वल्लज़ी–न यब्तग़ू.नल् किता–ब मिम्मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् फ़कातिबूहुम् इन् अ़लिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव् व आतूहुम् मिम् मालिल्लाहिल् लज़ी आताकुम् व ला तुक्रिहू फ़–तयातिकुम् अ़–लल्बिग़ाइ इन् अ–रद्–न त– ह़स्सुनल् लि–तब्तग़ू अ़–र–ज़ल् ह़यातिद्दुन्या व मंय्युक्रिह्–हुन्–न फ़इन्नल्ला–ह मिम् बअ्दि इक्रा– हिहिन्–न ग़फ़ूरुर् रह़ीम(33)व ल–क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम् मुबय्यिनातिंव् व म–स़–लम् मिनल्लज़ी–न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् व मौअ़ि–ज़–तल् लिल्मुत्तक़ीन(34)अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि म–सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन् अल्मिस्बाहु फ़ी ज़ुजा–जतिन् अज़्ज़ुजा–जतु कअन्नहा कौ–कबुन् दुर्रिय्युंय्यू–क़दु मिन् श–ज–रतिम् मुबा–र–कतिन् ज़ैतू–नतिल् ला शर्क़िय्यतिंव् व ला ग़र्बिय्यतिंय्–यकादु ज़ैतुहा युज़ीउ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन् नूरुन् अ़ला नूरिन् यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशाउ व यज़्रिबुल्लाहुल् अम्स़ा–ल लिन्नासि वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(35)फ़ी बुयूतिन् अज़ि–नल्लाहु अन् तुर्फ़–अ़ व युज़्क–र

वह जो निकाह का मक़्दूर नहीं रखते (फ़ा70) यहां तक कि अल्लाह उन्हें मक़्दूर वाला करदे अपने फ़ज़्ल से (फ़ा71) और तुम्हारे हाथ की मिल्क बांदी ग़ुलामों में से जो यह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो (फ़ा72) अगर उनमें कुछ भलाई जानो (फ़ा73) और उस पर उनकी मदद करो अल्लाह के माल से जो तुमको दिया (फ़ा74) और मजबूर न करो अपनी कनीज़ों को बदकारी पर जबकि वह बचना चाहें ताकि तुम दुनियवी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो (फ़ा75) और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक अल्लाह बाद उसके कि वह मजबूरी ही की हालत पर रहें बख़्शने वाला मेहरबान है।(33) (फ़ा76) और बेशक हम ने उतारीं तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें (फ़ा77) और कुछ उन लोगों का बयान जो तुम से पहले हो गुज़रे और डर वालों के लिए नसीहत।(34) (रुकूअ़ 10) अल्लाह नूर है (फ़ा78) आसमानों और ज़मीन का उसके नूर की (फ़ा79) मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उसमें चराग़ है वह चराग़ एक फ़ानूस में है वह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से (फ़ा80) जो न पूरब का न पच्छिम का (फ़ा81) क़रीब है कि उसका तेल (फ़ा82) भड़क उठे अगरचे उसे आग न छूए नूर पर नूर है (फ़ा83) अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिए और अल्लाह सब कुछ जानता है।(35) उन घरों में जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है (फ़ा84) और उनमें उसका नाम

(फ़ा70) जिन्हें महर व नफ़्क़ा मुयस्सर नहीं (फ़ा71) और वह महर व नफ़्क़ा अदा करने के क़ाबिल हो जायें हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो निकाह की क़ुदरत रखे वह निकाह करे कि निकाह पारसाई व पाकबाज़ी का मुईन है और जिसे निकाह की क़ुदरत न हो वह रोज़े रखे कि यह शह्वतों के तोड़ने वाले हैं (फ़ा72) कि वह इस क़दर माल अदा करके आज़ाद हो जायें और इस तरह की आज़ादी को किताबत कहते हैं और आयत में इसका अमर इस्तेहबाब के लिए है और यह इस्तेहबाब इस शर्त के साथ मशरूत है जो उसके बाद ही आयत में मज़्कूर है शाने नुज़ूल हुवैतिब बिन अब्दुल ग़रा के ग़ुलाम सबीह ने अपने मौला से किताबत की दरख़्वास्त की मौला ने इन्कार किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई तो हुवैतिब ने उसको सौ दीनार पर मुकातब कर दिया और उनमें से बीस उसको बख़्श दिये **(बक़िया सफ़हा 588 पर)**

فِيهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿٣٦﴾ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ
فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ
كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ
يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ
مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

फ़ीहस्मुहू युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्गुदुव्वि वल्आसा–ल(36)रिजालुल् ला तुल्हीहिम् तिजा–रतुंव् व ला बैअुन् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफू–न यौमन् त–त–क़ल्लबु फ़ीहिल् कुलूबु वल्अब्सार(37)लि–यज्ज़ि–यहुमुल्लाहु अह्–स–न मा अ़मिलू व यज़ी–दहुम् मिन् फ़ज़्लिही वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब(38)वल्लज़ी–न क–फ़रू अअ़्मालुहुम् क–सराबिम् बिक़ी–अतिंय्यह्सबुहुज़् ज़म्आनु माअन् हत्ता इज़ा जा–अहू लम् यजिद्हु शैअंव्–व व–जदल्ला–ह अ़िन्दहू फ़–वफ़्फ़ाहु हिसा–बहू वल्लाहु सरीअुल्–हिसाब(39)औ कज़ुलुमातिन् फ़ी बह्रिल् लुज्जिय्यिंय्यग़्शाहु मौजुम् मिन् फ़ौक़िही मौजुम् मिन् फ़ौक़िही सहाबुन् ज़ुलुमातुम् बअ़्ज़ुहा फ़ौ–क़ बअ़्ज़िन् इज़ा अख़्–र–ज य–दहू लम् य–कद यराहा व मल्लम् यज्–अ़लिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्नूर(40)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन् कुल्लुन् क़द् अ़लि–म सला–तहू व तस्बी–हहू वल्लाहु अ़लीमुम् बिमा यफ़्अ़लून(41)व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति

लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह करते हैं उनमें सुबह और शाम।(36) (फ़ा85) वह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद (फ़ा86) और नमाज़ बरपा रखने (फ़ा87) और ज़कात देने से (फ़ा88) डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जायेंगे दिल और आंखें।(37) (फ़ा89) ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उनके सबसे बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें इनाम ज़्यादा दे और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे बे गिनती।(38) और जो काफ़िर हुए उनके काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे यहां तक जब उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया (फ़ा90) और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उसने उसका हिसाब पूरा भर दिया और अल्लाह जल्द हिसाब कर लेता है।(39) (फ़ा91) या जैसे अंधेरियां किसी कुन्डे के दरिया में (फ़ा92) उसके ऊपर मौज, मौज के ऊपर और मौज उसके ऊपर बादल अंधेरे हैं एक पर एक (फ़ा93) जब अपना हाथ निकाले तो सुझाई देता मालूम न हो (फ़ा94) और जिसे अल्लाह नूर न दे उसके लिए कहीं नूर नहीं।(40) (फ़ा95) (रुकूअ़ 11) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह की तस्बीह करते हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे (फ़ा96) पर फैलाए सबने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह और अल्ला उनके कामों को जानता है।(41) और अल्लाह ही के लिए है सल्तनत

(फ़ा85) तस्बीह से मुराद नमाज़ें हैं सुबह की तस्बीह से फ़ज्र और शाम से ज़ुहर व अ़स्र व मग़रिब व इशा मुराद हैं। (फ़ा86) और उसके ज़िक्रे क़ल्बी व लिसानी और औक़ाते नमाज़ मस्जिदों की हाज़िरी से (फ़ा87) और उन्हें वक़्त पर अदा करनेसे हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बाज़ार में थे मस्जिद में नमाज़ के लिए इक़ामत कही गई आपने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द करके मस्जिद में दाख़िल होगए तो फ़रमाया कि आयत रिजालुल्–ला तुल्हीहिम् ऐसे ही लोगों के हक़ में है। (फ़ा88) उसके वक़्त पर। (फ़ा89) दिलों का उलट जाना यह है कि शिद्दते ख़ौफ़ व इज़्तेराब से उलट कर गले तक चढ़ जायेंगे न बाहर निकलें न नीचे उतरें और आंखें ऊपर चढ़ जायेंगी या यह माना हैं कुफ़्फ़ार के दिल कुफ़्र व शक से ईमान व यक़ीन की तरफ़ पलट जायेंगे और आंखों से पर्दे उठ जायेंगे यह तो उस दिन का बयान है आयत में यह इरशाद फ़रमाया गया कि वह फ़रमांबरदार बन्दे जो ज़िक्र व ताअ़त में निहायत मुस्तइद रहते हैं और इबादत की अदा में सरगरम रहते हैं बावजूद इस हुसने अमल के उस रोज़ से ख़ाइफ़ रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इबादत का हक़ अदा न हो **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ
مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰۤى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾
وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا

वल्अर्ज़ि व इलल्लाहिल् मसीर(42)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह युज़्जी सहाबन् सुम्–म युअल्लिफु बै–नहू सुम्–म यज्अलुहू रुकामन् फ़–त–रल् वद्–क़ यख़्रुजु मिन् ख़िला–लिही व युनज़्ज़िलु मिनस्समाइ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम् ब–रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशाउ व यस्रिफ़ुहू अम् मंय्यशाउ यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिल्अब्सार(43)युक़ल्लि–बुल्लाहुल्लै–ल वन्नहा–र इन्–न फ़ी ज़ालि–क लअिब्र–तल् लिउलिल् अब्सार(44)वल्लाहु ख़–ल–क़ कुल्–ल दाब्बतिम् मिम् माइन् फ़मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला बत़्निही व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला अर्–बअिन् यख़्लुक़ुल्लाहु मा यशाउ इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(45)ल–क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम् मुबय्यि–नातिन् वल्लाहु यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(46)व यक़ूलू–न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ–तअ्ना सुम्–म य–त–वल्ला फ़रीक़ुम् मिन्हुम् मिम् बअ्दि ज़ालि–क व मा उलाइ–क बिल् मुअ्मिनीन(47)व इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लि–यह्कु–म बै–नहुम् इज़ा

आसमानों और ज़मीन की और अल्लाह ही की तरफ़ फिर जाना।(42) क्या तूने न देखा कि अल्लाह नर्म नर्म चलाता है बादल को (फ़ा97) फिर उन्हें आपस में मिलाता है (फ़ा98) फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकलता है और उतारता है आसमान से उसमें जो बर्फ़ के पहाड़ हैं उनमें से कुछ ओले (फ़ा99) फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे (फ़ा100) और फेर देता है उन्हें जिससे चाहे (फ़ा101) क़रीब है कि उसकी बिजली की चमक आँख ले जाए।(43) (फ़ा102) अल्लाह बदली करता है रात और दिन की (फ़ा103) बेशक उसमें समझने का मक़ाम है निगाह वालों को।(44) और अल्लाह ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया (फ़ा104) तो उनमें कोई अपने पेट पर चलता है (फ़ा105) और उनमें कोई दो पाँव पर चलता है (फ़ा106) और उनमें कोई चार पाँव पर चलता है (फ़ा107) अल्लाह बनाता है जो चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(45) बेशक हमने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें (फ़ा108) और अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहे सीधी राह दिखाये।(46) (फ़ा109) और कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हुक्म माना फिर कुछ उनमें के उसके बाद फिर जाते हैं(फ़ा110) और वह मुसलमान नहीं।(47) (फ़ा111) और जब बुलाए जायें अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाये तो जभी

(फ़ा97) जिस सरज़मीन और जिन बिलाद की तरफ़ चाहे। (फ़ा98) और उनके मुतफ़र्रिक़ टुकड़ों को यकजा कर देता है (फ़ा99) इसके माना या तो यह हैं कि जिस तरह ज़मीन में पत्थर के पहाड़ हैं ऐसे ही आसमान में बरफ़ के पहाड़ अल्लाह तआ़ला ने पैदा किये हैं और यह उसकी क़ुदरत से कुछ बईद नहीं उन पहाड़ों से ओले बरसाता है या यह माना हैं कि आसमान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है यानी बकसरत ओले बरसाता है (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा100) और जिसके जान व माल को चाहता है उनसे हलाक व तबाह करता है। (फ़ा101) उसके जान व माल को महफ़ूज़ रखता है (फ़ा102) और रौशनी की तेज़ी से आंखों को बेकार करदे। (फ़ा103) कि रात के बाद दिन लाता है और दिन के बाद रात। (फ़ा104) यानी तमाम अजनास हैवान को पानी की जिन्स से पैदा किया और पानी उन सब की असल है और यह सब बावजूद मुत्तहिदुल असल होने के बाहम किस क़दर मुख़्तलिफ़ुल हाल हैं यह ख़ालिक़े आ़लम के इल्म व हिकमत और उसके कमाले क़ुदरत की दलील रौशन है। (फ़ा105) जैसे कि सांप और मछली और बहुत से कीड़े (फ़ा106) जैसे कि आदमी और परिन्द (फ़ा107) मिस्ल बहाइम और दरिन्दों के। (फ़ा108) यानी क़ुरआने करीम जिस में हिदायत व अहकाम और हलाल व हराम का वाज़ेह बयान है **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ اِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ
بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۱﴾
وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَ يَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ
مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۳﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَ عَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَ اِنْ تُطِيْعُوْهُ
تَهْتَدُوْا ؕ وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۵۴﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ

फ़रीकुम् मिन्हुम् मुअ्रिजून(48)व इंय्यकुल् लहुमुल् हक़्कु यअ्तू इलैहि मुज़्अिनीन(49)अफ़ी कुलूबिहिम् म–रजुन् अमिर् ताबू अम् यख़ाफू–न अंय्यही–फ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू बल् उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून (50)इन्नमा का–न क़ौललमुअ्मिनी–न इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लियह्कु–म बै–नहुम् अंय्यकूलू समिअ्ना व अ–तअ्ना व उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहून(51)व मंय्युतिअिल्ला–ह व रसू–लहू व यख़्शल्ला–ह व यत्तक़्हि फ़उलाइ–क हुमुल्फ़ाइजून(52)व अक़्समू बिल्लाहि जह्–द ऐमानिहिम् लइन् अ–मर् तहुम् ल–यख़्रुजुन्–न कुल् ला तुक़्सिमू ता–अतुम् मअ्रू–फ़तुन् इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा तअ्–मलून(53)कुल् अतीअुल्ला–ह व अतीअुर्रसू–ल फ़इन् त–वल्लौ फ़इन्नमा अ़लैहि मा हुम्मि–ल व अ़लैकुम् मा हुम्मिल्तुम् व इन् तुतीअूहु तह्तदू व मा अ़–लर्रसूलि इल्लल् बलागुल् मुबीन(54)व अ़–दल्लाहुल् लज़ी–न आ–मनू मिन्कुम् व अ़मिलुस् सालिहाति ल–यस्तख़्लिफ़न्नहुम् फ़िल्अर्ज़ि क–मस्तख़्ल–फ़ल् लज़ी–न मिन्

उनका एक फ़रीक़ मुंह फेर जाता है।(48) और अगर उनकी डिगरी हो (उनके हक़ में फ़ैसला हो) तो उसकी तरफ़ आयें मानते हुए।(49) (फ़ा112) क्या उनके दिलों में बीमारी है (फ़ा113) या शक रखते हैं (फ़ा114) या यह डरते हैं कि अल्लाह व रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे (फ़ा115) बल्कि वह ख़ुद ही ज़ालिम हैं।(50) (रुकूअ़ 12) मुसलमानों की बात तो यही है (फ़ा116) जब अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाए जायें कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए कि अ़र्ज़ करें हमने सुना और हुक्म माना और यही लोग मुराद को पहुंचे।(51) और जो हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं।(52) और उन्होंने (फ़ा117) अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में ह़द की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे तो वह ज़रूर जिहाद को निकलेंगे तुम फ़रमा दो क़समें न खाओ (फ़ा118) मुवाफ़िक़े शरअ़ हुक्म बरदारी चाहिये अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।(53) (फ़ा119) तुम फ़रमाओ हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का (फ़ा120) फिर अगर तुम मुंह फेरो (फ़ा121) तो रसूल के ज़िम्मे वही है जो उस पर लाज़िम किया गया (फ़ा122) और तुम पर वह है जिसका बोझ तुम पर रखा गया (फ़ा123) और अगर रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे राह पाओगे और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना।(54) (फ़ा124) अल्लाह ने वादा दिया उनको जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये (फ़ा125) कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा (फ़ा126) जैसी उनसे

(फ़ा112) कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन बारहा तजरबा कर चुके थे और उन्हें कामिल यक़ीन था कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़ैसला सरासर हक़ व अ़द्ल होता है इस लिए उनमें जो सच्चा होता वह तो ख़्वाहिश करता था कि हुज़ूर इस का फ़ैसला फ़रमायें और जो नाहक़ पर होता वह जानता था कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सच्ची अदालत से वह अपनी नाजाइज़ मुराद नहीं पा कसता इस लिए वह हुज़ूर के फ़ैसला से डरता और घबराता था। **शाने नुज़ूलः** बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ था एक ज़मीन के मुआ़मला में उसका एक यहूदी से झगड़ा था यहूदी जानता था कि इस मुआ़मला में वह सच्चा है और उसको यक़ीन था कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हक़ व अद्ल का फ़ैसला फ़रमाते हैं इसलिए उसने ख़्वाहिश की कि यह मुक़द्दमा हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से फ़ैसल कराया जाये लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वह बातिल पर है और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अद्ल व इन्साफ़ में किसी की रू रिआ़यत नहीं फ़रमाते इस लिए वह हुज़ूर के फ़ैसला पर तो राज़ी न हुआ और कअ़्ब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर मुसिर हुआ और हुज़ूर की निस्बत कहने लगा कि वह हम पर ज़ुल्म करेंगे इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा113) कुफ़्र या निफ़ाक़ **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ
وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ
ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ

क़ब्लिहिम् व लयु–मक्किनन्–न लहुम् दी–नहुमुल् लज़िर्–तज़ा लहुम् व लयुबदि्द लन्नहुम् मिम् बअ्दि ख़ौफ़िहिम् अम्–नन् यअ्बुदू–ननी ला युश्रिकू–न बी शैअन् व मन् क–फ़–र बअ्–द ज़ालि–क फ़उलाइ–क हुमुल् फ़ासिकून(55)व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व अतीउर्रसू–ल ल–अ़ल्लकुम् तुर्–हमून(56)ला तह्–सबन्नल् लज़ी–न क–फ़रू मुअ्जिज़ी–न फ़िल्अर्ज़ि व मअ्वाहुमुन्नारु व लबि–अ्सल्मसीर(57)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू लि–यस्तअ्ज़िन्कुमुल् लज़ी–न म–ल–कत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी–न लम् यब्लुग़ुलहुलु–म मिन्कुम् सला–स मर्रातिन् मिन् क़ब्लि सलातिल् फ़ज्रि व ही–न त–ज़ऊन सिया–बकुम् मिनज़्ज़ही–रति व मिम् बअ्दि सलातिल् अ़िशाइ सलासु औ़रातिल् लकुम् लै–स अ़लैकुम् व ला अ़लैहिम् जुनाहुम् बअ्–द हुन्–न तव्वाफ़ू–न अ़लैकुम् बअ्ज़ुकुम् अ़ला बअ्ज़िन् कज़ालि–क यबुय्यि–नुल्लाहु लकुमुल् आयाति वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(58)व इज़ा ब–ल–ग़ल् अत्फ़ालु मिन्कुमुल् हुलु–म फ़ल्–यस्तअ्ज़िनू क–मस्तअ्–ज़–नल् लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् कज़ालि–क युबय्यिनुल्लाहु

पहलों को दी (फ़ा127) और ज़रूर उनके लिए जमा देगा उनका वह दीन जो उनके लिए पसन्द फ़रमाया है (फ़ा128) और ज़रूर उनके अगले ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा (फ़ा129) मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहरायें और जो उसके बाद नाशुक्री करे तो वही लोग बे हुक्म हैं।(55) और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो।(56) हरगिज़ काफ़िरों को ख़्याल न करना कि वह कहीं हमारे क़ाबू से निकल जायें ज़मीन में और उनका ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अन्जाम।(57) (रुकूअ़ 13) ऐ ईमान वालो चाहिए कि तुम से इज़्न लें तुम्हारे हाथ के माल गुलाम (फ़ा130) और वह जो तुम में अभी जवानी को न पहुंचे (फ़ा131) तीन वक़्त (फ़ा132) नमाज़े सुबह से पहले (फ़ा133) और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो दोपहर को (फ़ा134) और नमाज़े इशा के बाद (फ़ा135) यह तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं (फ़ा136) इन तीन के बाद कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उन पर (फ़ा137) आमदो रफ़्त रखते हैं तुम्हारे यहां एक दूसरे के पास (फ़ा138) अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिए आयतें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(58) और जब तुम में लड़के (फ़ा139) जवानी को पहुंच जायें तो वह भी इज़्न मांगें (फ़ा140) जैसे उनके अगलों (फ़ा141) ने इज़्न मांगा अल्लाह यूंही बयान

(फ़ा127) हज़रत दाऊद व सुलैमान वग़ैरह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम को और जैसी कि जबाबिरह मिस्र व शाम को हलाक करके बनी इसराईल को ख़िलाफ़त दी और उन ममालिक पर उनको मुसल्लत किया। (फ़ा128) यानी दीने इस्लाम को तमाम अदयान पर ग़ालिब फ़रमाएगा। (फ़ा129) चुनांचे यह वादा पूरा हुआ और सर ज़मीने अ़रब से कुफ़्फ़ार मिटा दिये गए मुसलमानों का तसल्लुत हुआ मशरिक़ व मग़रिब के ममालिक अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए फ़तह फ़रमाये अकासिरा के ममालिक व ख़ज़ाइन उनके क़ब्ज़ा में आये दुनिया पर उनका रोअ्ब छा गया। फ़ाइदा इस आयत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु और आपके बाद होने वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त की दलील है क्योंकि उनके ज़माना में फ़ुतूहाते अ़ज़ीमा हुए और किसरा वग़ैरह मुलूक के ख़ज़ाइन मुसलमानों के क़ब्ज़ा में आये और अमन व तमकीन और दीन का ग़लबा हासिल हुआ तिर्मिज़ी व अबू दाऊद की हदीस में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस साल है फिर मिल्क होगा उसकी तफ़सील यह है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त दो **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

اللّٰهُ لَكُمُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٥٩ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ
وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٦٠ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَنْ
تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا
عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٦١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

लकुम् आयातिही वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(59)वल्क़वाअ़िदु मिनन् निसाइल्लाती ला यरजू–न निकाह़न् फ़लै–स अ़लैहिन्–न जुनाहुन् अंय्य–ज़अ्–न सि़या–बहुन्–न ग़ै–र मु–त–बर्रिजातिम् बिज़ी–नतिन् व अंय्यस्तअ़्फ़िफ़्–न ख़ैरुल् लहुन्–न वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(60)लै–स अ़लल् अअ़्मा ह़–रजुंव् व ला अ़लल् अअ़्–रजि ह़–रजुंव् व ला अ़लल् मरीज़ि ह़–रजुंव् व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम् बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बूयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ–ख़वातिकुम् औ बुयूति अअ़्मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम् औ बुयूति अख़्वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा म–लक्तुम् मफ़ाति–हहू औ सदीक़िकुम् लै–स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअ़न् औ अश्तातन् फ़इज़ा द–ख़ल्तुम् बुयूतन् फ़–सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तह़िय्य–तम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबा–र–क–तन् तय्यि–ब–तन् कज़ालि–क युबय्यि–नुल्लाहु लकुमुल् आयाति ल–अ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून(61)इन्नमल् मुअ्मिनूनल् लज़ी–न आ–मनू बिल्लाहि

फ़रमाता है तुम से अपनी आयतें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(59) और बूढ़ी ख़ाना नशीन औरतें (फ़ा142) जिन्हें निकाह की आरज़ू नहीं उन पर कुछ गुनाह नहीं कि अपने बालाई कपड़े उतार रखें जब कि सिंगार न चमकायें (फ़ा143) और उससे भी बचना (फ़ा144) उनके लिए और बेहतर है और अल्लाह सुनता जानता है।(60) न अन्धे पर तंगी (फ़ा145) और न लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर रोक और न तुममें किसी पर कि खाओ अपनी औलाद के घर (फ़ा146) या अपने बाप के घर या अपनी मां के घर या अपने भाईयों के यहां या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहां या अपनी फूफियों के घर या अपने मामूओं के यहां या अपनी ख़ालाओं के घर या जहां की कुंजियां तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं (फ़ा147) या अपने दोस्त के यहां (फ़ा148) तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि मिल कर खाओ या अलग अलग (फ़ा149) फिर जब किसी घर में जाओ तो अपनों को सलाम करो (फ़ा150) मिलते वक़्त कि अच्छी दुआ़ अल्लाह के पास से मुबारक पाकीज़ा अल्लाह यूंही बयान फ़रमाता है तुम से आयतें कि तुम्हें समझ हो।(61) (रुकूअ़ 14) ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर

(फ़ा142) जिन का सिन ज़्यादा हो चुका और औलाद होने की उम्र न रही और पीराना साली के बायस (फ़ा143) और बाल सीना पिन्डली वग़ैरह न खोलें (फ़ा144) बालाई कपड़ों को पहने रहना। (फ़ा145) शाने नुज़ूलः सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सहाबा किराम नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों की चाबियां नाबीना और बीमारों और अपाहिजों को दे जाते जो इन आज़ार के बाइस जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि उनके मकानों से खाने की चीज़ें लेकर खायें मगर वह लोग इसको गवारा न करते बईं ख़्याल कि शायद यह उनको दिल से पसन्द न हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें इसकी इजाज़त दी गई और एक क़ौल यह है कि अन्धे अपाहिज और बीमार लोग तन्दुरुस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई और एक क़ौल यह है कि जब अन्धे नाबीना अपाहिज किसी मुसलमान के पास जाते और उसके पास उनके खिलाने के लिए कुछ न होता तो वह उन्हें किसी रिश्तेदार के यहां खिलाने के लिए ले जाता यह बात उन लोगों को गवारा न होती इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि इसमें कोई हर्ज नहीं है (फ़ा146) कि औलाद का घर अपना ही घर **(बक़िया सफ़हा 590 पर)**

وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا
اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم
بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَلَا
إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

व रसूलिही व इज़ा कानू म–अ़हू अ़ला अम्रिन् जामि–अ़िल् लम् यज़्हबू हत्ता यस्तअ्ज़िनूहु इन्नल्लज़ी–न यस्तअ्जि नू–न–क उलाइ–कल्लज़ी–न युअ्मिनू–न बिल्लाहि व रसूलिही फ़इ–ज़स्तअ् –जनू–क लिबअ्ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्ज़ल् लिमन् शिअ्–त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(62)ला तज्अ़लू दुआअर्रसूलि बै–नकुम् कदुआइ बअ्ज़िकुम् बअ्–ज़न् क़द् यअ्–लमुल्लाहुल् लज़ी–न य–त–सल्–ललू–न मिन्कुम् लिवाज़न् फ़ल्–यह्–ज़रिल् लज़ी–न युख़ालिफ़ू–न अ़न् अम्रिही अन् तुसी–बहुम् फ़ित्–नतुन् औ युसी–बहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(63)अला इन्–न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि क़द् यअ्–लमु मा अन्तुम् अ़लैहि व यौ–म युर्– जअू–न इलैहि फ़यु–नब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(64)

यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिसके लिए जमा किये गए हों (फ़ा151) तो न जायें जब तक उनसे इजाज़त न ले लें वह जो तुमसे इजाज़त मांगते हैं वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हैं (फ़ा152) फिर जब वह तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिए तो उनमें जिसे तुम चाहो इजाज़त देदो और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी मांगो (फ़ा153) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(62) रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है (फ़ा154) बेशक अल्लाह जानता है जो तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ लेकर (फ़ा155) तो डरें वह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे (फ़ा156) या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े।(63) (फ़ा157) सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक वह जानता है जिस हाल पर तुम हो (फ़ा158) और उस दिन को जिसमें उसकी तरफ़ फेरे जायेंगे (फ़ा159) तो वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया और अल्लाह सब कुछ जानता है।(64) (फ़ा160) (रुकूअ़ 15)

(फ़ा151) जैसे कि जिहाद और तदबीरे जंग और जुमा व ईदैन और मशवरा और हर इज्तेमाअ़ जो अल्लाह के लिए हो (फ़ा152) उनका इजाज़त चाहना निशाने फ़रमांबरदारी और दलीले सेहते ईमान है। (फ़ा153) इससे मालूम हुआ कि अफ़ज़ल यही है कि हाज़िर रहें और इजाज़त तलब न करें मसला इमामों और दीनी पेशवाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिए (मदारिक) (फ़ा154) क्योंकि जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पुकारें उस पर इजाबत व तअ़मील वाजिब हो जाती है और अदब से हाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब हाज़िर होने के लिए इजाज़त तलब करे और इजाज़त से ही वापस हो और एक माना मुफ़स्सिरीन ने यह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को निदा करे तो अदब व तकरीम और तौक़ीर व ताज़ीम के साथ आपके मुअ़ज़्ज़म अलक़ाब से नरम आवाज़ के साथ मुतवाज़ेआ़ना व मुन्कसिराना लहजा में *या नबिय्यल्लाहि या रसूलल्लाहि या हबीबल्लाहि* कह कर (फ़ा155) शाने नुज़ूलः मुनाफ़िक़ीन पर रोज़े जुमा मस्जिद में ठहर कर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़ुतबे का सुनना गिराँ होता था तो वह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सहाबा की आड़ लेकर सरकते सरकते मस्जिद से निकल जाते थे इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा156) दुनिया में तकलीफ़ या क़त्ल या ज़लज़ले या और हौलनाक हवादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत होना या दिल का सख़्त होकर मअ़रेफ़ते इलाही से महरूम रहना। (फ़ा157) आख़िरत में (फ़ा158) ईमान पर या निफ़ाक़ पर (फ़ा159) जज़ा के लिए और वह दिन रोज़े क़ियामत है। (फ़ा160) उससे कुछ छुपा नहीं।

(बक़िया सफ़हा 560 का) करते थे। (फ़ा7) ख़्वाह वह अमानतें अल्लाह की हों या ख़ल्क़ की और इसी तरह अहद ख़ुदा के साथ हों या मख़्लूक़ के साथ सब की वफ़ा लाज़िम है। (फ़ा8) और उन्हें उनके वक़्तों में उनके शराइत व आदाब के साथ अदा करते हैं और फ़राइज़ व वाजिबात और सुनन व नवाफ़िल सब की निगहबानी रखते हैं (फ़ा9) मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहां हज़रते आदम हैं (फ़ा10) यानी उसकी नस्ल को (फ़ा11) यानी रहम में

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۝ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ

فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ۝ وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا

وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً وَّ لَا نُشُوْرًا ۝ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ اِفْتَرٰىهُ وَ اَعَانَهٗ عَلَیْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۝ وَ قَالُوْۤا اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِیَ تُمْلٰی عَلَیْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ۝ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِیْ یَعْلَمُ السِّرَّ

सूरतुल फ़ुर्क़ानि

(मक्की है इस में 77 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

तबा–र कल्लज़ी नज़्ज़–लल् फ़ुर्क़ा–न अ़ला अ़ब्दिही लियकू–न लिल्आ़–लमी–न नज़ीरा(1) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व–ल–दंव् व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व ख़–ल–क़ कुल्–ल शैइन् फ़–क़द्–द–रहू तक़्दीरा(2)वत्तख़ज़ू मिन् दूनिही आलि–ह–तल् ला यख़्लुक़ू–न शैअंव् व हुम् युख़्–लक़ू–न व ला यम्लिकू–न लिअन्फ़ु–सिहिम् ज़र्रंव् व ला नफ़्अंव् व ला यम्लिकू–न मौतंव् व ला ह़यातंव् व ला नुशूरा(3)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कु निफ़्तराहु व अआ़–नहू अ़लैहि क़ौमुन् आ–ख़रू–न फ़–क़द् जाऊ ज़ुल्मंव् वज़ूरा(4)व क़ालू असात़ीरुल् अव्वली–नक्–त–त–बहा फ़हि–य तुम्ला अ़लैहि बुक्–र–तंव् व असीला(5)क़ुल् अन्ज़–लहुल् लज़ी यअ़्–लमुस् सिर्–र

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)
बड़ी बरकत वाला है वह जिसने उतारा क़ुरआन अपने बन्दा पर (फ़2) जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।(1) (फ़3) वह जिसके लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत और उसने न इख़्तियार फ़रमाया (फ़4) बच्चा और उसकी सल्तनत में कोई साझी नहीं (फ़5) उसने हर चीज़ पैदा करके ठीक अन्दाज़ा पर रखी।(2) और लोगों ने उसके सिवा और खुदा ठहरा लिए (फ़6) कि वह कुछ नहीं बनाते और खुद पैदा किये गए हैं और खुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का न उठने का।(3) और काफ़िर बोले (फ़7) यह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्होंने बना लिया है (फ़8) और उस पर और लोगों ने (फ़9) उन्हें मदद दी है बेशक वह (फ़10) ज़ुल्म और झूठ पर आये। और बोले (फ़11) अगलों की कहानियां हैं(4) जो उन्होंने (फ़11) लिख ली हैं तो वह उन पर सुबह व शाम पढ़ी जाती हैं।(5) तुम फ़रमाओ उसे तो उसने उतारा है जो आसमानों

(फ़1) सूरह फ़ुरक़ान मक्की है इस में छः रुकूअ़ और सतहत्तर आयतें और आठ सौ बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सौ तीन हरफ़ हैं (फ़2) यानी सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर। (फ़3) इसमें हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उमूमे रिसालत का बयान है कि आप तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए जिन्न हों या बशर या फ़रिश्ते या दीगर मख़्लूक़ात सब आपके उम्मती हैं क्योंकि आ़लम मा सिवा अल्लाह को कहते हैं इसमें यह सब दाख़िल हैं मलाइका को इससे ख़ारिज करना जैसा कि जलालैन में शैख़ महल्ली से और कबीर में इमाम राज़ी से और शोअ़बुलईमान में बैहक़ी से सादिर हुआ बे दलील है और दावा इज्माअ़ ग़ैर साबित चुनांचे इमाम सुबकी व बाज़री व इब्ने हज़्म व सुयूती ने इसका तआ़क़ुब किया और खुद इमाम राज़ी को तस्लीम है कि आ़लम मा सिवा अल्लाह को कहते हैं पस वह तमाम ख़ल्क़ को शामिल है मलाइका को इससे ख़ारिज करने पर कोई दलील नहीं इलावा बरीं मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है उर्सिल्तु इलल् ख़ल्क़ि काफ़्फ़तन् यानी मैं तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गया अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ने मिरक़ात में इसकी शरह में फ़रमाया यानी तमाम मौजूदात की तरफ़ जिन्न हों या इन्सान या फ़रिश्ते या हैवानात या जमादात इस मसला की कामिल तन्क़ीह व तह़क़ीक़ शरह व बस्त के साथ इमाम क़स्तलानी की मवाहिब लदुन्निया में है (फ़4) इसमें यहूद (बक़िया सफ़हा 590 पर)

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَاۗءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ اِذَا رَاَتْهُمْ
مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝ وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ۝

फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि इन्नहू का-न ग़फ़ूरर् रहीमा (6) व क़ालू मालि हाज़र्रसूलि यअ्कुलुत्तआ-म व यम्शी फ़िल्अस्वाक़ि लौला उन्ज़ि-ल इलैहि म-लकुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा (7) औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुंय्यअ्कुलु मिन्हा व क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम् मस्हूरा (8) उन्ज़ुर्-कै-फ़ ज़-रबू ल-कल् अम्सा-ल फ़ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला (9) तबा-र कल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ़-ल ल-क ख़ैरम् मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु व यज्-अ़ल् ल-क क़ुसूरा (10) बल् कज़्ज़बू बिस्सा-अ़ति व अअ्-तद्ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्सा-अ़ति सअ़ीरा (11) इज़ा र-अत्हुम् मिम् मकानिम् बअ़ीदिन् समिअू लहा त-ग़य्युज़ंव् व ज़फ़ीरा (12) व इज़ा उल्कू मिन्हा मकानन् ज़य्यिक़म् मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा (13) ला तद्अुल् यौ-म सुबरंव् वाहिदंव् वद्अू सुबूरन् कसीरा (14) कुल अज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल् ख़ुल्दिल् लती वुअ़िदल् मुत्तकू-न कानत् लहुम् जज़ाअ़व् व मसीरा

और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है (फ़ा13) बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (6) (फ़ा14) और बोले (फ़ा15) इस रसूल को क्या हुआ खाना खाता है और बाज़ारों में चलता है (फ़ा16) क्यों न उतारा गया उनके साथ कोई फ़रिश्ता कि उनके साथ डर सुनाता। (7) (फ़ा17) या ग़ैब से उन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या उनका कोई बाग़ होता जिसमें से खाते (फ़ा18) और ज़ालिम बोले (फ़ा19) तुम तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिस पर जादू हुआ। (8) (फ़ा20) ऐ महबूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिए बना रहे हैं तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते। (9) (रुकूअ़16) बड़ी बरकत वाला है वह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर उससे कर दे (फ़ा 21) जन्नतें जिनके नीचे नहरें बहें और कर दे तुम्हारे लिए ऊँचे ऊँचे महल। (10) बल्कि यह तो क़ियामत को झुठलाते हैं और जो क़ियामत को झुठलाये हमने उसके लिए तैयार कर रखी है भड़कती हुई आग। (11) जब वह उन्हें दूर जगह से देखेगी (फ़ा२२) तो सुनेंगे उसका जोश मारना और चिंघाड़ना। (12) और जब उसकी किसी तंग जगह में डाले जायेंगे (फ़ा23) जंन्जीरों में जकड़े हुए (फ़ा24) तो वहां मौत मांगेंगे। (13) (फ़ा25) फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो। (14) (फ़ा26) तुम फ़रमाओ क्या (फ़ा27) भला यह वह हमेशगी के बाग़ जिसका वादा डर वालों को है वह उनका सिला और अन्जाम है।

(फ़ा13) यानी क़ुरआने करीम उलूमे ग़ैबी पर मुश्तमिल है यह दलील सरीह है इसकी कि वह हज़रत अल्लामुलग़ुयूब की तरफ़ से है। (फ़ा14) इसी लिए कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। (फ़ा15) कुफ़्फ़ार क़ुरैश (फ़ा16) इससे उनकी मुराद यह थी कि आप नबी होते तो न खाते न बाज़ारों में चलते और यह भी न होता तो। (फ़ा17) और उनकी तस्दीक़ करता और उनकी नबुव्वत की शहादत देता। (फ़ा18) मालदारों की तरह (फ़ा19) मुसलमानों से (फ़ा20) और मआ़ज़ल्लाह उसकी अ़क्ल बजा न रही ऐसी तरह तरह की बेहूदा बातें उन्होंने बकीं। (फ़ा21) यानी जल्द आपको उस ख़ज़ाने और बाग़ से बेहतर अ़ता फ़रमावे जो यह काफ़िर कहते हैं (फ़ा23) एक बरस की राह से दोनों क़ौम हैं और आग का देखना कुछ बईद नहीं अल्लाह तआ़ला चाहे तो उसको हयात व अ़क्ल और रूयत अ़ता फ़रमाये और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है। (फ़ा23) जो निहायत कर्ब व बैचेनी पैदा करने वाली हो (फ़ा24) उस तरह कि उनके हाथ गर्दनों से मिलाकर बांध दिये गए हों या इस तरह कि हर काफ़िर अपने अपने शैतान के साथ ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ हो। (फ़ा25) और वासबूराह वासबूराह का शोर मचायेंगे बईं माना कि हाए आए मौत आ जा हदीस शरीफ में है कि पहले जिस शख़्स को आतिशी लिबास पहनाया जाएगा वह इबलीस है और उसकी ज़ुर्रियत उसके पीछे होगी और यह सब मौत मौत पुकारते होंगे उन से (फ़ा26) क्योंकि तुम तरह तरह के अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाओगे (फ़ा27) अ़ज़ाब और अहवाले जहन्नम जिसका ज़िक्र किया गया।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَآءُونَ خٰلِدِينَ ۭ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ فَيَقُولُ
ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِىْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِىْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ
وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ
وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ
وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ ۭ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾

(15) लहुम फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न का-न अ़ला रब्बि-क वअ़्- दम् मस्ऊला (16) व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ-अन्तुम् अज़्लल्तुम् अ़िबादी हाउलाइ अम् हुम् ज़ल्लुस् सबील (17) क़ालू सुब्हा-न-क मा का-न यम्बग़ी लना अन् नत्तख़ि-ज़ मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम् मत्तअ़्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता नसुज़्ज़िक्-र व कानू क़ौमम् बूरा (18) फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न फ़मा तस्ततीअू-न सर्फ़ंव् व ला नस्रन् व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अ़ज़ाबन् कबीरा (19) व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क मिनल् मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम् ल-यअ्कुलूनत् तआ़-म व यम्शू-न फ़िल्अस्वाक़ि व ज-अ़ल्ना बअ़्-ज़कुम् लि- बअ़्ज़िन् फ़ित्-तन् अ-तस्बिरू-न व का-न रब्बु-क बसीरा (20)

(15) उनके लिए वहां मन मानी मुरादें हैं जिनमें हमेशा रहेंगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वादा है मांगा हुआ। (16)(फ़ा28) और जिस दिन इकट्ठा करेगा उन्हें (फ़ा29) और जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हैं (फ़ा30) फिर उन मअ़्बूदों से फरमाएगा क्या तुम ने गुमराह कर दिये यह मेरे बन्दे या ख़ुद ही राह भूले। (17) (फ़ा31) वह अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझको (फ़ा32) हमें सज़ावार न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनायें (फ़ा33) लेकिन तूने उन्हें और उनके बाप दादाओं को बरतने दिया (फ़ा34) यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए और यह लोग थे ही हलाक होने वाले। (18) (फ़ा35) तो अब मअ़्बूदों ने तुम्हारी बात झुठला दी तो अब तुम न अ़ज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुम में जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखायेंगे। (19) और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते (फ़ा36) और हमने तुम में एक को दूसरे की जांच किया है (फ़ा37) और ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे (फ़ा38) और ए महबूब तुम्हारा रब देखता है। (20) (फ़ा39) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा28) यानी मांगने के लाइक़ या वह जो मोमिनीन ने दुनिया में यह अर्ज़ करके मांगा रब्बना आतिना फ़िद् दुन्या ह़-स-न तंव् व फ़िल् आख़ि-रति- ह़-स-नः या यह अर्ज़ करके रब्बना व आतिना मा व अ़त्-तना अ़ला रुसुलि-क (फ़ा29) यानी मुशरिकीन को (फ़ा30) यानी उनके बातिल मअ़्बूदों को ख़्वाह ज़विल उक़ूल हो या ग़ैर ज़विल उक़ूल कलबी ने कहा कि उन मअ़्बूदों से बुत मुराद है उन्हें अल्लाह तआला गोयाई देगा (फ़ा31) अल्लाह तआ़ला हक़ीक़ते हाल का जानने वाला है उससे कुछ भी मख़्फ़ी नहीं यह सवाल मुशरिकीन को ज़लील करने के लिए है कि उनके मअ़्बूद उन्हें झुठलायें तो उनकी हसरत व ज़िल्लत और ज़्यादा हो (फ़ा32) इससे कि कोई तेरा शरीक हो। (फ़ा33) तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के मअ़्बूद बनाने का हुक्म दे सकते थे हम तेरे बन्दे हैं (फ़ा34) और उन्हें अमवाल व औलाद व तूले उम्र व सेहत व सलामत इनयात की (फ़ा35) शक़ी बाद अज़्रां कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा (फ़ा36) यह कुफ़्फ़ार के उस तअ़्न का जवाब है जो उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर किया था कि वह बाज़ारों में चलते हैं खाना खाते हैं यहां बताया गया कि यह उमूर मनाफ़ीए नबुव्वत नहीं बल्कि यह तमाम अम्बिया की आदत मुस्तमरा थी लिहाज़ा यह तअ़्न महज़ जहल व इनाद है। (फ़ा37) शाने नुज़ूलः शुरफ़ा जब इस्लाम लाने का क़स्द करते थे तो ग़ुरबा को देख कर यह ख़्याल करते कि यह हम से पहले इस्लाम ला चुके इनको हम पर एक फ़ज़ीलत रहेगी बईं ख़्याल वह इस्लाम से बाज़ रहते और शुरफ़ा के लिए ग़ुरबा आज़माईश बन जाते और एक क़ौल यह है कि यह आयत अबू जहल व वलीद बिन उक़बा और आस बिन वाइल सहमी और नज़र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई इन लोगों ने हज़रत अबू ज़र इब्ने मसऊद व अ़म्मार बिन यासिर व बिलाल व सुहब व आमिर बिन फ़हीरा को देखा कि पहले से इस्लाम लाये हैं तो ग़ुरूर से कहा कि हम भी इस्लाम ले आयें तो उन्हीं जैसे हो जायेंगे तो हम में और उन में फ़र्क़ क्या रह जाएगा और एक क़ौल यह है कि यह आयत फ़ुक़रा मुस्लिमीन की आज़माइश में नाज़िल हुई जिनका कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस्तेहज़ा करते थे और कहते थे कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इत्तेबाअ़ करने वाले यह लोग हैं जो हमारे ग़ुलाम और अरज़ल हैं अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल की और उन मोमिनीन से फ़रमाया (ख़ाज़िन) (फ़ा38) इस फ़क़्र व शिद्दत पर और कुफ़्फ़ार की इस बदगोई पर (फ़ा39) उसको जो सब्र करे और उसको जो बे-सब्री करे।

(बक़िया सफ़हा 561 का) यह इसमें अ़जीब सिफ़त है कि वह तेल भी है कि मुनाफ़ा और फ़वाइद तेल के इससे हासिल किये जाते हैं जलाया भी जाता है दवा के तरीक़ा पर भी काम में लाया जाता है और सालन का भी काम देता है कि तन्हा उससे रोटी खाई जा सकती है (फ़ा24) यानी दूध खुशगवार मुवाफ़िक़ तबअ़ जो लतीफ़ ग़िज़ा होता है (फ़ा25) कि उनके बाल खाल ऊन वग़ैरह से काम लेते हो (फ़ा26) कि उन्हें ज़बह करके खा लेते हो (फ़ा27) खुश्की में (फ़ा28) दरियाओं में (फ़ा29) उसके अ़ज़ाब का जो उसके सिवा औरों को पूजते हो। (फ़ा30) अपनी क़ौम के लोगों से कि (फ़ा31) और तुम्हें अपना ताबेअ़ बनाये (फ़ा32) कि रसूल को भेजे और मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाये

(बक़िया सफ़हा 562 का) हाम याफ़िस और उनकी बीबियों को और दूसरे मोमिनीन को सवार किया कुल लोग जो कश्ती में थे उनकी तादाद अठहत्तर थी, निस्फ़ मर्द और निस्फ़ औरतें (फ़ा43) और उनके लिए नजात न तलब करना दुआ़ न फ़रमाना (फ़ा44) कश्ती से उतरते वक़्त या उसमें सवार होते वक़्त (फ़ा45) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के वाक़िअ़े में और उसमें जो दुश्मनाने हक़ के साथ किया गया (फ़ा46) और इबरतें और नसीहतें और क़ुदरते इलाही के दलाइल हैं। (फ़ा47) उस क़ौम के हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को उसमें भेजकर और उनको वअ़ज़ व नसीहत पर मामूर फ़रमा कर ताकि ज़ाहिर हो जाये कि नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले कौन नसीहत क़बूल करता और तस्दीक़ व इताअ़त करता है और कौन नाफ़रमान तकज़ीब व मुख़ालफ़त पर मुसिर रहता है। (फ़ा48) यानी क़ौमे नूह के अ़ज़ाब व हलाक के (फ़ा49) यानी आ़द क़ौमे हूद (फ़ा50) यानी हूद अ़लैहिस्सलाम और उनकी मअ़रेफ़त उस क़ौम को हुक्म दिया। (फ़ा51) उसके अ़ज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ। (फ़ा52) और वाहं के सवाब व अ़ज़ाब वग़ैरह। (फ़ा53) यानी बाज़ कुफ़्फ़ार जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने फ़राख़ीए ऐश और नेअ़मते दुनिया अ़ता फ़रमाई थी अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निस्बत अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगे।

(बक़िया सफ़हा 563 का) यह कहा (फ़ा60) कि अपने आपको उस का नबी बताया और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी (फ़ा61) पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम जब उनके ईमान से मायूस हुए और उन्होंने देखा कि क़ौम इन्तेहाई सरकशी पर है तो उनके हक़ में बद दुआ़ की और बारगाहे इलाही में। (फ़ा62) अपने कुफ़्र व तकज़ीब पर जबकि अ़ज़ाबे इलाही देखेंगे (फ़ा63) यानी वह अ़ज़ाब व हलाक में गिरिफ़्तार किये गए (फ़ा64) यानी वह हलाक होकर घास कूड़े की तरह हो गए (फ़ा65) यानी ख़ुदा की रहमत से दूर हों अम्बिया की तकज़ीब करने वाले। (फ़ा66) मिस्ल क़ौमे सालेह और क़ौमे लूत और क़ौमे शुऐब वग़ैरह के (फ़ा67) जिसके लिए हलाक का जो वक़्त मुक़र्रर है वह ठीक उसी वक़्त हलाक होगी उसमें कुछ भी तक़दीम व ताख़ीर नहीं हो सकती (फ़ा68) और उसकी हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाये (फ़ा69) और बाद वालों को पहलों की तरह हलाक कर दिया। (फ़ा70) कि बाद वाले अफ़साना की तरह उनका हाल बयान किया करें और उनके अ़ज़ाब व हलाक का बयान सबबे इबरत हो (फ़ा71) मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरह मोअ़जेज़ात के (फ़ा72) और अपने तकब्बुर के बाइस ईमान न लाये

(बक़िया सफ़हा 564 का) इससे मुराद या बैतुल मुक़द्दस है या दमिश्क़ या फ़लस्तीन कई क़ौल हैं (फ़ा81) यानी ज़मीन हमवार फ़राख़ फलों वाली जिसमें रहने वाले ब-आसाइश बसर करते हैं (फ़ा82) यहां पैग़म्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उनके ज़माना में यह निदा फ़रमाई गई या रसूलों से मुराद ख़ास सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं या हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम कई क़ौल हैं। (फ़ा83) उनकी जज़ा अ़ता फ़रमाऊंगा। (फ़ा84) यानी इस्लाम। (फ़ा85) और फ़िरक़े फ़िरक़े हो गए यहूदी नसरानी मजूसी वग़ैरह (फ़ा86) और अपने ही आपको हक़ पर जानता है और दूसरों को बातिल पर समझता है इस तरह उनके दर्मियान दीनी इख़्तिलाफ़ात हैं अब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब होता है (फ़ा87) यानी उनके कुफ़्र व ज़लाल और उनकी जहालत व ग़फ़लत में (फ़ा88) यानी उनकी मौत के वक़्त तक। (फ़ा89) दुनिया में (फ़ा90) और हमारी यह निअ़मतें उनके आमाल की जज़ा हैं या हमारे राज़ी होने की दलील हैं ऐसा ख़्याल करना ग़लत है वाक़िआ़ यह नहीं है (फ़ा91) कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं। (फ़ा92) उन्हें उसके अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मोमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बदी करता है और निडर रहता है। (फ़ा93) और उसकी किताबों को मानते हैं (फ़ा94) ज़कात व सदक़ात या यह माना हैं कि आमाले सालिहा बजा लाते हैं (फ़ा95) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराबें पीते हैं और चोरी करते हैं फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ की नूर दीदा ऐसा नहीं यह उन लोगों का बयान है जो रोज़े रखते हैं सदक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं यह आमाल ना मक़बूल न हो जायें (फ़ा96) यानी नेकियों को माना यह हैं कि वह नेकियों में और उम्मतों पर सबक़त करते हैं।

(बक़िया सफ़हा 565 का) (फ़ा105) और यह कहते हुए कि हम अहले हरम हैं और बैतुल्लाह के हमसाया हैं हम पर कोई ग़ालिब न होगा हमें किसी का ख़ौफ़ नहीं। (फ़ा106) कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द जमा होकर और उन कहानियों में अक्सर क़ुरआन पाक पर तअ़न और इसको सेहर और शेअ़र कहना और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में बेजा बातें कहना होता था। (फ़ा107) यानी नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को और आप पर ईमान लाने को और क़ुरआने करीम को (फ़ा108) यानी क़ुरआने पाक में ग़ौर नहीं किया और इसके एजाज़ पर नज़र नहीं डाली जिससे उन्हें मालूम होता कि यह कलामे हक़ है इसकी तस्दीक़ लाज़िम है और जो कुछ इसमें इरशाद फ़रमाया गया वह सब हक़ और वाजिबुत्तस्लीम है और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिद्क़ व हक़्क़ानियत पर इसमें दलालाते वाज़ेहा मौजूद हैं। (फ़ा109) यानी रसूल का तशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले अहद में हुई ही न हो और वह यह कह सकें कि हमें ख़बर ही

न थी कि ख़ुदा की तरफ़ से रसूल आया भी करते हैं कभी पहले कोई रसूल आया होता और हम ने उसका तज़किरा सुना होता तो हम क्यों इस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को न मानते यह उज़्र करने का मौक़ा भी नहीं है क्योंकि पहली उम्मतों में रसूल आ चुके हैं और ख़ुदा की किताबें नाज़िल हो चुकी हैं। (फ़ा110) और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ के जुमला अहवाल को न देखां और आपके नस्बे आली और सिद्क़ व अमानत और वफ़ूरे अ़क़्ल व हुस्ने अख़्लाक़ और कमाले हिल्म और वफ़ा व करम व मुरव्वत वग़ैरह पाकीज़ा अख़्लाक़ व महासिन सिफ़ात और बग़ैर किसी से सीखे आपके इल्म में कामिल और तमाम जहान से अअ़्लम और फ़ाइक़ होने को न जाना क्या ऐसा है। (फ़ा111) हक़ीक़त में यह बात तो नहीं बल्कि वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को और आपके औसाफ़ व कमालात को ख़ूब जानते हैं और आपके बरगुज़ीदा सिफ़ात शोहरए आफ़ाक़ हैं (फ़ा112) यह भी सरासर ग़लत और बातिल है क्योंकि वह जानते हैं कि आप जैसा दाना और कामिलुल-अ़क़्ल शख़्स उनके देखने में नहीं आया (फ़ा113) यानी क़ुरआने करीम जो तौहीदे इलाही व अहकामे दीन पर मुश्तमिल है (फ़ा114) क्योंकि इसमें उनके ख़्वाहिशाते नफ़सानिया की मुख़ालफ़त है इस लिए वह रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनके सिफ़ात व कमालात को जानने के बावजूद हक़ की मुख़ालफ़त करते हैं अक्सर की क़ैद से साबित होता है कि यह हाल उनमें बेश्तर लोगों का है चुनान्चे बाज़ उन में ऐसे भी थे जो आपको हक़ पर जानते थे और हक़ उन्हें बुरा भी नहीं लगता था लेकिन वह अपनी क़ौम की मुवाफ़क़त या उनके तअ़न व तशनीअ़ के ख़ौफ़ से ईमान न लाए जैसे कि अबू तालिब (फ़ा115) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा116) इस तरह कि इसमें वह मज़ामीन मज़कूर होते जिनकी कुफ़्फ़ार ख़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटा और बेटियां होना वग़ैरह कुफ़्रियात (फ़ा117) और तमाम आ़लम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता (फ़ा118) यानी क़ुरआन पाक। (फ़ा119) उन्हें हिदायत करने और राहे हक़ बताने पर ऐसा तो नहीं और वह क्या हैं और आपको क्या दे सकते हैं तुम अगर अज्र चाहो (फ़ा120) और उसका फ़ज़्ल आप पर अ़ज़ीम और जो जो निअ़्मतें उस ने आपको अ़ता फ़रमाईं वह बहुत कसीर और आला तो आपको उनकी क्या परवाह फिर जब वह आपके औसाफ़ व कमालात से वाक़िफ़ भी हैं .क़ुरआन पाक का एजाज़ भी उनकी निगाहों के सामने है और आप उनसे हिदायत व इरशाद का कोई अज्र व एवज़ भी तलब नहीं फ़रमाते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या उज़्र रहा। (फ़ा121) तो उन पर लाज़िम है कि आपकी दावत क़बूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों

(बक़िया सफ़्हा 566 का) क़सम देता हूं और क़राबत की आप अल्लाह से दुआ़ कीजिये कि हम से इस क़हत को दूर फ़रमाये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ की और उन्होंने इस बला से रिहाई पाई इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयतें नाज़िल हुईं। (फ़ा125) क़हत साली के या क़त्ल के (फ़ा126) बल्कि अपने तमर्रुद व सरकशी पर हैं। (फ़ा127) उस अ़ज़ाब से या क़हत साली मुराद है जैसा कि रिवायते मज़कूरा शाने नुज़ूल का मुक़तज़ा है या रोज़े बद्र का क़त्ल यह इस क़ौल की बिना पर है कि वाक़िअ़ए क़हत वाक़िअ़ए बद्र से पहले हो और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उस सख़्त अ़ज़ाब से मौत मुराद है बाज़ ने कहा कि क़ियामत (फ़ा128) ताकि सुनो और देखो और समझो और दीनी और दुनियवी मुनाफ़ा हासिल करो (फ़ा129) कि तुमने उन निअ़्मतों की क़द्र न जानी और उनसे फ़ाइदा न उठाया और कानों आंखों और दिलों से आयाते इलाहिया के सुनने देखने समझने और मअ़्रेफ़ते इलाही हासिल करने और मुनइमे हक़ीक़ी का हक़ पहचान कर शुक्रगुज़ार बनने का नफ़ा न उठाया (फ़ा130) रोज़े क़ियामत (फ़ा131) उनमें से हर एक का दूसरे के बाद आना और तारीकी व रौशनी और ज़्यादती व कमी में हर एक का दूसरे से मुख़्तलिफ़ होना यह सब उसकी क़ुदरत के निशान हैं (फ़ा132) कि उनसे इबरत हासिल करो और उनमें ख़ुदा की क़ुदरत का मुशाहदा करके मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को तस्लीम करो और ईमान लाओ (फ़ा133) यानी उनसे पहले काफ़िर। (फ़ा134) जिनकी कुछ भी हक़ीक़त नहीं कुफ़्फ़ार के इस मक़ूला का रद्द फ़रमाने और उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाने के लिए अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इरशाद फ़रमाया (फ़ा135) उसके ख़ालिक़ व मालिक को तो बताओ। (फ़ा136) क्योंकि बजुज़ उसके कोई जवाब ही नहीं और मुशरिकीन अल्लाह तआ़ला की ख़ालक़ियत के मुक़िर भी हैं जब वह यह जवाब दें (फ़ा137) कि जिसने ज़मीन को और उसकी कायनात को इब्तेदाअन पैदा किया वह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।

(बक़िया सफ़्हा 567 का) (फ़ा144) वह उससे मुनज़्ज़ा है क्योंकि नौअ़् और जिन्स से पाक है और औलाद वही हो सकती है जो हम जिन्स हो (फ़ा145) जो उलूहियत में शरीक हो (फ़ा146) और उसको दूसरे के तहते तसर्रुफ़ न छोड़ता (फ़ा147) और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्योंकि मुतक़ाबिल हुकूमतें उसी की मुक़तज़ी हैं इससे मालूम हुआ कि दो ख़ुदा होना बातिल है ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसी के तहते तसर्रुफ़ है (फ़ा148) कि उसके लिए शरीक और औलाद ठहराते हैं। (फ़ा149) वह अ़ज़ाब (फ़ा150) और उनका क़रीन और साथी न बनाना यह दुआ़ बतरीक़े तवाज़ोअ़् व इज़्हारे अ़ब्दीयत है बावजूदेकि मालूम है कि अल्लाह तआ़ला आपको उनका क़रीन व साथी न करेगा इसी तरह अम्बिया मअ़्सूमीन इस्तिग़फ़ार किया करते हैं बावजूदेकि उन्हें अपनी मग़फ़िरत और इकरामे ख़ुदावन्दी का इल्म यक़ीनी होता है यह सब ब-तरीक़े तवाज़ोअ़्. व इज़्हारे बन्दगी है (फ़ा151) यह जवाब है उन कुफ़्फ़ार का जो अ़ज़ाबे मौऊद का इन्कार करते और उसकी हंसी उड़ाते थे उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लोगे कि अल्लाह तआ़ला उस वादा के पूरा करने पर क़ादिर है फिर वजहे इन्कार और सबबे इस्तेहज़ा क्या और अ़ज़ाब में जो ताख़ीर हो रही है उसमें अल्लाह की हिकमतें हैं कि उन में से जो ईमान लाने वाले हैं वह ईमान ले आयें और जिन की नस्लें ईमान लाने वाली हैं उन से वह नस्लें पैदा हो लें (फ़ा152) इस जुमलए जमीला के माना बहुत वसीअ़् हैं इसके यह माना भी हैं कि तौहीद जो आला बेहतरी है उससे शिर्क की बुराई को दफ़ा फ़रमाये और यह भी कि ताअ़त व तक़्वा को रिवाज देकर मअ़्सियत और गुनाह की बुराई दफ़ा कीजिये और यह भी कि अपने मकारिमे अख़्लाक़ से ख़ताकारों पर इस तरह अ़फ़्व

व रहमत फ़रमाए जिससे दीन में कोई सुस्ती न हो। (फ़ा153) अल्लाह और उसके रसूल की शान में तो हम उसका बदला देंगे। (फ़ा154) जिन से वह लोगों को फ़रेब देकर मआ़सी और गुनाहों में मुब्तला करते हैं। (फ़ा155) यानी काफ़िर वक़्ते मौत तक तो अपने कुफ़्र व सरकशी और ख़ुदा और रसूल की तकज़ीब और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर मुसिर रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उसको जहन्नम में उसका जो मक़ाम है दिखाया जाता है और जन्नत का वह मक़ाम भी दिखाया जाता है कि अगर वह ईमान लाता तो यह मक़ाम उसे दिया जाता (फ़ा156) दुनिया की तरफ़ (फ़ा157) और आमाले नेक बजा लाकर अपनी तक़सीरात का तदारुक करूं इस पर उसको फ़रमाया जाएगा। (फ़ा158) हसरत व नदामत से यह होने वाली नहीं और इसका कुछ फ़ाइदा नहीं जो (फ़ा159) उन्हें दुनिया की तरफ़ वापस होने से मानेअ़ है और वह मौत है (ख़ाज़िन) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि बरज़ख़ वक़्ते मौत से वक़्ते बअ़्स तक की मुद्दत को कहते हैं। (फ़ा160) पहली मर्तबा जिसको नफ़ख़ए ऊला कहते हैं जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है।

(बक़िया सफ़हा 568 का) बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं। (115) (फ़ा176) तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह कोई मअ़बूद नहीं सिवा उसके इ़ज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक।(116) और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे जिसकी उसके पास कोई सनद नहीं (फ़ा177) तो उसका ह़िसाब उसके रब के यहां है बेशक काफ़िरों का छुटकारा नहीं। (117) और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे (फ़ा178) और रहम फ़रमा और तू सबसे बरतर रहम करने वाला।(118) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा161) जिन पर दुनियामें फ़ख़्र किया करते थे और आपस के नसबी तअ़ल्लुक़ात मुन्क़तअ़ हो जायेंगे और क़राबत की मुहब्बतें बाक़ी न रहेंगी और यह हाल होगा कि आदमी अपने भाई और मां और बाप और बीबी और बेटों से भागेगा (फ़ा162) जैसे कि दुनिया में पूछते थे क्योंकि हर एक अपने ही हाल में मुब्तला होगा फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और बाद हिसाब लोग एक दूसरे का हाल दरयाफ़्त करेंगे (फ़ा163) आमाले सालेहा और नेकियों से (फ़ा164) नेकियां न होने के बाइस और वह कुफ़्फ़ार हैं। (फ़ा165) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि आग उनको भून डालेगी और ऊपर का होंट सिकुड़ कर निस्फ़ सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा दांत खुले रह जायेंगे (ख़ुदा की पनाह) और उनसे फ़रमाया जाएगा (फ़ा166) दुनिया में (फ़ा167) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे उसके बाद वह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे फिर वह परवरदिगार को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ रब हमारे हमें दोज़ख़ से निकाल और यह पुकार उनकी दुनिया से दूनी उम्र की मुद्दत तक जारी रहेगी, उसके बाद उन्हें यह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है (ख़ाज़िन) और दुनिया की उम्र कितनी है इसमें कई क़ौल हैं बाज़ ने कहा कि दुनिया की उम्र सात हज़ार बरस है बाज़ ने कहा बारह हज़ार बरस बाज़ ने कहा तीन लाख साठ बरस वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम (तज़किरा क़ुर्तबी) (फ़ा168) अब उनकी उम्मीदें मुन्क़तअ़ हो जायेंगी और यह अहले जहन्नम का आख़िर कलाम होगा फिर उसके बाद उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीख़ते डकराते भोंकते रहेंगे। (फ़ा169) **शाने नुज़ूलः** यह आयतें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुईं जो हज़रत बिलाल व हज़रत अ़म्मार व हज़रत सुहैब व हज़रत ख़ब्बाब वग़ैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़ुक़रा असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तमस्ख़ुर करते थे। (फ़ा170) यानी उनके साथ तमस्ख़ुर करने में इतने मश्ग़ूल हुए कि। (फ़ा171) अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से (फ़ा172) यानी दुनिया में और क़ब्र में (फ़ा173) यह जवाब इस वजह से देंगे कि उस दिन की दहशत और अ़ज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुनिया में रहने की मुद्दत याद न रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा इसी लिये कहेंगे (फ़ा174) यानी उन मलाइका से जिनको तूने बन्दों की उम्रें और उनके आमाल लिखने पर मामूर किया उस पर अल्लाह तआ़ला ने (फ़ा175) ब-निस्बत आख़िरत के। (फ़ा176) और आख़िरत में जज़ा के लिए उठना नहीं बल्कि तुम्हें इबादत के लिए पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी तरफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आमाल की जज़ा दें (फ़ा177) यानी ग़ैरुल्लाह की परस्तिश महज़ बातिल बे सनद है (फ़ा178) ईमान वालों को।

(बक़िया सफ़हा 569 का) उसके सौ कोड़े लगाओ यह हदे हुर ग़ैर मुहसिन की है क्योंकि हुर मुहसिन का हुक्म यह है कि उसको रजम किया जाये जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद है कि माइज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बहुक्मे नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रजम किया गया और मुहसिन वह आज़ाद मुसलमान है जो मुकल्लफ़ हो और निकाहे सहीह के साथ सुहबत कर चुका हो ख़्वाह एक ही मर्तबा ऐसे शख़्स से ज़िना साबित हो तो रजम किया जायेगा और अगर इन में से एक बात भी न हो मसलन हुर न हो या मुसलमान न हो या आक़िल बालिग़ न हो या उसने कभी अपनी बीबी के साथ सुहबत न की हो या जिसके साथ की हो उसके साथ निकाह फ़ासिद हुआ हो तो यह सब ग़ैर मुहसिन में दाख़िल हैं और उन सब का हुक्म कोड़े मारना है मसाइल मर्द को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा किया जाये और उसके तमाम कपड़े उतार दिये जायें सिवा तहबन्द के और उसके तमाम बदन पर कोड़े लगाये जायें सिवाये सर चेहरे और शर्मगाह के कोड़े इस तरह लगाये जायें कि अलम गोश्त तक न पहुंचे और कोड़ा मुतवस्सित दर्जा का हो और औरत को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा न किया जाये न उसके कपड़े उतारे जायें अलबत्ता अगर पोस्तीन या रूईदार कपड़े पहने हुए हो तो उतार दिये जायें यह हुक्म हुर और हुर्रा का है यानी आज़ाद मर्द और औरत का और बांदी ग़ुलाम की हद इससे निस्फ़ यानी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरह निसा में मज़कूर हो चुका सुबूते ज़िना

या तो चार मर्दों की गवाहियों से होता है या ज़िना करने वाले के चार मर्तबा इक़रार कर लेने से फिर भी इमाम बार बार सवाल करेगा और दरयाफ़्त करेगा कि ज़िना से क्या मुराद है कहां किया किस से किया कब किया अगर इन सब को बयान कर दिया तो ज़िना साबित होगा वरना नहीं और गवाहों को सराहतन अपना मुआइना बयान करना होगा बग़ैर इसके सुबूत न होगा लवातत ज़िना में दाख़िल नहीं लिहाज़ा इस फ़ेअ्ल से हद वाजिब नहीं होती लेकिन तअ्ज़ीर वाजिब होती है और इस तअ्ज़ीर में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के चन्द क़ौल मरवी हैं आग में जला देना ग़र्क़ कर देना बुलन्दी से गिराना और ऊपर से पत्थर बरसाना फ़ाअ़ेल व मफ़ऊल दोनों का एक ही हुक्म है। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा4) यानी हुदूद के पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत और मुतसल्लिब रहो (फ़ा5) ताकि इबरत हासिल हो (फ़ा6) क्योंकि ख़बीस का मैलान ख़बीस ही की तरफ़ होता है नेकों को ख़बीसों की तरफ़ रग़बत नहीं होती **शाने नुज़ूलः** मुहाजरीन में बाज़े बिल्कुल नादार थे न उनके पास कुछ माल था न उनको कोई अ़ज़ीज़ क़रीब था और बदकार मुशरिका औरतें दौलतमन्द और मालदार थीं यह देख कर किसी मुहाजिर को ख़्याल आया कि अगर उनसे निकाह कर लिया जाये तो उनकी दौलत काम में आयेगी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उन्होंने उसकी इजाज़त चाही इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इससे रोक दिया गया (फ़ा7) यानी बदकारों से निकाह करना (फ़ा8) इब्तेदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह करना हराम था बाद में आयत *वन्किहुल् अ-यामा मिन्कुम्* से मन्सूख़ हो गया (फ़ा9) इस आयत से चन्द मसाइल साबित हुए मसला जो शख़्स किसी पारसा मर्द या औरत को ज़िना की तोहमत लगाये और उस पर चार मुआइना के गवाह पेश न कर सके तो उस पर हद वाजिब हो जाती है अस्सी कोड़े आयत में मुहसनात का लफ़्ज़ ख़ुसूसी वाक़िआ़ के सबब से वारिद हुआ या इस लिए कि औरतों को तोहमत लगाना कसीरुलवक़ूअ़ है **मसलाः** और ऐसे लोग जो ज़िना की तोहमत में सज़ायाब हों और उन पर हद जारी हो चुकी हो मरदूदुश्शहादत हो जाते हैं कभी उनकी गवाही मक़बूल नहीं होती पारसा से मुराद वह हैं जो मुसलमान मुकल्लफ़ आज़ाद और ज़िना से पाक हों मसला ज़िना की शहादत का निसाब चार गवाह हैं **मसलाः** हद्दे क़ज़फ़ मुतालबा पर मशरूत है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वह मुतालबा न करे तो क़ाज़ी पर हद क़ायम करना लाज़िम नहीं मसला मुतालबा का हक़ उसी को है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वह ज़िन्दा हो और अगर मर गया हो तो उसके बेटे पोते को भी है **मसलाः** ग़ुलाम अपने मौला पर और बेटा बाप पर क़ज़फ़ यानी अपनी मां पर ज़िना की तोहमत लगाने का दावा नहीं कर सकता **मसलाः** क़ज़फ़ के अलफ़ाज़ यह हैं कि वह सराहतन किसी को या ज़ानी कहे या यह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उसके बाप का नाम लेकर कहे कि तू फ़लां का बेटा नहीं है या उस को ज़ानिया का बेटा कह कर पुकारे और हो उसकी मां पारसा तो ऐसा शख़्स क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत की हद आएगी **मसलाः** अगर ग़ैर मुहसन को ज़ेना की तोहमत लगाई मसलन किसी ग़ुलाम को या काफ़िर को या ऐसे शख़्स को जिसका कभी ज़ेना करना साबित हो तो उस पर हद्दे क़ज़फ़ क़ायम न होगी बल्कि उस पर तअ्ज़ीर वाजिब होगी और यह तअ्ज़ीर तीन से उन्तालीस तक हस्बे तजवीज़ हाकिमे शरअ़ को कोड़े लगाना है इसी तरह अगर किसी शख़्स ने ज़ेना के सिवा और किसी फ़ुजूर की तोहमत लगाई और पारसा मुसलमान को ऐ फ़ासिक़ ऐ काफ़िर ऐ ख़बीस ऐ चोर ऐ बदकार ऐ मुख़न्नस ऐ बद दियानत ऐ लूती ऐ ज़िन्दीक़ ऐ दय्यूस ऐ शराबी ऐ सूद ख़ार ऐ बदकार औरत के बच्चे ऐ हराम ज़ादे इस क़िस्म के अलफ़ाज़ कहे तो भी उस पर तअ्ज़ीर वाजिब होगी **मसलाः** इमाम यानी हाकिमे शरअ़ को और उस शख़्स को जिसे तोहमत लगाई गई हो सुबूत से क़बल माफ़ करने का हक़ है **मसलाः** अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि ग़ुलाम हो तो उसके चालीस कोड़े लगाये जायेंगे **मसलाः** तोहमत लगाने के जुर्म में जिसको हद लगाई गई हो उसकी गवाही किसी मुआ़मला में मोअ़्तबर नहीं चाहे वह तौबा करे लेकिन रमज़ान का चांद देखने के बाब में तौबा करने और आदिल होने की सूरत में उसका क़ौल क़बूल कर लिया जाएगा क्योंकि यह दर हक़ीक़त शहादत नहीं है इसी लिए इसमें लफ़्ज़े शहादत और निसाबे शहादत भी शर्त नहीं। (फ़ा10) अपने अहवाल व अफ़आ़ल को दुरुस्त करलें (फ़ा11) ज़िना का (फ़ा12) औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में

(बक़िया सफ़हा 570 का) पर ज़िना की हद लगाई जाएगी और अगर लेआ़न करना चाहे तो उसको चार मर्तबा अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि मर्द उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं मर्तबा यह कहना होगा अगर मर्द इस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो इतना कहने के बाद औरत से ज़िना की हद साक़ित हो जाएगी और लेआ़न के बाद क़ाज़ी के तफ़रीक़ करने से फ़ुरक़त वाक़ेअ़ होगी बग़ैर इसके नहीं और यह तफ़रीक़ तलाक़े बाइना होगी और अगर मर्द अहले शहादत में से न हो मसलन ग़ुलाम हो या काफ़िर हो या उस पर क़ज़फ़ की हद लग चुकी हो तो लेआ़न न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी और अगर मर्द अहले शहादत में से हो और औरत में यह अहलियत न हो इस तरह कि वह बांदी हो या काफ़िरा हो या उस पर क़ज़फ़ की हद लग चुकी हो या बच्ची हो या मजनूना हो या ज़ानिया हो इस सूरत में न मर्द पर हद होगी और न लेआ़न **शाने नुज़ूलः** यह आयत एक सहाबी के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औरत को ज़िना में मुब्तला देखे तो क्या करे न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फ़ुरसत है और न बग़ैर गवाही के वह यह बात कह सकता है क्योंकि उसे हद्दे क़ज़फ़ का अन्देशा है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और लेआ़न का हुक्म दिया गया। (फ़ा15) बड़े बोहतान से मुराद हज़रत उम्मुलमोमिनिन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर तोहमत लगाना है सन् 5 हिजरी में ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ज़रूरत के लिए किसी गोशा में तशरीफ़ ले गईं वहां हार आपका टूट गया उसकी तलाश में मसरूफ़ हो गईं उधर क़ाफ़िला ने

कूच किया और आप का महमिल शरीफ़ ऊँट पर कस दिया और उन्हें यही ख़्याल रहा कि उम्मुलमोमिनीन इसमें हैं क़ाफ़िला चल दिया आप आकर क़ाफ़िला की जगह बैठ गईं और आपने ख़्याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा क़ाफ़िला के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिए एक साहब रहा करते थे इस मौक़ा पर हज़रत सफ़वान इस काम पर थे जब वह आये और उन्होंने आपको देखा तो बुलन्द आवाज़ से *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पुकारा आपने कपड़े से पर्दा कर लिया उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठाई आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुंचीं मुनाफ़िक़ीन सियाह बातिन ने औहामे फ़ासिदा फैलाए और आपकी शान में बदगोई शुरू की बाज़ मुसलमान भी उनके फ़रेब में आगए और उनकी ज़बान से भी कोई कलिमए बेजा सरज़द हुआ उम्मुलमोमिनीन बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं उस ज़माना में उन्हें इत्तलाअ़ न हुई कि उनकी निस्बत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे हैं एक रोज़ उम्मे मिस्तह से उन्हें यह ख़बर मालूम हुई और उससे आपका मर्ज़ और बढ़ गया और इस सदमा में इस तरह रोईं कि आपका आंसू न थमता था और न एक लम्हा के लिए नींद आती थी इस हाल में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर वही नाज़िल हुई और हज़रत उम्मुलमोमिनीन की तहारत में यह आयतें उतरीं और आपका शरफ़ व मर्तबा अल्लाह तआ़ला ने इतना बढ़ाया कि कुरआने करीम की बहुत सी आयात में आपकी तहारत व फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई इस दौरान में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बर सरे मिम्बर बक़सम फ़रमा दिया था मुझे अपने अह्ल की पाकी व ख़ूबी बिलयक़ीन मालूम है तो जिस शख़्स ने उनके हक़ में बदगोई की है उसकी तरफ़ से मेरे पास कौन मअ़ज़रत पेश कर सकता है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ीन बिलयक़ीन झूठे हैं उम्मुलमोमिनीन बिलयक़ीन पाक हैं अल्लाह तआ़ला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जिस्मे पाक को मक्खी के बैठने से महफ़ूज़ रखा कि वह नजासतों पर बैठती है कैसे हो सकता है कि वह आपको बद औरत की सोहबत से महफ़ूज़ न रखे हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी इस तरह आपकी तहारत बयान की और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने आपका साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि उस साया पर किसी का क़दम न पड़े तो जो परवरदिगार आपके साया को महफ़ूज़ रखता है किस तरह मुमकिन है कि वह आपके अहल को महफ़ूज़ न फ़रमाए हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि एक जूँ का ख़ून लगने से परवरदिगारे आ़लम ने आपको नअ़लैन उतार देने का हुक्म दिया जो परवरदिगार आपकी नअ़लैन शरीफ़ की इतनी सी आलूदगी को गवारा न फ़रमाए मुमकिन नहीं कि वह आपके अहल की आलूदगी गवारा करे इस तरह बहुत से सहाबा और बहुत से सहाबियात ने क़समें खाईं आयत नाज़िल होने से क़बल ही हज़रत उम्मुलमोमिनीन की तरफ़ से कुलूब मुतमइन थे आयत के नुज़ूल ने उनका इज़्ज़ो शरफ़ और ज़्यादा कर दिया तो बद गोयों की बदगोई अल्लाह और उसके रसूल और सहाबए केबार के नज़दीक बातिल है और बद गोई करने वालों के लिए सख़्त तरी मुसीबत है (फ़ा16) कि अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें इस पर जज़ा देगा और हज़रत उम्मुलमोमिनीन की शान और उनकी बराअ़त ज़ाहिर फ़रमाएगा चुनान्चे इस बराअ़त में उसने अठारह आयतें नाज़िल फ़रमाईं (फ़ा17) यानी बक़द्र उसके अ़मल के कि किसी ने तूफ़ान उठाया किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़ाबनी मुवाफ़क़त की कोई हंस दिया किसी ने ख़ामोशी के साथ सुन ही लिया जिसने जो किया उसका बदला पाएगा। (फ़ा18) कि अपने दिल से यह तूफ़ान गढ़ा और उसको मशहूर करता फिरा और वह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन उबय सलूल मुनाफ़िक़ है। (फ़ा19) आख़िरत में मरवी है कि उन बोहतान लगाने वालों पर बहुक्मे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हद क़ाइम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए (फ़ा20) क्योंकि मुसलमान को यही हुक्म है कि मुसलमान के साथ नेक गुमान करने और बदगुमानी ममनूअ़ है बाज़े गुमराह बेबाक यह कह गुज़रते हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मआ़ज़ल्लाह इस मुआ़मला में बदगुमानी हो गई थी वह मुफ़्तरी कज़्ज़ाब हैं और शाने रिसालत में ऐसा कलिमा कहते हैं जो मोमिनीन के हक़ में भी लायक़ नहीं है अल्लाह तआ़ला मोमिनीन से फ़रमाता है कि तुमने नेक गुमान क्यों न किया तो कैसे मुमकिन था कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बदगुमानी करते और हुज़ूर की निस्बत बदगुमानी का लफ़्ज़ कहना बड़ी सियाह बातिनी है ख़ासकर ऐसी हालत में जबकि बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि हुज़ूर ने बक़सम फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि मेरे अहल पाक हैं जैसा कि ऊपर मज़कूर हो चुका मसला इससे मालूम हुआ कि मुसलमान पर बदगुमानी करना नाजाइज़ है और जब किसी नेक शख़्स पर तोहमत लगाई जाये तो बग़ैर सुबूत मुसलमान को उसकी मुवाफ़क़त और तस्दीक़ करना रवा नहीं (फ़ा21) बिल्कुल झूठ है बे हक़ीक़त है (फ़ा22) और तुम पर फ़ज़्लो करम मन्ज़ूर न होता जिसमें से तौबा के लिए मोहलते दुनिया भी है और आख़िरत में अफ़्व व मग़फ़िरत फ़रमाना भी (फ़ा23) और ख़्याल करते थे कि इसमें बड़ा गुनाह नहीं (फ़ा24) जुर्मे अज़ीम है

(बक़िया सफ़हा 571 का) (फ़ा34) और मन्ज़िलत वाले हैं दीन में (फ़ा35) सरवत व माल में शाने नुज़ूल यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई आपने क़सम खाई थी कि मिस्तह के साथ सुलूक न करेंगे और वह आपकी ख़ाला के बेटे थे नादार थे मुहाजिर थे बदरी थे आप ही उनका ख़र्च उठाते थे मगर चूंकि उम्मुलमोमिनीन पर तोहमत लगाने वालों के साथ उन्होंने मुवाफ़क़त की थी इस लिए आपने यह क़सम खाई इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा36) जब यह आयत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पढ़ी तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा बेशक मेरी आरज़ू है कि अल्लाह मेरी मग़फ़िरत करे और मैं मिस्तह के साथ जो सुलूक करता था उसको कभी मौक़ूफ़ न करूंगा चुनांचे आपने उस को जारी फ़रमा दिया मसला इस आयत से मालूम हुआ कि जो शख़्स किसी काम पर क़सम खाये फिर मालूम हो कि उसका करना ही बेहतर है तो चाहिए कि उस काम को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे हदीस सहीह में यही वारिद है मसला इस आयत से हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की फ़ज़ीलत साबित हुई इससे आपकी उलूए शान व मर्तबत ज़ाहिर होती है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऊलुलफ़ज़्ल फ़रमाया और।

(बक़िया सफ़्हा 572 का) किसी गुनाह पर ऐसी तग़लीज़ व तश्दीद और तकरार व ताकीद नहीं फ़रमाई गई जैसी कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के ऊपर बोहतान बांधने पर फ़रमाई गई इससे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिफ़अ़ते मन्ज़िलत ज़ाहिर होती है (फ़ा44) यानी ख़बीस के लिए ख़बीस लाइक़ है ख़बीसा औरत ख़बीस मर्द के लिए और ख़बीस मर्द ख़बीसा औरत के लिए और ख़बीस आदमी ख़बीस बातों के दरपै होता है और ख़बीस बातें ख़बीस आदमी का वतीरा होती हैं (फ़ा45) यानी पाक मर्द और औरतें जिन में से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और सफ़वान हैं (फ़ा46) तोहमत लगाने वाले ख़बीस। (फ़ा47) यानी सुथरों और सुथरियों के लिए जन्नत में इस आयत से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का कमाले फ़ज़्ल व शरफ़ साबित हुआ कि वह तय्येबा और पाक पैदा की गईं और क़ुरआने करीम में उनकी पाकी का बयान फ़रमाया गया और उन्हें मग़फ़िरत और रिज़्के करीम का वादा दिया गया हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अल्लाह तआ़ला ने बहुत ख़साइस अ़ता फ़रमाए जो आपके लिए क़ाबिले फ़ख़्र हैं उन में से बाज़ यह हैं कि जिबरीले अमीन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में एक हरीर पर आपकी तस्वीर लाए और अर्ज़ किया कि यह आपकी ज़ौजा हैं और यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आपके सिवा किसी कुंवारी (बाकरा) से निकाह न फ़रमाया और यह कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात आपकी गोद में और आपकी नौबत के दिन हुई और आप ही का हुजरए शरीफ़ा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आरामगाह और आपका रौज़ए ताहिरा हुआ और यह कि बाज़ औक़ात ऐसी हालत में हु.ज़ूर पर वही नाज़िल हुई कि हज़रत सिद्दीक़ा आपके साथ आपके लिहाफ़ में होतीं और यह कि आप हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुख़्तर हैं और यह कि आप पाक पैदा की गईं और आप से मग़फ़िरत व रिज़्के करीम का वादा फ़रमाया गया (फ़ा48) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि ग़ैर के घर में बे इजाज़त दाख़िल न हो और इजाज़त लेने का तरीक़ा भी यही है कि बुलन्द आवाज़ से सुबहानल्लाह या अल्हम्दु लिल्लाह या अल्लाहु अक्बर कहे या खकारे जिससे मकान वालों को मालूम हो कि कोई आना चाहता है या यह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है ग़ैर के घर से वह घर मुराद है जिसमें ग़ैर सुकूनत रखता हो ख़्वाह उसका मालिक हो या न हो। (फ़ा49) **मसलाः** ग़ैर के घर जाने वाले की अगर साहबे मकान से पहले ही मुलाक़ात हो जाये तो अव्वल सलाम करे फिर इजाज़त चाहे और अगर वह मकान के अन्दर हो तो सलाम के साथ इजाज़त चाहे इस तरह कि कहे अस्सलामु अलैकुम क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है हदीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर मुक़द्दम करो हज़रत अब्दुल्लाह की क़िरअत भी इसी पर दलालत करती है उनकी क़िरअत यूं है ह़त्ता तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा व तस्ताज़िनू और यह भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम करे (मदारिक कशाफ़ अहमदी) **मसलाः** अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बे पर्दगी का अन्देशा हो तो दायें या बायें जानिब खड़े होकर इजाज़त तलब करे मसला हदीस शरीफ़ में है अगर घर में मां हो जब भी इजाज़त तलब करे (मौअत्ता इमाम मालिक)। (फ़ा50) यानी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो (फ़ा51) क्योंकि मिल्के ग़ैर में तसर्रुफ़ करने के लिए उसकी रज़ा ज़रूरी है (फ़ा52) और इजाज़त तलब करने में इसरार व इलहाह न करो **मसलाः** किसी का दरवाज़ा बहुत ज़ोर से खटखटाना और शदीद आवाज़ से चीख़ना ख़ास कर उलमा और बुज़ुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना उनको ज़ोर से पुकारना मकरूह व ख़िलाफ़े अदब है (फ़ा53) मिस्ल सराय और मुसाफ़िर ख़ाने वग़ैरह के कि उसमें जाने के लिए इजाज़त हासिल करने की हाजत नहीं **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन असहाब के जवाब में नाज़िल हुई जिन्होंने आयत इस्तीज़ान यानी ऊपर वाली आयत नाज़िल होने के बाद दरयाफ़्त किया था कि मक्का मुकर्रमा और मदीना तय्येबा के दर्मियान और शाम की राह में जो मुसाफ़िर ख़ाने बने हुए हैं क्या उनमें दाख़िल होने के लिए भी इजाज़त लेना ज़रूरी है

(बक़िया सफ़्हा 573 का) का एहतेमाम रखें (फ़ा56) और ग़ैर मर्दों को न देखें हदीस शरीफ़ में है कि अज़वाजे मुतह्हरात में से बाज़ उम्महातुल मोमिनीन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में थीं उसी वक़्त इब्ने उम्मे मक्तूम आये हुज़ूर ने अज़्वाज को पर्दा का हुक्म फ़रमाया उन्होंने अ़र्ज़ किया कि वह तो नाबीना हैं फ़रमाया तुम तो नाबीना नहीं हो (तिर्मिज़ी व अबू दाऊद) इस हदीस से मालूम हुआ कि औरतों को भी नामहरम को देखना और उसके सामने होना जाइज़ नहीं। (फ़ा57) अज़्हर यह है कि यह हुक्म नमाज़ का है न नज़र का क्योंकि हुर्रा का तमाम बदन औरत है शौहर और महरम के सिवा और किसी के लिए उसके किसी हिस्सा का देखना बे ज़रूरत जाइज़ नहीं और मुआ़लेजा वग़ैरह की ज़रूरत से क़द्रे ज़रूरत जायज़ है। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा58) और उन्हीं के हुक्म हैं दादा परदादा वग़ैरह तमाम उसूल। (फ़ा59) कि वह भी महरम हो जाते हैं (फ़ा60) और उन्हीं के हुक्म में है उनकी औलाद (फ़ा61) कि वह भी महरम हो गए (फ़ा62) और उन्हीं के हुक्म में हैं चचा मामूं वग़ैरह तमाम महारिम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अबू उबैदा बिन जर्राह को लिखा था कि कुफ़्फ़ार अहले किताब की औरतों को मुसलमान औरतों के साथ हम्माम में दाख़िल होने से मना करें इससे मालूम हुआ कि मुस्लिमा औरत को काफ़िरा औरत के सामने अपना बदन खोलना जाइज़ नहीं **मसलाः** औरत अपने ग़ुलाम से भी मिस्ल अजनबी के पर्दा करे (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा63) उन पर अपना सिंगार ज़ाहिर करना ममनूअ़ नहीं और ग़ुलाम उनके हुक्म में नहीं उसको अपनी मालिका के मवाज़ेअ़ ज़ीनत को देखना जायज़ नहीं। (फ़ा64) मसलन ऐसे बूढ़े हों जिन्हें असलन शह्वत बाक़ी नहीं रही हो और हों सालेह मसला अइम्मए हनफ़िया के नज़दीक ख़स्सी और इन्नीन हुरमते नज़र में अजनबी का हुक्म रखते हैं मसला इस तरह क़बीहुल अफ़आ़ल मुख़न्नस से भी पर्दा किया जाये जैसा कि हदीसे मुस्लिम से साबित है। (फ़ा65) वह अभी नादान नाबालिग़ हैं (फ़ा66) यानी औरतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाँव इस क़दर आहिस्ता रखें कि उनके ज़ेवर की झंकार न सुनी जाये मसला

इसी लिए चाहिए कि औरतें बाजेदार झांझन न पहनें हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिनकी औरतें झांझन पहनती हों इससे समझना चाहिए कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़दमे क़बूले दुआ़ का सबब है तो ख़ास औरत की आवाज़ और उसकी बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी पर्दे की तरफ़ से बेपरवाई तबाही का सबब है (अल्लाह की पनाह) तफ़सीर अहमदी वग़ैरह (फ़ा67) ख़्वाह मर्द या औरत कुंवारे या ग़ैर कुंवारे (फ़ा68) इस ग़िना से मुराद या क़नाअ़त है कि वह बेहतरीन ग़िना है जो क़ानेअ़ को तरद्दुद से बेनियाज़ कर देता है या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिए काफ़ी हो जाये जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ है या ज़ौज व ज़ौजा के दो रिज़्क़ों का जमा हो जाना या फ़राख़ी ब-बरकते निकाह जैसा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है। (फ़ा69) हराम कारी से

(बक़िया सफ़हा 574 का) बाक़ी उसने अदा कर दिये (फ़ा73) भलाई से मुराद अमानत व दियानत और कमाई पर क़ुदरत रखना है कि वह हलाल रोज़ी से माल हासिल करके आज़ाद हो सके और मौला को माल देकर आज़ादी हासिल करने के लिए भीख न मांगता फिरे इसी लिए हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने ग़ुलाम को मुकातब करने से इन्कार फ़रमा दिया जो सिवाए भीख के कोई ज़रीआ कस्ब का न रखता था (फ़ा74) मुसलमानों को इरशाद है कि वह मुकातब ग़ुलामों को ज़कात वग़ैरह देकर मदद करें जिससे वह बदल किताबत देकर अपनी गर्दन छुड़ा सकें और आज़ाद हो सकें (फ़ा75) यानी तमअ़ में अन्धे होकर कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करें **शाने नुज़ूलः** यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो माल हासिल करने के लिए अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर करता था उन कनीज़ों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उसकी शिकायत की इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा76) और वबाले गुनाह मजबूर करने वालों पर (फ़ा77) जिन्होंने हलाल व हराम हुदूद व अहकाम सब को वाज़ेह कर दिया। (फ़ा78) नूर अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया माना यह हैं कि अल्लाह आसमान व ज़मीन का हादी है तो अहले समावात व अर्ज़ उसके नूर से हक़ की राह पाते हैं और उसकी हिदायत से गुमराही की हैरत से नजात हासिल करते हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला आसमान व ज़मीन का मुनव्वर फ़रमाने वाला है उसने आसमानों को मलाइका से और ज़मीन को अम्बिया से मुनव्वर किया (फ़ा79) अल्लाह के नूर से या तो क़ल्बे मोमिन की वह नूरानियत मुराद है जिससे वह हिदायत पाता और राहयाब होता है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह के इस नूर की मिसाल जो उसने मोमिन को अ़ता फ़रमाया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उस नूर से क़ुरआन मुराद लिया और एक तफ़सीर यह है कि इस नूर से मुराद सय्यदे कायनात अफ़ज़ले मौजूदात हज़रत रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं (फ़ा80) यह दरख़्त निहायत कसीरुलबरकत है क्योंकि उसका रौग़न जिस को ज़ेत कहते हैं निहायत साफ़ व पाकीज़ा रौशनी देता है सर में भी लगाया जाता है सालन और नान ख़ुरश की जगह रोटी से भी खाया जाता है दुनिया के और किसी तेल में यह वस्फ़ नहीं और दरख़्त ज़ैतून के पत्ते नहीं गिरते (ख़ाज़िन) (फ़ा81) बल्कि वस्त का है कि न उसे गर्मी से ज़रर पहुंचे न सर्दी से और वह निहायत अजवद व आला है और उसके फल ग़ायते एतेदाल में (फ़ा82) अपनी सफ़ा व लताफ़त के बाइस ख़ुद (फ़ा83) इस तम्सील के माना में अहले इल्म के कई क़ौल हैं एक यह कि नूर से मुराद हिदायत है और माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला की हिदायत ग़ायते ज़हूर में है कि आ़लमे महसूसात में उसकी तश्बीह ऐसे रौशनदान से हो सकती है जिस में साफ़ शफ़्फ़ाफ़ फ़ानूस हो उस फ़ानूस में ऐसा चराग़ हो जो निहायत ही बेहतर और मुसफ़्फ़ा ज़ैतून से रौशन हो कि उसकी रौशनी निहायत आला और साफ़ हो और एक क़ौल यह है कि यह तम्सील नूरे सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने कअ़ब अहबार से फ़रमाया कि इस आयत के माना बयान करो उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मिसाल बयान फ़रमाई रौशनदान (ताक़) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस क़ल्बे मुबारक और चराग़े नबुव्वत कि शजरे नबुव्वत से रौशन है और उस नूरे मुहम्मदी की रौशनी व अज़ाइत इस मर्तबए कमाल ज़हूर पर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमायें जब भी ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाये और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि रौशनदान तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सीनए मुबारक है और फ़ानूस क़ल्बे अतहर और चराग़ वह नूर जो अल्लाह तआ़ला ने उसमें रखा कि शरक़ी है न ग़रबी न यहूदी व नसरानी एक शजरए मुबारका से रौशन है वह शजर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं नूर क़ल्बे इब्राहीम पर नूरे मुहम्मदी नूर पर नूर है और मुहम्मद बिन कअ़ब क़र्ज़ी ने कहा कि रौशनदान व फ़ानूस तो हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हैं और चराग़ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और शजरए मुबारका हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कि अक्सर अम्बिया आप की नस्ल से हैं और शरक़ी व ग़रबी न होने के यह माना हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम न यहूदी थे न नसरानी क्योंकि यहूद मग़रिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और नसारा मशरिक़ की तरफ़ क़रीब है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के महासिन व कमालात नु.ज़ूले वही से क़बल ही ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जायें नूर पर नूर यह कि नबी हैं नस्ले नबी से नूरे मुहम्मदी है नूरे इब्राहीमी पर इसके इलावा और भी बहुत अक़वाल हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा84) और उनकी ताज़ीम व ततहीर लाज़िम की मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में

(बक़िया सफ़हा 575 का) सका। (फ़ा90) यानी पानी समझ कर उसकी तलाश में चला जब वहां पहुंचा तो पानी का नाम व निशान न था ऐसे ही काफ़िर अपने ख़्याल में नेकियां करता है और समझता है कि अल्लाह तआ़ला से उसका सवाब पाएगा जब अ़रसात क़ियामत में पहुंचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि अ़ज़ाबे अ़ज़ीम में गिरिफ़्तार होगा और उस वक़्त उसकी हसरत और उसका अन्दोह व ग़म इस प्यास से बदर्जहा ज़्यादा होगा (फ़ा91) आमाले कुफ़्फ़ार की मिसाल ऐसी है। (फ़ा92) समुन्दरों की गहराई में (फ़ा93) एक अंधेरा दरिया की गहराई का उस पर एक और अंधेरा मौजों के तराकुम का उस पर और अंधेरा बादलों की घिरी हुई घटा का उन अंधेरियों की शिद्दत का यह आ़लम कि जो उसमें हो वह (फ़ा94) बावजूदेकि अपना हाथ निहायत ही क़रीब और अपने जिस्म का जुज़्व है जब वह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी ऐसा ही हाल है काफ़िर का कि वह एतेक़ादे बातिल और क़ौले नाहक़ और अमले क़बीह की तारीकियों में गिरिफ़्तार है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दरिया के कुन्डे और उसकी गहराई से काफ़िर के दिल को और मौजों से जहल व शक व हैरत को जो काफ़िर के दिल पर छाए हुए हैं और बादलों से मुहर को जो उन दिलों पर है तश्बीह दी गई (फ़ा95) राहयाब वही होता है जिसको वह राह दे। (फ़ा96) जो आसमान व ज़मीन के दर्मियान में हैं।

(बक़िया सफ़हा 576 का) (फ़ा109) और सीधी राह जिस पर चलने से रज़ाए इलाही व निअ़मते आख़िरत मुयस्सर हो दीने इस्लाम है आयात का ज़िक्र फ़रमाने के बाद यह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िरक़ों में मुन्क़सिम हो गए एक वह जिन्होंने ज़ाहिर में तस्दीके हक़ की और बातिन में तकज़ीब करते रहे वह मुनाफ़िक़ हैं दूसरे वह जिन्होंने ज़ाहिर में भी तस्दीक़ की और बातिन में भी मोअ़्तक़िद रहे यह मुख़लिसीन हैं तीसरे वह जिन्होंने ज़ाहिर में भी तकज़ीब की और बातिन में भी वह कुफ़्फ़ार हैं उनका ज़िक्र बित्तरतीब फ़रमाया जाता है। (फ़ा110) और अपने क़ौल की पाबन्दी नहीं करते (फ़ा111) मुनाफ़िक़ हैं क्योंकि उनके दिल उनकी ज़बानों के मुवाफ़िक़ नहीं

(बक़िया सफ़हा 577 का) की (फ़ा114) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुवत में (फ़ा115) ऐसा तो है नहीं क्योंकि यह वह ख़ूब जानते हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़ैसला हक़ से मुतजावुज़ हो ही नहीं सकता और कोई बद दियानत आपकी अ़दालत से पराया हक़ मारने में कामयाब नहीं हो सकता इसी वजह से वह आपके फ़ैसला से एअ़्राज़ करते हैं। (फ़ा116) और उनको यह तरीक़े अदब लाज़िम है कि (फ़ा117) यानी मुनाफ़िक़ीन ने (मदारिक) (फ़ा118) कि झूठी क़सम गुनाह है (फ़ा119) ज़बानी इताअ़त और अ़मली मुख़ालफ़त उससे कुछ छुपा नहीं (फ़ा120) सच्चे दिल और सच्ची नीयत से (फ़ा121) रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की फ़रमांबरदारी से तो इसमें उनका कुछ ज़रर नहीं (फ़ा122) यानी दीन की तबलीग़ और अहकामे इलाही का पहुंचा देना उसको रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अच्छी तरह अदा कर दिया और वह अपने फ़र्ज़ से ओहदा बरआ हो चुके। (फ़ा123) यानी रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की इताअ़त व फ़रमांबरदारी (फ़ा124) चुनांचे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बहुत वाज़ेह तौर पर पहुंचा दिया (फ़ा125) **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वही नाज़िल होने से दस साल तक मक्का मुकर्रमा में मअ़ असहाब के क़ियाम फ़रमाया और कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं पर जो शबो रोज़ होती रहती थीं सब्र किया फिर बहुक्मे इलाही मदीना तय्येबा को हिजरत फ़रमाई और अन्सार के मनाज़िल को अपनी सुकूनत से सरफ़राज़ किया मगर क़ुरैश इस पर भी बाज़ न आए रोज़मर्रा उनकी तरफ़ से जंग के एलान होते और तरह तरह की धमकियां दी जातीं असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर वक़्त ख़तरे में रहते और हथियार साथ में रखते एक रोज़ एक सहाबी ने फ़रमाया कभी ऐसा भी ज़माना आएगा कि हमें अमन मुयस्सर हो और हथियारों के बार से हम सुबुकदोश हों इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा126) और बजाए कुफ़्फ़ार के तुम्हारी फ़रमांरवाई होगी हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस जिस चीज़ पर शबो रोज़ गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा।

(बक़िया सफ़हा 578 का) बरस तीन माह और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त दस साल छः माह और हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त बारह साल और हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त चार साल नौ माह और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त छः माह हुई। (ख़ाज़िन) (फ़ा130) और बांदियां **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक अन्सारी ग़ुलाम मुदलुज बिन अ़म्र को दोपहर के वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बुलाने के लिए भेजा वह ग़ुलाम वैसे ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान में चला गया जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बे तकल्लुफ़ अपने दौलत सराय में तशरीफ़ रखते थे ग़ुलाम के अचानक चले आने से आपके दिल में ख़्याल हुआ कि काश ग़ुलामों को इजाज़त लेकर मकानों में दाख़िल होने का हुक्म होता इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा131) बल्कि अभी क़रीबे बुलूग़ हैं सिन्ने बुलूग़ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नज़दीक लड़के के लिए अठारह साल और लड़की के लिए सतरह साल और आम्मा उलमा के नज़दीक लड़के और लड़की दोनों के लिए पन्द्रह साल है। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा132) यानी इन तीन वक़्तों में इजाज़त हासिल करें जिन का बयान इसी आयत में फ़रमाया जाता है। (फ़ा133) कि वह वक़्त है ख़्वाबगाहों से उठने और शब ख़्वाबी का लिबास उतार कर बेदारी के कपड़े पहनने का (फ़ा134) क़ैलूला करने के लिए और तहबन्द बांध लेते हो (फ़ा135) कि वह वक़्त है बेदारी का लिबास उतारने और ख़्वाब का लिबास पहनने का (फ़ा136) कि इन औक़ात में ख़लवत व तन्हाई होती है बदन छुपाने का बहुत एहतेमाम नहीं होता मुमकिन है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाये जिसके ज़ाहिर होने से शर्म आती है लिहाज़ा इन औक़ात में ग़ुलाम और

बच्चे भी बे इजाज़त दाख़िल न हों और इनके अलावा जवान लोग तमाम औक़ात में इजाज़त हासिल करें किसी वक़्त भी बे इजाज़त दाख़िल न हों (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा137)मसलाः यानी इन तीन वक़्तों के सिवा बाक़ी औक़ात में ग़ुलाम और बच्चे बे इजाज़त दाख़िल हो सकते हैं क्योंकि वह (फ़ा138) काम व ख़िदमत के लिए तो उन पर हर वक़्त इस्तीज़ान का लाज़िम होना सबबे हज्र होगा और शरअ़ में हज्र मदफ़ूअ़ है।(मदारिक)(फ़ा139)यानी आज़ाद (फ़ा140)तमाम औक़ात में(फ़ा141) उन से बड़े मर्दों

(बक़िया सफ़हा 579 का) है हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू और तेरा माल तेरे बाप का है इसी तरह शौहर के लिए बीवी का और बीवी के लिए शौहर का घर भी अपना ही घर है (फ़ा147) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इससे मुराद आदमी का वकील और उसका कार-परदाज़ है (फ़ा148) माना यह हैं कि इन सब लोगों के घर खाना जाइज़ है ख़्वाह वह मौजूद हों या न हों जबकि मालूम हो कि वह उससे राज़ी हैं सल्फ़ का तो यह हाल था कि आदमी अपने दोस्त के घर उसकी ग़ैबत में पहुंचता तो उसकी बांदी से उसका कीसा तलब करता और जो चहता उसमें से ले लेता जब वह दोस्त घर आता और बाँदी उसको ख़बर देती तो उस ख़ुशी में वह बाँदी को आज़ाद कर देता मगर इस ज़माना में यह फ़ैयाज़ी कहां लिहाज़ा बे इजाज़त खाना न चाहिए। (मदारिक व जलालैन) (फ़ा149) **शाने नुज़ूलः** क़बीला बनी लैस बिन अ़म्र के लोग तन्हा बग़ैर मेहमान के खाना न खाते थे कभी कभी मेहमान न मिलता तो सुबह से शाम तक खाना लिये बैठे रहते उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा150) **मसलाः** जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने अहल को सलाम करे और उन लोगों को जो मकान में हों बशर्तेकि उनके दीन में ख़लल न हो (ख़ाज़िन) मसला अगर ख़ाली मकान में दाख़िल हो जहां कोई नहीं है तो कहे अस्सलामु अ़लन्नबीय्यि व रह़्मतुल्लाहि तआ़ला व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्-सालिहीन अस्सलामु अ़ला अह्लिल् बैति व रह़्मतुल्लाहि तआ़ला व बरकातुहू हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मकान से यहां मस्जिदें मुराद हैं नख़ई ने कहा कि जब मस्जिद में कोई न हो तो कहे अस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (शिफ़ा शरीफ़) मुल्ला अ़ली क़ारी ने शरह़ शिफ़ा में लिखा कि ख़ाली मकान में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर सलाम अर्ज़ करने की वजह यह है कि अहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़दस जलवा फ़रमा होती है

(बक़िया सफ़हा 581 का) व नसारा का रद् है जो हज़रत उज़ैर व मसीह अ़लैहिमस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते हैं मआ़ज़ल्लाह (फ़ा5) इस में बुत परस्तों का रद् है जो बुतों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं। (फ़ा6) यानी बुत परस्तों ने बुतों को ख़ुदा ठहराया जो ऐसे आ़जिज़ व बे क़ुदरत हैं। (फ़ा7) यानी नज़र बिन हारिस और उसके साथी क़ुरआने करीम की निस्बत कि (फ़ा8) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (फ़ा9) और लोगों से नज़र बिन हारिस की मुराद यहूदी थे और अ़दास व यसार वग़ैरह अहले किताब।(फ़ा10)नज़र बिन हारिस वग़ैरह मुशरिकीन जो यह बेहूदा बात कहने वाले थे।(फ़ा11)वही मुशरिकीन क़ुरआने करीम की निस्बत कि यह रुस्तम व अस्फ़न्दयार वग़ैरह के क़िस्सों की तरह। (फ़ा12) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

उनके बाद वाले इससे पहले रुकूअ् में साबिक़ीन मुक़र्रबीन की दो जमाअ़तों का ज़िक्र था और इस आयत में अस्हाबे यमीन के दो गरोहों का बयान है। (फ़ा31) जिनके नामए आमाल बायें हाथों में दिये जायेंगे। (फ़ा32) उनका हाल शक़ावत में अ़जीब है उनके अ़ज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वह इस हाल में होंगे। (फ़ा33) जो निहायत तारीक व सियाह होगा। (फ़ा34) दुनिया के अन्दर। (फ़ा35) यानी शिर्क की।

(बक़िया सफ़हा 868 का) न हो न निस्फ़े मुद की मुद एक पैमाना है जिससे जौ नापे जाते हैं। **शाने नुज़ूलः** कलबी ने कहा कि यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई क्योंकि आप पहले वह शख़्स हैं जो इस्लाम लाये और पहले वह शख़्स हैं जिसने राहे खुदा में माल ख़र्च किया और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिमायत की। (फ़ा28) यानी पहले ख़र्च करने वालों से भी और फ़तह के बाद ख़र्च करने वालों से भी। (फ़ा29) अलबत्ता दर्जात में तफ़ावुत है क़ब्ल फ़तह ख़र्च करने वालों का दर्जा आला है। (फ़ा30) यानी खुश दिली के साथ राहे खुदा में ख़र्च करे इस इनफ़ाक़ को उस मुनासबत से क़र्ज़ फ़रमाया गया है कि इस पर जन्नत का वादा फ़रमाया गया है। (फ़ा31) पुलसिरात पर। (फ़ा32) यानी उनके ईमान व ताअ़त का नूर। (फ़ा33) और जन्नत की तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है।

(बक़िया सफ़हा 871 का) उमूरे ख़ैर में ख़र्च न करें और हुक़ूक़े मालिया की अदा से क़ासिर रहें। (फ़ा76) इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि यह यहूद के हाल का बयान है और बुख़्ल से मुराद उनका सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उन औसाफ़ को छुपाना है जो कुतुबे साबिक़ा में मज़कूर थे। (फ़ा77) ईमान से या माल ख़र्च करने से या खुदा और रसूल की फ़रमांबरदारी से। (फ़ा78) अहकाम व शराअ़े की बयान करने वाली। (फ़ा79) तराज़ू से मुराद अ़द्ल है माना यह हैं कि हमने अ़द्ल का हुक्म दिया और एक क़ौल यह है कि तराज़ू से वज़न का आला ही मुराद है मरवी है कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास तराज़ू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ौम को हुक्म दीजिये कि इससे वज़न करें (फ़ा80) और कोई किसी की हक़ तलफ़ी न करे (फ़ा81) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि उतारना यहां पैदा करने के माना में है मुराद यह है कि हमने लोहा पैदा किया और लोगों के लिए मुआ़विन से निकाला और उन्हें इसकी सनअ़त का इल्म दिया और यह भी मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने चार बाबरकत चीज़ें आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतारीं, लोहा, आग, पानी, नमक (फ़ा82) और निहायत क़ुव्वत कि इससे अस्लहा और आलाते जंग बनाये जाते हैं (फ़ा83) कि सनअ़तों और हिरफ़तों में वह बहुत काम आता है खुलासा यह है कि हमने रसूलों को भेजा और उनके साथ उन चीज़ों को नाज़िल फ़रमाया कि लोग हक़ व अ़द्ल का मुआमला करें (फ़ा84) यानी उसके दीन की

(बक़िया सफ़हा 872 का) कहलाता है वह ममनूअ् और नाजाइज़ है और बिदअ़ते सइया हदीस शरीफ़ में वह बताई गई है जो ख़िलाफ़े सुन्नत हो उसके निकालने से कोई सुन्नत उठ जाये इससे हज़ारहा मसाइल का फ़ैसला हो जाता है जिनमें आज कल लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए नफ़्सानी से ऐसे उमूरे ख़ैर को बिदअ़त बता कर मना करते हैं जिन से दीन की तक़वियत व ताईद होती है और मुसलमानों को उख़रवी फ़वाइद पहुंचते हैं और वह ताआ़त व इबादात में ज़ौक़ व शौक़ के साथ मश्ग़ूल रहते हैं ऐसे उमूर को बिदअ़त बताना क़ुरआन मजीद की इस आयत के सरीह ख़िलाफ़ है। (फ़ा92) जो दीन पर क़ाइम रहे थे। (फ़ा93) जिन्होंने रहबानियत को तर्क किया और दीने हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम से मुनहरिफ़ हो गए। (फ़ा94) हज़रत मूसा व हज़रत ईसा पर अ़लैहिमस्सलाम यह ख़िताब अहले किताब को है उनसे फ़रमाया जाता है। (फ़ा95) सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा96) यानी तुम्हें दूना अज्र देगा क्योंकि तुम पहली किताब और पहले नबी पर भी ईमान लाए और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और .क़ुरआन पाक पर भी (फ़ा97) सिरात पर (फ़ा98) वह उसमें से कुछ नहीं पा सकते न दूना अज्र न नूर न मग़फ़िरत क्योंकि वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान न लाये तो उनका पहले अम्बिया पर ईमान लाना भी मुफ़ीद न होगा **शाने नुज़ूलः** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई और उसमें मोमिनीन अहले किताब को सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ऊपर ईमान लाने पर दूने अज्र का वादा दिया गया तो कुफ़्फ़ार अहले किताब ने कहा कि अगर हम हुज़ूर पर ईमान लायें तो दूना अज्र मिले और अगर न लायें तो एक अज्र जब भी रहेगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उनके इस ख़्याल का अबताल कर दिया गया।

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ
مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗىِٕيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ
ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ

सूरतुल् मुजादलति

(मदनी है इसमें 22 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लती तुजा–दिलु–क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि वल्लाहु यस्मअु तहावु–रकुमा इन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर(1)अल्लज़ी–न युज़ाहिरू–न मिन्कुम् मिन् निसाइहिम् मा हुन्–न उम्महातिहिम् इन् उम्महातुहुम् इल्लल्लाई व–लद्नहुम् व इन्नहुम् ल–यक़ूलू–न मुन्करम् मिनल्क़ौलि वज़ूरन् व इन्नल्ला–ह ल–अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर(2)वल्लज़ी–न युज़ाहिरू–न मिन् निसाइहिम् सुम्–म यअ़ूदू–न लिमा क़ालू फ़–तह़रीरु र–क़–बतिम् मिन् क़ब्लि अंय्य–त–मास्सा ज़ालिकुम् तू–अ़ज़ू–न बिही वल्लाहु बिमा तअ़्मलू–न ख़बीर(3)फ़–मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु–तताबिअ़ैनि मिन् क़ब्लि अंय्य–तमास्सा फ़–मल्लम् यस्ततिअ़् फ़इत़्आमु सित्ती–न मिस्कीनन् ज़ालि–क लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तिल्–क हुदूदुल्लाहि व लिल्काफ़िरी–न अ़ज़ाबुन् अलीम(4)इन्नल् लज़ी–न युहाद्दूनल्ला–ह

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)

बेशक अल्लाह ने सुनी उसकी बात जो तुम से अपने शौहर के मुआमले में बहस करती है (फ़ा2) और अल्लाह से शिकायत करती है और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा है बेशक अल्लाह सुनता देखता है।(1) वह जो तुम में अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कह बैठते हैं (फ़ा3) वह उनकी माँयें नहीं (फ़ा4) उनकी माँयें तो वही हैं जिनसे वह पैदा हैं (फ़ा5) और वह बेशक बुरी और निरी झूठ बात कहते हैं (फ़ा6) और बेशक अल्लाह ज़रूर माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।(2) और वह जो अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कहें (फ़ा7) फिर वही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके (फ़ा8) तो उन पर लाज़िम है (फ़ा9) एक बर्दा आज़ाद करना (फ़ा10) क़ब्ल इसके कि एक दूसरे को हाथ लगायें (फ़ा11) यह है जो नसीहत तुम्हें की जाती है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(3) फिर जिसे बर्दा न मिले तो (फ़ा12) लगातार दो महीने के रोज़े (फ़ा13) क़ब्ल इसके कि एक दूसरे को हाथ लगायें (फ़ा14)फिर जिससे रोज़े भी न हो सकें(फ़ा15)तो साठ मिस्कीनों का पेट भरना (फ़ा16)यह इस लिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखो (फ़ा17) और यह अल्लाह की हदें हैं (फ़ा18) और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(4) बेशक वह जो मुख़ालफ़त करते हैं

(फ़ा1) सूरह मुजादला मदनी है इसमें तीन रुकूअ़ बाईस आयतें 475 कलिमे 1792 हरफ़ हैं। (फ़ा2) वह ख़ौला बिन्त सअ़लबा थी औस बिन सामत की बीबी शाने नुज़ूल किसी बात पर औस ने उनसे कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है यह कहने के बाद औस को नदामत हुई यह कलिमा ज़मानाए जाहिलियत में तलाक़ था औस ने कहा मेरे ख़्याल में तू मुझ पर हराम हो गई ख़ौला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत मे हाज़िर होकर तमाम वाक़िआ़त अर्ज़ किये और अर्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका मां बाप गुज़र गए उम्र ज़्यादा हो गई बच्चे छोटे छोटे हैं उनके बाप के पास छोडूं तो हलाक हो जायें अपने साथ रखूं तो भूखे मर जायें क्या सूरत है कि मेरे और मेरे शौहर के दर्मियान जुदाई न हो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तेरे बाब में मेरे पास कोई हुक्म नहीं यानी अभी तक ज़िहार के **(बक़िया सफ़हा 906 पर)**

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ
اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا
عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ؗ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ
لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ

व रसू–लहू कुबितू कमा कुबि–तल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम् बय्यिनातिन् व लिल्काफ़िरी–न अज़ाबुम् मुहीन(5)यौ–म यब्असुहुमुल्लाहु जमीअन् फ़यु–नब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू अह़साहुल्लाहु व नसूहु वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(6)अलम् त–र अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मा यकूनु मिन् नज्वा स़ला–स़तिन् इल्ला हु–व राबिअुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु–व सादिसुहुम् व ला अद्ना मिन् ज़ालि–क व ला अक्स़–र इल्ला हु–व म–अ़हुम् ऐ–न मा कानू सुम्–म यु–नब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल् क़िया–मति इन्नल्ला–ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(7)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न नुहू अ़निन् नज्वा सुम्–म यअ़ूदू–न लिमा नुहू अ़न्हु व य–तनाजौ–न बिल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व मअ़्सि–यतिर् रसूलि व इज़ा जाऊ–क ह़य्यौ–क बिमा लम् युह़य्यि–क बिहिल्लाहु व यक़ूलू–न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौला यु–अ़ज़्ज़िबु–नल्लाहु बिमा नक़ूलु ह़स्बुहुम् जहन्नमु यस्लौ–नहा फ़बिअ्सल् मस़ीर(8)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा तनाजैतुम् फ़ला त–तनाजौ बिल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व मअ़्सि–यतिर् रसूलि

अल्लाह और उसके रसूल की ज़लील किये गए जैसे उनसे अगलों को ज़िल्लत दी गई (फ़ा19) और बेशक हमने रौशन आयतें उतारीं (फ़ा20) और काफ़िरों के लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब है।(5) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा (फ़ा21) फिर उन्हें उनके कोतक जता देगा (फ़ा22) अल्लाह ने उन्हें गिन रखा है और वह भूल गए (फ़ा23) और हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(6) (रुकूअ़ 1) ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा24) जहां कहीं तीन शख़्सों की सरगोशी हो (फ़ा25) तो चौथा वह मौजूद है (फ़ा26) और पांच की (फ़ा27) तो छटा वह (फ़ा28) और न उससे कम (फ़ा29) और न उससे ज़्यादा की मगर यह कि वह उनके साथ है (फ़ा30) जहां कहीं हों फिर उन्हें क़ियामत के दिन बता देगा जो कुछ उन्होंने किया बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(7) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मशवरत से मना फ़रमाया गया था फिर वही करते हैं (फ़ा31) जिसकी मुमानअ़त हुई थी और आपस् में गुनाह और हद से बढ़ने (फ़ा32) और रसूल की नाफ़रमानी के मशवरे करते हैं (फ़ा33) और जब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा करते हैं जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे एज़ाज़ में न कहे (फ़ा34) और अपने दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अ़ज़ाब क्यों नहीं करता हमारे इस कहने पर (फ़ा35) उन्हें जहन्नम बस है उसमें धंसेंगे तो क्या ही बुरा अंजाम।(8) ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मश्वरत करो तो गुनाह और हद से बढ़ने और रसूल की नाफ़रमानी की मशवरत न करो (फ़ा36)

(फ़ा19) रसूलों की मुख़ालफ़त करने के सबब। (फ़ा20) रसूलों की सिद्क़ पर दलालत करने वाली। (फ़ा21) किसी एक को बाक़ी न छोड़ेगा (फ़ा22) रुसवा और शर्मिन्दा करने के लिए। (फ़ा23) अपने आमाल जो दुनिया में करते थे। (फ़ा24) उससे कुछ पोशीदा नहीं। (फ़ा25) और अपने राज़ आपस में गोश दर गोश कहें और अपनी मशावरत पर किसी को मुत्तलअ़् न करें। (फ़ा26) यानी अल्लाह तआ़ला उन्हें मुशाहदा करता है उनके राज़ों को जानता है। (फ़ा27) सरगोशी हो। (फ़ा28) यानी अल्लाह तआ़ला। (फ़ा29) यानी पांच और तीन से। (फ़ा30) अपने इल्म व क़ुदरत से। (फ़ा31) शाने नुज़ूलः यह आयत यहूद और मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो आपस में सरगोशियां करते और मुसलमानों की तरफ़ देखते जाते और आंखों से उनकी तरफ़ इशारे करते जाते ताकि मुसलमान समझें कि उनके ख़िलाफ़ कोई पोशीदा बात है और उससे **(बक़िया सफ़हा 906 पर)**

وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ
صَدَقَةً ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ
عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۚ مَا هُمْ مِّنْكُمْ

व तनाजौ बिल्बिर्रि वत्तक़्वा वत्तकु–लाहल् लज़ी इलैहि तुह्शरून(9)इन्नमन्नज्वा मिनश्शैतानि लियह्–ज़ुनल् लज़ी–न आ–मनू व लै–स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बिइ–ज़्निल्लाहि व अ़–लल्लाहि फ़ल्य–तवक्कलिल् मुअ्मिनून(10)या अय्युहल्–लज़ी–न आ–मनू इज़ा क़ी–ल लकुम् त–फ़स्सहू. फ़िल्–जालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहिल्लाहु लकुम् व इज़ा क़ी–लन्शुज़ू. फ़न्शुज़ू यर्–फ़अ़िल्लाहुल् लज़ी–न आ–मनू मिन्कुम् वल्लज़ी–न ऊतुलअ़िल्–म द–रजातिन् वल्लाहु बिमा तअ़्–मलू–न ख़बीर(11) या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा नाजैतुमुर् रसू–ल फ़–क़द्दिमू बै–न यदै नज्वाकुम् स–द–क़–तन् ज़ालि–क ख़ैरुल् लकुम् व अत्हरु फ़इल्लम् तजिदू फ़इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(12)अ–अश्फ़क़्तुम् अन् तु–क़द्–दिमू बै–न यदै नज्वाकुम् स–दक़ातिन् फ़इज् लम् तफ़्अ़लू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ़–अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व अतीअुल्ला–ह व रसू–लहू वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ़्–मलून(13)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् मा हुम् मिन्कुम्

और नेकी और परहेज़गारी की मशवरत करो और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ उठाए जाओगे।(9) वह मशवरत तो शैतान ही की तरफ़ से है (फ़ा37) इस लिए कि ईमान वालों को रंज दे और वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता बे हुक्मे खुदा के और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।(10) (फ़ा38) ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए मजलिसों में जगह दो तो जगह दो अल्लाह तुम्हें जगह देगा (फ़ा39) और जब कहा जाए उठ खड़े हो (फ़ा40) तो उठ खड़े हो अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उनके जिनको इल्म दिया गया (फ़ा41) दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(11) ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो (फ़ा42) यह तुम्हारे लिए बेहतर और बहुत सुथरा है फिर अगर तुम्हें मक़दूर न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(12) क्या तुम इससे डरे कि तुम अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़े दो (फ़ा43) फिर जब तुम ने यह न किया और अल्लाह ने अपनी मेहर से तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई (फ़ा44) तो नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमांबरदार रहो और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।(13) (रुकूअ़ 2) क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है (फ़ा45) वह न तुम में से

(फ़ा37) जिसमें गुनाह और हद से बढ़ना और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रमानी हो और शैतान अपने दोस्तों को इस पर उभारता है। (फ़ा38) कि अल्लाह पर भरोसा करने वाला टोटे में नहीं रहता। (फ़ा39) शाने नुज़ूलः नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बदर में हाज़िर होने वाले असहाब की इज़्ज़त करते थे एक रोज़ चन्द बद्री असहाब ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि मजलिस शरीफ़ भर चुकी थी उन्होंने हुज़ूर के सामने खड़े होकर सलाम अर्ज़ किया हुज़ूर ने जवाब दिया फिर उन्होंने हाज़िरीन को सलाम किया उन्होंने जवाब दिया फिर वह इस इन्तेज़ार में खड़े रहे कि उनके लिए मजलिस में जगह की जाये मगर किसी ने जगह न दी यह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गिराँ गुज़रा तो हुज़ूर ने अपने क़रीब वालों को उठा कर उनके लिए जगह की उठने वालों को उठना शाक़ हुआ इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा40) नमाज़ के या जिहाद के या और किसी नेक काम के लिए और इसी में दाख़िल है ताज़ीम ज़िक्रे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए खड़ा होना (फ़ा41) अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त के बाइस (फ़ा42) कि इसमें बारयाबी बारगाहे रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम और फ़ुक़रा का नफ़ा है **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बारगाह में जब अग़निया ने अर्ज़ व मअ़रूज़ का सिलसिला **(बक़िया सफ़हा 906 पर)**

وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ أُولَٰئِكَ حِزْبُ
الشَّيْطَانِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾
لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ
الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

व ला मिन्हुम् व यह्लिफ़ू–न अ़लल्कज़िबि व हुम् यअ्–लमून(14)अ–अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् इन्नहुम् सा–अ मा कानू यअ्–मलून(15)इत्त–ख़ज़ू ऐमा–नहुम् जुन्नतन् फ़–स़द्दू अ़न् सबी–लिल्लाहि फ़–लहुम् अ़ज़ाबुम् मुहीन(16)लन् तुग़्नि–य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् उलाइ–क अस़्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(17)यौ–म यब्–असुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़–यह्लिफ़ू–न लहू कमा यह्लिफ़ू–न लकुम् व यह्सबू–न अन्नहुम् अ़ला शैइन् अला इन्नहुम् हुमुल् काज़िबून(18)इस्तह्व–ज़ अ़लैहिमुश्–शैत़ानु फ़–अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि उलाइ–क हिज़्बुश् शैत़ानि अला इन्–न हिज़्बश्शैत़ानि हुमुल् ख़ासिरून(19)इन्नल्लज़ी–न युहाद्दू–नल्ला–ह व रसू–लहू उलाइ–क फ़िल् अज़ल्लीन(20)क–त–बल्लाहु ल–अग़्लिबन्–न अना व रुसुली इन्नल्ला–ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़(21)ला तजिदु क़ौमंय्युअ्मिनू–न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि युवाद्दू–न मन् हाद्दल्ला–ह व रसू–लहू व लौ कानू आबा–अहुम् औ अब्ना–अहुम् औ इख़्वा–नहुम् औ अ़शी–र–तहुम् उलाइ–क क–त–ब फ़ी क़ुलूबिहिमुल् ईमा–न व अय्य–दहुम् बिरूहिम् मिन्हु व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु उलाइ–क हिज़्बुल्लाहि अला इन्–न हिज़्बल्लाहि हुमुल् मुफ़्लिहून(22)

न उनमें से (फ़ा46) वह दानिस्ता झूठी क़सम खाते हैं।(14) (फ़ा47) अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है बेशक वह बहुत ही बुरे काम करते हैं।(15) उन्होंने अपनी क़समों को (फ़ा48) ढाल बना लिया है (फ़ा49) तो अल्लाह की राह से रोका (फ़ा50) तो उनके लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब है।(16) (फ़ा51) उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न देंगे (फ़ा52) वह दोज़ख़ी हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना।(17) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा तो उस के हुजूर भी ऐसे ही क़समें खायेंगे जैसी तुम्हारे सामने खा रहे हैं (फ़ा53) और वह यह समझते हैं कि उन्होंने कुछ किया (फ़ा54) सुनते हो बेशक वही झूठे हैं।(18) (फ़ा55) उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुला दी वह शैतान के गरोह हैं सुनता है बेशक शैतान ही का गरोह हार में है।(19) (फ़ा56) बेशक वह जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वह सब से ज़्यादा ज़लीलों में हैं।(20) अल्लाह लिख चुका (फ़ा57) कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊँगा और मेरे रसूल (फ़ा58) बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला इज़्ज़त वाला है।(21) तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालफ़त की (फ़ा59) अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले हों (फ़ा60) यह हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की (फ़ा61) और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहें अल्लाह उनसे राज़ी (फ़ा62) और वह अल्लाह से राज़ी (फ़ा63) यह अल्लाह की जमाअ़त है सुनता है अल्लाह ही की जमाअ़त कामयाब है।(22) (रुकूअ़ 3)

(फ़ा46) यानी न मुसलमान न यहूदी बल्कि मुनाफ़िक़ हैं मुज़बज़ब (फ़ा47) शाने नुज़ूलः यह आयत **(बक़िया सफ़हा 907 पर)**

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ

يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ○ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۗ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ○ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ

يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ○ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ○ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

सूरतुल्-हश्रि

(मदनी है इसमें 24 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(1) हुवल्लज़ी अख़्-र-जल् लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल् किताबि मिन् दियारिहिम् लि-य अव्वलिल् ह़श्रि मा ज़-नन्तुम् अंय्यख़्रुजू व ज़न्नू अन्नहुम् मा नि-अ़तुहुम् हुसूनुहुम् मि-नल्लाहि फ़-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यह्-तसिबू व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्रुअ़्-ब युख़्रिबू-न बुयू-तहुम् बिऐदीहिम् व ऐदिल् मुअ्मिनी-न फ़अ्-तबिरू या उलिल् अब्सार(2)व लौला अन् क-त-बल्लाहु अ़लैहिमुल् जला-अ ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति अ़ज़ाबुन्नार(3)ज़ालि-क बिअन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसू-लहू व मंय्युशाक़्क़िल्ला-ह फ़इन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़िक़ाब(4)मा क़-तअ़्तुम् मिंल्ली-नतिन् औ त-रक्तुमूहा क़ाइ-म-तन् अ़ला उसूलिहा फ़बिइज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल् फ़ासिक़ीन(5)व मा अफ़ाअल्लाहु अ़ला रसूलिही

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(1) (फ़ा2) वही है जिसने उन काफ़िर किताबियों को (फ़ा3) उनके घरों से निकाला (फ़ा4) उनके पहले हश्र के लिए (फ़ा5) तुम्हें गुमान न था कि वह निकलेंगे (फ़ा6) और वह समझते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे तो अल्लाह का हुक्म उनके पास आया जहां से उनका गुमान भी न था (फ़ा7) और उस ने उनके दिलों में रोब डाला (फ़ा8) कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों (फ़ा9) और मुसलमानों के हाथों (फ़ा10) तो इबरत लो ऐ निगाह वालो।(2) और अगर न होता कि अल्लाह ने उन पर घर से उजड़ना लिख दिया था तो दुनिया ही में उन पर अ़ज़ाब फ़रमाता (फ़ा11) और उनके लिए (फ़ा12)आख़िरत में आग का अ़ज़ाब है।(3)यह इस लिए कि वह अल्लाह से और उसके रसूल से फटे रहे (फ़ा13)और जो अल्लाह और उसके रसूल से फटा रहे तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(4)जो दरख़्त तुम ने काटे या उनकी जड़ों पर क़ाइम छोड़ दिये यह सब अल्लाह की इजाज़त से था (फ़ा14) और इस लिए कि फ़ासिक़ों को रुसवा करे।(5) (फ़ा15) और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को

(फ़ा1) सूरह हश्र मदनी है इसमें तीन रुकूअ़ चौबीस आयतें 445 कलिमे एक हज़ार नौ सौ तेरह हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः यह सूरत बनी नुज़ैर के हक़ में नाज़िल हुई यह लोग यहूदी थे जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्येबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो उन्होंने हुज़ूर से इस शर्त पर सुलह की कि न आपके साथ होकर किसी से लड़ें न आप से जंग करें जब जंगे बद्र में इस्लाम की फ़तह हुई तो बनी नुज़ैर ने कहा यह वही नबी हैं जिनकी सिफ़त तौरेत में है फिर जब उहद में मुसलमानों की हज़ीमत की सूरत पेश आई तो यह शक में पड़े और उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हुज़ूर के नियाज़मन्दों के साथ अ़दावत का इज़्हार किया और जो मुआ़हिदा किया था वह तोड़ दिया और उनका एक सरदार कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सवारियों को साथ लेकर मक्का मुकर्रमा पहुंचा और कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के पर्दे थाम कर क़ुरैश के सरदारों से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ मुआ़हिदा किया **(बक़िया सफ़हा 907 पर)**

مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ
الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَیْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا
نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٧ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ
فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩ وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ

मिन्हुम् फ़मा औ जफ़्तुम् अ़लैहि मिन् ख़ैलिंव् व ला रिकाबिंव् व लाकिन्नल्ला–ह युसल्लितु रुसु–लहू अ़ला मंय्यशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(6)मा अफ़ा–अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल्–क़ुरा फ़लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्–यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि कै ला यकू–न दू–ल–तम् बैनल् अग़्नियाइ मिन्कुम् व मा आताकुमुर् रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू वत्तक़ुल्ला–ह इन्नल्ला–ह शदीदुल् अ़िक़ाब(7)लिल्फ़ु–क़राइल् मुहाजिरी–नल्लज़ी–न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वा–लिहिम् यब्तग़ू–न फ़ज़्लम् मिनल्लाहि व रिज़्वानंव् व यन्सुरू–नल्ला–ह व रसू–लहू उलाइ–क हुमुस्सादिक़ू–न(8)वल्लज़ी–न त–बव्–व उद्दा–र वल्ईमा–न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू–न मन् हा–ज–र इलैहिम् वला यजिदू–न फ़ी सुदूरिहिम् हा–ज–तम् मिम्मा ऊतू व युअसिरू–न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व लौ का–न बिहिम् ख़सा–सतुन् व मंय्यू–क़ शुह्–ह नफ़्सिही फ़उलाइ–क हुमुल्मुफ़्–लिहू–न(9)वल्लज़ी–न जाऊ

उनसे (फ़ा16) तो तुमने उन पर न अपने घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट (फ़ा17) हां अल्लाह अपने रसूलों के क़ाबू में दे देता है जिसे चाहे (फ़ा18) और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(6) जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर वालों से (फ़ा19) वह अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों (फ़ा20) और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए कि तुम्हारे अग़निया का माल न हो जाये (फ़ा21) और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमायें वह लो(फ़ा22)और जिस से मना फ़रमायें बाज़ रहो और अल्लाह से डरो (फ़ा23) बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(7) (फ़ा24) उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिए जो अपने घरों और मालों से निकाले गए (फ़ा25) अल्लाह का फ़ज़्ल (फ़ा26) और उसकी रज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल की मदद करते (फ़ा27) वही सच्चे हैं।(8) (फ़ा28) और जिन्होंने पहले से (फ़ा29) इस शहर (फ़ा30) और ईमान में घर बना लिया (फ़ा31) दोस्त रखते हैं उन्हें जो उनकी तरफ़ हिजरत करके गए (फ़ा32) और अपने दिलों में कोई हाजत नहीं पाते(फ़ा33)उस चीज़ की जो दिये गए (फ़ा34) और अपनी जानों पर उनको तरजीह देते हैं (फ़ा35) अगरचे उन्हें शदीद मोहताजी हो (फ़ा36) और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया (फ़ा37) तो वही कामयाब हैं।(9) और वह जो उनके

(फ़ा16) यानी यहूद बनी नुज़ैर से (फ़ा17) यानी उसके लिए तुम्हें मशक़्क़त या कोफ़्त उठाना नहीं पड़ी सिर्फ़ दो मील का फ़ासला था सब लोग प्यादा पा चले गए सिर्फ़ रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सवार हुए। (फ़ा18) अपने दुश्मनों में से मुराद यह है कि बनी नुज़ैर से जो ग़नीमतें हासिल हुईं उनके लिए मुसलमानों को जंग करना नहीं पड़ी अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उन पर मुसल्लत कर दिया तो यह माल हुज़ूर की मर्ज़ी पर है जहां चाहें ख़र्च करें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह माल मुहाजिरीन पर तक़सीम कर दिया और अन्सार में से सिर्फ़ तीन साहबे हाजत लोगों को दिया और वह अबू दोजाना समाक बिन ख़रशा और सहल बिन हनीफ़ और हारिस बिन सम्मा हैं। (फ़ा19) पहली आयत में ग़नीमत का जो हुक्म मज़कूर हुआ इस आयत में इसी की तफ़सील है और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस क़ौल की मुख़ालफ़त की और फ़रमाया कि पहली आयत अमवाल बनी नुज़ैर के बाब में नाज़िल हुई उनको अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के लिए ख़ास किया और यह आयत हर उस शहर की ग़नीमतों के बाब में है जिसको मुसलमान अपनी क़ुव्वत से हासिल करें (मदारिक) (फ़ा20) रिश्तेदारों से मुराद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अहले क़राबत हैं यानी बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब। (फ़ा21) और ग़ुरबा और फ़ुक़रा नुक़सान में रहें जैसा कि ज़मानए जाहिलियत में दस्तूर था कि ग़नीमत में से एक चहारुम तो सरदार ले लेता था बाक़ी क़ौम के लिए छोड़ देता था उसमें से मालदार लोग बहुत **(बक़िया सफ़हा 908 पर)**

مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا وَلِاِخۡوَانِنَا الَّذِيۡنَ سَبَقُوۡنَا بِالۡاِيۡمَانِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِيۡ قُلُوۡبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۞ اَلَمۡ
تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ نَافَقُوۡا يَقُوۡلُوۡنَ لِاِخۡوَانِهِمُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَئِنۡ اُخۡرِجۡتُمۡ لَنَخۡرُجَنَّ مَعَكُمۡ وَلَا نُطِيۡعُ فِيۡكُمۡ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنۡ قُوۡتِلۡتُمۡ
لَنَنۡصُرَنَّكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَشۡهَدُ اِنَّهُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ۞ لَئِنۡ اُخۡرِجُوۡا لَا يَخۡرُجُوۡنَ مَعَهُمۡ ۚ وَلَئِنۡ قُوۡتِلُوۡا لَا يَنۡصُرُوۡنَهُمۡ ۚ وَلَئِنۡ نَّصَرُوۡهُمۡ لَيُوَلُّنَّ الۡاَدۡبَارَ ثُمَّ
لَا يُنۡصَرُوۡنَ ۞ لَاَنۡتُمۡ اَشَدُّ رَهۡبَةً فِيۡ صُدُوۡرِهِمۡ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَفۡقَهُوۡنَ ۞ لَا يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ جَمِيۡعًا اِلَّا فِيۡ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوۡ مِنۡ
وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاۡسُهُمۡ بَيۡنَهُمۡ شَدِيۡدٌ ؕ تَحۡسَبُهُمۡ جَمِيۡعًا وَّقُلُوۡبُهُمۡ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَعۡقِلُوۡنَ ۞ كَمَثَلِ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ قَرِيۡبًا ذَاقُوۡا وَبَالَ اَمۡرِهِمۡ ۚ

मिम् बअ्दिहिम् यकूलू–न रब्ब–नग़्फ़िर् लना व लिइख़्वानि–नल्लज़ी–न स–बकूना बिल्ईमानि व ला तज्–अल् फ़ी कुलूबिना ग़िल्लल् लिल्लज़ी–न आ–मनू रब्बना इन्न–क रऊफ़ुर् रहीम(10) अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ना–फ़कू यकूलू–न लिइख़्वानि–हिमुल् लज़ी–न क–फ़रू मिन् अह्लिल्किताबि लइन् उख़्रिज्तुम् ल–नख़्रुजन्–न म–अकुम् व ला नुतीअु फ़ीकुम् अ–ह्–दन् अ–ब–दंव् व इन् कूतिल्तुम् ल–नन्सुरन्नकुम् वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून(11)लइन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू–न म–अहुम् व लइन् कूतिलू ला यन्सुरू–नहुम् व लइन् न–सरूहुम् लयु–वल्लुन्नल् अद्बा–र सुम्–म ला युन्सरून(12)ल–अन्तुम् अशद्दु रह्ब–तन् फ़ी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि ज़ालि–क बि–अन्नहुम् कौमुल् ला यफ़्कहून(13)ला युक़ातिलू–नकुम् जमीअ़न् इल्ला फ़ी कुरम् मुहस्स–नतिन् औ मिंव्वराइ जुदुरिन् बअ्सुहुम् बै–नहुम् शदीदुन् तह्सबुहुम् जमीअंव् व कुलूबुहुम् शत्ता ज़ालि–क बिअन्नहुम् कौमुल् ला यअ्क़िलून(14)क–म–सलिल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाकू वबा–ल अम्रिहिम्

बाद आए (फ़ा38) अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न रख (फ़ा39) ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रहम वाला है।(10) (रुकूअ़ 4) क्या तुमने मुनाफ़िक़ों को न देखा (फ़ा40) कि अपने भाईयों काफ़िर किताबियों (फ़ा41) से कहते हैं कि अगर तुम निकाले गए (फ़ा42) तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल जायेंगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में कभी किसी की न मानेंगे (फ़ा43) और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं।(11) (फ़ा44) अगर वह निकाले गए (फ़ा45) तो यह उनके साथ न निकलेंगे और उन से लड़ाई हुई तो यह उनकी मदद न करेंगे (फ़ा46) और अगर उनकी मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर (फ़ा47) मदद न पायेंगे।(12) (फ़ा48) बेशक उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा तुम्हारा डर है (फ़ा49) यह इस लिए कि वह ना–समझ लोग हैं।(13) (फ़ा50) यह सब मिल कर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़िला बन्द शहरों में या धुस्सों के पीछे आपस में उनकी आंच सख़्त है (फ़ा51) तुम उन्हें एक जत्था समझोगे और उनके दिल अलग अलग हैं यह इस लिए कि वह बे अक़्ल लोग हैं।(14) (फ़ा52) उनकी सी कहावत जो अभी क़रीब ज़माने में उनसे पहले थे (फ़ा53) उन्होंने अपने काम का वबाल चखा (फ़ा54)

(फ़ा38) यानी मुहाजिरीन व अन्सार के इसमें क़ियामत तक पैदा होने वाले मुसलमान दाख़िल हैं। (फ़ा39) यानी असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से मसला जिसके दिल में किसी सहाबी की तरफ़ से बुग़्ज़ या कदूरत हो और वह उन के लिए दुआ़ए रहमत व इस्तिग़फ़ार न करे वह मोमिनीन के अक़साम से ख़ारिज है क्योंकि यहां मोमिनीन की तीन क़िस्में फ़रमाई गईं, मुहाजिरीन, अन्सार उनके बाद वाले जो उनके ताबेअ़ हों और उनकी तरफ़ से दिल में कोई कदूरत न रखें और उनके लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करें तो जो सहाबा से कदूरत रखे राफ़ज़ी हो या ख़ारजी वह मुसलमानों की इन तीनों क़िस्मों से ख़ारिज है हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म तो यह दिया गया कि सहाबा के लिए इस्तिग़फ़ार करें और करते हैं यह कि गालियां देते हैं। (फ़ा40) अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन अबी सलूल मुनाफ़िक़ और उसके रफ़ीक़ों को (फ़ा41) यानी यहूद बनी क़ुरैज़ा व बनी नुज़ैर (फ़ा42) मदीना शरीफ़ से (फ़ा43) यानी तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी का कहा न मानेंगे न मुसलमानों का न रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का (फ़ा44) यानी यहूद से मुनाफ़िक़ीन के यह सब वादे झूटे हैं उसके बाद अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ीन के हाल की ख़बर देता है। (फ़ा45) यानी यहूद (फ़ा46) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि यहूद निकाले गए और मुनाफ़िक़ीन उनके साथ न (बक़िया सफ़हा 908 पर)

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا
فِى النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۗ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۗ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ
الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

व लहुम् अज़ाबुन् अलीम(15)क–म–सलिश्–शैतानि इज् का–ल लिल्इन्सानिक्फुर् फ–लम्मा क–फ–र का–ल इन्नी बरीउम् मिन्–क इन्नी अख़ाफुल्ला–ह रब्बल् आ–लमीन(16)फ़का–न आक़ि–ब–तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा व ज़ालि–क जज़ाउज़्ज़ालिमीन(17)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुत् तकुल्ला–ह वल्तन्जुर् नफ्सुम् मा क़द्–द–मत् लि–ग़दिन् वत्तकुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा तअ्–मलून(18)व ला तकूनू कल्लज़ी–न नसुल्ला–ह फ़–अन्साहुम् अन्फु–सहुम् उलाइ–क हुमुल् फ़ासिकून(19)ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल् जन्नति अस्हाबुल् जन्नति हुमुल्फ़ाइज़ून(20) लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल् कुरआ–न अला ज–बलिल् ल–रऐ–तहू ख़ाशिअम् मु–त–सद्दिअम् मिन् ख़श्–यतिल्लाहि व तिल्कल् अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि ल–अल्लहुम् य–त–फ़क्करून(21)हु– वल्लाहुल् लज़ी ला इला–ह इल्ला हु–व आलिमुल्ग़ैबि वश्शहा–दति हुवर्रह्मानुर् रहीम(22)हुवल्लाहुल् लज़ी ला इला–ह इल्ला हु–व अल्मलिकुल् कुद्दूसुस्सलामुल् मुअ्मिनुल् मुहैमिनुल् अज़ीज़ुल् जब्बारुल् मु–त–कब्बिरु सुब्हा–नल्लाहि अम्मा युश्रिकून(23)हुवल्लाहुल् ख़ालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्माउल् हुस्ना यु–सब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि व हुवल्–अज़ीज़ुल् हकीम(23)

और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।(15) (फ़ा55) शैतान की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उसने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब।(16) (फ़ा56) तो उन दोनों का (फ़ा57) अंजाम यह हुआ कि वह दोनों आग में हैं हमेशा उसमें रहे और ज़ालिमों की यही सज़ा है।(17) (रुकूअ् 5) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो (फ़ा58) और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा (फ़ा59) और अल्लाह से डरो (फ़ा60) बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(18) और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे (फ़ा61) तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं (फ़ा62) वही फ़ासिक़ हैं।(19) दोज़ख़ वाले (फ़ा63) और जन्नत वाले (फ़ा64) बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे।(20) अगर हम यह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते (फ़ा65) तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुआ पाश पाश होता अल्लाह के ख़ौफ़ से (फ़ा66) और यह मिसालें लोगों के लिए हम बयान फ़रमाते हैं कि वह सोचें।(21) वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ्बूद नहीं हर निहां व अयां का जानने वाला (फ़ा67) वही है बड़ा मेहरबान रहमत वाला।(22) वही है अल्लाह जिसके सिवा कोई मअ्बूद नहीं बादशाह (फ़ा68) निहायत पाक (फ़ा69) सलामती देने वाला (फ़ा70) अमान बख़्शने वाला (फ़ा71) हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला अज़मत वाला तकब्बुर वाला (फ़ा72) अल्लाह को पाकी है उनके शिर्क से।(23) वही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला (फ़ा73) हर एक को सूरत देने वाला (फ़ा74) उसी के हैं सब अच्छे नाम (फ़ा75) उसकी पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(24) (रुकूअ् 6)

(फ़ा55) और मुनाफ़िक़ीन का यहूद बनी नुज़ैर के साथ सुलूक ऐसा है जैसे। (फ़ा56) ऐसे ही (बक़िया सफ़हा 908 पर)

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ
اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا

सूरतुल्–मुम्तह़िनति

(मदनी है इसमें 13 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया–अ तुल्कू–न इलैहिम् बिल्म–वद्दति व क़द् क–फ़रू बिमा जा–अकुम् मिनल्ह़क़्क़ि युख़्रिजू–नर् रसू–ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम् इन् कुन्तुम् ख़–रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा–अ मर्ज़ाती तुसिर्रू–न इलैहिम् बिल्म–वद्दति व अना अअ्–लमु बिमा अख़्फ़ैतुम् व मा अअ्–लन्तुम् व मंय्यफ़्–अ़ल्हु मिन्कुम् फ़–क़द् ज़ल्–ल सवाअस् सबील(1)इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ्दा–अंव् व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि–यहुम् व अल्सि–न–तहुम् बिस्सूइ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून(2)लन् तन्फ़–अ़कुम् अर्ह़ामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्–क़िया–मति यफ़्सिलु बै–नकुम् वल्लाहु बिमा तअ्–मलू–न बसीर(3)क़द् कानत् लकुम् उस्–वतुन् ह़–स–नतुन् फ़ी इब्राही–म वल्लज़ी–न म–अ़हू इज़् क़ालू

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ (फ़ा2) तुम उन्हें ख़बरें पहुंचाते हो दोस्ती से हालांकि वह मुन्किर हैं उस हक़ के जो तुम्हारे पास आया (फ़ा3) घर से जुदा करते हैं (फ़ा4) रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रब पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा चाहने को तो उनसे दोस्ती न करो तुम उन्हें ख़ुफ़िया पयामे मुहब्बत का भेजते हो और मैं ख़ूब जानता हूं जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे वह बेशक सीधी राह से बहका।(1) अगर तुम्हें पायें (फ़ा5) तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (फ़ा6) और अपनी ज़बानें (फ़ा7) बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उनकी तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ।(2) (फ़ा8) हरगिज़ काम न आयेंगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद (फ़ा9) क़ियामत के दिन तुम्हें उनसे अलग कर देगा (फ़ा10) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(3) बेशक तुम्हारे लिए अच्छी पैरवी थी (फ़ा11) इब्राहीम और उसके साथ वालों में (फ़ा12) जब उन्होंने

(फ़ा1) सूरए मुमतहिना मदनी है इसमें दो रुकूअ़ तेरह आयतें 348 कलिमे 1510 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी कुफ़्फ़ार शाने नुज़ूलः बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बांदी सारा मदीना तय्येबा में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर हुई जबकि हुज़ूर फ़तहे मक्का का सामान फ़रमा रहे थे हुज़ूर ने उससे फ़रमाया क्या तू मुसलमान होकर आई उसने कहा नहीं फ़रमाया क्या हिजरत करके आई अर्ज़ किया नहीं फ़रमाया फिर क्यों आई उसने कहा मुहताजी से तंग होकर बनी अब्दुलमुत्तलिब ने उसकी इमदाद को कपड़े बनाये और सामान दिया हातिब बिन अबी बलतआ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु उससे मिले उन्होंने उसको दस दीनार दिये एक चादर दी और एक ख़त अहले मक्का के पास उसकी मअ़रेफ़त भेजा जिसका मज़मून यह था कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तुम पर हमला का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो सारा यह ख़त लेकर रवाना हो गई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को इसकी ख़बर दी हुज़ूर ने अपने चन्द असहाब को जिनमें हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु भी थे घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ामे रौज़ा ख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औरत मिलेगी उसके पास हातिब बिन अबी बलतआ़ का ख़त है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है वह ख़त उससे ले लो और उसको छोड़ दो अगर इन्कार करे तो उसकी गर्दन मार दो **(बक़िया सफ़हा 909 पर)**

لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ
الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ

लिक़ौमिहिम् इन्ना बु–रआउ मिन्कुम् व मिम्मा तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि क–फ़रना बिकुम् व बदा बै–नना व बै–नकुमुल् अ़दा–वतु वल्बग़्ज़ाउ अ–ब–दन् ह़त्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह़्दहू इल्ला क़ौ–ल इब्राही–म लि–अबीहि ल–अस्तग़्फ़िरन्–न ल–क व मा अम्लिकु ल–क मिनल्लाहि मिन् शैइन् रब्बना अ़लै–क त–वक्कल्ना व इलै–क अनब्ना व इलैकल् मसीर(4)रब्बना ला तज्–अ़ल्ना फ़ित्–न–तल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू वग़्फ़िर् लना रब्बना इन्न–क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(5)ल–क़द् का–न लकुम् फ़ीहिम् उस्वतुन् ह़–स–नतुल् लिमन् का–न यर्जुल्ला–ह वल्यौमल् आख़ि–र व मंय्य–त–वल्–ल फ़–इन्नल्ला–ह हुवल् ग़निय्युल् ह़मीद(6)अ़–सल्लाहु अंय्यज्–अ़–ल बै–नकुम् व बै–नल्लज़ी–न आ़दैतुम् मिन्हुम् म–वद्द–तन् वल्लाहु क़दीरुन् वल्लाहु ग़फ़ूरुर् रह़ीम(7)ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी–न लम् युक़ातिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम् इन्नल्ला–ह युह़िब्बुल् मुक़्सितीन(8)इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी–न

अपनी क़ौम से कहा (फ़ा13) बेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उन से जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो हम तुम्हारे मुन्किर हुए (फ़ा14) और हम में और तुम में दुश्मनी और अ़दावत ज़ाहिर हो गई हमेशा के लिए जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़्फ़िरत चाहूंगा (फ़ा15) और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़ा का मालिक नहीं (फ़ा16) ऐ हमारे रब हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है।(4) (फ़ा17) ऐ हमारे रब हमें काफ़िरों की आज़माइश में न डाल (फ़ा18) और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(5) बेशक तुम्हारे लिए (फ़ा19) उनमें अच्छी पैरवी थी (फ़ा20) उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीदवार हो (फ़ा21) और जो मुंह फेरे (फ़ा22) तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।(6) (रुकूअ़ 7) क़रीब है कि अल्लाह तुम में और उनमें जो उन में से (फ़ा23) तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे (फ़ा24) और अल्लाह क़ादिर है (फ़ा25) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(7) अल्लाह तुम्हें उन से (फ़ा26) मना नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से न निकाला कि उनके साथ एहसान करो और उनसे इन्साफ़ का बरताव बरतो बेशक इंसाफ़ वाले अल्लाह को महबूब हैं।(8) अल्लाह तुम्हें उन्हीं से मना करता है जो तुम से

(फ़ा13) जो मुशरिक थी। (फ़ा14) और हमने तुम्हारे दीन की मुख़ालिफ़त इख़्तियार की। (फ़ा15) यह क़ाबिले इत्तेबाअ़ नहीं है क्योंकि वह एक वादा की बिना पर था और जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को ज़ाहिर हो गया कि वह कुफ़्र पर मुस्तक़िल है तो आपने उससे बेज़ारी की लिहाज़ा यह किसी के लिए जाइज़ नहीं कि अपने बे ईमान रिश्तेदार के लिए दुआ़ए मग़्फ़िरत करे। (फ़ा16) अगर तू उसकी नाफ़रमानी करे और शिर्क पर क़ायम रहे। (ख़ाज़िन) (फ़ा17) यह भी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की और उन मोमिनीन की दुआ़ है जो आपके साथ और मा क़बल इस्तिस्ना के साथ मुत्तसिल है लिहाज़ा मोमिनीन को इस दुआ़ में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का इत्तेबाअ़ करना चाहिए। (फ़ा18) उन्हें हम पर ग़लबा न दे कि वह अपने आपको हक़ पर गुमान करने लगें। (फ़ा19) ऐ उम्मते हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा20) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके साथ वालों में (फ़ा21) अल्लाह तआ़ला की रहमत व सवाब और राहते आख़िरत का तालिब हो और अ़ज़ाबे इलाही से डरे। (फ़ा22) ईमान से और कुफ़्फ़ार से दोस्ती करे (फ़ा23) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का में से (फ़ा24) इस तरह कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने ऐसा किया और बाद फ़तहे मक्का उनमें से कसीरुत्तादाद लोग ईमान ले आए और मोमिनीन के दोस्त और भाई **(बक़िया सफ़हा 909 पर)**

الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا
مَا أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ
بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

का–तलूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्रजूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ा–हरू अ़ला इख़्राजिकुम् अन् तवल्लौहुम् व मंय्य–त–वल्लहुम् फ़उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून(9)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा जा–अ कुमुल् मुअ्मिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन्–न अल्लाहु अअ्–लमु बि–ईमानिहिन्–न फ़इन् अ़लिम्तुमूहुन्–न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्–न इलल्कुफ़्फ़ारि ला हुन्–न हिल्लुल् लहुम् व ला हुम् यहिल्लू–न लहुन्–न व आतूहुम् मा अन्फ़कू व ला जुना–ह अ़लैकुम् अन् तन्किहू. हुन्–न इज़ा आतैतुमू हुन्–न उजू–रहुन्–न व ला तुम्सिकू बिअि–समिल् कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्यस्–अलू मा अन्फ़कू ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहि यह्कुमु बै–नकुम् वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(10)व इन् फ़ा–तकुम् शैउम् मिन् अज़्वाजिकुम् इलल्–कुफ़्फ़ारि फ़आ–क़ब्तुम् फ़आतुल्लज़ी–न ज़–ह–बत् अज़्वाजुहुम् मिस्–ल मा अन्फ़कू वत्तकुल्लाहल् लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून(11)या अय्युहन्न–बिय्यु इज़ा जा–अकल् मुअ्मिनातु युबायिअ्–न–क अ़ला अल्ला युश्रिक्–न बिल्लाहि शैअंव् व ला यस्रिक्–न व ला यज़्नी–न व ला यक़्तुल्–न औला–द हुन्–न व ला यअ्ती–न बिबुह्तानिंय्यफ़्तरी–नहू बै–न ऐदीहिन्–न व अर्जुलिहिन्–न व ला यअ्सी–न–क फ़ी मअ्रूफ़िन् फ़बायिअ्हुन्–न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(12)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला त–त–वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् यइसू मिनल् आख़ि–रति कमा यइसल् कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल् क़ुबूर(13)

दीन में लड़े या तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उनसे दोस्ती करो (फ़ा27) और जो उनसे दोस्ती करे तो वही सितमगार हैं।(9) ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसलमान औ़रतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आयें तो उनका इम्तेहान कर लो (फ़ा28) अल्लाह उनके ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर वह तुम्हें ईमान वालियां मालूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न यह (फ़ा29) उन्हें हलाल (फ़ा30) न वह इन्हें हलाल (फ़ा31) और उनके काफ़िर शौहरों को दे दो जो उनका ख़र्च हुआ (फ़ा32) और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उनसे निकाह कर लो (फ़ा33) जब उनके महर उन्हें दो (फ़ा34) और काफ़िरनियों के निकाह पर जमे न रहो (फ़ा35) और मांग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुआ (फ़ा36) और काफ़िर मांग लें जो उन्होंने ख़र्च किया (फ़ा37) यह अल्लाह का हुक्म है वह तुम में फ़ैसला फरमाता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(10) और अगर मुसलमानों के हाथ से कुछ उनकी औ़रतें काफ़िरों की तरफ़ निकल जायें (फ़ा38) फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो (फ़ा39) तो जिनकी औ़रतें जाती रही थीं (फ़ा40) ग़नीमत में से उन्हें उतना दे दो जो उनका ख़र्च हुआ था (फ़ा41) और अल्लाह से डरो जिस पर तुम्हें ईमान है।(11) ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों इस पर बैअ़त करने को कि अल्लाह का शरीक कुछ न ठहरायेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी (फ़ा42) और न वह बोहतान लायेंगी जिसे अपने हाथों और पाँव के दर्मियान यानी मौज़ए विलादत में उठाईं (बक़िया सफ़हा 910 पर)

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝٣ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ
اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۚ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ

सूरतुस्सफ़्फ़

(मदनी है इसमें 14 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब–ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम(1)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू लि–म तक़ूलू–न मा ला तफ़्–अ़लून(2)कबु–र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्–अ़लून(3)इन्नल्ला–ह युहिब्बुल्लज़ी–न युक़ातिलू–न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क–अन्नहुम् बुन्यानुम् मर्सूस् (4)व इज़् क़ा–ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि–म तुअ्ज़ू–ननी व क़त्तअ़लमू–न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् फ़–लम्मा ज़ागू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलू–बहुम् वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन(5)व इज़् क़ा–ल अ़ीसब्नु मर्–य–म या बनी इस्राई–ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल् लिमा बै–न य–दय्–य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि–रसूलिंय्यअ्ती मिम् बअ़्दिस्मुहू अह्मदु फ़–लम्मा जा–अहुम् बिल्बय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह्रुम् मुबीन(6)व मन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही इ़ज्ज़त व हिकमत वाला है।(1)ऐ ईमान वालो क्यों कहते हो वह जो नहीं करते।(2)(फ़ा2)कितनी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वह बात कि वह कहो जो न करो।(3)बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उसकी राह में लड़ते हैं परा बांध कर गोया वह इमारत हैं रांगा पिलाई।(4)(फ़ा3)और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यों सताते हो (फ़ा4) हालांकि तुम जानते हो (फ़ा5) कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं (फ़ा6) फिर जब वह (फ़ा7) टेढ़े हुए अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिये (फ़ा8) और अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को राह नहीं देता।(5) (फ़ा9) और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं अपने से पहली किताब तौरेत की तस्दीक़ करता हुआ (फ़ा10) और उन रसूल की बशारत सुनाता हुआ जो मेरे बाद तशरीफ़ लायेंगे उनका नाम अहमद है (फ़ा11) फिर जब अहमद उनके पास रौशन निशानियां लेकर तशरीफ़ लाए बोले यह खुला जादू है।(6) और उससे

(फ़ा1) सूरए सफ़्फ़ मक्की है और बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा व जम्हूर मुफ़स्सिरीन मदनी है इसमें दो रुकूअ़् चौदह आयतें 221 कलिमे और 900 हरफ़ हैं (फ़ा2) शाने नुज़ूलः सहाबा किराम की एक जमाअ़त गुफ़्तगूयें कर रही थी यह वह वक़्त था जब तक कि हुक्मे जिहाद नाज़िल नहीं हुआ था इस जमाअ़त में यह तज़्किरा था कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़्यादा क्या अ़मल प्यारा है हमें मालूम होता तो हम वही करते चाहे इसमें हमारे माल और हमारी जानें काम आजातीं इस पर यह आयत नाज़िल हुई इस आयत की शाने नुजूल में और भी कई क़ौल हैं मिनजुमला उनके एक यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो मुसलमानों से मदद का झूठा वादा करते थे (फ़ा3) एक से दूसरा मिला हुआ हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुआ दुश्मन के मुक़ाबिल सब के सब मिस्ल शय वाहिद के। (फ़ा4) आयात का इन्कार करके और मेरे ऊपर झूठी तोहमतें लगार कर (फ़ा5) यक़ीन के साथ। (फ़ा6) और रसूल वाजिबुत्ताज़ीम होते हैं उनकी तौक़ीर और उनका एहतेराम लाज़िम है उन्हें ईज़ा देना सख़्त हराम और इन्तेहा दर्जा की बद नसीबी है। (फ़ा7) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ईज़ा देकर राहे हक़ से मुनहरिफ़ और। (फ़ा8) उन्हें इत्तेबाअ़े हक़ की तौफ़ीक़ से महरूम करके। (फ़ा9) जो उसके इल्म में नाफ़रमान हैं इस आयत में तम्बीह है कि रसूलों को **(बक़िया सफ़्हा 911 पर)**

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔـوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ
مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰي تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ۭ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا عَلٰي عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤

अज़्–लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल् कज़ि–ब व हु–व युद्आ इलल्–इस्लामि वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्–ज़ालिमीन(7)युरीदू–न लियुत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि–अफ़्वाहिहिम् वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल् काफ़िरून(8)हुवल्लज़ी अर्स–ल रसू–लहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हि–रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुश्रिकून(9)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा–रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम(10)तुअ्मिनू–न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू–न फ़ी सबीलिल्लाहि बि–अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्–लमून (11)यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू–बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु व मसाकि–न तय्यि–ब–तन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन् ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(12)व उख़्रा तुहिब्बू–नहा नस्रुम् मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन् व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन(13)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा–ल ई़सब्नु मर्य–म लिल्ह़वारिय्यी–न मन् अन्सारी इलल्लाहि क़ालल् ह़वारिय्यू–न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ़आ–म–नत् ताइ–फ़तुम् मिम् बनी इस्राई–ल व क–फ़–रत् ताइ–फ़तुन् फ़–अय्यद्नल्लज़ी–न आ–मनू अ़ला अ़दुव्विहिम् फ़–अस्बहू ज़ाहिरीन(14)

बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा12) हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो (फ़ा13) और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता।(7) चाहते हैं कि अल्लाह का नूर (फ़ा14) अपने मुंहों से बुझा दें (फ़ा15) और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना पड़े बुरा मानें काफ़िर।(8) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे (फ़ा16) पड़े बुरा मानें मुशरिक।(9) (रुकूअ़ 9) ऐ ईमान वालो (फ़ा17) क्या मैं बता दूं वह तिजारत जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले।(10) (फ़ा18) ईमान रखो अल्लाह और उसके रसूल पर और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो यह तुम्हारे लिए बेहतर है (फ़ा19) अगर तुम जानो।(11) (फ़ा20) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवाँ और पाकीज़ा महलों में जो बसने के बाग़ों में हैं यही बड़ी कामयाबी है।(12) और एक निअ़मत तुम्हें और देगा (फ़ा21) जो तुम्हें प्यारी है अल्लाह की मदद और जल्द आने वाली फ़तह (फ़ा22) और ऐ महबूब मुसलमानों को ख़ुशी सुना दो।(13) (फ़ा23) ऐ ईमान वालो दीने ख़ुदा के मददगार हो जैसे (फ़ा24) ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा था कौन हैं जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करें हवारी बोले (फ़ा25) हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं तो बनी इसराईल से एक गरोह ईमान लाया (फ़ा26) और एक गरोह ने कुफ़्र किया (फ़ा27) तो हमने ईमान वालों को उनके दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए।(14) (फ़ा28) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा12) उसकी तरफ़ शरीक और वल्द की निस्बत करके और इसकी आयात को जादू बता कर (फ़ा13) जिसमें सआ़दते दारैन है (फ़ा14) यानी दीने बरहक़ इस्लाम (फ़ा15) क़ुरआन पाक को शेअ़्र व सेहर व कहानत बता कर (फ़ा16) चुनांचे हर एक दीन ब-इनायते इलाही इस्लाम से मग़लूब हो गया मुजाहिद से मन्क़ूल है कि जब हज़रत ईसा (बक़िया सफ़हा 911 पर)

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۗ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

सूरतुल् जुमुअ़ति

(मदनी है इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समा-वाति व मा फ़िल् अर्ज़िल् मलिकिल् कुद्दूसिल् अ़ज़ीज़िल् ह़कीम (1)हुवल्लज़ी ब-अ़-स़ फ़िल्-उम्मिय्यी-न रसूलम् मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व यु-अ़ल्लिमुहुमुल् किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम् मुबीनिंव्(2) व आ-ख़री-न मिन्हुम लम्मा यल्ह़कू बिहिम् व हुवल् अ़ज़ीजुल् ह़कीम(3)ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम(4)म-स़लुल्लज़ी-न हुम्मिलुत् तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-स़लिल् हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन् बिअ्-स म-स़लुल् क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन(5)कुल् या अय्युहल्लज़ी-न हादू इन् ज़-अ़म्तुम् अन्नकुम् औलियाउ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़-त-मन्नवुल् मौ-त इन् कुन्तुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (फ़ा2) बादशाह कमाल पाकी वाला इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।(1) वही है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा (फ़ा3) कि उन पर उसकी आयतें पढ़ते हैं (फ़ा4) और उन्हें पाक करते हैं (फ़ा5) और उन्हें किताब और उन्हें हिकमत का इल्म अ़ता फ़रमाते हैं (फ़ा6) और बेशक वह इससे पहले (फ़ा7) ज़रूर खुली गुमराही में थे।(2) (फ़ा8) और उनमें से (फ़ा9) औरों को (फ़ा10) पाक करते और इल्म अ़ता फ़रमाते हैं जो उन अगलों से न मिले (फ़ा11) और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(3) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(4) (फ़ा12) उनकी मिसाल जिन पर तौरेत रखी गई थी (फ़ा13) फिर उन्होंने उसकी हुक्म बरदारी न की (फ़ा14) गधे की मिसाल है जो पीठ पर किताबें उठाए (फ़ा15) क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुठलाईं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।(5) तुम फ़रमाओ ऐ यहूदियो अगर तुम्हें यह गुमान है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो और लोग नहीं (फ़ा16) तो मरने की आरज़ू करो (फ़ा17) अगर तुम

(फ़ा1) सूरए जुमअ़: मदनी है इस में दो रुकूअ़ ग्यारह आयतें 180 कलिमे 720 हरफ़ हैं। (फ़ा2) तस्बीह तीन तरह की है एक तस्बीहे ख़िलक़त कि हर शय की ज़ात और उसकी पैदाइश हज़रत ख़ालिके क़दीर जल्ल जलालुहू की क़ुदरत व हिकमत और उसकी वहदानियत और तन्ज़िया पर दलालत करती है दूसरी तस्बीह मअ़रेफ़त कि अल्लाह तआ़ला अपने लुत्फ़ व करम से मख़्लूक़ में अपनी मअ़रेफ़त पैदा करे तीसरी तस्बीहे ज़रूरी वह यह है कि अल्लाह तआ़ला हर एक जौहर पर अपनी तस्बीह जारी फ़रमाता है यह तस्बीहे मअ़रेफ़त पर मुरत्तब नहीं। (फ़ा3) जिसके नसब व शराफ़त को वह अच्छी तरह जानते पहचानते हैं उनका नामे पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा है सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हुज़ूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त नबी उम्मी है इसके बहुत वजूह हैं एक इनमें से यह है कि आप उम्मते उमीय्या की तरफ़ मबऊस हुए किताबे शोयाअ् में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैं उमीय्यों में एक उम्मी भेजूंगा और उस पर नबुव्वत ख़त्म कर दूंगा और एक वजह यह है कि आपकी बेअ़सत उम्मुलकुरा यानी मक्का मुकर्रमा में हुई और एक वजह यह **(बकिया सफ़हा 912 पर)**

صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا
رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ا۟نْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

सादिकीन(6)व ला य–त–मन्नौ–नहू अ–ब–दम् बिमा क़द्–द–मत् ऐदीहिम् वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्ज़ालिमीन(7)कुल् इन्नल्–मौतल् लज़ी तफ़िररू–न मिन्हु फ़–इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्–म तुरद्दू–न इला आ़लिमिल्–ग़ैबि वश्शहा–दति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(8)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा नूदि–य लिस्सलाति मिंय्यौमिल् जुमु–अ़ति फ़स्औ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल्बै–अ़ ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्–लमून(9)फ़–इज़ा क़ुज़ि–यतिस् सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला–ह कसीरल् ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (10)व इज़ा रऔ तिजा–र–तन् औ लह्व निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त–रकू–क क़ाइमन् कुल् मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुम् मिनल् लह्वि व मिनत् तिजा–रति वल्लाहु ख़ैरुर् राज़िक़ीन(11)

सच्चे हो।(6) (फ़ा18) और वह कभी उसकी आरजू न करेंगे उन कोतकों के सबब जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं (फ़ा19) और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है।(7) तुम फ़रमाओ वह मौत जिस से तुम भागते हो वह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है (फ़ा20) फिर उसकी तरफ़ फेरे जाआगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम ने किया था।(8) (रुकूअ़ 11) ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो जुमा के दिन (फ़ा21) तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो (फ़ा22) और ख़रीद फ़रोख़्त छोड़ दो (फ़ा23) यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।(9) फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो (फ़ा24) और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।(10) और जब उन्होंने कोई तिजारत या खेल देखा उसकी तरफ़ चल दिये (फ़ा25) और तुम्हें ख़ुतबे में खड़ा छोड़ गए (फ़ा26) तुम फ़रमाओ वह जो अल्लाह के पास है (फ़ा27) खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह का रिज़्क़ सब से अच्छा।(11) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा18) अपने इस दावे में (फ़ा19) यानी उस कुफ़्र व तकज़ीब के बाइस जो उन से सादिर हुई है (फ़ा20) किसी तरह उससे बच नहीं सकते। (फ़ा21) रोज़े जुमा उस दिन का नाम अरबी ज़बान में अ़रूबा था जुमा उसको इस लिए कहा जाता है कि नमाज़ के लिए जमाअ़तों का इज्तेमाअ़ होता है वजहे तस्मिया में और भी अक़वाल हैं सब से पहले जिस शख़्स ने उस दिन का नाम जुमा रखा वह कअ़ब बिन लुवी हैं पहला जुमा जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने असहाब के साथ पढ़ा असहाबे सियर का बयान है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम जब हिजरत करके मदीना तय्येबा तशरीफ़ लाये तो बारहवीं रबीउल अव्वल रोज़ दो शम्बह को चाश्त के वक़्त मक़ामे क़ुबा में इक़ामत फ़रमाई दो शम्बह सेह शम्बह चहार शम्बह पंज शम्बह यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुनियाद रखी रोज़े जुमा मदीना तय्येबा का अ़ज़्म फ़रमाया बनी सालिम बिन औफ़ के बतन वादी में जुमा का वक़्त आया उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वहां जुमा पढ़ाया और ख़ुतबा फ़रमाया जुमा का दिन सय्येदुल अय्याम है जो मोमिन इस रोज़ मरे हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला उसे शहीद का सवाब अ़ता फ़रमाता है और फ़ित्नए क़ब्र से महफ़ूज़ रखता है अज़ान से मुराद अज़ाने अव्वल है न अज़ाने सानी जो ख़ुतबा से मुत्तसिल होती है अगरचे अज़ाने अव्वल ज़माना हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु में इज़ाफ़ा की गई मगर वुजूबे सई और तर्के बैअ़ व शरा इसी से मुतअ़ल्लिक़ है (कज़ा फ़िल दुर्रे मुख़्तार) (फ़ा22) दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मक़सूद यह है कि नमाज़ के लिए तैयारी शुरू करा दे और ज़िक्रुल्लाह से जम्हूर के नज़दीक ख़ुतबा मुराद है। (फ़ा23) मसलाः इससे मालूम हुआ कि जुमा की अज़ान होते ही ख़रीद व फ़रोख़्त हराम हो जाती है और दुनिया के तमाम मशाग़िल जो ज़िक्रे इलाही से ग़फ़लत का सबब हों उसमें दाख़िल हैं अज़ान होने के बाद सब को तर्क करना लाज़िम है। मसला इस आयत से नमाज़े जुमा की फ़र्ज़ियत और बैअ़ वग़ैरह मशाग़िले दुनियविया की हुरमत और सई यानी एहतेमामे नमाज़ का वजूब साबित हुआ और ख़ुतबा भी साबित हुआ मसला जुमा मुसलमान मर्द मुकल्लफ़ आज़ाद तन्दुरुस्त मुक़ीम पर शहर में वाजिब होता है नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता सेहते जुमा के लिए सात शर्तें हैं (1) शहर जहां फ़ैसला मुक़द्दमात का इख़्तियार रखने (बक़िया सफ़हा 912 पर)

سُورَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِذَا جَاءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ○ اِتَّخَذُوْٓا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ○ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ

أَجْسَامُهُمْ ۗ وَإِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۗ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۗ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۗ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۡ أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ○ وَ

सूरतुल्–मुनाफ़िकून

(मदनी है इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा–अकल्मुनाफ़िकू–न क़ालू नशहदु इन्न–क लरसूलुल्लाहि वल्लाहु यअ्–लमु इन्न–क ल–रसूलुहू वल्लाहु यशहदु इन्नल् मुनाफ़िक़ी–न लकाज़िबून(1)इत्त–ख़ज़ू ऐमा–नहुम् जुन्नतन् फ़सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि इन्नहुम् सा–अ मा कानू यअ़्मलून(2)ज़ालि–क बि–अन्नहुम् आ–मनू सुम्–म क–फ़रू फ़तुबि–अ़ अ़ला कुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून(3)व इज़ा रऐ–तहुम् तुअ़्जिबु–क अज्सामुहुम् व इंय्यकूलू तस्मअ़् लिक़ौलिहिम् क–अन्नहुम् ख़ुशुबुम् मुसन्न–दतुन् यह्सबू–न कुल्–ल सै–हतिन् अ़लैहिम् हुमुल् अ़दुव्वु फ़ह्–ज़रहुम् क़ा–त–लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्–फ़कून(4)व

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ज़ब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं (फ़ा2) कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन अल्लाह के रसूल है और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूठे हैं।(1) (फ़ा3) और उन्होंने अपनी क़समों को ढाल ठहरा लिया (फ़ा4) तो अल्लाह की राह से रोका (फ़ा5) बेशक वह बहुत ही बुरे काम करते हैं।(2) (फ़ा6) यह इस लिए कि वह ज़बान से ईमान लाए फिर दिल से काफ़िर हुए तो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई तो अब वह कुछ नहीं समझते।(3) और जब तू उन्हें देखे (फ़ा7) उनके जिस्म तुझे भले मालूम हों और अगर बात करें तो तू उनकी बात ग़ौर से सुने (फ़ा8) गोया वह कड़ियां हैं दीवार से टिकाई हुई (फ़ा9) हर बुलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर ले जाते हैं (फ़ा10) वह दुश्मन हैं (फ़ा11) तो उनसे बचते रहो (फ़ा12) अल्लाह उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं।(4) (फ़ा13) और

(फ़ा1) सूरए मुनाफ़िकून मदनी है इस में दो रुकूअ़ ग्यारह आयतें 180 कलिमे 976 हरफ़ हैं। (फ़ा2) तो अपने ज़मीर के ख़िलाफ़। (फ़ा3) उनका बातिन ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ नहीं जो कहते हैं उसके ख़िलाफ़ एतेक़ाद रखते हैं। (फ़ा4) कि उनके ज़रीआ़ से क़त्ल व क़ैद से महफ़ूज़ रहें। (फ़ा5) लोगों को यानी जिहाद से या सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने से तरह तरह के वसवसे और शुबहे डाल कर (फ़ा6) कि बमुक़ाबला ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करते हैं। (फ़ा7) यानी मुनाफ़िक़ीन को मिस्ले अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरह के। (फ़ा8) इब्ने उबय जसीम सबीह ख़ुबरू ख़ुश बयान आदमी था और उसके साथ वाले मुनाफ़िक़ीन क़रीब क़रीब वैसे ही थे नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में जब यह लोग हाज़िर होते तो ख़ूब बातें बनाते जो सुनने वाले को अच्छी मालूम होतीं (फ़ा9) जिनमें बेजान तस्वीर की तरह न ईमान की रूह न अन्जाम सोचने वाली अक़्ल (फ़ा10) कोई किसी को पुकारता हो या अपनी गुमी चीज़ ढूंडता हो या लश्कर में किसी मक़सद के लिए कोई बात बुलन्द आवाज़ से कहें तो यह अपने ख़ुब्से नफ़्स और सूए ज़न से यही समझते हैं कि उन्हें कुछ कहा गया और उन्हें यह अन्देशा रहता है कि उनके हक़ में कोई ऐसा मज़्मून नाज़िल हुआ जिससे उनके राज़ फ़ाश हो जाएं। (फ़ा11) दिल में शदीद अ़दावत रखते हैं और कुफ़्फ़ार के पास यहां की ख़बरें पहुंचाते हैं उनके जासूस हैं (फ़ा12) और उनके ज़ाहिर हाल से धोखा न खाओ। (फ़ा13) और रौशन बुरहानें क़ाइम होने के बावजूद हक़ से मुनहरिफ़ होते हैं।

إِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ
لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝ يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَ
لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِنَ
الصَّالِحِينَ ۝ وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

इज़ा क़ी–ल लहुम् तआलौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊ–सहुम् व रऐ–तहुम् यसुद्दू–न व हुम् मुस्तक्बिरून(5)सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग़्फ़र्–त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम् लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम् इन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन(6)हुमुल्लज़ी–न यक़ूलू–न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अ़िन्–द रसूलिल्लाहि ह़त्ता यन्फ़ज़्ज़ू व लिल्लाहि ख़ज़ाइनुस् समावाति वल्अर्ज़ि व ला किन्नल् मुनाफ़िक़ी–न ला यफ़्क़हून(7)यक़ूलू–न लइर् र–जअ्ना इलल् मदी–नति लयुख़्रिजन्नल् अ–अ़ज़्ज़ु मिन्हल् अज़ल्–ल व लिल्लाहिल् अ़िज़्ज़तु व लि–रसूलिही व लिल्मुअ्मिनी–न व लाकिन्नल् मुनाफ़िक़ी–न ला यअ़्–लमून(8)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व मंय्यफ़्–अ़ल् ज़ालि–क फ़उलाइ–क हुमुल् ख़ासिरून(9)व अन्फ़िक़ू मिम् मा र–ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति–य अ–ह़–दकुमुल्मौतु फ़–यक़ू–ल रब्बि लौला अख़्ख़र्–तनी इला अ–जलिन् क़रीबिन् फ़–अस्सद्–द–क़ व अकुम् मिनस्सालिहीन(10)व लंय्यु–अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा–अ अ–जलुहा वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ़्–मलून(11)

जब उनसे कहा जाए कि आओ (फ़ा14) रसूलुल्लाह तुम्हारे लिए माफ़ी चाहें तो अपने सर घुमाते हैं और तुम उन्हें देखो कि ग़ौर करते हुए मुँह फेर लेते हैं।(5) (फ़ा15) उन पर एक सा है तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अल्लाह हरगिज़ उन्हें ना बख़्शेगा (फ़ा16) बेशक अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।(6) वही हैं जो कहते हैं कि उन पर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं यहां तक कि परेशान हो जायें और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने (फ़ा17) मगर मुनाफ़िक़ों को समझ नहीं।(7) कहते हैं हम मदीना फिर कर गए(फ़ा18) तो ज़रूर जो बड़ी इज़्ज़त वाला है वह उसमें से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है (फ़ा19) और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिए है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।(8) (फ़ा20) (रुकूअ़ 13) ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे (फ़ा21) और जो ऐसा करे (फ़ा22) तो वही लोग नुक़सान में हैं।(9) (फ़ा23) और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो (फ़ा24) क़ब्ल इसके कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यों मुहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता।(10) और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मुहलत न देगा जब उसका वादा आ जाए (फ़ा25) और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(11) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा14) माफ़ी चाहने के लिए। (फ़ा15) **शाने नुज़ूलः** ग़ज़वए मरीसीअ़ से फ़ारिग़ होकर जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सरे चाह नुज़ूल फ़रमाया तो वहां यह वाक़िआ़ पेश आया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अजीर जहजा ग़ेफ़ारी और इब्ने उबय के हलीफ़ सनान बिन दबर जोहनी के दर्मियान जंग हो गई जहजाह ने मुहाजिरीन को और सनान ने अन्सार को पुकारा उस वक़्त इब्ने उबय मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में बहुत गुस्ताख़ाना और बेहूदा बातें बकीं और यह कहा कि मदीना तय्यबा पहुंच कर हम में से इज़्ज़त वाले ज़लीलों को निकाल देंगे और अपनी क़ौम से कहने लगा कि अगर तुम उन्हें अपना जूठा खाना न दो तो यह तुम्हारी गर्दनों पर सवार न हों अब उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि यह मदीना से भाग जायें उसकी यह नाशाइस्ता गुफ़्तगू सुन कर ज़ैद बिन अरक़म को ताब न रही उन्होंने उससे फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम तू ही ज़लील है अपनी क़ौम में बुग़्ज़ डालने वाला और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु **(बक़िया सफ़हा 912 पर)**

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ○ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ○ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ○ زَعَمَ

सूरतुत्तग़ाबुनि

(मदनी है इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

यु़सब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(1)हुवल्लज़ी ख़–ल–क़कुम् फ़मिन्कुम् काफ़िरुंव् व मिन्कुम् मुअ्मिनुन् वल्लाहु बिमा तअ्मलू–न बसीर(2)ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ बिल्हक़्क़ि व सव्व–रकुम् फ़–अह्स–न सु–व–रकुम् व इलैहिल् मसीर(3)यअ्लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुसिर्रू–न व मा तुअ्लिनू–न वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(4)अ–लम् यअ्तिकुम् न–बउल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ब्लु फ़ज़ाक़ू वबा–ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(5)ज़ालि–क बि–अन्नहू कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालू अ–ब–शरुंय्यह्दू–नना फ़–क–फ़रू व त–वल्लौ वस्तग़्–नल्लाहु वल्लाहु ग़निय्युन् हमीद(6)ज़–अ–

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की तारीफ़ (फ़ा2) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।(1) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में कोई मुसलमान (फ़ा3) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(2) उसने आसमान और ज़मीन हक़ के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई (फ़ा4) और उसी की तरफ़ फिरना है।(3) (फ़ा5) जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिलों की बात जानता है।(4) क्या तुम्हें (फ़ा6) उनकी ख़बर न आई जिन्होंने तुम से पहले कुफ़्र किया (फ़ा7) और अपने काम का वबाल चखा (फ़ा8) और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(5) (फ़ा9) यह इस लिए कि उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाते (फ़ा10) तो बोले क्या आदमी हमें राह बतायेंगे (फ़ा11) तो काफ़िर हुए (फ़ा12) और फिर गए (फ़ा13) और अल्लाह ने बेनियाज़ी को काम फ़रमाया और अल्लाह बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।(6) काफ़िरों ने

(फ़ा1) सूरह तग़ाबुन अक्सर के नज़दीक मदनी है और बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मक्की है सिवाए तीन आयतों के जो *या अय्युहल्–लज़ी–न आ–मनू इन्–न मिन् अज़्वाजिकुम्* से शुरू होती हैं इस सूरत में दो रुकूअ़ अट्ठारह आयतें दो सौ इकतालीस कलिमे 1070 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अपने मुल्क में मुतसर्रिफ़ है जो चाहता है कि जैसा चाहता है करता है न कोई शरीक न साझी सब नेअ़मतें उसी की हैं। (फ़ा3) हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआ़दत व शक़ावत फ़रिश्ता बहुक्मे इलाही उसी वक़्त लिख देता है जब कि वह अपनी मां के पेट में होता है (फ़ा4) तो लाज़िम है कि तम अपनी सीरत भी अच्छी रखो। (फ़ा5) आख़िरत में। (फ़ा6) ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का। (फ़ा7) यानी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के अहवाल मालूम नहीं जिन्होंने अम्बिया की तकज़ीब की। (फ़ा8) दुनिया में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई। (फ़ा9) आख़िरत में (फ़ा10) मोअ़जेज़े दिखाते। (फ़ा11) यानी उन्होंने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और यह कमाल बे अ़क़्ली व नाफ़हमी है फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पत्थर का ख़ुदा होना तस्लीम कर लिया। (फ़ा12) रसूलों का इन्कार करके। (फ़ा13) ईमान से

الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي
أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

मल्लज़ी–न क–फ़रू अल्लंय्युब्–असू क़ुल् बला व रब्बी लतुब्असुन्–न सुम्–म लतुनब्बउन्–न
बिमा अ़मिल्तुम् व ज़ालि–क अ़लल्लाहि यसीर(7)फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी
अन्ज़ल्ना वल्लाहु बिमा तअ्–मलू–न ख़बीर(8)यौ–म यज्–मअुकुम् लियौमिल् जम्अि ज़ालि–क
यौमुत् तग़ाबुनि व मंय्युअ्मिम् बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्यु–कफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व
युदख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–बदन् जालिकल्फ़ौज़ुल्
अ़ज़ीम(9)वल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बि–आयातिना उलाइ–क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी–न
फ़ीहा व बिअ्सल्मसीर(10)मा असा–ब मिम् मुसी–बतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि व मंय्युअ्मिम्
बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (11)व अ़तीअुल्ला–ह व अतीअुर् रसू–ल
फ़इन् त–वल्लैतुम् फ़–इन्नमा अ़ला रसूलि–नल् बलागुल् मुबीन (12)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला
हु–व व अ़–लल्लाहि फ़ल्य–त–वक्कलिल् मुअ्मिनून(13)या अय्युहल्लज़ी–न

बका की वह हरगिज़ न उठाए जायेंगे तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे को तक तुम्हें जता दिये जायेंगे और यह अल्लाह को आसान है।(7) तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर पर (फ़ा14) जो हम ने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(8) जिस दिन तुम्हें इकट्ठा करेगा सब जमा होने के दिन (फ़ा15) वह दिन है हार वालों की हार खुलने का (फ़ा16) और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उसकी बुराईयां उतार देगा और उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें कि वह हमेशा उनमें रहें यही बड़ी कामयाबी है।(9) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाईं वह आग वाले हैं हमेशा उसमें रहें और क्या ही बुरा अन्जाम।(10) (रुकूअ़ 15) कोई मुसीबत नहीं पहुंचती (फ़ा17) मगर अल्लाह के हुक्म से और जो अल्लाह पर ईमान लाए (फ़ा18) अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमा देगा (फ़ा19) और अल्लाह सब कुछ जानता है।(11) और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो फिर अगर तुम मुँह फेरो (फ़ा20) तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़ सरीह पहुंचा देना है।(12) (फ़ा21) अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें।(13) ऐ ईमान वालो

(फ़ा14) नूर से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है क्योंकि इसकी बदौलत गुमराही की तारीकियां दूर होती हैं और हर शय की हक़ीक़त वाज़ेह होती है। (फ़ा15) यानी रोज़े क़ियामत जिस में सब अव्वलीन व आख़िरीन जमा होंगे (फ़ा16) यानी काफ़िरों की महरूमी ज़ाहिर होने का। (फ़ा17) मौत की या मर्ज़ की या नुक़सान माल की या और कोई। (फ़ा18) और जाने कि जो कुछ होता है अल्लाह तआ़ला की मशीयत और उसके इरादे से होता है और वक़्ते मुसीबत *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़े और अल्लाह तआ़ला की अ़ता पर शुक्र और बला पर सब्र करे। (फ़ा19) कि वह और ज़्यादा नेकियों और ताअ़तों में मश्गू.ल हो। (फ़ा20) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदारी से। (फ़ा21) चुनांचे उन्होंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया और कामिल तौर पर दीन की तबलीग़ फ़रमा दी।

(बक़िया सफ़हा 904 का) तौबा कबूल फमराने के बाद। (फ़ा24) इसमें कुफ़्फ़ार पर तअ्.रीज़ है कि वह दिन उनकी रुसवाई का होगा और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हुज़ूर के साथ वालों की इज़्ज़त का (फ़ा25) सिरात पर और जब मोमिन देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ गया (फ़ा26) यानी उसको बाक़ी रख कि दुख़ूल जन्नत तक बाक़ी रहे

اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿14﴾ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿15﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَ اسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿16﴾ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿17﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿18﴾

आ–मनू इन्–न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल् लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् व इन् तअ़्फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़–इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(14)इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्–नतुन् वल्लाहु अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम(15)फ़त्तक़ुल्ला–ह मस्त–तअ़्तुम् वस्–मअ़ू व अतीअ़ू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल् लिअन्फ़ुसिकुम् व मंय्यू–क़ शुह्–ह़ नफ़्सिही फ़उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहू.न(16) इन् तुक़्रिज़ुल्ला–ह क़र्ज़न् ह़–स–नंय्युज़ाअ़िफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् वल्लाहु शकूरुन् ह़लीम(17)आलिमुल्ग़ैबि वश्शहा–दतिल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(18)

तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं (फ़ा22) तो उन से एहतियात रखो (फ़ा23) और अगर माफ़ करो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(14) तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं (फ़ा24) और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।(15) (फ़ा25) तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके (फ़ा26) और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो (फ़ा27) और अल्लाह की राह में ख़र्च करो अपने भले को और जो अपनी जान के लालच से बचाया गया (फ़ा28) तो वही फ़लाह पाने वाले हैं।(16) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे (फ़ा29) वह तुम्हारे लिए उसके दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है।(17) हर निहां और अ़यां का जानने वाला इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला।(18) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा22) कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं। (फ़ा23) और उनके कहने में आकर नेकी से बाज़ न रहो **शाने नुज़ूलः** चन्द मुसलमानों ने मक्का मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उनकी बीबी और बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे तुम चले जाओगे हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जायेंगे यह बात उन पर असर कर गई और वह ठहर गए कुछ अर्सा बाद जब उन्होंने हिजरत की तो उन्होंने असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा कि वह दीन में बड़े माहिर और फ़क़ीह हो गए हैं यह देख कर उन्होंने अपनी बीबी बच्चों को सज़ा देने का इरादा किया और यह क़स्द किया कि उनका ख़र्च बन्द करदें क्योंकि वही लोग उन्हें हिजरत से मानेअ़ हुए थे जिसका यह नतीजा हुआ कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले असहाब इल्म व फ़िक़ह में उनसे मन्ज़िलों आगे निकल गए इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें अपनी बीबी बच्चों से दर गुज़र करने और माफ़ करने की तरग़ीब फ़रमाई गई चुनान्चे आगे इरशाद फ़रमाया जाता है। (फ़ा24) कि कभी आदमी उनकी वजह से गुनाह और मअ़सियत में मुब्तला हो जाता है और उनमें मश्ग़ूल होकर उमूरे आख़िरत के सर अंजाम से ग़ाफ़िल हो जाता है (फ़ा25) तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि अमवाल व औलाद में मश्ग़ूल होकर सवाबे अ़ज़ीम खो बैठो। (फ़ा26) यानी बक़द्र अपनी वुसअ़त व ताक़त के ताअ़त व इबादत बजा लाओ यह तफ़्सीर है इत्तक़ुल्ला–ह हक़्–क़ तुक़ातिही की। (फ़ा27) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का। (फ़ा28) और उसने अपने माल को इत्मीनान के साथ हुक्मे शरीअ़त के मुताबिक़ ख़र्च किया। (फ़ा29) यानी ख़ुश दिली से नेक नीयती के साथ माल हलाल से सदक़ा दोगे। सदक़ा देने को बराहे लुत्फ़ व करम क़र्ज़ से ताबीर फ़रमाया इसमें सदक़ा की तरग़ीब है कि सदक़ा देने वाला नक़सान में नहीं है बिलयक़ीन उसकी जज़ा पाएगा।

(बक़िया सफ़हा 900 का) वह नाशज़ा के हुक्म में है **मसलाः** जो औरत तलाक़े रजई या बाइन की इद्दत में हो उसको घर से निकलना बिल्कुल जाइज़ नहीं और जो मौत की इद्दत में हो वह हाजत पड़े तो दिन में निकल सकती है लेकिन शब गुज़ारना उसको शौहर के घर ही में ज़रूरी है। मसला जो औरत तलाक़े बाइन की इद्दत में हो उसके शौहर के दर्मियान पर्दा ज़रूरी है और ज़्यादा बेहतर यह है कि कोई और औरत उन दोनों के दर्मियान हाइल हो **मसलाः** अगर शौहर फ़ासिक़ हो या मकान बहुत तंग हो तो शौहर को उस मकान से चला जाना बेहतर है। (फ़ा6) रजअ़त का। (फ़ा7) यानी इद्दत आख़िर होने के क़रीब हो। (फ़ा8) यानी तुम्हें इख़्तियार है अगर तुम उनके साथ बहुसने मुआ़शरत व मुराफ़क़त रहना चाहो तो रजअ़त कर लो और दिल में फिर दोबारा तलाक़ देने का इरादा न रखो और अगर तुम्हें उनके साथ ख़ूबी से बस कर सकने की उम्मीद न हो तो महर वग़ैरह उनके हक़ अदा करके उनसे जुदाई कर लो और उन्हें ज़रर न पहुंचाओ इस तरह कि आख़िर इद्दत में रजअ़त कर लो फिर तलाक़ दे दो और इस तरह उन्हें उनकी इद्दत दराज़ करके परेशानी में डालो ऐसा न करो और ख़्वाह रजअ़त करो या फ़ुरक़त इख़्तियार करो दोनों सूरतों में दफ़ए तोहमत और रफ़ए निज़ाअ़ के लिए दोनों मुसलमानों को गवाह कर लेना मुस्तहब है चुनांचे इरशाद होता है

سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ

بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا

सूरतुत्तलाक़ि

(मदनी है इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु इजा तल्लक़्तुमुन् निसा–अ फ़–तल्लिकू हुन्–न लिइ़द् दतिहिन्–न व अह़्सुल् इ़द्–द–त वत्तकुल्ला–ह रब्बकुम् ला तुख़्रिजूहुन्–न मिम् बुयूतिहिन्–न व ला यख़्रुज्–न इल्ला अंय्यअ्ती–न बिफ़ाहि़–शतिम् मुबय्यि–नतिन् व तिल्–क हुदूदुल्लाहि व मंय्य–त–अ़द्–द हुदूदल्लाहि फ़–क़द् ज़–ल–म नफ़्–सहू ला तदरी ल–अ़ल्लल्ला–ह युह़्दिसु बअ़्–द ज़ालि–क अम्रा(1)फ़इज़ा ब–लग्–न अ–ज–लहुन्–न फ़–अम्सिकूहुन्–न बिमअ़्रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्–न बिमअ़्रूफ़िंव् व अश्हिदू ज़वै अ़द्लिम् मिन्कुम् व अक़ी–

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ नबी (फ़ा2) जब तुम लोग औ़रतों को तलाक़ दो तो उनकी इ़द्दत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इ़द्दत का शुमार रखो (फ़ा3) और अपने रब अल्लाह से डरो इ़द्दत में उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वह आप निकलें (फ़ा4) मगर यह कि कोई सरीह़ बे हयाई की बात लायें (फ़ा5) और यह अल्लाह की ह़दें हैं और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़ा बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया तुम्हें नहीं मालूम शायद अल्लाह इसके बाद कोई नया हुक्म भेजे।(1) (फ़ा6) तो जब वह अपनी मीआ़द तक पहुंचने को हों (फ़ा7) तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ जुदा करो (फ़ा8) और अपने में दो सिक़ह को गवाह कर लो और अल्लाह के लिए

(फ़ा1) सूरह तलाक़ मदनी है इसमें दो रुकूअ़ बारह आयतें 249 कलिमे और 1060 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अपनी उम्मत से फ़रमा दीजिये। (फ़ा3) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई उन्होंने अपनी बीबी को औरतों के अय्यामे मख़्सूसा में तलाक़ दी थी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि रजअ़त करें फिर अगर तलाक़ देना चाहें तो तुहर यानी पाकी के ज़माना में तलाक़ दें इस आयत में औरतों से मुराद मदख़ूल बिहा औरतें हैं (जो अपने शौहरों के पास गई हों) सग़ीरा हामिला और आइसा न हों (आइसा वह औरत है जिसके अय्याम बुढ़ापे की वजह से बन्द हो गए हों उनका वक़्त न रहा हो।) मसला ग़ैर मदख़ूल बिहा पर इ़द्दत नहीं है बाक़ी तीनों क़िस्म की औरतें जो ज़िक्र की गईं उन्हें अय्याम नहीं होते तो उनकी इ़द्दत हैज़ से शुमार न होगी मसला ग़ैर मदख़ूल बिहा को हैज़ में तलाक़ देना जाइज़ है आयत में जो हुक्म दिया गया उससे मुराद ऐसी मदख़ूल बिहा औरतें हैं जिनकी इ़द्दत हैज़ से शुमार की जाये उन्हें तलाक़ देना हो तो ऐसे तुहर में तलाक़ दें जिसमें उनसे जिमाअ़ न किया गया हो फिर इ़द्दत गुज़रने तक उनसे तअ़र्रुज़ न करें इसको तलाक़े अहसन कहते हैं तलाक़े हसन ग़ैर मौतूअ़ औरत यानी जिससे शौहर ने क़ुरबत न की हो उसको एक तलाक़ देना तलाक़े हसन है ख़्वाह यह तलाक़ हैज़ में हो और मौतूअ़ औरत अगर साहिबे हैज़ हो तो उसे तीन तलाक़ें ऐसे तीन तुहरों में देना जिन में उससे क़ुरबत न की हो तलाक़े हसन है और अगर मौतूअ़ साहिबे हैज़ न हो तो उसको तीन तलाक़ तीन महीनों में देना तलाक़े हसन है तलाक़ बिदई हालते हैज़ में तलाक़ देना या ऐसे तुहर में तलाक़ देना जिसमें क़ुरबत की गई हो तलाक़े बिदई है ऐसे ही एक महर में तीन या दो तलाक़ें यकबारगी या दो मर्तबा में देना तलाक़े बिदई हैं अगरचे इस तुहर में वती न की गई हो मसला तलाक़े बिदई मकरूह है मगर वाक़ेअ़ हो जाती है और ऐसी तलाक़ देने वाला गुनहगार होता है (फ़ा4) **मसलाः** औरत को इ़द्दत शौहर के घर पूरी करनी लाज़िम है न शौहर को जायज़ कि मुतल्लक़ा को इ़द्दत में घर से निकाले न उन औरतों को वहां से ख़ुद निकलना रवा (फ़ा5) उनसे कोई फ़िस्क़ ज़ाहिर सादिर हो जिस पर हद आती है मिस्ले ज़िना और चोरी के इसके लिए उन्हें निकलना ही होगा मसला अगर औरत फ़ुहश बके और घर वालों को ईज़ा दे तो उसको निकालना जाइज़ है क्योंकि **(बक़िया सफ़हा 899 पर)**

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ وَالّٰٓئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ
نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ
مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ

मुश्शहा–द–त लिल्लाहि ज़ालिकुम् यू–अ़ज़ु बिही मन् का–न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व मंय्यत्तक़िल्ला–ह यज्–अ़ल् लहू मख़्र–जंव्(2)व यरज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्–तसिबु व मंय्य–त–वक्कल् अ़लल्लाहि फ़हु–व ह़स्बुहू इन्नल्ला–ह बालिग़ु अम्रिही क़द् ज–अ़–लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा(3)वल्लाई य–इस्–न मिनल् महीज़ि मिन् निसाइकुम् इनिर् तब्तुम् फ़अ़ि–द्दतुहुन्–न सला–सतु अश्हुरिंव् वल्लाई लम् यहिज़्–न व उलातुल् अह्मालि अ–जलुहुन्–न अंय्य–ज़अ्–न ह़म्लहुन्–न व मंय्यत्त– क़िल्ला–ह यज्–अ़ल् लहू मिन् अम्रिही युस्रा(4)ज़ालि–क अम्रुल्लाहि अन्ज़–लहू इलैकुम् व मंय्यत्तक़िल्ला–ह यु–कफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युअ़्ज़िम् लहू अज्रा(5) अस्किनूहुन्–न मिन् हैसु स–कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्–रूहुन्–न लितु–ज़य्यिक़ू अ़लैहिन्–न व इन् कुन्–न उलाति ह़म्लिन् फ़–अन्फ़िक़ू अ़लैहिन्–न ह़त्ता य–ज़अ्– न ह़म्–लहुन्–न फ़–इन् अर्ज़अ्–न लकुम् फ़आतूहुन्–न

गवाही क़ायम करो (फ़ा9) इससे नसीहत फ़रमाई जाती है उसे जो अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो (फ़ा10) और जो अल्लाह से डरे (फ़ा11) अल्लाह उसके लिए नजात की राह निकाल देगा।(2) (फ़ा12) और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उसका गुमान न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसे काफ़ी है (फ़ा13) बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।(3) और तुम्हारी औरतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही (फ़ा14) अगर तुम्हें कुछ शक हो (फ़ा15) तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी जिन्हें अभी हैज़ न आया (फ़ा16) और हमल वालियों की मीआ़द यह है कि वह अपना हमल जन लें (फ़ा17) और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके काम में आसानी फ़रमा देगा। यह (फ़ा18) अल्लाह का हुक्म है कि उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा और जो अल्लाह से डरे (फ़ा19) अल्लाह उसकी बुराईयां उतार देगा।(4) और उसे बड़ा सवाब देगा।(5) औरतों को वहां रखो जहां ख़ुद रहते हो अपनी ताक़त भर (फ़ा20) और उन्हें ज़रर न दो कि उन पर तंगी करो (फ़ा21) और अगर (फ़ा22) हमल वालियां हों तो उन्हें नान नफ़क़ा दो यहां तक कि उनके बच्चा पैदा हो (फ़ा23) फिर अगर वह तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलायें तो

(फ़ा9) मक़सूद इससे उसकी रज़ा जूई हो और इक़ामत हक़ व तामील हुक्मे इलाही के सिवा अपनी कोई फ़ासिद ग़रज़ उस में न हो। (फ़ा10) **मसलाः** इससे इस्तिदलाल किया जाता है कि कुफ़्फ़ार शराअ़े व अहकाम के साथ मुख़ातिब नहीं और (फ़ा11) तलाक़ दे तो तलाक़ सुन्नी दे और मुअ़्तद्दा को ज़रर न पहुंचाये न उसे मस्कन से निकाले और हस्बे हुक्मे इलाही मुसलमानों को गवाह कर ले। (फ़ा12) जिससे वह दुनिया व आख़िरत के ग़मों से ख़लास पाये और हर तंगी व परेशानी से महफ़ूज़ रहे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मरवी है कि जो शख़्स इस आयत को पढ़े अल्लाह तआ़ला उसके लिए शुबहाते दुनिया ग़मराते मौत व शदाइदे रोज़े क़ियामत से ख़लास की राह निकालेगा और इस आयत की निस्बत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग महफ़ूज़ कर लें तो उनकी हर ज़रूरत व हाजत के लिए काफ़ी है **शाने नुज़ूलः** औ़फ़ बिन मालिक के फ़रज़न्द को मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया तो औ़फ़ नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने यह भी अ़र्ज़ किया कि मेरा बेटा मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया है और उसी के साथ अपनी मुहताजी व नादारी की शिकायत की सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह का डर रखो और सब्र करो और कसरत से ला हौ–ल व ला क़ुव्व–त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम॰ पढ़ते रहो औ़फ़ ने घर आकर अपनी बीबी से यह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरू किया वह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने (बक़िया सफ़्हा 913 पर)

أُجُوْرَهُنَّ ۚ وَأْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ أُخْرٰى ۞ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۖ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ
اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۞ وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۞ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۞ أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰٓأُولِي الْأَلْبَابِ ۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ أَنْزَلَ اللّٰهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۞ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۚ قَدْ أَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۞ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۚ يَتَنَزَّلُ
الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۞

उजू–रहुन्–न वअ्तमिरू बै–नकुम् बिमअ्रूफ़िन् व इन् तआसरतुम् फ़–सतुरज़िअु लहू उख़्रा(6) लियुन्फ़िक् जू स–अ़तिम् मिन् स–अ़तिही व मन् कुदि–र अ़लैहि रिज़्कुहू फ़ल्युन्फ़िक् मिम्मा आताहुल्लाहु ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा स–यज्अलुल्लाहु बअ्–द अुस्रिंय्युस्रा(7) व क–अय्यिम् मिन् कर्–यतिन् अ–तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़–हा सब्नाहा हिसाबन् शदीदंव् व अज़्ज़ब्नाहा अ़ज़ाबन् नुक्रा(8)फ़ज़ाक़त् वबा–ल अम्रिहा व का–न आ़कि–बतु अम्रिहा खुस्रा(9)अ–अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़त्तकुल्ला–ह या उलिल् अल्बाबिल् लज़ी–न आ–मनू क़द् अन्ज़–लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रर्(10)रसूलंय्यत्लू अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल् लियुख़्रिजल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व मंय्युअ्मिम् बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् क़द् अह्स–नल्लाहु लहू रिज़्क़ा(11)अल्लाहुल्लज़ी ख़–ल–क़ सब्–अ़ समावातिंव् व मिनल् अर्ज़ि मिस्लहुन्–न य–त–नज़्ज़लुल् अम्रु बै–नहुन्–न लितअ्–लमू अन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुंव् व अन्नल्ला–ह क़द् अहा–त बिकुल्लि शैइन् अिल्मा(12)

उन्हें उसकी उजरत दो (फ़ा24) और आपस में माक़ूल तौर पर मश्वरा करो (फ़ा25) फिर अगर बाहम मुज़ाएक़ा करो (फ़ा26) तो क़रीब है कि उसे और दूध पिलाने वाली मिल जाएगी मक़दूर वाला।(6) (फ़ा27) अपने मक़दूर के क़ाबिल नफ़क़ा दे और जिस पर उसका रिज़्क़ तंग किया गया वह उसमें से नफ़क़ा दे जो उसे अल्लाह ने दिया अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है क़रीब है कि अल्लाह दुशवारी के बाद आसानी फ़रमा देगा।(7) (फ़ा28) (रुकूअ़ 17) और कितने ही शहर थे जिन्होंने अपने रब के हुक्म और उसके रसूलों से सरकशी की तो हमने उन से सख़्त हिसाब लिया (फ़ा29) और उन्हें बुरी मार दी।(8) (फ़ा30) तो उन्होंने अपने किये का वबाल चखा और उनके काम का अन्जाम घाटा हुआ।(9) अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है तो अल्लाह से डरो ऐ अ़क़्ल वालो वह जो ईमान लाए हो बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए इज़्ज़त उतारी है।(10) वह रसूल (फ़ा31) कि तुम पर अल्लाह की रौशन आयतें पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये (फ़ा32) अंधेरियों से (फ़ा33) उजाले की तरफ़ ले जाए और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें जिनमें हमेशा हमेशा रहें बेशक अल्लाह ने उस के लिए अच्छी रोज़ी रखी।(11) (फ़ा34) अल्लाह है जिसने सात आसमान बनाए (फ़ा35) और उन्हीं के बराबर ज़मीनें (फ़ा36) हुक्म उनके दर्मियान उतरता है (फ़ा37) ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत है।(12) (रुकूअ़ 18)

(फ़ा24) मसलाः बच्चा को दूध पिलाना मां पर वाजिब नहीं बाप के ज़िम्मे है कि उजरत देकर दूध पिलवाये लेकिन अगर बच्चा मां के सिवा किसी और औरत का दूध न पिये या बाप फ़क़ीर हो तो उस हालत में मां **(बक़िया सफ़हा 913 पर)**

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ
بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٣ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝٤ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ

सूरतुत्तह्रीमि

(मदनी है इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहन्नबिय्यु लि–म तुह़र्रिमु मा अ–ह़ल्लल्लाहु ल–क तब्तग़ी मर्ज़ा–त अज़्वाजि–क वल्लाहु ग़फ़ूरुर् रह़ीम(1)क़द् फ़–र–ज़ल्लाहु लकुम् तह़िल्ल–त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अ़लीमुल् ह़कीम(2)व इज़् अ–सर्रन्नबिय्यु इला बअ़्ज़ि अज़्वाजिही ह़दीसन् फ़लम्मा नब्ब–अत् बिही व अज़्ह–रहुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र–फ़ बअ़्ज़हू व अअ़्र–ज़ अ़म् बअ़्ज़िन् फ़–लम्मा नब्ब–अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब–अ–क हाज़ा क़ा–ल नब्ब–अनियल् अ़लीमुल् ख़बीर(3)इन् ततूबा इलल्लाहि फ़–क़द् स–ग़त् क़ुलूबुकुमा व इन् तज़ा–हरा अ़लैहि फ़इन्नल्ला–ह हु–व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल् मुअ्मिनी–न वल्मलाइ–कतु बअ़्–द ज़ालि–क ज़हीर(4)असा रब्बुहू इन् त़ल्ल–क़कुन्–न

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) तुम अपने ऊपर क्यों हराम किये लेते हो वह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की (फ़ा2) अपनी बीबियों की मर्ज़ी चाहते हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(1) बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़स्मों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया (फ़ा3) और अल्लाह तुम्हारा मौला है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(2) और जब नबी ने अपनी एक बीबी (फ़ा4) से एक राज़ की बात फ़रमाई (फ़ा5) फिर जब वह (फ़ा6) उसका ज़िक्र कर बैठी और अल्लाह ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया और कुछ से चश्म-पोशी फ़रमाई (फ़ा7) फिर जब नबी ने उसे उसकी ख़बर दी बोली (फ़ा8) हुजूर को किस ने बताया फ़रमाया मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया।(3) (फ़ा9) नबी की दोनों बीबियों अगर अल्लाह की तरफ़ तुम रुजूअ़ करो तो (फ़ा10) ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं (फ़ा11) और अगर उन पर ज़ोर बांधो (फ़ा12) तो बेशक अल्लाह उनका मददगार है और जिबरील और नेक ईमान वाले और उसके बाद फ़रिश्ते मदद पर हैं।(4) उनका रब क़रीब है अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें कि

(फ़ा1) सूरह तहरीम मदनी है इसमें दो रुकूअ़ बारह आयतें 247 कलिमे एक 1060 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत उम्मुल मोमिनीन हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के महल में रौनक़ अफ़रोज़ हुए वह हुजूर की इजाज़त से अपने वालिद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अयादत के लिए तशरीफ़ ले गईं हुजूर ने हज़रत मारिया क़िबतिया को सरफ़राज़ ख़िदमत किया यह हज़रत हफ़सा पर गिराँ गुज़रा हुजूर ने उनकी दिलजूई के लिए फ़रमाया कि मैंने मारिया को अपने ऊपर हराम किया और मैं तुम्हें खुशख़बरी देता हूं कि मेरे बाद उमूर उम्मत के मालिक अबू बकर व उमर होंगे (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) वह इससे खुश हो गईं और निहायत खुशी में उन्होंने यह तमाम गुफ़्तगू हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सुनाई इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमाया गया कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए हलाल की यानी मारिया क़िबतिया आप उन्हें अपने लिए क्यों हराम किये लेते हैं अपनी बीबियों हफ़सा व आइशा (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) की रज़ाजूई के लिए और एक क़ौल इस आयत की शाने नुज़ूलः में यह भी कि उम्मुलमोमिनीन ज़ैनब बिन्त जहश के यहां जब हुजूर तशरीफ़ ले जाते तो वह शहद पेश करतीं इस ज़रीआ़ से उनके यहां कुछ ज़्यादा देर तशरीफ़ फ़रमा रहते यह बात हज़रत आइशा व हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा वग़ैरहुमा को नागवार गुज़री और उन्हें रश्क हुआ उन्होंने बाहम मशवरा **(बक़िया सफ़हा 913 पर)**

اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا
يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً
نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

अंय्युब्दि–लहू अज़्वाजन् ख़ैरम् मिन्कुन्–न मुस्लिमातिम् मुअ्मिना–तिन् क़ानिताततिन् ताइबातिन् आबि–दातिन् साइहातिन् सय्यिबातिंव् व अब्कारा(5)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू क़ू अन्फु–सकुम् व अह्लीकुम् नारंव् वक़ूदुहन्नासु वल्हिजा–रतु अलैहा मलाइ–कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल ला यअ्सू–नल्ला–ह मा अ–म–रहुम् व यफ़्–अलू–न मा युअ्–मरून(6)या अय्युहल्लज़ी–न क–फ़रू ला तअ्–तज़िरुल् यौ–म इन्नमा तुज्ज़ौ–न मा कुन्तुम् तअ्–मलून(7)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू तूबू इलल्लाहि तौ–ब–तन् नसूहन् असा रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि–र अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्ख़ि–लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु यौ–म ला युख़्ज़िल्लाहुन्नबिय्–य वल्लज़ी–न आ–मनू म–अहू नूरुहुम् यस्आ बै–न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् यक़ूलू–न रब्बना अत्मिम् लना नू–रना वग़्फ़िर्–लना इन्न–क अला कुल्लि शैइन् क़दीर(8)

उन्हें तुम से बेहतर बीबियां बदल दे इताअ़त वालियां ईमान वालियां अदब वालियां (फ़ा13) तौबा वालियां बन्दगी वालियां (फ़ा14) रोज़ादारें ब्याहियां और कुंवारियां।(5) (फ़ा15) ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ (फ़ा16) जिसके ईंधन आदमी (फ़ा17) और पत्थर हैं (फ़ा18) उस पर सख़्त कर्रे फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं (फ़ा19) जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं।(6) (फ़ा20) ऐ काफ़िरो आज बहाने न बनाओ (फ़ा21) तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे।(7)(रुकूअ़ 19) ऐ ईमान वालो अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाए (फ़ा22) क़रीब है कि तुम्हारा रब (फ़ा23) तुम्हारी बुराईयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नहरें बहें जिस दिन अल्लाह रुसवा न करेगा नबी और उनके साथ के ईमान वालों को (फ़ा24) उनका नूर दौड़ता होगा उनके आगे और उनके दाहिने (फ़ा25) अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे(फ़ा26)और हमें बख़्श दे बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है।(8)

(फ़ा13) जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदार और उनकी रज़ाजू हों (फ़ा14) यानी कसीरुलइबादत। (फ़ा15) यह तख़्वीफ़ है अज़्वाजे मुतह्हरात को कि अगर उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आज़ुर्दा किया और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें तलाक़ दी तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला अपने लुत्फ़ व करम से और बेहतर बीबीयां अ़ता फ़रमाएगा इस तख़्वीफ़ से अज़्वाजे मुतह्हरात मुतअस्सिर हुईं और उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के शरफ़े ख़िदमत को हर निअ़मत से ज़्यादा समझा और हुज़ूर की दिलजूई और रज़ा तलबी मुक़द्दम जानी लिहाज़ा आपने उन्हें तलाक़ न दी। (फ़ा16) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी इख़्तियार करके इबादतें बजा लाकर गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त करके और उन्हें इल्म व अदब सिखा कर। (फ़ा17) यानी काफ़िर। (फ़ा18) यानी बुत वग़ैरह मुराद यह है कि जहन्नम की आग बहुत ही शदीदुल हरारत है और जिस तरह दुनिया की आग लकड़ी वग़ैरह से जलती है जहन्नम की आग उन चीज़ों से जलती है जिनका ज़िक्र किया गया। (फ़ा19) जो निहायत क़वी और ज़ोर आवर हैं और उनकी तबीअ़तों में रहम नहीं। (फ़ा20) काफ़िरों से वक़्ते दुख़ूल दोज़ख़ कहा जाएगा जबकि वह आतिशे दोज़ख़ की शिद्दत और उसका अ़ज़ाब देखेंगे। (फ़ा21) क्योंकि अब तुम्हारे लिए कोई जाए उज़्र बाक़ी नहीं रही न आज कोई उज़्र क़बूल किया जाये। (फ़ा22) यानी तौबए सादिक़ा जिसका असर तौबा करने वाले के आमाल में ज़ाहिर हो और उसकी ज़िन्दगी ताअ़तों और इबादतों से मअ़मूर हो जाये और वह गुनाहों से मुजतनिब रहे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने और दूसरे असहाब ने फ़रमाया तौबए नसूह वह है कि तौबा के बाद आदमी फिर गुनाह की तरफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुआ दूध फिर थन में वापस नहीं होता। (फ़ा23) **(बक़िया सफ़हा 898 पर)**

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ
نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ
وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ
رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल् कुफ़्फ़ा–र वल्मुनाफ़िक़ी–न वग़्लुज़् अ़लैहिम् व मअ्वाहुम् जहन्नमु व बिअ्–सल् मसीर(9)ज़–र–बल्लाहु म–स–लल् लिल्लज़ी–न क–फ़रुम्–र–अ–त नूहिंव् वम्–र–अ–त लूतिन् का–नता तह्–त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़ख़ा–नताहुमा फ़लम् युग़्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि शैअंव् व क़ीलद् ख़ुलन्ना–र म–अ़द्दाख़िलीन(10)व ज़–र–बल्लाहु म–स–लल् लिल्लज़ी–न आ–मनुम्–र–अ–त फ़िर्औ़–न इज़् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द–क बैतन् फ़िल्जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ़–न व अ़–मलिही व नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्–ज़ालिमीन(11)व मरय–मब्–न–त अ़िम्रानल् लती अह्स–नत् फ़र्जहा फ़–न–फ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्–द–क़त् बि–कलिमाति रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल् क़ानितीन(12)

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) (फ़ा27) काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर (फ़ा28) जिहाद करो और उन पर सख़्ती फ़रमाओ और उनका ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा अंजाम।(9) अल्लाह काफ़िरों की मिसाल देता है (फ़ा29) नूह की औ़रत और लूत की औरत वह हमारे बन्दों में दो सज़ावारे क़ुर्ब बन्दों के निकाह में थीं फिर उन्होंने उनसे दग़ा की (फ़ा30) तो वह अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न आए और फ़रमा दिया गया (फ़ा31) कि तुम दोनों औ़रतें जहन्नम में जाओ जाने वालों के साथ।(10) (फ़ा32) और अल्लाह मुसलमानों की मिसाल बयान फ़रमाता है (फ़ा33) फ़िरऔ़न की बीबी (फ़ा34) जब उसने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना (फ़ा35) और मुझे फ़िरऔ़न और उसके काम से नजात दे (फ़ा36) और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श।(11) (फ़ा37) और इमरान की बेटी मरयम जिसने अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त की तो हमने उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकी और उसने अपने रब की बातों (फ़ा38) और उसकी किताबों (फ़ा39) की तस्दीक़ की और फ़रमांबरदारों में हुई।(12) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा27) तलवार से (फ़ा28) क़ौल ग़लीज़ और वअ़ज़ बलीग़ और हुज्जत क़वी से। (फ़ा29) इस बात में कि उन्हें उनके कुफ़्र और मोमिनीन की अ़दावत पर अ़ज़ाब किया जाएगा और उस कुफ़्र व अ़दावत के होते हुए उनका नसब और मोमिनीन व मुक़र्रबीन के साथ उनकी क़राबत व रिश्तेदारी उन्हें कुछ नफ़ा न देगी (फ़ा30) दीन में कि कुफ़्र इख़्तियार किया हज़रत नूह की औरत वाहिला अपनी क़ौम से हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की निस्बत कहती थी कि वह मजनून हैं और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की औरत वाइला अपना निफ़ाक़ छुपाती थी और जो मेहमान आपके यहां आते थे आग जला कर अपनी क़ौम को उनके आने से ख़बरदार करती थी। (फ़ा31) उनसे वक़्ते मौत या रोज़े क़ियामत (और ताबीर सीग़ए माज़ी से) बलिहाज़े तहक़्क़ुक़ वक़ूअ़ के है। (फ़ा32) यानी अपनी क़ौमों के कुफ़्फ़ार के साथ क्योंकि तुम्हारे और उन अम्बिया के दर्मियान तुम्हारे कुफ़्र के बाइस इलाक़ा बाक़ी न रहा। (फ़ा33) कि उन्हें दूसरे की मअ़सियत ज़रर नहीं देती। (फ़ा34) जिनका नाम आसिया बिन्ते मज़ाहिम है जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जादूगरों को मग़लूब किया तो यह आसिया आप पर ईमान ले आईं फ़िरऔ़न को ख़बर हुई तो उसने उन पर सख़्त अ़ज़ाब किये उन्हें चौ मीख़ा किया और भारी चक्की सीना पर रखी औ र धूप में डाल दिया जब फ़िरऔ़नी उनके पास से हटते तो फ़रिश्ते उन पर साया करते। (फ़ा35) अल्लाह तआ़ला ने उनका मकान जो जन्नत में है उन पर ज़ाहिर फ़रमाया और उसकी मुसर्रत में फ़िरऔ़न की सख़्तियों की शिद्दत उन पर सहल हो गई। (फ़ा36) फ़िरऔ़न के काम से या उसका शिर्क व कुफ़्र व .ज़ुल्म मुराद है या उसका क़ुर्ब। (फ़ा37) यानी फ़िरऔ़न के दीन वालों से चुनांचे यह दुआ़ उनकी क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उनकी रूह क़ब्ज़ फ़रमाई और इब्ने कीसान ने कहा कि वह ज़िन्दा उठा कर जन्नत में दाख़िल की गईं। (फ़ा38) रब की बातों से शराअ़े व अहकाम मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिए मुक़र्रर फ़रमाए (फ़ा39) किताबों से वह किताबें मुराद हैं जो अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर नाज़िल हुई थीं।

(बक़िया सफ़हा 880 का) मुतअ़ल्लिक़ कोई हुक्मे जदीद नाज़िल नहीं हुआ दस्तूर क़दीम यही है कि ज़िहार से औरत हराम हो जाती है औरत ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम औस ने तलाक़ का लफ़्ज़ न कहा वह मेरे बच्चों का बाप है और मुझे बहुत प्यारा है इसी तरह वह बार बार अ़र्ज़ करती रही और जवाब हस्बे ख़्वाहिश न पाया तो आसमान की तरफ़ सर उठा कर कहने लगी या अल्लाह तआ़ला मैं तुझ से अपनी मुहताजी व बेकसी और परेशान हाली की शिकायत करती हूं अपने नबी पर मेरे हक़ में ऐसा हुक्म नाज़िल फ़रमा जिससे मेरी मुसीबत रफ़ा हो हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया ख़ामोश हो देख चेहरए मुबारक रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर आसारे वह़ी ज़ाहिर हैं जब वह़ी पूरी हो गई फ़रमाया अपने शौहर को बुला औस हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने यह आयतें पढ़कर सुनाईं। (फ़ा3) यानी ज़िहार करते हैं ज़िहार उसको कहते हैं कि अपनी बीबी को मुहर्रमात नस्बी या रज़ाई के किसी ऐसे उ़ज़्व से तशबीह दी जाये जिसको देखना हराम है मसलन बीबी से कहे कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है या बीबी के ऐसे उ़ज़्व को जिस से वह ताबीर की जाती हो या उसके व जुज़्व शाए को मुहर्रमात के ऐसे उ़ज़्व से तश्बीह दे जिसको देखना हराम है मसलन यह कहे कि तेरा सर या तेरा निस्फ़ बदन मेरी मां की पीठ या उसके पेट या उस की रान या मेरी बहन या फूफी या दूध पिलाने वाली की पीठ या पेट के मिस्ल है तो ऐसा कहना ज़िहार कहलाता है। (फ़ा4) यह कहने से वह मायें नहीं हो गईं (फ़ा5) मसलाः और दूध पिलाने वालियां ब-सबबे दूध पिलाने के माओं के हुक्म में हैं और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अज़्वाज मुतह्हरात ब-सबबे कमाले हुरमत मायें बल्कि माओं से आला हैं। (फ़ा6) जो बीबी को मां कहते हैं उसको किसी तरह मां के साथ तश्बीह देना ठीक नहीं (फ़ा7) यानी उनसे ज़िहार करें मसला इस आयत से मालूम हुआ कि बांदी से ज़िहार नहीं अगर इसको मुहर्रमात से तश्बीह दे तो मुज़ाहिर न होगा (फ़ा8) यानी उस ज़िहार को तोड़ देना और हुरमत को उठा देना (फ़ा9) कफ़्फ़ारा ज़िहार का लिहाज़ा उन पर ज़रूरी है (फ़ा10) ख़्वाह वह मोमिन हो या काफ़िर सग़ीर हो या कबीर मर्द हो या औरत अलबत्ता मुदब्बिर और उम्मे वल्द और ऐसा मकातिब जाइज़ नहीं जिसने बदले किताबत में से कुछ अदा किया हो (फ़ा11) मसलाः इससे मालूम हुआ कि इस कफ़्फ़ारा के देने से पहली वती और उसके दवाई हराम हैं (फ़ा12) इसका कफ़्फ़ारा (फ़ा13) मुत्तसिल इस तरह कि न इन दो महीनों के दर्मियान रमज़ान आए न उन पांच दिनों में से कोई दिन आये जिन का रोज़ा ममनूअ़ है और न किसी उ़ज़्र से या बग़ैर उ़ज़्र के दर्मियान से कोई रोज़ा छोड़ा जाये अगर ऐसा हुआ तो अज़ सरे नौ रोज़े रखने पड़ेंगे (फ़ा14) मसाइलः यानी रोज़ों से जो कफ़्फ़ारा दिया जाये उसका भी जिमाअ़ और दवाई जिमाअ़ से मुक़द्दम होना ज़रूरी है और जब तक वह रोज़े पूरे हों ख़ाविन्द बीबी में से कोई किसी को हाथ न लगाये (फ़ा15) यानी उसे रोज़े रखने की क़ुव्वत न हो बुढ़ापे या मर्ज़ वग़ैरह के बाइस या रोज़े तो रख सकता हो मगर मुतवातिर व मुत्तसिल न रख सकता हो (फ़ा16) यानी साठ मिस्कीनों को खाना देना और यह इस तरह कि हर मिस्कीन को निस्फ़ साअ़ गेहूं या एक साअ़ खजूर या जौ दे और अगर मिस्कीनों को इसकी क़ीमत दी या सुबह व शाम दोनों वक़्त उन्हें पेट भर कर खिला दिया जब भी जाइज़ है मसला इस कफ़्फ़ारा में यह शर्त नहीं कि एक दूसरे को हाथ लगाने से क़ब्ल हत्ता कि अगर खाना खिलाने के दर्मियान में शौहर और बीबी में क़ुरबत वाक़ेअ़ हुई तो नया कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा। (फ़ा17) और ख़ुदा और रसूल की फ़रमांबरदारी करो और जाहिलियत के तरीक़े छोड़ो। (फ़ा18) उनको तोड़ना और उनसे तजावुज़ करना जायज़ नहीं।

(बक़िया सफ़हा 881 का) उन्हें रन्ज हो उनकी इस हरकत से मुसलमानों को ग़म होता था और वह कहते थे कि शायद उन लोगों को हमारे उन भाईयों की निस्बत क़त्ल या हज़ीमत की कोई ख़बर पहुंची जो जिहाद में गए हैं और यह उसी के मुतअ़ल्लिक़ बातें बनाते और इशारे करते हैं जब यह हरकात मुनाफ़िक़ीन के बहुत ज़्यादा हुए और मुसलमानों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में इसकी शिकायतें कीं तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सरगोशी करने वालों को मना फ़रमा दिया लेकिन वह बाज़ न आए और यह हरकत करते ही रहे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा32) गुनाह और हद से बढ़ना यह कि मक्कारी के साथ सरगोशियां करके मुसलमानों को रन्ज व ग़म में डालते हैं (फ़ा33) और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रमानी यह कि बावजूद मुमानअ़त के बाज़ नहीं आते और यह भी कहा गया है कि उनमें एक दूसरे को राय देते थे कि रसूल की नाफ़रमानी करो। (फ़ा34) यहूद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आते तो अस्सामु अ़लै-क कहते साम मौत को कहते हैं नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनके जवाब में अ़लैकुम् फ़रमा देते। (फ़ा35) इससे उनकी मुराद यह थी कि अगर हज़रत नबी होते तो हमारी इस गुस्ताख़ी पर अल्लाह तआ़ला हमें अ़ज़ाब करता अल्लाह फ़रमाता है। (फ़ा36) और जो तरीक़ा यहूद और मुनाफ़िक़ीन का है उससे परहेज़ करो।

(बक़िया सफ़हा 882 का) दराज़ किया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि फ़ुक़रा को अपनी अ़र्ज़ पेश करने का मौक़ा कम मिलने लगा तो अ़र्ज़ पेश करने वालों को अ़र्ज़ पेश करने से पहले सदक़ा देने का हुक्म दिया गया और इस हुक्म पर हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़मल किया एक दीनार सदक़ा करके दस मसाइल दरयाफ़्त किये अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वफ़ा क्या है फ़रमाया तौहीद और तौहीद की शहादत देना अ़र्ज़ किया फ़साद क्या है फ़रमाया कुफ़्र व शिर्क अ़र्ज़ किया हक़ क्या है फ़रमाया इस्लाम व क़ुरआन और विलायत जब तुझे मिले अ़र्ज़ किया हीला क्या है यानी तदबीर फ़रमाया तर्के हीला अ़र्ज़ किया मुझ पर क्या लाज़िम है फ़रमाया अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इताअ़त अ़र्ज़ किया अल्लाह तआ़ला से कैसे दुआ़ मांगूं फ़रमाया सिद्क़ व यक़ीन के साथ अ़र्ज़ किया क्या मांगूं फ़रमाया आक़िबत अ़र्ज़ किया अपनी नजात के लिए क्या करूं फ़रमाया हलाल खा और सच बोल अ़र्ज़ किया सुरूर क्या है जन्नत

अर्ज़ किया। राहत क्या है फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का दीदार जब हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु इन सवालों से फ़ारिग़ हो गये तो यह हुक्म मन्सूख़ हो गया और रुख़सत नाज़िल हुई सिवए हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के और किसी को इस पर अ़मल करने का वक़्त नहीं मिला (मदारिक व ख़ाज़िन) हज़रत मुतर्जिम कुद्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया यह उसकी असल है जो मज़ारात औलिया पर तसदीक़ के लिए शीरीनी वग़ैरह ले जाते हैं। (फ़ा43) ब-सबब अपनी ग़रीबी व नादारी के। (फ़ा44) और तर्क तक़दीम सदक़ा का मुआख़ज़ा तुम पर से उठा लिया और तुमको इख़्तियार दे दिया (फ़ा45) जिन लोगों पर अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब है उनसे मुराद यहूद हैं और उनसे दोस्ती करने वाले मुनाफ़िक़ीन **शाने नुज़ूलः** यह आयत मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने यहूद से दोस्ती की और उनकी ख़ैर ख़्वाही में लगे रहते और मुसलमानों के राज़ उन से कहते

(बक़िया सफ़हा 883 का) अ़ब्दुल्लाह बिन बन्तल मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मजलिस में हाज़िर रहता और यहां की बात यहूद के पास पहुंचाता एक रोज़ हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दौलत सरय अक़दस में तशरीफ़ फ़रमा थे हुज़ूर ने फ़रमाया इस वक़्त एक आदमी आएगा जिसका दिल निहायत सख़्त और शैतान की आंखों से देखता है थोड़ी ही देर बाद अ़ब्दुल्लाह बिन बन्तल आया उसकी आंखें नीली थीं हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया तू और तेरे साथी क्यों हमें गालियां देते हैं वह क़सम खा गया कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया उन्होंने भी क़सम खाई कि हमने आपको गाली नहीं दी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा48) जो झूठी हैं (फ़ा49) कि अपना जान व माल महफ़ूज़ रहे (फ़ा50) यानी मुनाफ़िक़ीन ने अपनी इस हीला साज़ी से लोगों को जिहाद से रोका और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि माना यह हैं कि लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोका। (फ़ा51) आख़िरत में। (फ़ा52) और रोज़े क़ियामत उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से न बचा सकेंगे। (फ़ा53) कि दुनिया में मोमिन मुख़लिस थे। (फ़ा54) यानी वह अपनी उन झूठी क़स्मों को कारआमद समझते हैं। (फ़ा55) अपनी क़स्मों में और ऐसे झूठे कि दुनिया में भी झूठ बोलते रहे और आख़िरत में भी रसूल के सामने भी और ख़ुदा के सामने भी। (फ़ा56) कि जन्नत की दाइमी निअ़मतों से महरूम और जहन्नम के अबदी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार। (फ़ा57) लौहे महफ़ूज़ में। (फ़ा58) हुज्जत के साथ या तलवार के साथ। (फ़ा59) यानी मोमिनीन से यह हो ही नहीं सकता और उनकी यह शान ही नहीं और ईमान उसको गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्ती करे मसला इस आयत से मालूम हुआ कि बद दीनों और बद मज़हबों और ख़ुदा व रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी करने वालों से मवद्दत व इख़्तेलात जाइज़ नहीं। (फ़ा60) चुनांचे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने जंगे उहद में अपने बाप जर्राह को क़त्ल किया और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रोज़े बद्र अपने बेटे अब्दुर्रहमान को मुबारज़त के लिए तलब किया लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और मुसइब बिन उमैर ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उमैर को क़त्ल किया और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने मामूं आ़स बिन हश्शाम बिन मुग़ीरा को रोज़े बद्र क़त्ल किया और हज़रत अली बिन अबी तालिब व हमज़ा व अबू उबैदा ने रबीआ़ के बेटों उतबा और शैबा को और वलीद बिन उतबा को बद्र में क़त्ल किया जो उनके रिश्तादार थे ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास। (फ़ा61) इस रूह से या अल्लाह की मदद मुराद है या ईमान या कुरआन या जिबरील या रहमते इलाही या नूर (फ़ा62) ब-सबब उनके ईमान व इख़्लास व ताअ़त के। (फ़ा63) उसके रहमत व करम से।

(बक़िया सफ़हा 884 का) अल्लाह तआ़ला के इल्म देने से हुज़ूर इस हाल पर मुत्तलअ़ थे और बनी नुज़ैर से एक ख़ियानत और भी वाक़ेअ़ हो चुकी थी कि उन्होंने क़िला के ऊपर से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ब-इरादए फ़ासिद एक पत्थर गिराया था अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को ख़बरदार कर दिया और ब-फ़ज़्लेही तआ़ला हुज़ूर महफ़ूज़ रहे ग़रज़ जब यहूद बनी नुज़ैर ने ख़ियानत की और अहद शिकनी की और कुफ़्फ़ारे कुरैश से हुज़ूर के ख़िलाफ़ अहद किया तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुसलिमा अन्सारी को हुक्म दिया और उन्होंने कअ़ब बिन अशरफ़ को क़त्ल कर दिया फिर हुज़ूर मअ़ लश्कर के बनी नुज़ैर की तरफ़ रवाना हुए और उनका मुहासरा कर लिया और यह मुहासरा इक्कीस रोज़ रहा इस दर्मियान में मुनाफ़िक़ीन ने यहूद से हमदर्दी व मुवाफ़क़त के बहुत मुआ़हिदे किये लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन सब को नाकाम किया यहूद के दिलों में रोब डाला आख़िरकार उन्हें हुज़ूर के हुक्म से जला वतन होना पड़ा और वह शाम व अरीहा व ख़ैबर की तरफ़ चले गए (फ़ा3) यानी यहूद बनी नुज़ैर को। (फ़ा4) जो मदीना तय्येबा में थे (फ़ा5) यह जला वतनी उनका पहला हश्र है और दूसरा हश्र उनका यह है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उन्हें अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ख़ैबर से शाम की तरफ़ निकाला या आख़िर हश्र रोज़े क़ियामत का हश्र है कि आग सब लोगों को सरज़मीने शाम की तरफ़ ले जाएगी और वहीं उन पर क़ियामत क़ाइम होगी उसके बाद अहले इस्लाम से ख़िताब फ़रमाया जाता है। (फ़ा6) मदीना से क्यों कि वह साहबे क़ुव्वत साहबे लश्कर थे मज़बूत क़िले रखते थे उनकी तादाद कसीर थी जागीरदार साहबे माल। (फ़ा7) यानी ख़तरा भी न था कि मुसलमान उन पर हमला आवर हो सकते हैं। (फ़ा8) उनके सरदार कअ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल से। (फ़ा9) और उनको ढाते हैं ताकि जो लकड़ी वग़ैरह उन्हें अच्छी मालूम हो वह जला वतन होते वक़्त अपने साथ ले जायें। (फ़ा10) कि उनके मकानों के जो हिस्से बाक़ी रह जाते थे उन्हें मुसलमान गिरा देते थे ताकि जंगे के लिए मैदान साफ़ हो जाये (फ़ा11) और उन्हें क़त्ल व क़ैद में मुब्तला करता जैसा कि यहूद बनी कुरैज़ा के साथ किया (फ़ा12) हर हाल में ख़्वाह जला वतन किये जायें या क़त्ल किये जायें। (फ़ा13) यानी बर सरे मुख़ालिफ़त रहे।

(फ़ा14) **शाने नुज़ूलः** जब बनी नुज़ैर अपने क़िलों में पनाह गुज़ीं हुए तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनके दरख़्त काट डालने और उन्हें जला देने का हुक्म दिया इस पर वह दुश्मनाने ख़ुदा बहुत घबराए और रन्जीदा हुए और कहने लगे कि क्या तुम्हारी किताब में इसका हुक्म है मुसलमान इस बाब में मुख़्तलिफ़ हो गए बाज़ ने कहा दरख़्त न काटो यह ग़नीमत है जो अल्लाह तआ़ला ने हमें अ़ता फ़रमाई बाज़ ने कहा इससे कुफ़्फ़ार को रुसवा करना और उन्हें ग़ैज़ में डालना मन्जूर है इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इसमें बताया गया कि मुसलमानों में जो दरख़्त काटने वाले हैं उनका अ़मल भी दुरुस्त है और काटना नहीं चाहते वह भी ठीक कहते हैं क्योंकि दरख़्तों का काटना और छोड़ देना यह दोनों अल्लाह तआ़ला के इज़्न व इजाज़त से हैं। (फ़ा15) यानी यहूद को ज़लील करे दरख़्त काटने की इजाज़त देकर।

(बक़िया सफ़हा 885 का) ज़्यादा ले लते थे और ग़रीबों के लिए बहुत ही थोड़ा बचता था इसी मामूल के मुताबिक़ लोगों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर ग़नीमत में से चहारुम लें बाक़ी हम बाहम तक़सीम कर लेंगे अल्लाह तआ़ला ने इसका रद्द फ़रमा दिया और तक़सीम का इख़्तियार नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दिया और इसका तरीक़ा इरशाद फ़रमाया। (फ़ा22) ग़नीमत में से क्योंकि वह तुम्हारे लिए हलाल है या यह माना हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तुम्हें जो हुक्म दें उसका इत्तेबाअ़ करो क्योंकि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त हर अमर में वाजिब है। (फ़ा23) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुख़ालफ़त न करो और उनके तअ़मीले इरशाद में सुस्ती न करो। (फ़ा24) उन पर जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रामनी करें और माले ग़नीमत में जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये हुए लोगों का हक़ है ऐसा ही। (फ़ा25) और उनके घरों और मालों पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने क़ब्ज़ा कर लिया **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि कुफ़्फ़ार इस्तीला से अमवाले मुस्लिमीन के मालिक हो जाते हैं। (फ़ा26) यानी सवाबे आख़िरत। (फ़ा27) अपने जान व माल से दीन की हिमायत में। (फ़ा28) ईमान व इख़्लास में क़तादा ने फ़रमाया कि उन मुहाजिरीन ने घर और माल और कुम्बे अल्लाह तआ़ला व रसूल की मुहब्बत में छोड़े और इस्लाम को क़बूल किया और इन तमाम शिद्दतों और सख़्तियों को गवारा किया जो इस्लाम क़बूल करने की वजह से उन्हें पेश आईं उनकी हालतें यहां तक पहुंचीं कि भूख की शिद्दत से पेट पर पत्थर बांधते थे और जाड़ों में कपड़ा न होने के बाइस गढ़ों और ग़ारों में गुज़ारा करते थे हदीस शरीफ़ में है कि फ़ुक़रा मुहाजिरीन अग़निया से चालीस साल क़ब्ल जन्नत में जायेंगे (फ़ा29) यानी मुहाजिरीन से पहले या उनकी हिजरत से पहले बल्कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले। (फ़ा30) मदीना पाक (फ़ा31) यानी मदीना पाक को वतन और ईमान को अपना मुस्तक़र बनाया और इस्लाम लाये और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से दो साल पहले मस्जिदें बनाईं उनका यह हाल है कि (फ़ा32) चुनांचे अपने घरों में उन्हें उतारते हैं अपने मालों में उन्हें निस्फ़ का शरीक करते हैं। (फ़ा33) यानी उनके दिलों में कोई ख़्वाहिश व तलब नहीं पैदा होती। (फ़ा34) मुहाजिरीन यानी मुहाजिरीन को जो अमवाले ग़नीमत दिये गए अन्सार के दिल में उनकी कोई ख़्वाहिश नहीं पैदा होती रश्क तो क्या होता सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बरकत ने क़ुलूब ऐसे पाक कर दिये कि अन्सार मुहाजिरीन के साथ यह सुलूक करते हैं (फ़ा35) यानी मुहाजिरीन को (फ़ा36) **शाने नुज़ूलः** हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक भूखा शख़्स आया हुज़ूर ने अज़वाजे मुतह्हरात के हुजरों पर मालूम कराया क्या खाने की कोई चीज़ है मालूम हुआ किसी बीबी साहबा के यहां कुछ भी नहीं है तब हुज़ूर ने असहाब से फ़रमाया जो इस शख़्स को मेहमान बनाए अल्लाह तआ़ला उस पर रहमत फ़रमाए हज़रत अबू तलहा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर से इजाज़त लेकर मेहमान को अपने घर ले गए जाकर बीबी से दरियाफ़्त किया कुछ है उन्होंने कहा कुछ नहीं सिर्फ़ बच्चों के लिए थोड़ा सा खाना रखा है हज़रत अबू तलहा ने फ़रमाया बच्चों को बहला कर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि वह अच्छी तरह खा ले यह इस लिए तज्वीज़ की कि मेहमान यह न जान सके कि अहले ख़ाना उसके साथ नहीं खा रहे हैं क्योंकि उसको यह मालूम होगा तो वह इसरार करेगा और खाना कम है भूखा रह जाएगा इस तरह मेहमान को खिलाया और आप उन साहबों ने भूखे रात गुज़ारी जब सुबह हुई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़दस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया रात फ़लां फ़लां लोगों में अ़जीब मुआ़मला पेश आया अल्लाह तआ़ला उन से बहुत राज़ी है और यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा37) यानी जिस के नफ़्स को लालच से पाक किया गया

(बक़िया सफ़हा 886 का) निकले और यहूद से मुक़ातला हुआ और मुनाफ़िक़ीन ने यहूद की मदद न की (फ़ा47) जब यह मददगार भाग निकलेंगे तो मुनाफ़िक़। (फ़ा48) ऐ मुसलमानों। (फ़ा49) कि तुम्हारे सामने तो इज़हारे कुफ़्र से डरते हैं और यह जानते हुए भी कि अल्लाह तआ़ला दिलों की छुपी बातें जानता है दिल में कुफ़्र रखते हैं। (फ़ा50) अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत को नहीं जानते वरना जैसा उससे डरने का हक़ है डरते। (फ़ा51) यानी जब वह आपस में लड़ें तो बहुत शिद्दत और कुव्वत वाले हैं लेकिन मुसलमानों के मुक़ाबिल बुज़दिल और नामर्द साबित होंगे। (फ़ा52) इसके बाद यहूद की एक मिस्ल इरशाद फ़रमाई। (फ़ा53) यानी उनका हाल मुशरिकीने मक्का का सा है कि बद्र में। (फ़ा54) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अ़दावत रखने और कुफ़्र करने का कि ज़िल्लत व रुसवाई के साथ हलाक किये गए।

(बक़िया सफ़हा 887 का) मुनाफ़िक़ीन ने यहूद बनी नुज़ैर को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारा जंग पर आमादा किया उनसे

मदद के वादे किये और जब उनके कहे से वह अहले इस्लाम से बर सरे जंग हुए तो मुनाफ़िक़ बैठ रहे उनका साथ न दिया। (फ़ा57) यानी उस शैतान व इन्सान का। (फ़ा58) और उसके हुक्म की मुख़ालफ़त न करो (फ़ा59) यानी रोज़े क़ियामत के लिए क्या आमाल किये। (फ़ा60) उसकी इताअ़त व फ़रमांबरदारी में सरगरम रहो। (फ़ा61) उसकी इताअ़त तर्क की। (फ़ा62) कि उनके लिए फ़ाइदा देने वाले और काम आने वाले अ़मल कर लेते। (फ़ा63) जिनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है। (फ़ा64) जिनके लिए ऐशे मुख़ल्लद व राहते व सरमद है। (फ़ा65) और उसको इन्सान की सी तमीज़ अ़ता करते। (फ़ा66) यानी क़ुरआन की अ़ज़मत व शान ऐसी है कि पहाड़ को अगर इदराक होता तो वह बावजूद इतना सख़्त और मज़बूत होने के पाश पाश हो जाता इससे मालूम होता है कि कुफ़्फ़ार के दिल कितने सख़्त हैं कि ऐसे बा-अ़ज़मत कलाम से असर पिज़ीर नहीं होते। (फ़ा67) मौजूद का भी और मअ़दूम का भी दुनिया का भी और आख़िरत का भी। (फ़ा68) मुल्क व हुकूमत का हक़ीक़ी मालिक कि तमाम मौजूदात उसके तहत मुल्क व हुकूमत है और उसकी मालकियत व सल्तनत दाइमी है जिसे ज़वाल नहीं। (फ़ा69) हर ऐब से और तमाम बुराईयों से (फ़ा70) अपनी मख़्लूक़ को। (फ़ा71) अपने अ़ज़ाब से अपने फ़रमांबरदार बन्दों को। (फ़ा72) यानी अ़ज़मत और बड़ाई वाला अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में और अपनी बड़ाई का इज़हार उसी के शायाँ और लाइक़ है कि उसका हर कमाल अ़ज़ीम है और हर सिफ़ते आली मख़्लूक़ में किसी को नहीं पहुंचता कि तकब्बुर यानी अपनी बड़ाई का इज़हार करे बन्दे के लिए इज्ज़ व इन्केसार शायाँ है। (फ़ा73) नीस्त से हस्त करने वाला (फ़ा74) जैसी चाहे (फ़ा75) निन्नानवे जो हदीस में वारिद हैं।

(बक़िया सफ़हा 888 का) यह हज़रात रवाना हुए और औरत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था उससे ख़त मांगा वह इन्कार कर गई और क़सम खा गई सहाबा ने वापसी का क़स्द किया हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ब-क़सम फ़रमाया कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औरत से फ़रमाया। या ख़त निकाल या गर्दन रख जब उसने देखा कि हज़रत बिल्कुल आमादए क़त्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त निकाला हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बुला कर फ़रमाया कि ऐ हातिब इसका क्या बाइस उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मैं जब से इस्लाम लाया कभी मैंने कुफ़्र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उनकी मुहब्बत न आई लेकिन वाक़िआ़ यह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उनकी क़ौम से न था मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं उनके मक्का मुकर्रमा में रिश्तादार हैं जो उनके घर बार की निगरानी करते हैं मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था इस लिए मैंने यह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एहसान रख दूं ताकि वह मेरे घर वालों को न सताएँ और यह मैं यक़ीन से जानता हूं कि अल्लाह तआ़ला अहले मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है मेरा ख़त उन्हें बचा न सकेगा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनका यह उज़्र क़बूल फ़रमाया और उनकी तस्दीक़ की हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ उमर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) अल्लाह तआ़ला ख़बरदार है जब ही उसने अहले बद्र के हक़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैंने तुम्हें बख़्श दिया या सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के आंसू जारी हो गए और यह आयात नाज़िल हुईं (फ़ा3) यानी इस्लाम और क़ुरआन (फ़ा4) यानी मक्का मुकर्रमा से (फ़ा5) यानी अगर कुफ़्फ़ार तुम पर मौक़ा पा जायें (फ़ा6) ज़रब व क़त्ल के साथ (फ़ा7) सब व शितम और (फ़ा8) तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और उनसे भलाई की उम्मीद रखना और उनकी अ़दावत से ग़ाफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिये। (फ़ा9) जिन की वजह से तुम कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मवालात करते हो। (फ़ा10) कि फ़रमांबरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर नाफ़रमान जहन्नम में (फ़ा11) हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु और दूसरे मोमिनीन को ख़िताब है और सब को हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इक़्तेदा करने का हुक्म है कि दीन के मुआ़मले में अहले क़राबत के साथ उनका तरीक़ा इख़्तियार करें। (फ़ा12) साथ वालों से अहले ईमान मुराद हैं

(बक़िया सफ़हा 889 का) बन गए और बाहमी मुहब्बतें बढ़ीं। शाने नुज़ूलः जब ऊपर की आयात नाज़िल हुईं तो मोमिनीन ने अपने अहले क़राबत की अ़दावत में तशद्दुद किया उनसे बेज़ार हो गए और इस मुआ़मला में बहुत सख़्त हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन कुफ़्फ़ार का हाल बदलने वाला है और यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा25) दिल बदलने और हाल तब्दील करने पर (फ़ा26) यानी उन काफ़िरों से। शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत ख़ज़ाआ़ के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस शर्त पर सुलह की थी कि न आपसे क़िताल करेंगे न आपके मुख़ालिफ़ को मदद देंगे अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इजाज़त दी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने फ़रमाया कि यह आयत उनकी वालिदा अस्मा बिन्त अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई उनकी वालिदा मदीना तय्येबा में उनके लिए तोहफ़ा लेकर आई थीं और थीं मुशरिका तो हज़रत अस्मा ने उनके हदाया क़बूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की इजाज़त न दी और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क्या हुक्म है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इजाज़त दी कि उन्हें घर में बुलायें उनके हदाया क़बूल करें उनके साथ अच्छा सुलूक करें।

(बक़िया सफ़हा 890 का) (फ़ा43) और किसी नेक बात में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी (फ़ा44) तो उनसे बैअ़त लो और अल्लाह से उनकी मग़फ़िरत चाहो (फ़ा45) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(12) ऐ ईमान वालो उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है (फ़ा46) वह आख़िरत से आस तोड़ बैठे हैं (फ़ा47) जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से।(13) (फ़ा48) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा27) यानी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती ममनूअ़ है (फ़ा28) कि उनकी हिजरत ख़ालिस दीन के लिए है ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने शौहरों की अ़दावत में घर छोड़ा हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उन औरतों को क़सम दी जाये कि वह न शौहरों की अ़दावत में निकली हैं और न और किसी दुनियवी वजह से उन्होंने सिर्फ़ अपने दीन व ईमान के लिए हिजरत की है। (फ़ा29) मुसलमान औरतें (फ़ा30) यानी काफ़िरों को (फ़ा31) यानी काफ़िर मर्द मुसलमान औरतों को हलाल मसला औरत मुसलमान होकर काफ़िर मर्द की ज़ौजियत से ख़ाली हो गई (फ़ा32) यानी जो महर उन्होंने उन औरतों को दिये थे वह उन्हें वापस कर दो यह हुक्म अहले ज़िम्मा के लिए है जिनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई लेकिन हरबी औरतों के महर वापस करना न वाजिब न सुन्नत (व इन् कानल् अमूरू बि-ईताअि मा अन्फ़क़ू लिल् वुजूबी फ़हु-व मन्सूख़ुन् व इन् का-न ल-नदु-ब कमा हु-व क़ौलुश्-शाफ़अ़ी फ़ला) मसला और यह महर देना इस सूरत में है जब कि औरत का काफ़िर शौहर उसको तलब करे और अगर न तलब करे तो उसको कुछ न दिया जाएगा मसला इसी तरह अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा को महर नहीं दिया था तो भी वह कुछ न पाएगा **शाने नुज़ूलः** यह आयत सुलह हुदैबिया के बाद नाज़िल हुई सुलह में यह शर्त थी कि मक्का वालों में से जो शख़्स ईमान लाकर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो उसको अहले मक्का वापस ले सकते हैं इस आयत में यह बयान फ़रमा दिया गया कि यह शर्त सिर्फ़ मर्दों के लिए औरतों की तसरीह अहद नामा में नहीं न औरतें इस क़रारदाद में दाख़िल हो सकती है क्योंकि मुसलमान औरत काफ़िर के लिए हलाल नहीं। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह आयत हुक्मे अव्वल की नासिख़ है यह उस तक़दीर पर है कि औरतें अहदे सुलह में दाख़िल हों मगर औरतों का इस अहद में दाख़िल होना सही नहीं क्योंकि हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से अहद नामा के यह अलफ़ाज़ मरवी हैं (ला या ती-क मिन्ना रजुलुन् व इन् का-न अ़ला दीनि-क इल्ला रदत्तुहू) यानी हम में से जो मर्द आपके पास पहुंचे ख़्वाह वह आपके दीन ही पर हो आप उसको वापस देंगे (फ़ा33) यानी मुहाजिरा औरतों से अगरचे दारुलहरब में उनके शौहर हों क्योंकि इस्लाम लाने से वह उन शौहरों पर हराम हो गईं और उनकी ज़ौजियत में न रहीं। **मसलाः** *व हतज़्-ज बिही अबू हनी-फ-तः अ़ला अन्न ला इद्-दतः अ़लल् मुहा-ज-रति फ-यजूज़् ल-हत्-त-ज़व्वुजु मिन् ग़ैरि अ़िद्दतिन् ख़िलाफ़न् लहुमा* (फ़ा34) महर देने से मुराद उसको अपने ज़िम्मा लाज़िम कर लेना है अगरचे बिलफ़ेअ़ल न दिया जाये। मसला इससे यह भी साबित हुआ कि उन औरतों से निकाह करने पर नया महर वाजिब होगा उन के शौहरों को जो अदा कर दिया गया वह उसमें मुजरा व महसबू न होगा (फ़ा35) यानी जो औरतें दारुल हरब में रह गईं या मुरतदा होकर दारुल हरब चली गईं उन से ज़ौजियत का इलाक़ा न रखो चुनान्चे यह आयत नाज़िल होने के बाद असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन काफ़िरा औरतों को तलाक़ दे दी जो मक्का मुकर्रमा में थीं **मसलाः** अगर मुसलमान की औरत (मआ़ज़ल्लाह) मुरतद हो जाये तो उसके क़ैदे निकाह से बाहर न होगी (अ़लैहिल्फ़त्वा ज़ज़्रन् व तैसीरन्) (फ़ा36) यानी उन औरतों को तुम ने जो महर दिये थे वह उन काफ़िरों से वसूल कर लो जिन्होंने उनसे निकाह किया। (फ़ा37) अपनी औरतों पर हिजरत करके दारुस्सलाम में चली आयें उनके मुसलमान शौहरों से जिन्होंने उनसे निकाह किया। (फ़ा38) **शाने नुज़ूलः** इस आयत के नाज़िल होने के बाद मुसलमानों ने तो मुहाजिरा औरतों के महर उनके काफ़िर शौहरों को अदा कर दिये और काफ़िरों ने मुरतदात के महर मुसलमानों को अदा करने से इन्कार किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा39) जिहाद में और उन से ग़नीमत पाओ (फ़ा40) यानी मुरतदा होकर दारुल हरब में चली गईं थीं (फ़ा41) उन औरतों के महर देने में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मोमिनीन मुहाजिरीन की औरतों में से छः औरतें ऐसी थीं जिन्होंने दारुल हरब को इख़्तियार किया और मुशरिकीन के साथ लाहिक़ हुईं और मुरतद हो गईं रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि ने उनके शौहरों को माले ग़नीमत से उनके महर अ़ता फ़रमाए फ़ाइदा इन आयतों में मुहाजरात के इम्तेहान और कुफ़्फ़ार ने जो अपनी बीबियों पर ख़र्च किया हो वह बाद हिजरत उन्हें देना और मुसलमानों ने जो अपनी बीबियों पर ख़र्च किया हो वह उनके मुरतद होकर काफ़िरों से मिल जाने के बाद उनसे मांगना और जिनकी बीबियां मुरतद होकर चली गई हों उन्होंने जो उन पर ख़र्च किया था वह उन्हें माले ग़नीमत में से देना यह तमाम अहकाम मन्सूख़ हो गए आयते सैफ़ या आयते ग़नीमत या सुन्नत से क्योंकि यह अहकाम जभी तक बाक़ी रहे जब तक यह अहद रहा और जब हव अहद उठ गया तो अहकाम भी न रहे (फ़ा42) जैसा कि ज़मानए जाहिलियत में दस्तूर था कि लड़कियों को ब-ख़्याले आ़र व ब-अन्देशए नादारी ज़िन्दा दफ़न कर देते थे इससे और हर क़त्ले नाहक़ से बाज़ रहना इस अहद में शामिल है (फ़ा43) यानी पराया बच्चा लेकर शौहर को धोखा दें और उसको अपने पेट से जना हुआ बतायें जैसा कि जाहिलियत के ज़माना में दस्तूर था (फ़ा44) नेक बात अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी है (फ़ा45) मरवी है कि जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रोज़े फ़तहे मक्का मर्दों की बैअ़त लेकर फ़ारिग़ हुए तो कोहे सफ़ा पर औरतों से बैअ़त लेना शुरू की और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु नीचे खड़े हुए हुज़ूर का कलाम मुबारक औरतों को सुनाते जाते थे हिन्द बिन्त उतबा अबू सुफ़ियान की बीवी ख़ौफ़ज़दा बुरक़ा पहन कर इस तरह हाज़िर

हुई कि पहचानी न जाये सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअ़त कर लेता हूं कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो हिन्द ने सर उठा कर कहा कि आप हम से वह अहद लेते हैं जो हमने आपको मर्दों से लेते नहीं देखा और उस रोज़ मर्दों से सिर्फ़ इस्लाम और जिहाद पर बैअ़त ली गई थी फिर हुज़ूर ने फ़रमाया और चोरी न करेंगी तो हिन्द ने अर्ज़ किया कि अबू सुफ़ियान बख़ील आदमी हैं और मैंने उनका माल ज़रूर लिया है मैं नहीं समझती मुझे हलाल हुआ या नहीं अबू सुफ़ियान हाज़िर थे उन्होंने कहा जो तूने पहले लिया और जो आइन्दा ले सब हलाल इस पर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद किया तू हिन्द बिन्द उतबा है अर्ज़ किया जी हां जी हां जो कुछ मुझ से क़ुसूर हुए हैं माफ़ फ़रमाइये फिर हुज़ूर ने फ़रमाया और न बदकारी करेंगी तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औरत बदकारी करती है फिर फ़रमाया न अपनी औलाद को क़त्ल करें हिन्द ने कहा हमने छोटे छोटे पाले जब बड़े होगए तुमने उन्हें क़त्ल कर दिया तुम जानो और वह जानें उसका लड़का हन्ज़ला बिन अबू सुफ़ियान बद्र में क़त्ल कर दिया गया हिन्द की यह गुफ़्तगू सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बहुत हंसी आई फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाँव के दर्मियान कोई बुहतान न घड़ेंगी हिन्द ने कहा बख़ुदा बुहतान बहुत बुरी चीज़ है और हुज़ूर हमको नेक बातों और बरतर ख़सलतों का हुक्म देते हैं फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रमानी न करेंगी इस पर हिन्द ने कहा कि इस मजलिस में हम इस लिए हाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आपकी नाफ़रमानी का ख़्याल आने दें औरतों ने इन तमाम उमूर का इक़रार किया और चार सौ सत्तावन औरतों ने बैअ़त की इस बैअ़त में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुसाफ़ा न फ़रमाया और औरतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया बैअ़त की कैफ़ियत में यह भी बयान किया गया है कि एक क़दह पानी में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औरतों ने अपने हाथ डाले और यह भी कहा गया है बैअ़त कपड़े के वास्ते से लीग ई और बईद नहीं है कि दोनों सूरतें अ़मल में आई हों **मसाइलः** बैअ़त के वक़्त मिक़राज़ का इस्तेमाल मशाइख़ का तरीक़ा है यह भी कहा गया है कि यह हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सुन्नत है ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशाइख़ का मामूल है और कहा गया है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मन्क़ूल है औरतों की बैअ़त में अजनबिया का हाथ छूना हराम है या बैअ़त ज़बान से हो या कपड़े वग़ैरह के वास्ता से (फ़ा46) उन लोगों से मुराद यहूद हैं (फ़ा47) क्योंकि उन्हें कुतुबे साबिक़ा से मालूम हो चुका था और वह यक़ीन जानते थे कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और यहूद ने उसकी तकज़ीब की है इस लिए उन्हें अपनी मग़फ़िरत की उम्मीद नहीं (फ़ा48) फिर दुनिया में वापस आने की या यह माना हैं कि यहूद सवाबे आख़िरत से ऐसे नाउम्मीद हुए जैसे कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने हाल को जान कर सवाबे आख़िरत से बिल्कुल मायूस हैं।

(बक़िया सफ़हा 891 का) ईज़ा देना शदीद तरीन जुर्म है और उसके वबाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से महरूम हो जाता है। (फ़ा10) और तौरेत व दीगर कुतुबे इलाहिया का इक़रार व एतेराफ़ करता हुआ और तमाम पहले अम्बिया को मानता हुआ। (फ़ा11) हदीस रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से अस्हाबे कराम नजाशी बादशाह के पास गए तो नजाशी बादशाह ने कहा मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और वही रसूल हैं जिनकी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने बशारत दी अगर उमूरे सल्तनत की पाबन्दियां न होतीं तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कफ़श बरदारी की ख़िदमत बजा लाता। (अबू दाऊद) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है कि तौरेत में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त मज़कूर और यह भी कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आपके पास मदफ़ून होंगे अबू दाऊद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़दस में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है (तिर्मिज़ी) हज़रत कअ़ब अहबार से मरवी है कि हवारियों ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से अर्ज़ किया या रूहुल्लाह क्या हमारे बाद और कोई उम्मत भी है फ़रमाया हां अहमदे मुजतबा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत वह लोग हुकमा उलमा अबरार व अतक़िया हैं और फ़िक़ह में नाइब अम्बिया हैं अल्लाह तआ़ला से थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी और अल्लाह तआ़ला उन से थोड़े अ़मल पर राज़ी

(बक़िया सफ़हा 892 का) अ़लैहिस्सलाम नुज़ूल फ़रमायेंगे तो रूए ज़मीन पर सिवाए इस्लाम के और कोई दीन न होगा। (फ़ा17) **शाने नुज़ूलः** मोमिनीन ने कहा था कि अगर हम जानते कि अल्लाह तआ़ला को कौनसा अ़मल बहुत पसन्द है तो हम वही करते इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इस आयत में इस अ़मल को तिजारत से तअ़बीर फ़रमाया गया क्योंकि जिस तरह तिजारत से नफ़ा की उम्मीद होती है इसी तरह उन आमाल से बेहतरीन नफ़ा रज़ाए इलाही और जन्नत व नजात हासिल होती है। (फ़ा18) अब वह तिजारत बताई जाती है। (फ़ा19) जान और माल और हर एक चीज़ से। (फ़ा20) और ऐसा करो तो। (फ़ा21) इसके अलावा जल्द मिलने वाली। (फ़ा22) इस फ़तह से या फ़तहे मक्का मुराद है या बिलादे फ़ारस व रोम की फ़तह। (फ़ा23) दुनिया में फ़तह की और आख़िरत में जन्नत की। (फ़ा24) हवारियों ने दीने इलाही की मदद की थी जब कि- (फ़ा25) हवारी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के मुख़लिसीन को कहते हैं यह बारह हज़रात थे जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर अव्वल ईमान लाये उन्होंने अर्ज़ किया। (फ़ा26) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर। (फ़ा27) इन दोनों में क़िताल हुआ। (फ़ा28) ईमान वाले इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम

आसमान पर उठा लिये गए तो उनकी क़ौम तीन फ़िरक़ों में मुनक़सिम हो गई एक फ़िरक़ा ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की निस्बत कहा कि वह अल्लाह था आसमान पर चला गया दूसरे फ़िरक़ा ने कहा कि वह अल्लाह तआ़ला का बेटा था उसने अपने पास बुला लिया तीसरे फ़िरक़ा ने कहा कि वह अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल थे उसने उठा लिया यह तीसरे फ़िरक़े वाले मोमिन थे उनकी उन दोनों फ़िरक़ों से जंग रही और काफ़िर गरोह उन पर ग़ालिब रहे यहां तक कि सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ुहूर फ़रमाया उस वक़्त ईमानदार गरोह उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुआ इस तक़दीर पर मतलब यह है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों की हमने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्दीक़ करने से मदद फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 893 का) भी है कि हुज़ूरे अनवर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम लिखते और किताब से कुछ पढ़ते न थे और यह आपकी फ़ज़ीलत थी कि ग़ायत हुज़ूर इल्म से उसकी हाजत न थी ख़त एक सनअ़ते ज़ेहनिया है जो आलए जिस्मानिया से सादिर होती है तो जो ज़ात ऐसी हो कि क़लम आला उसके ज़ेरे फ़रमान हो उसको इस किताब की क्या हाजत फिर हुज़ूर का किताबत न फ़रमाना और किताबत का माहिर होना एक मोअ़जेज़ए अ़ज़ीमा है कातिबों को इल्मे ख़त और रस्मे किताबत की तालीम फ़रमाते और अहले हिरफ़त को हिरफ़तों की तालीम देते और हर कमाले दुनियवी व उख़रवी में अल्लाह तआ़ला ने आपको तमाम ख़ुल्क़ से आ़लम किया (फ़ा4) यानी क़ुरआन पाक सुनाते हैं (फ़ा5) अ़क़ाइदे बातिला व अख़्लाक़े रज़ीला व ख़बाइसे जाहिलियत व क़बाइहे आमाल से (फ़ा6) किताब से मुराद कुरआन और हिकमत से सुन्नत व फ़िक़ह है या अहकामे शरीअ़त व असरारे तरीक़त (फ़ा7) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल (फ़ा8) कि शिर्क व अ़क़ाइदे बातिला व ख़बाइसे आमाल में गिरिफ़्तार थे और उन्हें मुर्शिद कामिल की शदीद हाजत थी (फ़ा9) यानी उमीय्यों में से (फ़ा10) औरों से मुराद या तो अ़जम हैं या वह तमाम लोग जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद क़ियामत तक इस्लाम में दाख़िल हों उनको (फ़ा11) उनका ज़माना न पाया उनके बाद आये या फ़ज़्ल व शरफ़ में उनके दर्जा को न पहुंचे क्योंकि सहाबा के बाद के लोग ख़्वाह ग़ौस व क़ुतुब हो जायेंगे मगर फ़ज़ीलत सहाबियत नहीं पा सकते (फ़ा12) अपने ख़ल्क़ पर कि उसने उनकी हिदायत के लिए अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मबऊस फ़रमाया (फ़ा13) और उसके अहकाम का इत्तेबाअ़ उन पर लाज़िम किया गया था वह लोग यहूद हैं (फ़ा14) और इस पर अ़मल न किया और इसमें सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त देखने के बावजूद हुज़ूर पर ईमान न लाये। (फ़ा15) और बोझ के सिवा उनसे कुछ भी नफ़ा न पाए और जो उलूम उनमें हैं उनसे असलन वाक़िफ़ न हो यही हाल उनका यहूद का है जो तौरेत उठाये फिरते हैं इसके अलफ़ाज़ रटते हैं और उससे नफ़ा नहीं उठाते उसके मुताबिक़ अ़मल नहीं करते और यही मिसाल उन लोगों पर सादिक़ आती है जो कुरआने करीम के माना को न समझें और उस पर अ़मल न करें और उस से एराज़ करें (फ़ा16) जैसा कि तुम कहते हो कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं (फ़ा17) कि मौत तुम्हें उस तक पहुंचाये

(बक़िया सफ़हा 894 का) वाला कोई हाकिम मौजूद हो या फ़नाए शहर जो शहर से मुत्तसिल हो और अहले शहर उसको अपने हवाइज के काम में लाते हों (2) हाकिम (3) वक़्ते ज़ुहर (4) ख़ुतबा वक़्त के अन्दर (5) ख़ुतबा का क़ब्ल नमाज़ होना इतनी जमाअ़त में जो जुमा के लिए ज़रूरी है (6) जमाअ़त और उसकी अक़ल्ले मिक़दार तीन मर्द हैं सिवाए इमाम के (7) इज़्ने आ़म कि नमाज़ियों को मक़ामे नमाज़ में आने से रोका न जाए (फ़ा24) यानी अब तुम्हारे लिए जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्गूल हो या तल्बे इल्म या इयादते मरीज़ या शिरकते जनाज़ा या ज़ियारते उलमा और उसके मिस्ल कामों में मश्गूल होकर नेकियां हासिल करो। (फ़ा25) **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्येबा में रोज़े जुमा ख़ुतबा फ़रमा रहे थे इस हाल में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और हस्बे दस्तूर एलान के लिए तबल बजाया गया ज़माना बहुत तंगी और गिरानी का था लोग बईं ख़्याल उसकी तरफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अजनास ख़त्म हो जायें और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा26) मसलाः इससे साबित हुआ कि ख़तीब को खड़े होकर ख़ुतबा पढ़ना चाहिए। (फ़ा27) यानी नमाज़ का अज्र व सवाब और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने की बरकत व सआ़दत।

(बक़िया सफ़हा 896 का) अ़लैहि वसल्लम के सरे मुबारक पर मेअ़राज का ताज है हज़रत रहमान ने उन्हें इज़्ज़त व क़ुव्वत दी है इब्ने उबय कहने लगा चुप मैं तो हंसी से कह रहा था ज़ैद बिन अरक़म ने यह ख़बर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचाई हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इब्ने उबय के क़त्ल की इजाज़त चाही सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया और इरशाद किया कि लोग कहेंगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अपने असहाब को क़त्ल करते हैं हुज़ूरे अनवर ने इब्ने उबय से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तूने यह बातें कही थीं वह मुकर गया और क़सम खा गया कि मैंने कुछ भी नहीं कहा उसके साथी जो मजलिस शरीफ़ में हाज़िर थे वह अर्ज़ करने लगे कि इब्ने उबय बूढ़ा बड़ा शख़्स है यह जो कहता है ठीक कहता है ज़ैद बिन अरक़म को शायद धोखा हुआ हो और बात याद न रही हो फिर जब ऊपर की आयतें नाज़िल हुईं और इब्ने उबय का झूठ ज़ाहिर हो गया तो उससे कहा गया कि जा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त कर हुज़ूर तेरे लिए अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहें तो गर्दन फेरी और कहने लगा कि तुमने कहा ईमान ला तो मैं ईमान ले आया तुम ने कहा ज़कात दे तो मैंने ज़कात दी अब यही बाक़ी रह गया है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सज्दा करूं इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा16) इस लिए कि वह निफ़ाक़ में रासेख़ और पुख़्ता हो चुके हैं। (फ़ा17) वही सब का राज़िक़ है (फ़ा18)

उस ग़ज़वा से लौट कर (फ़ा19) मुनाफ़िक़ीन ने अपने को इज़्ज़त वाला कहा और मोमिनीन को ज़िल्लत वाला अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा20) इस आयत के नाज़िल होने के चन्द ही रोज़ बाद इब्ने उबय मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ की हालत पर मर गया। (फ़ा21) पंजगाना नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से। (फ़ा22) कि दुनिया में मश्ग़ूल होकर दीन को फ़रामोश कर दे और माल की मुहब्बत में अपने हाल की परवाह न करे और औलाद की ख़ुशी के लिए राहत आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे। (फ़ा23) कि उन्होंने दुनियाए फ़ानी के पीछे दारे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली निअ़मतों की परवाह न की। (फ़ा24) यानी जो सदक़ात वाजिब हैं वह अदा करो। (फ़ा25) जो लौहे महफ़ूज़ में मकतूब है।

(बक़िया सफ़हा 901 का) दरवाज़ा खटखटाया दुश्मन ग़ाफ़िल हो गया था उसने मौक़ा पाया क़ैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया औ़फ़ ने ख़िदमते अक़दस में हाज़िर दरियाफ़्त किया कि क्या यह बकरियां उनके लिए हलाल हैं हुज़ूर ने इजाज़त दी और यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा13) दोनों जहान में। (फ़ा14) बूढ़ी हो जाने की वजह से कि वह सिन्ने अयास को पहुंच गई हों सिन्ने अयास एक क़ौल में है पचपन और एक क़ौल में साठ साल की उम्र है और असह यह है कि जिस उम्र में भी हैज़ मुन्क़तअ़ हो जाये वही सिन्ने अयास है (फ़ा15) इसमें कि उनका हुक्म क्या है **शाने नुज़ूलः** सहाबा ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हैज़ वाली औरतों की इद्दत तो हमें मालूम हो गई जो हैज़ वाली न हों उनकी इद्दत क्या है इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा16) यानी वह सग़ीरा हैं या उम्र तो बुलूग़ की आ गई मगर अभी हैज़ न शुरू हुआ उनकी इद्दत भी तीन माह है (फ़ा17) **मसलाः** हामिला औरतों की इद्दत वज़्ए हमल है वह इद्दत तलाक़ की हो या वफ़ात की (फ़ा18) अहकाम जो मज़कूर हुए (फ़ा19) और अल्लाह तआ़ला के नाज़िल फ़रमाये हुए अहकाम पर अ़मल करे और अपने ऊपर जो हुक़ूक़ वाजिब हैं उन्हें बएहतियात अदा करे (फ़ा20) **मसलाः** तलाक़ दी हुई औरत को ता इद्दत रहने के लिए अपने हस्बे हैसियत मकान देना शौहर पर वाजिब है और उस ज़माना में नफ़क़ा देना भी वाजिब है। (फ़ा21) जगह में उनके मकान को घेर कर या किसी नामुवाफ़िक़ को उनके शरीके मस्कन करके या और कोई ऐसी ईज़ा देकर वह निकलने पर मजबूर हों। (फ़ा22) वह मुतल्लक़ात (फ़ा23) क्योंकि उनकी इद्दत जब ही तमाम होगी। **मसलाः** नफ़क़ा जैसा हामिला को देना वाजिब है ऐसा ही ग़ैर हामिला को भी ख़्वाह उसको तलाक़े रजई दी हो या बाइन।

(बक़िया सफ़हा 902 का) पर दूध पिलाना वाजिब हो जाता है बच्चे की मां जब तक उसके बाप के निकाह में हो या तलाक़े रजई की इद्दत में ऐसी हालत में उस को दूध पिलाने की उजरत लेना जाइज़ नहीं बाद इद्दत जाइज़ है। **मसलाः** किसी औरत को मुअ़य्यन उजरत पर दूध पिलाने के लिए मुक़र्रर करना जायज़ है। **मसलाः** ग़ैर औरत की ब-निस्बत उजरत पर दूध पिलाने की मां ज़्यादा मुस्तहिक़ है। **मसलाः** अगर मां ज़्यादा उजरत तलब करे तो फिर ग़ैर ज़्यादा ऊला। मसला दूध पिलाई पर बच्चे को नहलाना उसके कपड़े धोना उसके तेल लगाना उसकी ख़ुराक का इन्तेज़ाम रखना लाज़िम है लेकिन इन सब चीज़ों की क़ीमत उसके वालिद पर है। मसला अगर दूध पिलाई ने बच्चे को बजाए अपने बकरी का दूध पिलाया या खाने पर रखा तो वह उजरत की मुस्तहिक़ नहीं (फ़ा25) न मर्द औरत के हक़ में कोताही करे न औरत मुआ़मला में सख़्ती। (फ़ा26) मसलन मां ग़ैर औरत के बराबर उजरत पर राज़ी न हो और बाप ज़्यादा देना न चाहे। (फ़ा27) मुतल्लक़ा औरतों को और दूध पिलाने वाली औरतों को (फ़ा28) यानी तंगीए मआ़श के बाद (फ़ा29) इससे हिसाबे आख़िरत मुराद है जिसका वक़ूअ़ यक़ीनी है इस लिए सीग़ए माज़ी से उसकी ताबीर फ़रमाई गई। (फ़ा30) अ़ज़ाबे जहन्नम की या दुनिया में क़हत व क़त्ल वग़ैरह बलाओं में मुब्तला करके। (फ़ा31) यानी वह इज़्ज़ते रसूले करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा32) कुफ़्र व जहल की। (फ़ा33) ईमान व इल्म के (फ़ा34) जन्नत जिस की निअ़मतें हमेशा बाक़ी रहेंगी कभी मुन्क़तअ़ न होंगी। (फ़ा35) एक के ऊपर एक हर एक की मोटाई पांच सौ बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासला पांच सौ बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासला पांच सौ बरस की राह। (फ़ा36) यानी सात ही ज़मीनें (फ़ा37) यानी अल्लाह तआ़ला का हुक्म उन सब में जारी व नाफ़िज़ है या यह माना हैं कि जिबरील अमीन आसमान से वही लेकर ज़मीन की तरफ़ उतरते हैं।

(बक़िया सफ़हा 903 का) किया कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों तो अर्ज़ किया जाये कि दहन मुबारक से मग़ाफ़ीर की बू आती है और मग़ाफ़ीर की बू हुज़ूर को नापसन्द थी चुनान्चे ऐसा किया गया हुज़ूर को उनका मन्शा मालूम था फ़रमाया मग़ाफ़ीर तो मेरे क़रीब नहीं आया ज़ैनब के यहां शहद मैंने पिया है इसको मैं अपने ऊपर हराम करता हूं मक़सूद यह कि हज़रत ज़ैनब के यहां शहद का शुग़ल होने से तुम्हारी दिल शिकनी होती है तो हम शहीद ही तर्क फ़रमाये देते हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा3) यानी कफ़्फ़ारा तो मारिया को ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाइये या शहद नोश फ़रमाइये या क़सम के उतार से यह मुराद है कि क़सम के बाद इन्शाअल्लाह कहा जाये ताकि उसके ख़िलाफ़ करने से हिन्स (क़सम शिकनी) न हो मक़ातिल से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मारिया की तहरीम के कफ़्फ़ारा में एक ग़ुलाम आज़ाद किया और हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर ने कफ़्फ़ारा नहीं दिया क्योंकि आप मग़फ़ूर हैं कफ़्फ़ारा का हुक्म तालीमे उम्मत के लिए है **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेना यमीन यानी क़सम है। (फ़ा4) यानी हज़रत हफ़सा (फ़ा5) मारिया को अपने ऊपर हराम कर लेने की और उसके साथ यह फ़रमाया कि इसका किसी पर इज़्हार न करना। (फ़ा6) यानी हज़रत हफ़सा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से (फ़ा7) यानी तहरीमे मारिया और ख़िलाफ़ते शैख़ैन के मुतअ़ल्लिक़ जो दो बातें फ़रमाई थीं उनमें से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया कि तुमने यह बात ज़ाहिर कर दी और दूसरी बात का ज़िक्र न फ़रमाया यह शाने करीमी थी कि गिरिफ़्त फ़रमाने में बाज़ से चश्मपोशी फ़रमाई (फ़ा8) हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा (फ़ा9) जिससे कुछ भी छुपा नहीं उसके बाद अल्लाह तआ़ला हज़रत आइशा व हफ़सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को ख़िताब फ़रमाता है (फ़ा10) यह तुम पर वाजिब है (फ़ा11) कि तुम्हें वह बात पसन्द आई जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गिराँ है यानी तहरीमे मारिया (फ़ा12) और बाहम मिल कर ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करो जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नागवार हो

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرُ ۝ الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝ الَّذِىْ
خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ
خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ
جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اِذَاۤ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ تَفُوْرُ ۝ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَاۤ اُلْقِىَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

सूरतुल् मुल्कि

(मक्की है इसमें 30 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

तबा–र–कल्लज़ी बि–यदिहिल् मुल्कु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरु(1)निल्लज़ी ख़–ल–क़ल्
मौ–त वल्ह़या–त लियब्लु–वकुम् अय्युकुम् अह़्सनु अ़–म–लन् व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ग़फ़ूर(2)
अ़ल्लज़ी ख़–ल–क़ सब्–अ़ समावातिन् तिबाक़न् मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह़्मानि मिन् तफ़ावुतिन्
फ़र्जिअ़िल् ब–स–र हल् तरा मिन् फ़ुतूर(3)सुम्मर्जिअ़िल् ब–स–र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल् ब–स़रु
ख़ासिअंव्–व हु–व ह़सीर(4)व ल–क़द् ज़य्यन्नस् समाअद्दुन्या बि–मस़ाबी–ह़ व जअ़ल्नाहा रुजूमंल्
लिश्शयात़ीनि व अअ्तदना लहुम अ़ज़ाबस्सअ़ीर(5)व लिल्लज़ी–न क–फ़रु बि–रब्बिहिम् अ़ज़ाबु
जहन्न–म व बिअ्सल् मस़ीर(6)इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव् व हि–य तफ़ूर(7) तकादु त–
मय्यज़ु मिनल्ग़ैज़ि कुल्लमा उल्क़ि–य फ़ीहा फ़ौजुन् स–अ–लहुम् ख़–ज़–नतुहा अ–लम् यअ्तिकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)
बड़ी बरकत वाला है वह जिसके क़ब्ज़े में सारा मुल्क (फ़ा2) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।(1) वह
जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो (फ़ा3) तुम में किसका काम ज़्यादा अच्छा है (फ़ा4)
और वही इज़्ज़त वाला बख़्शिश वाला है।(2) जिसने सात आसमान बनाए एक के ऊपर दूसरा तू रहमान
के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता है (फ़ा5) तू निगाह उठा कर देख (फ़ा6) तुझे कोई रख़्ना नज़र आता है।(3)
फिर दोबारा निगाह उठा (फ़ा7) नज़र तेरी तरफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदी।(4) (फ़ा8) और बेशक
हमने नीचे के आसमान को (फ़ा9) चराग़ों से आरास्ता किया (फ़ा10) और उन्हें शैतानों के लिए मार किया
(फ़ा11) और उनके लिए (फ़ा12) भड़कती आग का अ़ज़ाब तैयार फ़रमाया।(5) (फ़ा13) और जिन्होंने
अपने रब के साथ कुफ़्र किया (फ़ा14) उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही बुरा अन्जाम।(6)
जब उसमें डाले जायेंगे उसका रेंकना सुनेंगे कि जोश मारती है।(7) मालूम होता है कि शिद्दते ग़ज़ब में
फट जाएगी जब कभी कोई गरोह उसमें डाला जाएगा उसके दारोग़ा (फ़ा15) उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास
कोई डर सुनाने वाला

(फ़ा1) सूरह मुल्क शफ़ाअ़त करती है (तिर्मिज़ी व अबू दाऊद) एक और हदीस में है असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक जगह ख़ेमा नसब किया वहां एक क़ब्र थी और उन्हें ख़्याल न था वह साहबे क़ब्र सूरह मुल्क पढ़ते रहे यहां तक कि तमाम की तो ख़ेमा वाले सहाबी ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया मैंने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया मुझे ख़्याल न था कि यहां क़ब्र है और थी वहां क़ब्र और साहबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहां तक कि ख़त्म किया सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत मानिआ़ मुनज्जियह है अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाती है। (तिर्मिज़ी व क़ाल ग़रीब) (फ़ा2) जो चाहे करे जिसे चाहे इज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत। (फ़ा3) दुनिया की ज़िन्दगी में। (फ़ा4) यानी कौन ज़्यादा मुतीअ़ व मुख़लिस है। (फ़ा5) यानी आसमानों की पैदाइश से कुदरते इलाही ज़ाहिर है कि उसने कैसे मुस्तहकम उस्तवार मुस्तक़ीम मुस्तवी मुतनासिब बनाए। (फ़ा6) आसमान की तरफ़ बारे दिगर। (फ़ा7) और बार बार देख। (फ़ा8) कि बार बार की जुस्तजू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी। (फ़ा9) जो ज़मीन की तरफ़ सब से ज़्यादा ग़रीब है। (फ़ा10) यानी सितारों से (फ़ा11) कि शयातीन आसमान की तरफ़ उनकी गुफ़्तगू सुनने और बातें चुराने पहुंचें **(बक़िया सफ़हा 943 पर)**

نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا
كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا
قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا
وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ۭ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ

नज़ीर(8)क़ालू बला क़द जा–अना नज़ीरुन् फ़–कज़्ज़ब्ना व कुल्ना मा नज़्ज़–लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर(9)व क़ालू लौ कुन्ना नसमअु औ नअ़क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस्हा–बिस्सअ़ीर(10)फ़अ़त–रफ़ू बि–ज़म्बिहिम् फ़सुह़्क़ल् लि–अस्हाबिस् सअ़ीर(11) इन्नल्लज़ी–न यख़्शौ–न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि–र–तुंव् व अज्रुन् कबीर(12)व असिर्रू क़ौ–लकुम् अविज्हरू बिही इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस् सुदूर(13)अला यअ़्–लमु मन् ख़–ल–क़ व हुवल्लतीफ़ुल् ख़बीर(14) हुवल्लज़ी ज–अ़–ल लकुमुल् अर्–ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिरिज़्क़िही व इलैहिन्नुशूर(15)अ–अमिन्तुम् मन् फ़िस्माइ अंय्यख़्सि–फ़ बिकुमुलअर्–ज़ फ़इज़ा हि–य तमूर (16)अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समाइ अंय्युर्सि–ल अ़लैकुम् ह़ासिबन् फ़–स–तअ़्लमू–न कै–फ़ नज़ीर(17)व ल–क़द् कज़्–ज़–बल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़कै–फ़ का–न नकीर(18)अ–व–लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौ–क़हुम् साफ़्फ़ातिंव् व यक़्बिज़्–न मा युम्सिकुहुन्–न

न आया था।(8) (फ़ा16) कहेंगे क्यों नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए (फ़ा17) फिर हमने झुठलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में।(9) और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते (फ़ा18) तो दोज़ख़ वालों में न होते।(10) अब अपने गुनाह का इक़रार किया (फ़ा19) तो फिटकार हो दोज़ख़ियों को।(11) बेशक वह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं (फ़ा20) उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।(12) (फ़ा21) और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वह तो दिलों की जानता है।(13) (फ़ा22) क्या वह न जाने जिसने पैदा किया (फ़ा23) और वही है हर बारीकी जानता ख़बरदार।(14) (रुकूअ़ 1) वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन राम कर दी तो उसके रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ (फ़ा24) और उसी की तरफ़ उठना है।(15) (फ़ा25) क्या तुम उससे निडर हो गए जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे (फ़ा26) जभी वह कांपती रहे।(16) (फ़ा27) या तुम निडर हो गए उससे जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम पर पथराव भेजे (फ़ा28) तो अब जानोगे (फ़ा29) कैसा था मेरा डराना।(17) और बेशक इनसे अगलों ने झुठलाया (फ़ा30) तो कैसा हुआ मेरा इंकार।(18) (फ़ा31) और क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते (फ़ा32) और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता (फ़ा33)

(फ़ा16) यानी अल्लाह का नबी जो तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता। (फ़ा17) और उन्होंने अहकामे इलाही पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे आख़िरत से डराया। (फ़ा18) रसूलों की हिदायत और उसको मानते मसलाः इससे मालूम हुआ तकलीफ़ का मदार अदिल्ला समइया व अक़लिया दोनों पर है और दोनों हुज्जतें मुलज़िमा हैं। (फ़ा19) कि रसूलों की तकज़ीब करते थे और उस वक़्त का इक़रार कुछ नाफ़ेअ़ नहीं। (फ़ा20) और उस पर ईमान लाते हैं। (फ़ा21) उनकी नेकियों की जज़ा। (फ़ा22) इस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। शाने नुज़ूलः मुशरिकीन आपस में कहते थे चुपके चुपके बात करो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का ख़ुदा सुन न पाये इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती यह कोशिश फ़ुज़ूल है। (फ़ा23) अपनी मख़्लूक़ के अहवाल को। (फ़ा24) जो उसने तुम्हारे लिए पैदा फ़रमाई। (फ़ा25) क़ब्रों से जज़ा के लिए। (फ़ा26) जैसा क़ारून को धंसाया। (फ़ा27) ताकि तुम उसके असफ़ल में पहुंचो। (फ़ा28) जैसा लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम पर भेजा था। (फ़ा29) यानी अ़ज़ाब देख कर (फ़ा30) यानी पहली उम्मतों ने (फ़ा31) जब मैंने उन्हें हलाक किया (फ़ा32) हवा में उड़ते वक़्त (फ़ा33) पर फैलाने और समेटने की हालत में गिरने से

إِلَّا الرَّحْمٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هٰذَا الَّذِي
يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ
هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ
مَتَىٰ هٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ
الرَّحْمٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾

इल्लर्रह्मानु इन्नहू बिकुल्लि शैइम् बसीर(19)अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु–व जुन्दुल् लकुम् यन्सुरुकुम्
मिन् दूनिर् रह्मानि इनिल् काफ़िरू–न इल्ला फ़ी गुरूर(20)अम्मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुकुकुम् इन्
अम्स–क रिज़्क़हू बल् लज्जू फ़ी अुतुव्विंव् व नुफ़ूर(21)अ–फ़–मंय्यम्शी मुकिब्बन् अ़ला वज्हिही
अह्दा अम्मंय्यम्शी सविय्यन् अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम(22)कुल् हुवल्लज़ी अन्श–अकुम् व
ज–अ–ल लकुमुस् सम्–अ़ वल्–अब्सा–र वल्–अफ़्इ–द–त क़लीलम् मा तश्कुरून(23)कुल् हुवल्लज़ी
ज़–र–अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून(24)व यकूलू–न मता हाज़ल् वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन
(25)कुल् इन्नमल् अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व इन्नमा अना नज़ीरुम् मुबीन(26)फ़–लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़–तन्
सी–अत् वुजूहुल्लज़ी–न क–फ़रू व क़ी–ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्–दअू़न(27)कुल् अ–
रऐतुम् इन् अह्ल–कनियल्लाहु व मम्मअ़ि–य औ रहि–मना फ़मंय्युजीरुल् काफ़िरी–न मिन् अ़ज़ाबिन्
अलीम(28)कुल् हुवर्रह्मानु आमन्ना बिही व अ़लैहि त–वक्कल्ना फ़–स–तअ़्–लमू–न मन् हु–व फ़ी
ज़लालिम् मुबीन(29) कुल् अ–रऐतुम् इन् अस्ब–ह् मा–उकुम् ग़ौरन् फ़–मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम् मअ़ीन(30)

सिवा रहमान के (फ़ा34) बेशक वह सब कुछ देखता है।(19) या वह कौनसा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे (फ़ा35) काफ़िर नहीं मगर धोखे में।(20) (फ़ा36) या कौनसा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले (फ़ा37) बल्कि वह सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं।(21) (फ़ा38) तो क्या वह जो अपने मुँह के बल औंधा चले (फ़ा39) ज़्यादा राह पर है या वह जो सीधा चले (फ़ा40) सीधी राह पर।(22) (फ़ा41) तुम फ़रमाओ (फ़ा42) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाए (फ़ा43) कितना कम हक़ मानते हो।(23) (फ़ा44) तुम फ़रमाओ वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठाए जाओगे।(24) (फ़ा45) और कहते हैं (फ़ा46) यह वादा (फ़ा47) कब आएगा अगर तुम सच्चे हो।(25) तुम फ़रमाओ यह इल्म तो अल्लाह के पास है और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूं।(26) (फ़ा48) फिर जब उसे (फ़ा49) पास देखेंगे काफ़िरों के मुँह बिगड़ जायेंगे (फ़ा50) और उन से फ़रमा दिया जाएगा (फ़ा51) यह है जो तुम मांगते थे।(27) (फ़ा52) तुम फ़रमाओ (फ़ा53) भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को (फ़ा54) हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए (फ़ा55) तो वह कौनसा है जो काफ़िरों को दुख के अ़ज़ाब से बचा लेगा।(28) (फ़ा56) तुम फ़रमाओ वही रहमान है (फ़ा57) हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब जान जाओगे (फ़ा58) कौन खुली गुमराही में है।(29) तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुबह को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए (फ़ा59) तो वह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता।(30) (फ़ा60) (रुकूअ़ 2)

(फ़ा34) यानी बावजूदेकि परिन्दे बोझल मोटे जसीम होते हैं और शय सक़ील तबअ़न पस्ती की तरफ़ माइल होती है वह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत है कि वह ठहरे रहते हैं ऐसे ही आसमानों को जब तक वह चाहे रुके हुए हैं और वह न रोके तो गिर पड़ेंगे। (फ़ा35) अगर वह तुम्हें अ़ज़ाब करना चाहे। (फ़ा36) यानी काफ़िर शैतान के इस फ़रेब में हैं कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। (फ़ा37) यानी उसके सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं। (फ़ा38) **(बक़िया सफ़हा 925 पर)**

سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝١ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۝٢ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۝٣ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝٤ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۝٥
بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٧ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٨ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩ وَلَا
تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ بِنَمِيْمٍ ۝١١ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّۢ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝١٣ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٥ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۝١٧ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ۝١٨

सूरतुल् क़लमि

(मक्की है इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

नून् वल्क़–लमि व मा यस्तुरून(1)मा अन्–त बिनिअ़्–मति रब्बि–क बि–मज्नून(2)व इन्–न ल–क ल–अज्रन् ग़ै–र मम्नून(3)व इन्न–क ल–अ़ला ख़ुलुक़िन् अ़ज़ीम(4)फ़–सतुब्सिरु व युब्सिरून(5) बि–अय्यिकुमुल् मफ़्तून(6)इन्–न रब्ब–क हु–व अअ़्–लमु बिमन् ज़ल्–ल अ़न् सबीलिही व हु–व अअ़्–लमु बिल्मुह्–तदीन(7)फ़ला तुतिअ़िल् मु–कज़्ज़िबीन(8)वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून(9) वला तुतिअ़् कुल्–ल ह़ल्लाफ़िम् महीन(10)हम्माज़िम् मश्शाइम् बि–नमीमिम्(11)मन्नाअ़िल् लिल्ख़ैरि मुअ़्तदिन् असीम(12)अ़ुतुल्लिम् बअ़्–द ज़ालि–क ज़नीम(13)अन् का–न ज़ा मालिंव् व बनीन(14) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा–ल असातीरुल् अव्वलीन(15)स–नसिमुहू अ़लल्–ख़ुर्तूम(16)इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्ह़ाबल् जन्नति इज़् अक़्समू ल–यस्रिमुन्नहा मुस्बिह़ीन(17)व ला यस्तस्नून(18)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़लम (फ़ा2) और उनके लिखे कि क़सम।(1) (फ़ा3) तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं।(2) (फ़ा4) और ज़रूर तुम्हारे लिए बे इन्तिहा सवाब है।(3) (फ़ा5) और बेशक तुम्हारी ख़ू-बू बड़ी शान की है।(4) (फ़ा6) तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख लोगे और वह भी देख लेंगे।(5) (फ़ा7) कि तुम में कौन जमनून था।(6) बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है और जो उसकी राह से बहके और वह ख़ूब जानता है जो राह पर है।(7) तो झुठलाने वालों की बात न सुनना।(8) वह तो इस आरज़ू में हैं कि किसी तरह तुम नर्मी करो।(9) (फ़ा8) तो वह भी नर्म पड़ जायें और हर ऐसे कि बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला(10) (फ़ा9) ज़लील बहुत तअ़ने देने वाला।(11) बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला (फ़ा10) भलाई से बड़ा रोकने वाला। (फ़ा11) हद से बढ़ने वाला गुनहगार(12) (फ़ा12) दुरुश्त-ख़ू। (फ़ा13) उस सब पर तुर्रा यह कि उसकी अस्ल में ख़ता।(13) (फ़ा14) उस पर कि कुछ माल और बेटे रखता है।(14) जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जायें (फ़ा15) कहता है कि अगलों की कहानियां हैं।(15) (फ़ा16) क़रीब है कि हम उसकी सूअर की सी थूथनी पर दाग़ लगा देंगे।(16) (फ़ा17) बेशक हमने उन्हें जांचा (फ़ा18) जैसा उस बाग़ वालों को जांचा था (फ़ा19) जब उन्होंने क़सम खाई कि ज़रूर सुबह होते उसके खेत काट लेंगे।(17) (फ़ा20) और इन्शाअल्लाह न कहा।(18) (फ़ा21)

(फ़ा1) इस सूरत का नाम सूरह नून व सूरह क़लम है यह सूरह मक्की है इसमें दो रुकूअ़ बावन आयतें 300 कलिमे 1256 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई उस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिनसे दीनी दुनियवी मसालेह व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़लमे आला मुराद है जो नूरी क़लम है और उसका तूल फ़ासलए ज़मीन व आसमान के बराबर है। उसने बहुक्मे इलाही लौहे महफ़ूज़ पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये। (फ़ा3) यानी आमाल बनी आदम के निगहबान फ़रिश्तों के लिखे की क़सम। (फ़ा4) उसका लुत्फ़ो करम तुम्हारे शामिले हाल है उसने तुम पर इनाम व एहसान फ़रमाए नबुव्वत और हिकमत अ़ता की फ़साहते ताम्मा अक़्ले कामिल पाकीज़ा ख़साइल पसन्दीदा अख़लाक़ अ़ता किये मख़्लूक़ के लिए जिस क़दर कमालात इमकान में हैं सब अ़ला वजहिल कमाल अ़ता फ़रमाए (बक़िया सफ़हा 943 पर)

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿١٩﴾ فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾ اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾
فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ

फ़ता–फ़ अ़लैहा ताइफुम् मिर्रब्बि–क व हुम् नाइमून(19)फ़–अस्ब–ह़त् कस्सरीम(20)फ़–तनादौ मुस्बिह़ीन(21)अनिग़्दू अ़ला ह़रसिकुम् इन् कुन्तुम् स़ारिमीन(22)फ़न्–त–लकू़ व हुम् य–तख़ा–फ़तून(23)अल्ला यद् ख़ु–लन्नहल् यौ–म अ़लैकुम् मिस्कीन(24)व ग़दौ अ़ला ह़रदिन् क़ादिरीन(25) फ़–लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना लज़ाल्लून(26)बल् नह़्नु मह़रूमून(27)क़ा–ल औ–सतुहुम् अ–लम् अक़ुल् लकुम् लौला तु–सब्बिह़ून(28)क़ालू सुब्ह़ा–न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(29)फ़–अक़्ब–ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्–तला वमून(30)क़ालू या वै–लना इन्ना कुन्ना त़ाग़ीन(31) अ़सा रब्बुना अंय्युब्दि–लना ख़ैरम् मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून(32) कज़ालिकल् अ़ज़ाबु व ल–अ़ज़ाबुल् आख़ि–रति अक्बरु लौ कानू यअ़्–लमून(33)इन्–न लिल्मुत्तक़ी–न अ़िन्–द रब्बिहिम् जन्नातिन् नअ़ीम(34)अ–फ़्–नज्–अ़लुल् मुस्लिमी–न कल्मुज्रि–मीन(35)मा लकुम् कै–फ़ तह़्कुमून (36)अम् लकुम् किताबुन् फ़ीहि

तो उस पर (फ़ा22) तेरे रब की तरफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया (फ़ा23) और वह सोते थे।(19) तो सुबह रह गया (फ़ा24) जैसे फल टूटा हुआ।(20) (फ़ा25) फिर उन्होंने सुबह होते एक दूसरे को पुकारा।(21) कि तड़के अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है।(22) तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे।(23) कि हरगिज़ आज कोई मिस्कीन तुम्हारे बाग़ में आने न पाए।(24) और तड़के चले अपने उस इरादा पर क़ुदरत समझते।(25) (फ़ा26) फिर जब उसे देखा (फ़ा27) बोले बेशक हम रास्ता बहक गए।(26) (फ़ा28) बल्कि हम बे–नसीब हुए।(27) (फ़ा29) उनमें जो सब से ग़नीमत था बोला क्या मैं तुम से नहीं कहता था कि तस्बीह क्यों नहीं करते।(28) (फ़ा30) बोले पाकी है हमारे रब को बेशक हम ज़ालिम थे।(29) अब एक दूसरे की तरफ़ मलामत करता मुतवज्जह हुआ।(30) (फ़ा31) बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे।(31) (फ़ा32) उम्मीद है हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की तरफ़ रग़बत लाते हैं।(32) (फ़ा33) मार ऐसी होती है (फ़ा34) और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वह जानते।(33) (फ़ा35) (रुकूअ़ 3) बेशक डर वालों के लिए उनके रब के पास (फ़ा36) चैन के बाग़ हैं।(34) (फ़ा37) क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों का सा कर दें।(35) (फ़ा38) तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो।(36) (फ़ा39) क्या तुम्हारे लिए कोई किताब है उसमें

(फ़ा22) यानी बाग़ पर (फ़ा23) यानी एक बला आई बहुक्मे इलाही नाज़िल हुई और बाग़ को तबाह (फ़ा24) वह बाग़ (फ़ा25) और उन लोगों को कुछ ख़बर नहीं यह सुबह तड़के उठे। (फ़ा26) कि किसी मिस्कीन को न आने देंगे और तमाम मेवा अपने क़ब्ज़ा में लायेंगे। (फ़ा27) यानी बाग़ को कि इसमें मेवा का नाम व निशान नहीं (फ़ा28) यानी किसी और बाग़ पर पहुंच गए हमारा बाग़ तो बहुत मेवादार है फिर जब ग़ौर किया और उसके दरो दीवार को देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़है तो बोले। (फ़ा29) इसके मुनाफ़ा से मिस्कीनों को न देने की नीतय करके। (फ़ा30) और इस इरादए बद से तौबा क्यों नहीं करते और अल्लाह तआ़ला की निअ़्मत का शुक्र क्यों नहीं बजा लाते। (फ़ा31) और आख़िरकार उन सब ने एतेराफ़ किया कि हम से ख़ता हुई और हम हद से मुतजाविज़ हो गए। (फ़ा32) कि हमने अल्लाह तआ़ला की निअ़्मत का शुक्र न किया और बाप दादा के नेक तरीक़ा को छोड़ा। (फ़ा33) उसके उफ़्व व करम की उम्मीद रखते हैं उन लोगों ने सिद्क़ व इख़्लास से तौबा की तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें उसके एवज़ उससे बेहतर बाग़ अ़ता फ़रमाया जिसका नाम बाग़े हैवान था और उसमें कसरते पैदावार और लताफ़ते आबो हवा का यह आ़लम था कि उसके अंगूरों का एक ख़ोशा एक गधे पर बार किया जाता था। (फ़ा34) ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का होश में **(बक़िया सफ़हा 943 पर)**

تَدْرُسُوْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿۳۸﴾ اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۹﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿۴۰﴾
اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿۴۱﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاُمْلِيْ
لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ
كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿۴۸﴾ لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿۴۹﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۵۰﴾
وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿۵۱﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۲﴾

तद्रुसून(37)इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून(38)अम् लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि-ग़तुन् इला यौमिल् क़िया-मति इन्-न लकुम् लमा तह्कुमून(39)सल्हुम् अय्युहुम् बिज़ालि-क ज़ईम(40) अम् लहुम् शु-रकाउ फ़ल्यअ्तू बिशु-रकाइहिम् इन् कानू सादिक़ीन(41)यौ-म युक्-शफ़ु अ़न् साक़िंव् व युद्औ-न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअू़न(42)ख़ाशि-अ़तन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् व क़द् कानू युद्औ-न इलस्सुजूदि व हुम् सालिमून(43)फ़-ज़र्नी व मंय्यु-कज़्ज़िबु बिहाज़ल् हदीसि स-नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्-लमून (44)व उम्ली लहुम् इन्-न कैदी मतीन(45) अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम् मग़्-रमिम् मुस्-क़लून(46)अम् अ़िन्-द हुमुल्ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून(47)फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् कसाहिबिल् हूति इज़् नादा व हु-व मक्ज़ूम(48) लौला अन् तदा-र-कहू निअ्-मतुम् मिर्रब्बिही लनुबि-ज़ बिल् अ़राइ व हु-व मज़्मूम(49)फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ़-लहू मिनस्सालिहीन(50)व इंय्यकादुल् लज़ी-न क-फ़रू लयुज़् लिक़ू-न-क बि-अब्सारिहिम् लम्मा समिअुज़्ज़िक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मज्नून(51)व मा हु-व इल्ला ज़िक्रुल् लिल् आ़-लमीन(52)

पढ़ते हो।(37) कि तुम्हारे लिए उसमें जो तुम पसन्द करो।(38) या तुम्हारे लिए हम पर कुछ क़समें हैं क़ियामत तक पहुंचती हुई (फ़ा40) कि तुम्हें मिलेगा जो कुछ दावा करते हो।(39) (फ़ा41) तुम उन से (फ़ा42) पूछो उनमें कौनसा इसका ज़ामिन है।(40) (फ़ा43) या उनके पास कुछ शरीक हैं (फ़ा44) तो अपने शरीकों को लेकर आयें अगर सच्चे हैं।(41) (फ़ा45) जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिसके माना अल्ला ही जानता है) (फ़ा46) और सज्दा को बुलाए जायेंगे (फ़ा47) तो न कर सकेंगे।(42) (फ़ा48) नीची निगाहें किये हुए (फ़ा49) उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुनिया में सजदा के लिए बुलाए जाते थे (फ़ा50) जब तन्दुरुस्त थे।(43) (फ़ा51) तो जो इस बात को (फ़ा52) झुठलाता है उसे मुझ पर छोड़ दो (फ़ा53) क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जायेंगे (फ़ा54) जहां से उन्हें ख़बर न होगी।(44) और मैं उन्हें ढील दूंगा बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बहुत पक्की है।(45) (फ़ा55) या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो (फ़ा56) कि वह चट्टी के बोझ में दबे हैं।(46) (फ़ा57) या उनके पास ग़ैब है (फ़ा58) कि वह लिख रहे हैं।(47) (फ़ा59) तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तेज़ार करो (फ़ा60) और उस मछली वाले की तरह न होना (फ़ा61) जब इस हाल में पुकारा कि उसका दिल घुट रहा था।(48)(फ़ा62)अगर उसके रब की नेअ़मत उसकी ख़बर को न पहुंच जाती(फ़ा63)तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुआ।(49)(फ़ा64)तो उसे उसके रब ने चुन लिया और अपने क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में कर लिया।(50) और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मालूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हें गिरा देंगे जब क़ुरआन सुनते हैं (फ़ा65) और कहते हैं (फ़ा66) यह ज़रूर अ़क्ल से दूर हैं।(51) और वह (फ़ा67) तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान के लिए।(52) (रुकूअ़ 4) (फ़ा68)

(फ़ा40) जो मुन्क़तअ़ न हों उस मज़मून की। (फ़ा41) अपने लिए अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ख़ैर व करामत का अब अल्लाह तआ़ला अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब फ़रमाता है (फ़ा42) यानी कुफ़्फ़ार से **(बक़िया सफ़्हा 943 पर)**

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَآقَّةُ ○ مَا الْحَآقَّةُ ○ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ○ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ○ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ○ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ

صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ○ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ○ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ

بَاقِيَةٍ ○ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ○ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ○ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ○

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ○ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ○ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ○

सूरतुल् हाक़्क़ति

(मक्की है इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हाक़्क़तु(1)मल्हाक़्क़ह(2)व मा अद्रा–क मल्हाक़्क़ह(3)कज़्ज़–बत् समूदु व आदुम् बिल्क़ारिअह
(4)फ़–अम्मा समूदु फ़उह्लिकू बित्तागियह(5)व अम्मा आदुन् फ़उह्लिकू बिरीहिन् सरसरिन्
आति–यतिन्(6)सख़्ख़–रहा अलैहिम् सब्–अ लयालिंव् व समानि–य–त अय्यामिन् हुसूमन् फ़–
त–रल् क़ौ–म फ़ीहा सरआ क–अन्नहुम् अअ्जाजु नख़्लिन् ख़ाविय:(7)फ़–हल् तरा लहुम् मिम्बाक़िय:(8)
व जा–अ फ़िरऔनु व मन् क़ब्–लहू वल्–मुअ्तफ़िकातु बिल्ख़ातिअ:(9)फ़–असौ रसू–ल रब्बिहिम्
फ़–अ–ख़–ज़हुम् अख़्–ज़–तर् राबिय:(10)इन्ना लम्मा तग़ल्माउ ह–मल्नाकुम् फ़िल्जारिय:(11)
लि–नज्–अ–लहा लकुम् तज़्कि–र–तंव् व तअि–यहा उजुनुव् वाअिय:(12)फ़इज़ा नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि
नफ़्–ख़तुंव् वाहि–दतुंव्(13)व हुमि–लतिल्–अर्जु वल्जिबालु फ़–दुक्कता दक्कतंव् वाहि–द–तन्(14)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

वह हक़ होने वाली।(1) (फ़ा2) कैसी वह हक़ होने वाली।(2) (फ़ा3) और तुमने क्या जाना कैसी वह हक़ होने वाली।(3) (फ़ा4) समूद और आ़द ने उस सख़्त सदमा देने वाली को झुठलाया।(4) तो समूद तो हलाक किये गए ह़द से गुज़री हुई चिंघाड़ से।(5) (फ़ा5) और रहे आ़द वह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से।(6) वह उन पर कुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन (फ़ा6) लगातार तो उन लोगों को उनमें (फ़ा7) देखो बिछड़े हुए (फ़ा8) गोया वह खजूर के ढुन्ड हैं गिरे हुए।(7) तो तुम उनमें किसी को बचा हुआ देखते हो।(8) (फ़ा9) और फ़िरऔ़न और उससे अगले (फ़ा10) और उलटने वाली बस्तियां (फ़ा11) ख़ता लाए।(9) (फ़ा12) तो उन्होंने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना (फ़ा13) तो उसने उन्हें बढ़ी चढ़ी गिरिफ़्त से पकड़ा।(10) बेशक जब पानी ने सर उठाया था (फ़ा14) हमने तुम्हें (फ़ा15) कश्ती में सवार किया।(11) (फ़ा16) कि उसे (फ़ा17) तुम्हारे लिए यादगार करें (फ़ा18) और उसे महफ़ूज़ रखे वह कान कि सुनकर महफ़ूज़ रखता हो।(12) (फ़ा19) फिर जब सूर फूंक दिया जाए एक दम।(13) और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़अ़तन चूरा कर दिये जायें।(14)

(फ़ा1) सूरए हाक़्क़ा मक्की है इसमें दो रुकूअ़ बावन आयतें 256 कलिमे 1423 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी क़ियामत में जो हक़ व साबित है और उसका वुक़ूअ़ यक़ीनी व क़तई है जिसमें कोई शक नहीं। (फ़ा3) यानी वह निहायत अ़जीब व अ़ज़ीमुश्शान है (फ़ा4) जिसके अहवाल व अह़वाल और शदाइद तक फ़िक्रे इन्सानी का ताइर परवाज़ नहीं कर सकता (फ़ा5) यानी सख़्त हौलनाक आवाज़ से (फ़ा6) चेहार शम्बा से चेहार शम्बा तक आख़िर माह शव्वाल में निहायत तेज़ सर्दी के मौसम में (फ़ा7) यानी उन दिनों में (फ़ा8) कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया (फ़ा9) कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुबह को वह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा। (फ़ा10) उससे भी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार (फ़ा11) नाफ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत की बस्तियों के यह सब (फ़ा12) अफ़आ़ले क़बीहा व मआ़सी व शिर्क के मुरतकिब हुए। (फ़ा13) जो उनकी तरफ़ भेजे गए थे (फ़ा14) और वह दरख़्तों इमारतों पहाड़ों और हर चीज़ से बुलन्द हो गया था यह बयान तूफ़ाने नूह का है अ़लैहिस्सलाम की (फ़ा15) जबकि तुम अपने आबा के असलाब में थे हज़रत नूह **(बक़िया सफ़हा 944 पर)** **(बक़िया**

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ
رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ
فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾
خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ

फ़यौ—मइज़िंव् व क़—अ़तिल् वाक़िअ़:(15)वन्—शक़्क़तिस् समाउ फ़हि—य यौ—मइज़िंव् वाहि—यतुंव्(16) वल्म—लकु अ़ला अर्‌जाइहा व यह़्मिलु अ़र्—श रब्बि—क फ़ौ—क़हुम् यौ—मइज़िन् समानिय:(17) यौ—मइज़िन् तुअ़्—रज़ू—न ला तख़्फ़ा मिन्कुम् ख़ाफ़िय:(18)फ़—अम्मा मन् ऊति—य किता—बहू बि—यमीनिही फ़—यक़ूलु हाउ मुक़्‌रऊ किताबिय:(19)इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् ह़िसाबिय:(20)फ़हु—व फ़ी ई़—शतिर् राज़िय:(21)फ़ी जन्नतिन् आ़लिय:(22)क़ुतूफ़ुहा दानिय:(23)कुलू वश्‌रबू हनीअम् बिमा अस्—लफ़्तुम् फ़िल्—अय्यामिल् ख़ालिय:(24)व अम्मा मन् ऊति—य किता—बहू बिशिमालिही फ़—यक़ूलु या लै—तनी लम् ऊ—त किताबिय:(25)व लम् अद्‌रि मा ह़िसाबिय:(26)या लै—तहा का—नतिल् क़ाज़िय:(27)मा अग़्ना अ़न्नी मालिय:(28)ह—ल—क अ़न्नी सुल्ता़निय:(29)ख़ुज़ूहु फ़ग़ुल्लूहु(30) सुम्मल् जही़—म स़ल्लूहु(31)सुम्—म फ़ी सिल्सि—लतिन् ज़र्‌अुहा सब्‌ऊ—न ज़िराअ़न् फ़स्‌लुकूह(32) इन्नहू का—न ला युअ्‌मिनु बिल्लाहिल् अ़ज़ीम(33)व ला यहुज़्ज़ु

वह दिन है कि हो पड़ेगी वह होने वाली।(15) (फ़ा20) और आसमान फट जाएगा तो उस दिन उसका पतला हाल होगा।(16) (फ़ा21) और फ़रिश्ते उस के किनारों पर खड़े होंगे (फ़ा22) और उस दिन तुम्हारे रब का अ़र्श अपने ऊपर आठ फ़रिश्ते उठायेंगे।(17) (फ़ा23) उस दिन तुम सब पेश होगे (फ़ा24) कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी।(18) तो वह जो अपना नामए आमाल दाहिने हाथ में दिया जाएगा (फ़ा25) कहेगा लो मेरे नामए आमाल पढ़ो।(19) मुझे यक़ीन था कि मैं अपने हिसाब को पहुंचूंगा।(20) (फ़ा26) तो वह मन मानते चैन में है।(21) बुलन्द बाग़ में।(22) जिस के ख़ोशे झुके हुए।(23) (फ़ा27) खाओ और पियो रचता हुआ सिला उसका जो तुमने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।(24) (फ़ा28) और वह जो अपना नामए आमाल बायें हाथ में दिया जाएगा (फ़ा29) कहेगा हाए किसी तरह़ मुझे अपना नविश्ता न दिया जाता।(25) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है।(26) हाय किसी तरह मौत ही क़िस्सा चुका जाती।(27) (फ़ा30) मेरे कुछ काम न आया मेरा माल।(28) (फ़ा31) मेरा सब ज़ोर जाता रहा।(29) (फ़ा32) उसे पकड़ो फिर उसे तौक़ डालो।(30) (फ़ा33) फिर उसे भड़कती आग में धंसाओ।(31) फिर ऐसी ज़ंजीर में जिसका नाप सत्तर हाथ है (फ़ा34) उसे पिरो दो।(32) (फ़ा35) बेशक वह अ़ज़मत वाले अल्लाह पर ईमान न लाता था।(33) और मिस्कीन

(फ़ा20) यानी क़ियामत क़ाइम हो जाएगी (फ़ा21) यानी वह निहायत कमज़ोर होगा बावजूद इसके कि पहले बहुत मज़बूत व मुस्तहकम था। (फ़ा22) यानी जिन फ़रिश्तों का मस्कन आसमान है वह उसके फटने पर उसके किनारों पर खड़े होंगे फिर बहुक्मे इलाही उतर कर ज़मीन का इहाता करेंगे। (फ़ा23) हदीस शरीफ़ में है कि हामिलीने अ़र्श आजकल चार हैं रोज़े क़ियामत उनकी ताईद के लिए चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जायेंगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि इससे मलाइका की आठ सफ़ें मुराद हैं जिनकी तादाद अल्लाह तआ़ला ही जाने। (फ़ा24) अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर हिसाब के लिए। (फ़ा25) यह समझ लेगा कि वह नजात पाने वालों में है और निहायत फ़रह व सुरूर के साथ अपनी जमाअ़त और अपने अहले व अक़ारिब से (फ़ा26) यानी मुझे दुनिया में यक़ीन था कि आख़िरत में मुझ से हिसाब लिया जाएगा। (फ़ा27) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में ब-आसानी ले सकें और उन लोगों से कहा जाएगा। (फ़ा28) यानी जो आमाले सालिहा कि दुनिया में तुमने आख़िरत के लिए किये। (फ़ा29) जब अपने नामए आमाल को देखेगा और उसमें अपने बद आमाल मकतूब पाएगा तो शर्मिन्दा व रुसवा होकर (फ़ा30) और हिसाब के लिए न उठाया जाता और यह ज़िल्लत व रुसवाई पेश न आती। (फ़ा31) जो मैंने दुनिया में जमा किया था वह ज़रा भी मेरा अ़ज़ाब टाल न सका (फ़ा32) और मैं ज़लील व मुहताज रह गया। हज़रत **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣٤ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۝٣٥ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۝٣٦ لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ۝٣٧ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٨ وَمَا لَا
تُبْصِرُوْنَ ۝٣٩ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝٤٠ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۝٤١ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٢ تَنْزِيْلٌ
مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٣ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۝٤٤ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝٤٥ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۝٤٦ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ
عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ۝٤٧ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٨ وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ۝٤٩ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ۝٥١
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝٥٢

अ़ला तआ़मिल् मिस्कीन(34)फ़लै–स लहुल्यौ–म हाहुना ह़मीमुंव्(35)व ला तआ़मुन् इल्ला मिन्
ग़िस्लीन(36)ला यअ्कुलुहू इल्लल्ख़ातिऊन(37)फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून(38)व मा ला
तुब्सिरून(39)इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम(40)व मा हु–व बिक़ौलि शाअ़िरिन् क़लीलम् मा तुअ्मिनून
(41)व ला बिक़ौलि काहिनिन् क़लीलम् मा त–ज़क्करून(42)तन्ज़ीलुम् मिर्–रब्बिल् आ–लमीन(43)
व लौ त–क़व्व–ल अ़लैना बअ्ज़ल् अक़ावीलि(44)ल–अ–ख़ज़्ना मिन्हु बिल्–यमीन(45)सुम्–म
ल–क़–तअ्ना मिन्हुल् वतीन(46)फ़मा मिन्कुम् मिन् अ–ह़दिन् अ़न्हु ह़ाजिज़ीन(47)व इन्नहू
ल–ज़ुकि–र–तुल् लिल्मुत्तक़ीन(48)व इन्ना ल–नअ्–लमु अन्–न मिन्कुम् मु–कज़्ज़िबीन(49)व इन्नहू
ल–ह़स्–रतुन् अ़लल्काफ़िरीन(50)व इन्नहू लह़क़्क़ुल् यक़ीन(51)फ़–सब्बिह़् बिस्मि रब्बिकल् अ़ज़ीम(52)

को खाना देने की रग़बत न देता।(34) (फ़ा36) तो आज यहां (फ़ा37) उसका कोई दोस्त नहीं।(35) (फ़ा38) और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप।(36) उसे न खायेंगे मगर ख़ताकार(37) (फ़ा39) (रुकूअ़ 5) तो मुझे क़सम उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो।(38) और जिन्हें तुम नहीं देखते।(39) (फ़ा40) बेशक यह क़ुरआन एक करम वाले रसूल (फ़ा41) से बातें हैं।(40) (फ़ा42) और वह किसी शायर की बात नहीं (फ़ा43) कितना कम यक़ीन रखते हो।(41) (फ़ा44) और न किसी काहिन की बात (फ़ा45) कितना कम ध्यान करते हो।(42) (फ़ा46) उसने उतारा है जो सारे जहान का रब है।(43) और अगर वह हम पर एक बात भी बना कर कहते।(44) (फ़ा47) ज़रूर हम उनसे ब–क़ुव्वत बदला लेते।(45) फिर उनकी रगे दिल काट देते।(46)(फ़ा48)फिर तुम में कोई उनका बचाने वाला न होता।(47) और बेशक यह क़ुरआन डर वालों को नसीहत है।(48) और ज़रूर हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।(49) और बेशक वह काफ़िरों पर हसरत है।(50) (फ़ा49) और बेशक वह यक़ीनी हक़ है।(51) (फ़ा50) तो ऐ महबूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब की पाकी बोलो।(52) (फ़ा51) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा36) न अपने नफ़्स को न अपने अहल को न दूसरों को इसमें इशारा है कि वह बअ़्स का क़ाइल न था क्योंकि मिस्कीन का खाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदला की उम्मीद रखता ही नहीं महज़ रज़ाए इलाही व सवाबे आख़िरत की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो बअ़्स व आख़िरत पर ईमान ही नहीं रखता हो उसे मिस्कीन को खिलाने की क्या ग़रज़। (फ़ा37) यानी आख़िरत में। (फ़ा38) जो उसे कुछ नफ़ा पहुंचाए या शफ़ाअ़त करे। (फ़ा39) कुफ़्फ़ार बद अतवार। (फ़ा40) यानी तमाम मख़्लूक़ात की क़सम जो तुम्हारे देखने में आये उसकी भी जो न आये उसकी भी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मा तुब्सिरू–न से दुनिया और माला तुब्सिरून से आख़िरत मुराद है इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन के और भी कई क़ौल हैं (फ़ा41) मुहम्मद मुस्तफ़ा हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा42) जो उनके रब अ़ज़्ज़ व अला ने फ़रमाई (फ़ा43) जैसा कि कुफ़्फ़ार कहते हैं (फ़ा44) बिल्कुल बे ईमान हो इतना भी नहीं समझते कि न यह शेअ़र है न उसमें शेअ़रियत की कोई बात पाई जाती है (फ़ा45) जैसा कि तुम में से बाज़े काफ़िर इस किताबे इलाही की निस्बत कहते हैं (फ़ा46) न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इसकी तालीमों पर ग़ौर करते हो कि इसमें कैसी रूहानी तालीम है न इसकी फ़साहत व बलाग़त और एजाज़ बे मिसाली पर ग़ौर करते हो जो यह समझो कि यह कलाम। (फ़ा47) जो हमने न फ़रमाई होती तो (फ़ा48) जिसके काटते ही मौत वाक़ेअ़ हो जाती है। (फ़ा49) कि वह रोज़े क़ियामत जब क़ुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और उसके इन्कार करने वालों और झुठलाने वालों का अ़ज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़सोस करेंगे और हसरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। (फ़ा50) कि इसमें कोई शक व शुबहा नहीं (फ़ा51) और उसका शुक्र करो कि उसने तुम्हारी तरफ़ अपने इस कलामे जलील की वही फ़रमाई।

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿۱﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿۲﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ﴿۳﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ
خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿۴﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿۵﴾ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ﴿۶﴾ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ﴿۷﴾ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ﴿۸﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿۹﴾
وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ﴿۱۰﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ﴿۱۱﴾ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿۱۲﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ﴿۱۳﴾
وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿۱۴﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ﴿۱۵﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿۱۶﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿۱۷﴾ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿۱۸﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ

सूरतुल् मआरिजि

(मक्की है इसमें ४४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

स–अ–ल साइलुम् बि–अ़ज़ाबिंव् वाक़िअ़िल्(1)लिल्काफ़िरी–न लै–स लहू दाफ़िउम्(2)मिनल्लाहि ज़िल्मआ़रिज(3)तअ़्रुजुल् मलाइ–कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् का–न मिक़्दारुहू ख़म्सी–न अल्–फ़ स–नतिन्(4)फ़स्बिर् स़ब्रन् जमीला(5)इन्नहुम् यरौ–नहू बअ़ीदंव्(6)व नराहु क़रीबा(7) यौ–म तकूनुस् समाउ कल्मुह्लि(8)व तकूनुल् जिबालु कल्अ़िह्नि(9)व ला यस्–अलु ह़मीमुन् ह़मीमंय्(10)युबस्सरू–नहुम् यवद्दुल् मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन् अ़ज़ाबि यौमिइज़िम् बि–बनीहि(11)व स़ाहि–बतिही व अख़ीहि(12)व फ़स़ी–लतिहिल् लती तुअ़्वीहि(13)व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्–म युन्जीहि(14)कल्ला इन्नहा लज़ा(15)नज़्ज़ा–अ–तल् लिश्शवा(16)तदऊ मन् अदब–र व त–वल्ला(17)व ज–म–अ़ फ़औआ़(18)इन्नल् इन्सा–न ख़ुलि–क़्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

एक मांगने वाला वह अ़ज़ाब मांगता है।(1) जो काफ़िरों पर होने वाला है उसका कोई टालने वाला नहीं।(2) (फ़ा2) वह होगा अल्लाह की तरफ़ से जो बुलन्दियों का मालिक है।(3) (फ़ा3) मलाइका और जिब्राईल (फ़ा4) उसकी बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं (फ़ा5) वह अ़ज़ाब उस दिन होगा जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार बरस है।(4) (फ़ा6) तो तुम अच्छी तरह सब्र करो।(5) वह उसे (फ़ा7) दूर समझ रहे हैं।(6) (फ़ा8) और हम उसे नज़्दीक देख रहे हैं।(7) (फ़ा9) जिस दिन आसमान होगा जैसी गली चाँदी।(8) और पहाड़ ऐसे हलके हो जायेंगे जैसे ऊन।(9) (फ़ा10) और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा।(10) (फ़ा11) होंगे उन्हें देखते हुए (फ़ा12) मुजरिम (फ़ा13) आरज़ू करेगा काश उस दिन के अ़ज़ाब से छुटने के बदले में दे दे अपने बेटे।(11) और अपनी जोरू और अपना भाई।(12) और अपना कुम्बा जिसमें उसकी जगह है।(13) और जितने ज़मीन में हैं सब फिर यह बदला देना उसे बचा ले हरगिज़ नहीं।(14) (फ़ा14) वह तो भड़कती आग है।(15) खाल उतार लेने वाली बुला रही है(16) (फ़ा15) उसको जिसने पीठ दी और मुँह फेरा।।(17) (फ़ा16) और जोड़ कर सैंत रखा(18) (फ़ा17) बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा

(फ़ा1) सूरए मआ़रिज मक्की है इसमें दो रुकूअ़् 44 आयतें 224 कलिमे 929 हरफ़ हैं। (फ़ा2) **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब अहले मक्का को अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वह आपस में कहने लगे कि इस अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ कौन लोग हैं और यह किन पर आएगा सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछो तो उन्होंने हुज़ूर सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं और हुज़ूर से सवाल करने वाला नज़र बिन हारिस था उसने दुआ़ की थी कि या रब अगर यह कुरआन हक़ हो और तेरा कलाम हो तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा या दर्दनाक अ़ज़ाब भेज इन आयतों में इरशाद फ़रमाया गया कि काफ़िर तलब करें या न करें अ़ज़ाब जो उनके लिए मुक़द्दर है ज़रूर आना है उसे कोई टाल नहीं सकता (फ़ा3) यानी आसमानों का (फ़ा4) जो फ़रिश्तों में मख़्सूस फ़ज़्ल व शरफ़ रखते हैं। (फ़ा5) यानी उस मक़ामे क़ुर्ब की तरफ़ जो आसमान में उसके अवामिर का जाये **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

هلوعا ﴿١٩﴾ إذا مسه الشر جزوعا ﴿٢٠﴾ وإذا مسه الخير منوعا ﴿٢١﴾ إلا المصلين ﴿٢٢﴾ الذين هم على صلاتهم دائمون ﴿٢٣﴾ والذين في أموالهم حق
معلوم ﴿٢٤﴾ للسائل والمحروم ﴿٢٥﴾ والذين يصدقون بيوم الدين ﴿٢٦﴾ والذين هم من عذاب ربهم مشفقون ﴿٢٧﴾ إن عذاب ربهم غير مأمون ﴿٢٨﴾
والذين هم لفروجهم حافظون ﴿٢٩﴾ إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين ﴿٣٠﴾ فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم
العادون ﴿٣١﴾ والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ﴿٣٢﴾ والذين هم بشهاداتهم قائمون ﴿٣٣﴾ والذين هم على صلاتهم يحافظون ﴿٣٤﴾ أولئك
في جنات مكرمون ﴿٣٥﴾ فمال الذين كفروا قبلك مهطعين ﴿٣٦﴾ عن اليمين وعن الشمال عزين ﴿٣٧﴾ أيطمع كل امرئ منهم أن يدخل جنة

हलूअन्(19)इज़ा मस्सहुश् शर्रु जज़ूआ(20)व इज़ा मस्सहुल् ख़ै–रु मनूआ(21)इल्लल् मुसल्लीन
(22)अल्लज़ी–न हुम् अ़ला स़लातिहिम् दाइमून(23)वल्लज़ी–न फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्क़ुम् मअ्लूमुल्
(24)लिस्साइलि वल्मह़रूम(25)वल्लज़ी–न यु–स़द्दिक़ू–न बियौमिद्दीनि(26)वल्लज़ी–न हुम्
मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून(27)इन्–न अ़ज़ा–ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून(28)वल्लज़ी–न हुम्
लिफ़ुरूजिहिम् ह़ाफ़िज़ून(29)इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म–ल–कत् ऐमानुहुम् फ़–इन्नहुम्
ग़ैरु मलूमीन(30) फ़–मनिब्तग़ा वरा–अ ज़ालि–क फ़उलाइ–क हुमुल् आ़दून(31)वल्लज़ी–न हुम्
लि–अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राऊन(32)वल्लज़ी–न हुम् बि–शहादातिहिम् क़ाइमून(33) वल्लज़ी–न
हुम् अ़ला स़लातिहिम् युहाफ़िज़ून(34)उलाइ–क फ़ी जन्नातिम् मुक्–रमून(35) फ़मालिल्लज़ी–न
क–फ़रू क़ि–ब–ल–क मुह्तिअ़ीन(36)अ़निल् यमीनि व अ़निश् शिमालि अ़िज़ीन(37)अ–यत्मअु
कुल्लुम् रिइम् मिन्हुम् अंय्युद ख़–ल जन्न–त

ह़रीस़।(19) जब उसे बुराई पहुंचे (फ़ा18) तो सख़्त घबराने वाला।(20) और जब भलाई पहुंचे (फ़ा19) तो रोक रखने वाला।(21) (फ़ा20) मगर नमाज़ी।(22) जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं।(23) (फ़ा21) और वह जिनके माल में एक मालूम हक़ है।।(24) (फ़ा22) उसके लिए जो मांगे और जो मांग भी न सके तो महरूम रहे।(25) (फ़ा23) और वह जो इन्साफ़ का दिन सच जानते हैं।(26) (फ़ा24) और वह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डर रहे हैं।(27) बेशक उनके रब का अ़ज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं।(28) (फ़ा25) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं(29) मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि उन पर कुछ मलामत नहीं।(30) तो जो उन दो (फ़ा26) के सिवा और चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं।(31) (फ़ा27) और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की हिफ़ाज़त करते हैं।(32) (फ़ा28) और वह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम हैं।(33) (फ़ा29) और वह जो अपनी नमाज़ की मुहाफ़िज़त करते हैं।(34) (फ़ा30) यह हैं जिनका बाग़ों में एज़ाज़ होगा।(35) (फ़ा31) (रुकूअ़ 7) तो उन काफ़िरों को क्या हुआ तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं।(३६) (फ़ा32) दाहिने और बायें गरोह के गरोह।(37) क्या उनमें हर शख़्स यह तमअ़ करता है (फ़ा33) कि चैन के बाग़ में दाख़िल

(फ़ा18) तंगदस्ती व बीमारी वग़ैरह की। (फ़ा19) दौलतमन्दी व माल। (फ़ा20) यानी इन्सान की हालत यह है कि उसे कोई नागवार हालत पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उसको ख़र्च नहीं करता। (फ़ा21) कि फ़राइज़े पंजगाना को उनके औक़ात में पाबन्दी से अदा करते हैं यानी मोमिन हैं। (फ़ा22) मुराद इससे ज़कात है जिसकी मिक़दार मालूम है या वह सदक़ा जो आदमी अपने नफ़्स पर मुअ़य्यन करे तो उसे मुअ़य्यन औक़ात में अदा किया करे। मसला इससे मालूम हुआ कि सदक़ात मुस्तहब्बा के लिए अपनी तरफ़ से वक़्त मुअ़य्यन करना शरअ़ में जाइज़ और क़ाबिले मदह है (फ़ा23) यानी दोनों क़िस्म के मुहताजों को दे उन्हें जो भी हाजत के वक़्त सवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सवाल नहीं करते और उनकी मुहताजी ज़ाहिर नहीं होती। (फ़ा24) और मरने के बाद उठने और हश्र व नश्र व जज़ा व क़ियामत सब पर ईमान रखते हैं। (फ़ा25) चाहे आदमी कितना ही नेक पारसा कसीरुत्ताअ़त वल इबादत हो मगर उसे अ़ज़ाबे इलाही से बे-ख़ौफ़ होना न चाहिये (फ़ा26) यानी ज़ौजात व ममलूकात (फ़ा27) कि हलाल से हराम की तरफ़ तजावुज़ करते हैं **मसला:** इस आयत से मुत्तअ़, लवातत जानवरों के साथ क़ज़ाए शह्वत और हाथ से इस्तिमना की हुरमत साबित होती है (फ़ा28) शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और ख़ल्क़ के साथ जो अहद हैं उनकी भी और हक़ के जो अहद हैं उनकी भी नज़रें और क़स्में भी इसमें दाख़िल हैं। (फ़ा29) सिद्क़ व इन्साफ़ के साथ न इसमें रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बरदस्त को **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾
فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً
اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

नअ़ीम(38)कल्ला इन्ना ख़—लक्नाहुम् मिम्मा यअ्लमून(39)फ़ला उक़्सिमु बि—रब्बिल्मशारिक़ि वल्मग़ारिबि इन्ना लक़ादिरून(40)अ़ला अन् नुबद्दि—ल ख़ैरम् मिन्हुम् व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन(41) फ़—ज़रहुम् यख़ूज़ू व यलअ़बू हत्ता युलाक़ू यौ—महुमुल् लज़ी यू—अ़दून(42)यौ—म यख़्रुजू—न मिनल् अज्दासि सिराअ़न् क—अन्नहुम् इला नुसुबिंय्यूफ़िज़ू न(43)ख़ाशि—अतन् अब्सारुहुम् तर्—हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ज़ालिकल् यौमुल्लज़ी कानू यू—अ़दून(44)

किया जाए।(38) हरगिज़ नहीं बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से बनाया जिसे जानते हैं।(39) (फ़ा34) तो मुझे क़सम है उसकी जो सब पूरबों सब पच्छिमों का मालिक है (फ़ा35) कि ज़रूर हम क़ादिर हैं।(40) कि उनसे अच्छे बदल दें (फ़ा36) और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता।(41) (फ़ा37) तो उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगियों में पड़े और खेलते हुए यहां तक कि अपने उस (फ़ा38) दिन से मिलें जिसका उन्हें वादा दिया जाता है।(42) जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे झपटते हुए (फ़ा39) गोया वह निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं।(43) (फ़ा40) आँखें नीची किये हुए उन पर ज़िल्लत सवार यह है उनका वह दिन (फ़ा41) जिसका उनसे वादा था।(44) (फ़ा42) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा34) यानी नुत्फ़ा से जैसे सब आदमियों को पैदा किया तो इस सबब से कोई जन्नत में दाख़िल न होगा जन्नत में दाख़िल होना ईमान पर मौक़ूफ़ है (फ़ा35) यानी आफ़ताब के हर जाए तुलूअ़ और हर जाए ग़ुरूब का या हर हर सितारा के मशरिक़ व मग़रिब का मक़सद अपनी रबूबियत की क़सम याद फ़रमाना है। (फ़ा36) इस तरह कि उन्हें हलाक करदें और बजाए उनके अपनी फ़रमांबरदार मख़्लूक़ पैदा करें। (फ़ा37) और हमारी क़ुदरत के इहाता से बाहर नहीं हो सकता। (फ़ा38) अ़ज़ाब के (फ़ा39) महशर की तरफ़। (फ़ा40) जैसे झन्डे वाले झन्डे की तरफ़ दौड़ते हैं। (फ़ा41) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा42) दुनिया में और वह उसको झुठलाते थे।

(बक़िया सफ़हा 916 का) कि हक़ से क़रीब नहीं होते उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर व मोमिन के लिए एक मिस्ल बयान फ़रमाई। (फ़ा39) न आगे देखो न पीछे न दायें न बायें। (फ़ा40) रास्ता को देखता। (फ़ा41) जो मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंचाने वाली है मक़सूद इस मसल का यह है कि काफ़िर गुमराही के मैदान में इस तरह हैरान व सरगरदाँ जाता है कि न उसे मन्ज़िल मालूम न राह पहचाने और मोमिन आंखें खोले राहे हक़ देखता पहचानता चलता है। (फ़ा42) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुशरिकीन से कि जिस ख़ुदा की तरफ़ मैं तुम्हें दावत देता हूं वह (फ़ा43) जो आलाते इल्म हैं लेकिन तुम ने उन क़ुवा से फ़ाइदा न उठाया जो सुना वह न माना जो देखा उससे इबरत हासिल न की जो समझा उसमें ग़ौर न किया। (फ़ा44) कि अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए क़ुवा और आलात इदराक से वह काम नहीं लेते जिसके लिए वह अ़ता हुए यही सबब है कि शिर्क व कुफ़्र में मुब्तला होते हो (फ़ा45) रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिए (फ़ा46) मुसलमानों से तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा के तौर पर (फ़ा47) अ़ज़ाब या क़ियामत का (फ़ा48) यानी अ़ज़ाब व क़ियामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूं इतने ही का मामूर हूं इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है वक़्त का बताना मेरे ज़िम्मा नहीं (फ़ा49) यानी अ़ज़ाब मौऊद को। (फ़ा50) चेहरे सियाह पड़ जायेंगे वहशत व ग़म से सूरतें ख़राब हो जायेंगी (फ़ा51) जहन्नम के फ़रिश्ते कहेंगे (फ़ा52) और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम कहते थे कि वह अ़ज़ाब कहां है जल्दी लाओ अब देख लो यह है वह अ़ज़ाब जिसकी तुम्हें तलब थी (फ़ा53) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुफ़्फ़ारे मक्का से जो आपकी मौत की आरज़ू रखते हैं। (फ़ा54) यानी मेरे असहाब को (फ़ा55) और हमारी उम्रें दराज़ कर दे (फ़ा56) तुम्हें तो अपने कुफ़्र के सबब ज़रूर अ़ज़ाब में मुब्तला होना हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ाइदा देगी। (फ़ा57) जिसकी तरफ़ हम तुम्हें दावत देते हैं। (फ़ा58) यानी वक़्ते अ़ज़ाब। (फ़ा59) और इतनी गहराई में पहुंच जाये कि डोल वग़ैरह से हाथ न आ सके। (फ़ा60) कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके यह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यों इबादत में उस क़ादिरे बरहक़ का शरीक करते हो।

(बक़िया सफ़हा 932 का) नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया। (फ़ा34) यहां नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं (फ़ा35) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है सिला रहमी में और मेहमानदारी में और यह भी कहा गया कि इससे तमाम सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह माले हलाल से ख़ुश दिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाये।

سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ
وَأَطِيعُونِ ۝ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّى دَعَوْتُ قَوْمِى
لَيْلًا وَنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟ ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟
ٱسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّىٓ أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ

सूरतु नूहिन्

(मक्की है इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर् क़ौ–म–क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति–यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(1)क़ा–ल या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्मुबीन(2)अनिअ्बुदुल्ला–ह वत्तक़ूहु व अतीऊ़न(3)यग़्फ़िर् लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु–अख़्ख़िर् कुम् इला अ–जलिम् मुसम्मन् इन्–न अ–ज–लल्लाहि इज़ा जा–अ ला यु–अख़्ख़रु लौ कुन्तुम् तअ्लमून(4)क़ा–ल रब्बि इन्नी दऔ़तु क़ौमी लैलंव् व नहारन्(5)फ़–लम् यज़िद्हुम् दुआइ इल्ला फ़िरारा(6)व इन्नी कुल्लमा दऔ़तुहुम् लितग़्फ़ि–र लहुम् ज–अ़लू असाबि–अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ सिया–बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा(7)सुम्–म इन्नी दऔ़तुहुम् जिहारन्(8)सुम्–म इन्नी अअ्लन्तु लहुम् व अस्–रर्तु लहुम् इस्रारा(9)फ़कुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् इन्नहू का–न ग़फ़्फ़ारंय्(10)युर्सिलिस् समा–अ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि उनको डरा इससे पहले कि उनपर दर्दनाक अ़ज़ाब आए।(1) (फ़ा2) उसने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(2) कि अल्लाह की बन्दगी करो (फ़ा3) और उससे डरो (फ़ा4) और मेरा हुक्म मानो।(3) वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा (फ़ा5) और एक मुक़र्रर मीआ़द तक (फ़ा6) तुम्हें मुहलत देगा (फ़ा7) बेशक अल्लाह का वादा जब आता है हटाया नहीं जाता किसी तरह तुम जानते।।(4) (फ़ा8) अ़र्ज़ की (फ़ा9) ऐ मेरे रब मैं ने अपनी क़ौम को रात दिन बुलाया।।(5) (फ़ा10) तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना ही बढ़ा।(6) (फ़ा11) और मैंने जितनी बार उन्हें बुलाया (फ़ा12) कि तू उनको बख़्शे उन्होंने अपने कानों में उंगलियां दे लीं (फ़ा13) और अपने कपड़े ओढ़ लिए (फ़ा14) और हठ की (फ़ा15) और बड़ा ग़ुरूर किया।।(7) (फ़ा16) फिर मैंने उन्हें एलानिया बुलाया।(8) (फ़ा17) फिर मैंने उन से ब–एलान भी कहा (फ़ा18) और आहिस्ता ख़ुफ़िया भी कहा।(9) (फ़ा19) तो मैंने कहा अपने रब से माफ़ी मांगो (फ़ा20) वह बड़ा माफ़ फ़रमाने वाला है।(10) (फ़ा21) तुम पर शर्राटे का

(फ़ा1) सूरए नूह मक्की है इसमें दो रुकूअ़ 28 आयतें 224 कलिमे 999 हरफ़ हैं। (फ़ा2) दुनिया व आख़िरत का। (फ़ा3) और उसका किसी को शरीक न बनाओ। (फ़ा4) नाफ़रमानियों से बचकर ताकि वह ग़ज़ब न फ़रमाये। (फ़ा5) जो तुम से वक़्ते ईमान तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ न होंगे। (फ़ा6) यानी वक़्ते मौत तक। (फ़ा7) कि इस दौरान में तुम पर अ़ज़ाब न फ़रमाएगा। (फ़ा8) इसको और ईमान ले आते (फ़ा9) हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा10) ईमान व ताअ़त की तरफ़ (फ़ा11) और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरग़ीब दी गई उतनी ही उनकी सरकशी बढ़ती गई (फ़ा12) तुझ पर ईमान लाने की तरफ़ (फ़ा13) ताकि मेरी दावत को न सुनें (फ़ा14) और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्योंकि उन्हें दीने इलाही की तरफ़ नसीहत करने वाले को देखना भी गवारा न था। (फ़ा15) अपने कुफ़्र पर। (फ़ा16) और मेरी दावत को क़बूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना। (फ़ा17) बबांग बुलन्द महफ़िलों में। (फ़ा18) और दावत बिल एलान की तकरार भी की। (फ़ा19) एक एक से और कोई दक़ीक़ा दावत का उठा न रखा क़ौम ज़मानए दराज़ तक हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब ही करती रही तो अल्लाह तआ़ला ने उनसे बारिश रोक दी **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۝
اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ
فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ
يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ
وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۝ مِمَّا خَطِيْٓــٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَنْصَارًا ۝ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ۝ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝

अ़लैकुम् मिद्रारंव्(11)व युम्दिद्कुम् बि-अम्वालिंव् व बनी-न व यज्अ़ल् लकुम् जन्नातिंव् व यज्अ़ल् लकुम् अन्हारा(12)मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा(13)व क़द् ख़-ल-क़कुम् अत्वारा(14) अ-लम् तरौ कै-फ़ ख़-ल-क़ल्लाहु सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़ंव्(15)व ज-अ़-लल् क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरंव् व ज-अ़-लश् शम्-स सिराजा(16)वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्अर्ज़ि नबाता(17) सुम्-म युईदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा(18)वल्लाहु ज-अ़-ल लकुमुल् अर्-ज़ बिसाता (19)लितस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा(20)क़ा-ल नूहुर्रब्बि इन्नहुम् अ़सौनी वत्त-बअू मल्लम् यज़िद्हु मालुहू व व-लदुहू इल्ला ख़सारा(21)व म-करू मक्रन् कुब्बारा(22)व क़ालू ला त-ज़रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़रुन्-न वद्दंव् व ला सुवाअंव् व ला यग़ू-स व यऊ-क़ व नस्रा(23) व क़द् अज़ल्लू कसीरन् व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला(24)मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग़्रिक़ू फ़उद्ख़िलू नारन् फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा(25)व क़ा-ल नूहुर्रब्बि ला त-ज़र् अ़लल्अर्ज़ि मिनल् काफ़िरी-न दय्यारा(26)इन्न-क इन् त-ज़रहुम् युज़िल्लू अ़िबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा(27)रब्बिग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअमिनंव् व लिल्मुअमिनी-न वल्मुअमिनाति व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा(28)

मेंह भेजेगा।(11) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा (फ़ा22) और तुम्हारे लिए बाग़ बना देगा और तुम्हारे लिए नहरें बनाएगा।(12) (फ़ा23) तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इ़ज़्ज़त हासिल करने की उम्मीद नहीं करते।(13) (फ़ा24) हालांकि उसने तुम्हें तरह तरह बनाया।(14) (फ़ा25) क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने क्योंकर सात आसमान बनाए एक पर एक।(15) और उनमें चाँद को रौशनी किया (फ़ा26) और सूरज को चराग़।(16) (फ़ा27) और अल्लाह ने तुम्हें सब्ज़े की तरह ज़मीन से उगाया।(17) (फ़ा28) फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा (फ़ा29) और दोबारा निकालेगा।(18) (फ़ा30) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया।(19) कि उसके वसीअ़ रास्तों में चलो।(20) (रुकूअ़ 9) नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इन्होंने मेरी नाफ़रमानी की (फ़ा31) और (फ़ा32) ऐसे के पीछे हो लिए जिसे उसके माल और औलाद ने नुक़सान ही बढ़ाया।(21) (फ़ा33) और (फ़ा34) बहुत बड़ा दाँव खेले। (22) (फ़ा35) और बोले (फ़ा36) हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को (फ़ा37) और हरगिज़ न छोड़ना वद्द और सुवाअ़ और यग़ूस और यऊ़क़ और नस्र को।(23) (फ़ा38) और बेशक उन्होंने बहुतों को बहकाया (फ़ा39) और तू ज़ालिमों को (फ़ा40) ज़्यादा न करना मगर गुमराही।(24) (फ़ा41) अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए (फ़ा42)फिर आग में दाख़िल किये गए (फ़ा43) तो उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया।(25) (फ़ा44)और नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।(26) बेशक अगर तू उन्हें रहने देगा (फ़ा45) तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और उनकी औलाद होगी तो वह भी न होगी मगर बदकार बड़ी नाशुक्र। **(बक़िया सफ़हा 945 पर)**

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ
تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّا لَمَسْنَا
السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَّاَنَّا لَا

सूरतुल् जिन्नि

(मक्की है इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्त-म-अ न-फ़रुम् मिनल् जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ़्ना कुरआनन्
अ़-ज-बंय्(1)यह्दी इलर्रुश्दि फ़आमन्ना बिही व लन् नुश्रि-क बि-रब्बिना अ-हदा(2)व अन्नहू
तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-ब-तंव् व ला व-लदा(3)व अन्नहू का-न यकूलु
सफ़ीहुना अ़-लल्लाहि श-तता(4)व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् तकू.लल् इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि
कज़िबा(5)व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल् इन्सि यअू.जू-न बिरिजालिम् मिनल् जिन्नि फ़ज़ादूहुम्
र-ह-कंव्(6)व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़-नन्तुम् अल्लंय्यब्अ़-सल्लाहु अ-हदा(7)व अन्ना ल-मस्नस्
समा-अ फ़-व-जद्नाहा मुलिअत् ह-र-सन् शदीदंव् व शुहुबंव्(8)व अन्ना कुन्ना नक़्अुदु मिन्हा
मक़ाअि-द लिस्सम्अि फ़-मंय्यस्तमिअिल् आ-न यजिद् लहू शिहाबर् र-स-दंव्(9)व अन्ना ला

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
तुम फ़रमाओ (फ़ा2) मुझे 'वही' हुई कि कुछ जिन्नों ने (फ़ा3) मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना (फ़ा4) तो बोले (फ़ा5) हम ने एक अ़जीब कुरआन सुना।(1) (फ़ा6) कि भलाई की राह बताता है (फ़ा7) तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे।(2) और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उसने औरत इख़्तियार की और न बच्चा।(3) (फ़ा8) और यह कि हम में का बेवकूफ़ अल्लाह पर बढ़ कर बात कहता था।(4) (फ़ा9) और यह कि हमें ख़्याल था कि हरगिज़ आदमी और जिन्न अल्लाह पर झूठ न बांधेंगे।(5) (फ़ा10) और यह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों के पनाह लेते थे (फ़ा11) तो उससे और भी उसका तकब्बुर बढ़ा।(6) और यह कि उन्होंने (फ़ा12) गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है (फ़ा13) कि अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।(7) और यह कि हमने आसमान को छुआ (फ़ा14) तो उसे पाया कि (फ़ा15) सख़्त पहरे और आग की चिंगारियों से भर दिया गया है।(8) (फ़ा16) और यह कि हम (फ़ा17) पहले आसमान में सुनने के लिए कुछ मौक़ों पर बैठा करते थे फिर अब (फ़ा18) जो कोई सुने वह अपनी ताक में आग का लोका पाए।(9) (फ़ा19) और यह कि हमें नहीं

(फ़ा1) सूरए जिन्न मक्की है इसमें दो रुकूअ़ 28 आयतें 250 कलिमे 870 हरफ़ हैं। (फ़ा2) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (फ़ा3) नसीबैन के जिनकी तादाद मुफ़स्सिरीन ने नौ बयान की। (फ़ा4) नमाज़े फ़ज्र में ब-मक़ामे नख़ला मक्का मुकर्रमा व ताइफ़ के दर्मियान। (फ़ा5) वह जिन्न अपनी क़ौम में जाकर। (फ़ा6) जो अपनी फ़साहत व बलाग़त व ख़ूबीए मज़ामीन व उलूए माना में ऐसा नादिर है कि मख़्लूक़ का कोई कलाम इससे कोई निस्बत नहीं रखता उसकी यह शान है। (फ़ा7) यानी तौहीद व ईमान की। (फ़ा8) जैसा कि कुफ़्फ़ार जिन्न व इन्स कहते हैं। (फ़ा9) झूठ बोलता था बे अदबी करता था कि उसके लिए शरीक व औलाद और बीबी बताता था। (फ़ा10) और इस पर इफ़्तेरा न करेंगे इस लिए हम उनकी बातों की तस्दीक़ करते थे जो कुछ वह शाने इलाही में कहते थे और ख़ुदावन्दे आ़लम की तरफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे यहां तक कि कुरआने करीम की हिदायत से हमें उनका किज़्ब व बुहतान ज़ाहिर हो गया। (फ़ा11) जब सफ़र में किसी ख़ौफ़नाक मक़ाम पर उतरते तो कहते हम इस जगह **(बक़िया सफ़हा 928 का)**

نَدۡرِیۡۤ اَشَرٌّ اُرِیۡدَ بِمَنۡ فِی الۡاَرۡضِ اَمۡ اَرَادَ بِہِمۡ رَبُّہُمۡ رَشَدًا ﴿۱۰﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوۡنَ وَ مِنَّا دُوۡنَ ذٰلِکَ ؕ کُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ﴿۱۱﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنۡ لَّنۡ
نُّعۡجِزَ اللّٰہَ فِی الۡاَرۡضِ وَ لَنۡ نُّعۡجِزَہٗ ہَرَبًا ﴿۱۲﴾ وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعۡنَا الۡہُدٰۤی اٰمَنَّا بِہٖ ؕ فَمَنۡ یُّؤۡمِنۡۢ بِرَبِّہٖ فَلَا یَخَافُ بَخۡسًا وَّ لَا رَہَقًا ﴿۱۳﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الۡمُسۡلِمُوۡنَ
وَ مِنَّا الۡقٰسِطُوۡنَ ؕ فَمَنۡ اَسۡلَمَ فَاُولٰٓئِکَ تَحَرَّوۡا رَشَدًا ﴿۱۴﴾ وَ اَمَّا الۡقٰسِطُوۡنَ فَکَانُوۡا لِجَہَنَّمَ حَطَبًا ﴿۱۵﴾ وَّ اَنۡ لَّوِ اسۡتَقَامُوۡا عَلَی الطَّرِیۡقَۃِ لَاَسۡقَیۡنٰہُمۡ مَّآءً
غَدَقًا ﴿۱۶﴾ لِّنَفۡتِنَہُمۡ فِیۡہِ ؕ وَ مَنۡ یُّعۡرِضۡ عَنۡ ذِکۡرِ رَبِّہٖ یَسۡلُکۡہُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿۱۷﴾ وَّ اَنَّ الۡمَسٰجِدَ لِلّٰہِ فَلَا تَدۡعُوۡا مَعَ اللّٰہِ اَحَدًا ﴿۱۸﴾ وَّ اَنَّہٗ لَمَّا قَامَ عَبۡدُ اللّٰہِ
یَدۡعُوۡہُ کَادُوۡا یَکُوۡنُوۡنَ عَلَیۡہِ لِبَدًا ﴿۱۹﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَدۡعُوۡا رَبِّیۡ وَ لَاۤ اُشۡرِکُ بِہٖۤ اَحَدًا ﴿۲۰﴾ قُلۡ اِنِّیۡ لَاۤ اَمۡلِکُ لَکُمۡ ضَرًّا وَّ لَا رَشَدًا ﴿۲۱﴾ قُلۡ اِنِّیۡ لَنۡ

नद्री अ-शर्रुन् उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-शदा(10)व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना तराइ-क़ क़ि-ददा(11)व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् नुअ्जिज़ल्ला-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-र-बंव्(12)व अन्ना लम्मा समिअ्नल् हुदा आमन्ना बिही फ़मंय्युअ्मिम् बि-रब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव् व ला र-हक़ा(13)व अन्ना मिन्नल् मुस्लिमू-न व मिन्नल् क़ासितून फ़-मन् अस्ल-म फ़उलाइ-क त-हर्रौ र-शदा(14)व अम्मल् क़ासितू-न फ़कानू लि-जहन्न-म ह-त-बंव्(15)व अल्लविस्तक़ामू अ़लत्तरी-क़ति ल-अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़-दक़ल्(16)लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि व मंय्युअ्रिज़् अ़न् ज़िक्रि रब्बिही यस्लुक्हु अ़ज़ाबन् स-अ-दंव्(17)व अन्नल् मसाजि-द लिल्लाहि फ़ला तद्अू म-अल्लाहि अ-हदा(18)व अन्नहू लम्मा क़ा-म अ़ब्दुल्लाहि यद्अूहु कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-बदा(19)क़ुल् इन्नमा अद्अू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-हदा(20)क़ुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव् व ला र-शदा(21)क़ुल् इन्नी लंय्युजी-

मालूम कि (फ़ा20) ज़मीन वालों से कोई बुराई का इरादा फ़रमाया गया है या उनके रब ने कोई भलाई चाही है।(10) और यह कि हम में (फ़ा21) कुछ नेक हैं (फ़ा22) और कुछ दूसरी तरह के हैं हम कई राहें फटे हुए हैं।(11) (फ़ा23) और यह कि हम को यक़ीन हुआ कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से न निकल सकेंगे और न भाग कर उसके क़ब्ज़े से बाहर हों।(12) और यह कि हमने जब हिदायत सुनी (फ़ा24) उस पर ईमान लाए तो जो अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का ख़ौफ़ (फ़ा25) और न ज़्यादती का।(13) (फ़ा26) और यह कि हमें में कुछ मुसलमान हैं और कुछ ज़ालिम (फ़ा27) तो जो इस्लाम लाए उन्होंने भलाई सोची।(14) (फ़ा28) और रहे ज़ालिम (फ़ा29) वह जहन्नम के ईंधन हुए।(15) (फ़ा30) और फ़रमाओ कि मुझे यह 'वही' हुई है कि अगर वह (फ़ा31) राह पर सीधे रहते (फ़ा32) तो हम ज़रूर उन्हें वाफ़िर पानी देते।(16) (फ़ा33) कि उस पर उन्हें जांचें (फ़ा34) और जो अपने रब की याद से मुँह फेरे (फ़ा35) वह उसे चढ़ते अ़ज़ाब में डालेगा।(17) (फ़ा36) और यह कि मस्जिदें (फ़ा37) अल्लाह ही की हैं तो अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो।(18) (फ़ा38) और यह कि जब अल्लाह का बन्दा (फ़ा39) उसकी बन्दगी करने खड़ा हुआ (फ़ा40) तो क़रीब था कि वह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जायें।(19) (फ़ा41) (रुकूअ़ 11) तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब ही की बन्दगी करता हूं और किसी को उसका शरीक नहीं ठहराता।(20) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का मालिक नहीं।(21) तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे अल्लाह से कोई

(फ़ा20) हमारी इस बन्दिश और रोक से। (फ़ा21) क़ुरआने करीम सुनने के बाद। (फ़ा22) मोमिन मुख़लिस मुत्तक़ी व अबरार। (फ़ा23) फ़िरके फ़िरके मुख़्तलिफ़। (फ़ा24) यानी क़ुरआन पाक। (फ़ा25) यानी नेकियों या सवाब की कमी का (फ़ा26) बदियों की। (फ़ा27) हक़ से फिरे हुए काफ़िर। (फ़ा28) और हिदायत व राहे हक़ को अपना मक़सूद ठहराया। (फ़ा29) काफ़िर राहे हक़ से फिरने वाले (फ़ा30) इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न आतिशे जहन्नम के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जायेंगे। (फ़ा31) यानी इन्सान। (फ़ा32) यानी दीने हक़ व तरीक़ए इस्लाम पर। (फ़ा33) कसीर मुराद वुसअ़ते रिज़्क़ है और यह वाक़िआ उस वक़्त का है जबकि सात बरस तक वह बारिश से महरूम कर दिये गए थे माना यह हैं कि अगर वह लोग ईमान लाते तो हम दुनिया में उन पर रिज़्क़ वसीअ़ करते और उन्हें कसीर पानी और फ़राख़ी ऐश इनायत फ़रमाते। (फ़ा34) **(बक़िया सफ़हा 945 पर)**

يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ

رَبِّيْۤ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

रनी मिनल्लाहि अ़–ह़दुंव् व लन् अजि–द मिन् दूनिही मुल्त–ह़दा(22)इल्ला बलाग़म् मिनल्लाहि व रिसालातिही व मंय्यअ़सि़ल्ला–ह व रसू–लहू फ़इन्–न लहू ना–र जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–बदा(23)ह़त्ता इज़ा रऔ मा यू–अ़दू–न फ़–स–यअ़लमू–न मन् अज़्–अ़फु नासिरंव् व अक़ल्लु अ़–ददा(24)क़ुल् इन् अदरी अ–क़रीबुम् मा तू–अ़दू–न अम् यज्अ़लु लहू रब्बी अ–मदा(25) आ़लिमुल् ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ–ह–दन्(26)इल्ला मनिर्–तज़ा मिर्रसूलिन् फ़–इन्नहू यस्लुकु मिम् बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र–स–दल्(27)लियअ्–ल–म अन् क़द अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अह़ा–त़ बिमा लदैहिम् व अह़्सा कुल्–ल शैइन् अ़–ददा(28)

न बचाएगा (फ़ा42) और हरगिज़ उसके सिवा कोई पनाह न पाऊँगा।(22)मगर अल्लाह के पयाम पहुंचाना और उसकी रिसालतें (फ़ा43) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने (फ़ा44)तो बेशक उनके लिए जहन्नम की आग है जिसमें हमेशा हमेशा रहें।(23)यहां तक कि जब देखेंगे (फ़ा45) जो वादा दिया जाता है तो अब जान जायेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर और किस की गिनती कम।(24) (फ़ा46) तुम फ़रमाओ मैं नहीं जानता आया नज़दीक है वह जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा।(25) (फ़ा47) ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर (फ़ा48) किसी को मुसल्लत नहीं करता।(26) (फ़ा49) सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के (फ़ा50) कि उनके आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है।(27) (फ़ा51)ताकि देख ले कि उन्होंने अपने रब के पयाम पहुंचा दिये और जो कुछ उनके पास सब उसके इल्म में है और उसने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है।(28) (फ़ा52) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा42) जैसा कि हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था फ़मंय्-यनूसुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू (फ़ा43) यह मेरा फ़र्ज़ है जिसको अन्जाम देता हूं (फ़ा44) और उन पर ईमान न लाये। (फ़ा45) वह अ़ज़ाब। (फ़ा46) काफ़िर की या मोमिन की यानी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मोमिन की मदद अल्लाह तआ़ला और उसके अम्बिया और मलाइका सब फ़रमायेंगे। **शाने नुज़ूलः** नज़र बिन हारिस ने कहा था कि यह वादा कब पूरा होगा इसके जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई। (फ़ा47) यानी वक़्ते अ़ज़ाब का इल्मे ग़ैब है जिसे अल्लाह तआ़ला ही जाने। (फ़ा48) यानी अपने ग़ैबे ख़ास पर जिसके साथ वह मुनफ़रिद है। (ख़ाज़िन व बैज़ावी वग़ैरह) (फ़ा49) यानी इत्तलाअ़ कामिल नहीं देता जिस से हक़ाइक़ का कश्फ़ ताम आला दर्जा यक़ीन के साथ हासिल हो। (फ़ा50) तो उन्हें ग़ुयूब पर मुसल्लत करता है और इत्तलाअ़े कामिल और कश्फ़े ताम अ़ता फ़रमाता है और यह इल्मे ग़ैब उनके लिए मोअ़्जिज़ा होता है औलिया को भी अगरचे ग़ुयूब पर इत्तलाअ़ दी जाती है मगर अम्बिया का इल्म बऐतबारे कश्फ़ व इन्हला औलिया के इल्म से बहुत बुलन्द व बाला व अरफ़अ़ व आला है और औलिया के उलूम अम्बिया ही के वसातत और उनही के फ़ैज़ से होते हैं मोअ़तज़ेला एक गुमराह फ़िरक़ा है वह औलिया के लिए इल्मे ग़ैब का क़ाइल नहीं इसका ख़्याल बातिल और अहादीसे कसीरा के ख़िलाफ़ है और इस आयत से उनका तमस्सुक सही नहीं बयान मज़कूरा बाला में इसका इशारा कर दिया गया है सय्यदुर्रुसल ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुर्तज़ा रसूलों में सब से आला हैं अल्लाह तआ़ला ने आपको तमाम अशिया के उलूम अ़ता फ़रमाए जैसा कि सिहाह की मोअ़्तबर अहादीस से साबित है और यह आयत हुज़ूर के और तमाम मुर्तज़ा रसूलों के लिए ग़ैब का इल्म साबित करती है। (फ़ा51) फ़रिश्तों को जो उनकी हिफ़ाज़त करते हैं (फ़ा52) इससे साबित हुआ कि जमीअ़ अशिया महदूद व महसूर व मुतनाही हैं।

(बक़िया सफ़हा 928 का) के सरदार की पनाह चाहते हैं यहां के शरीरों से (फ़ा12) यानी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने (फ़ा13) ऐ जिन्नात (फ़ा14) यानी अहले आसमान का कलाम सुनने के लिए आसमाने दुनिया पर जाना चाहा। (फ़ा15) फ़रिश्तों के। (फ़ा16) ताकि जिन्नात को अहले आसमान की बातें सुनने के लिए आसमान तक पहुंचने से रोका जाए। (फ़ा17) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत से (फ़ा18) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद। (फ़ा19) जिससे उसको मारा जाये।

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا
اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ؕ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۙ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۙ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۙ اِنَّ لَدَيْنَاۤ
اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۙ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۙ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ

सूरतुल् मुज़म्मिल

(मक्की है इसमें 20 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहल् मुज़्ज़म्मिलु(1)क़ुमिल्लै–ल इल्ला क़लीलन्(2)निस्फ़हू अविन्क़ुस् मिन्हु क़लीलन्(3)औ ज़िद् अ़लैहि व रत्तिलिल् क़ुरआ–न तरतीला(4)इन्ना सनुल्क़ी अ़लै–क क़ौलन् स़क़ीला(5)इन्–न नाशि–अतल् लैलि हि–य अशद्दु वत्अंव् व अक़्वमु क़ीला(6)इन्–न ल–क फ़िन्नहारि सब्ह़न् त़वीला(7)वज़्कुरिस्–म रब्बि–क व त–बत्तल् इलैहि तब्तीला(8)रब्बुल् मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि ला इला–ह इल्ला हु–व फ़त्तख़िज़्हु वकीला(9)वस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू–न वह्जुर्हुम् हज्रन् जमीला(10)व ज़र्नी वल्मुकज़्ज़िबी–न उलिन्नअ़्–मति व महि्हल्हुम् क़लीला(11)इन्–न लदैना अन्कालंव् व जह़ीमंव्(12)व त़आमन् ज़ा ग़ुस़्स़तिंव् व अ़ज़ाबन् अलीमा(13)यौ–म तर्जुफ़ुल् अर्–ज़ु वल्जिबालु व का–नतिल् जिबालु कस़ीबम् महीला(14)इन्ना अर्सल्ना इलैकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ झुरमुट मारने वाले।(1) (फ़ा2) रात में क़ियाम फ़रमा।(2) (फ़ा3) सिवा कुछ रात के (फ़ा4) आधी रात या उससे कुछ कम करो।(3) या उस पर कुछ बढ़ाओ (फ़ा5) और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।(4) (फ़ा6) बेशक अ़न्क़रीब हम तुम पर एक भारी बात डालेंगे।(5) (फ़ा7) बेशक रात का उठना (फ़ा8) वह ज़्यादा दबाव डालता है (फ़ा9) और बात ख़ूब सीधी निकलती है।(6) (फ़ा10) बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं।(7) (फ़ा11) और अपने रब का नाम याद करो (फ़ा12) और सब से टूट कर उसी के हो रहो।(8) (फ़ा13) वह पूरब का रब और पच्छिम का रब उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ।(9) (फ़ा14) और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो।(10) (फ़ा15) और मुझ पर छोड़ो उन झुठलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो।(11) (फ़ा16) बेशक हमारे पास (फ़ा17) भारी बेड़ियां हैं(12) और भड़कती आग। और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब।(13) (फ़ा18) जिस दिन थर थरायेंगे ज़मीन और पहाड़ (फ़ा19) और पहाड़ हो जायेंगे रेते का टीला बहता हुआ।(14) बेशक हमने तुम्हारी तरफ़

(फ़ा1) सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्की है इसमें दो रुकूअ़ बीस आयतें 285 कलिमे 838 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी अपने कपड़ों से लिपटने वाले इसके **शाने नुज़ूलः** में कई क़ौल हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्तेदाए ज़माना वही में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे ऐसी हालत में आपको जिबरील ने या अय्युहल्-मुज़्ज़म्मिलु कहकर निदा की एक क़ौल यह है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस हालत में आपको निदा की गई या अय्युहल् मुज़्ज़म्मिलु बहरहाल यह निदा बताती है कि महबूब की हर अदा प्यारी है और यह भी कहा गया है कि उसके माना यह हैं कि रिदाए नबुव्वत व चादर रिसालत के हामिल व लाइक़। (फ़ा3) नमाज़ और इबादत के साथ। (फ़ा4) यानी थोड़ा हिस्सा आराम के लिए हो बाक़ी शब इबादत में गुज़ारिये अब वह बाक़ी कितनी हो उसकी तफ़सील आगे इरशाद फ़रमाई जाती है। (फ़ा5) मुराद यह है कि आपको इख़्तियार दिया गया है कि ख़्वाह क़ियाम निस्फ़ शब से कम हो या निस्फ़ शब या इससे ज़्यादा हो (बैज़ावी) मुराद इस क़ियाम से तहज्जुद है जो इब्तेदाए इस्लाम में वाजिब **(बक़िया सफ़हा 935 पर)**

رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ؕ فَعَصٰى فِرۡعَوۡنُ الرَّسُوۡلَ فَاَخَذۡنٰهُ اَخۡذًا وَّبِيۡلًا ۞ فَكَيۡفَ تَتَّقُوۡنَ اِنۡ كَفَرۡتُمۡ يَوۡمًا
يَّجۡعَلُ الۡوِلۡدَانَ شِيۡبَا ۖ السَّمَآءُ مُنۡفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعۡدُهٗ مَفۡعُوۡلًا ۞ اِنَّ هٰذِهٖ تَذۡكِرَةٌ ۚ فَمَنۡ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيۡلًا ۞ اِنَّ رَبَّكَ يَعۡلَمُ اَنَّكَ
تَقُوۡمُ اَدۡنٰى مِنۡ ثُلُثَىِ الَّيۡلِ وَنِصۡفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيۡنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنۡ لَّنۡ تُحۡصُوۡهُ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡ
فَاقۡرَءُوۡا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الۡقُرۡاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنۡ سَيَكُوۡنُ مِنۡكُمۡ مَّرۡضٰى ۙ وَاٰخَرُوۡنَ يَضۡرِبُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ يَبۡتَغُوۡنَ مِنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوۡنَ يُقَاتِلُوۡنَ
فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ۖ فَاقۡرَءُوۡا مَا تَيَسَّرَ مِنۡهُ ۙ وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقۡرِضُوا اللّٰهَ قَرۡضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوۡا لِاَنۡفُسِكُمۡ مِّنۡ خَيۡرٍ تَجِدُوۡهُ عِنۡدَ
اللّٰهِ هُوَ خَيۡرًا وَّاَعۡظَمَ اَجۡرًا ؕ وَاسۡتَغۡفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۞

रसूलन् शाहिदन् अ़लैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्‌औ़–न रसूला(15)फ़–अ़सा फ़िर्‌औ़नुर् रसू–ल फ़–अ–ख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव् वबीला(16)फ़कै–फ़ तत्तकू–न इन् क–फ़र्तुम् यौमंय्यज्–अ़लुल् विल्दा–न शी–ब नि(17)स्समाउ मुन्फ़तिरुम् बिही का–न वअ़्दुहू मफ़्अू़ला(18)इन्–न हाज़िही तज़्कि–रतुन् फ़–मन् शा–अत् त–ख़–ज़ इला रब्बिही सबीला(19)इन्–न रब्ब–क यअ़्–लमु अन्न–क तकूमु अद्ना मिन् सुलु–सयिल्लैलि व निस्–फ़हू व सुलु–सहू व ताइ–फ़तुम मिनल्लज़ी–न म–अ़–क वल्लाहु यु–क़द्दिरुल् लै–ल वन्नहा–र अ़लि–म अल्लन् तुह्सूहु फ़ता–ब अ़लैकुम् फ़क्–रऊ मा त–यस्स–र मिनल् कुर्‌आनि अ़लि–म अन् स–यकूनु मिन्कुम् मर्ज़ा व आ–ख़रू–न यज़्रिबू–न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू–न मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व आ–ख़रू–न युक़ातिलू–न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़क्‌रऊ मा त–यस्स–र मिन्हु व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व अक्‌रिज़ुल्ला–ह क़र्–ज़न् ह़–स–नन् व मा तुक़द्दिमू लि–अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु–व ख़ैरंव् व अअ़्ज–म अज्‌रन् वस्तग़्फ़िरुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(20)

एक रसूल भेजे (फ़ा20) कि तुम पर हाज़िर नाज़िर हैं (फ़ा21) जैसे हम ने फ़िरऔ़न की तरफ़ रसूल भेजे।(15) (फ़ा22) तो फ़िरऔ़न ने उस रसूल का हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गिरिफ़्त से पकड़ा।(16) फिर कैसे बचोगे (फ़ा23) अगर (फ़ा24) कुफ़्र करो उस दिन से (फ़ा25) जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।(17) (फ़ा26) आसमान उसके सदमा से फट जाएगा अल्लाह का वादा होकर रहना।(18) बेशक यह नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले।(19) (फ़ा27) (रुकूअ़ 13) बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअ़त तुम्हारे साथ वाली (फ़ा28) और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मालूम है कि ऐ मुसलमानों तुम से रात का शुमार न हो सकेगा (फ़ा29) तो उसने अपनी मेहर से तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई अब कुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो (फ़ा30) उसे मालूम है कि अ़न्क़रीब कुछ तुम में से बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने (फ़ा31) और कुछ अल्लाह की राह में लड़ते होंगे (फ़ा32) तो जितना कुरआन मुयस्सर हो पढ़ो (फ़ा33) और नमाज़ क़ाइम रखो (फ़ा34) और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो (फ़ा35) और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे और अल्लाह से बख़्शिश मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(20) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा20) सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा21) मोमिन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं। (फ़ा22) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा23) अ़ज़ाबे इलाही से (फ़ा24) दुनिया में (फ़ा25) यानी क़ियामत के दिन जो निहायत हौलनाक होगा। (फ़ा20) अपने शिद्दते दहशत से। (फ़ा27) ईमान व ताअ़त इख़्तियार करके। (फ़ा28) तुम्हारे असहाब की वह भी क़ियाम लैल में आपका इत्तेबाअ़ करते हैं। (फ़ा29) और ज़ब्त औक़ात न कर सकोगे (फ़ा30) यानी शब का क़ियाम माफ़ फ़रमाया मसला इस आयत से नमाज़ में मुतलक़ क़िरअत की फ़र्ज़ियत साबित हुई। मसला अक़ल दर्जा क़िराअत मफ़रूज़ एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं। (फ़ा31) यानी तिजारत या तलबे इल्म के लिए (फ़ा32) उन सब पर रात का क़ियाम दुशवार होगा (फ़ा33) इससे पहला हुक्म मन्सूख़ किया गया और यह भी पंजगाना **(बक़िया सफ़हा 925 पर)**

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝
فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۝ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ
تَمْهِيْدًا ۝ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۝ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۝ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ۝ ثُمَّ نَظَرَ ۝ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝ ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۝ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۝ وَمَاۤ

सूरतुल् मुदस्सिर

(मक्की है इसमें 56 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहूमानिर्रहीम

या अय्युहल् मुद्दस्सिरु(1)कुम् फ़–अन्ज़िर्(2)व रब्ब–क फ़–कब्बिर(3)व सिया–ब–क फ़–तह्हिर्(4) वर्रुज्–ज़ फ़ह्जुर्(5)व ला तम्नुन् तस्तक्सिर(6)व लि–रब्बि–क फ़स्बिर्(7)फ़इज़ा नुक़ि–र फ़िन्नाकूरि(8)फ़ज़ालि–क यौ–मइज़िंय्यौमुन् अ़सीरुन्(9)अ़लल्काफ़िरी–न ग़ैरु यसीर(10)ज़र्नी व मन् ख़–लक़्तु वहीदंव्(11)व ज–अ़ल्तु लहू मालम् मम्दूदंव्(12)व बनी–न शुहूदंव्(13)व मह्हत्तु लहू तम्हीदा(14)सुम्–म यत्मअु अन् अज़ी–द(15)कल्ला इन्नहू का–न लिआयातिना अ़नीदा(16)सउर्हिक़ुहू सअूदन्(17)इन्नहू फ़क्क–र व क़द्–द–र(18)फ़कुति–ल कै–फ़ क़द्–द–र(19)सुम्–म कुति–ल कै–फ़ क़द्–द–र(20)सुम्–म न–ज़–र(21)सुम्–म अ़–ब–स व ब–स–र(22)सुम्–म अद्ब–र वस्तक्–ब–र(23)फ़क़ा–ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्युअ्–सरु(24)इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल् ब–शर(25)सउस्लीहि स–क़र(26)व मा

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले।(1) (फ़ा2) खड़े हो जाओ (फ़ा3) फिर डर सुनाओ।(2) (फ़ा4) और अपने रब ही की बड़ाई बोलो।(3) (फ़ा5) और अपने कपड़े पाक रखो।(4) (फ़ा6) और बुतों से दूर रहो।(5) और ज़्यादा लेने की नीयत से किसी पर एहसान न करो।(6) (फ़ा7) और अपने रब के लिए सब्र किये रहो।(7) (फ़ा8) फिर जब सूर फूंका जाएगा।(8) (फ़ा9) तो वह दिन कर्रा दिन है।(9) काफ़िरों पर आसान नहीं।(10) (फ़ा10) उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैंने अकेला पैदा किया।(11) (फ़ा11) और उसे वसीअ़ माल दिया।(12) (फ़ा12) और बेटे दिये सामने हाज़िर रहते।(13) (फ़ा13) और मैंने उसके लिए तरह तरह की तैयारियां कीं।(14) (फ़ा14) फिर यह तमअ़ करता है कि मैं और ज़्यादा दूं।(15) (फ़ा15) हरगिज़ नहीं (फ़ा16) वह तो मेरी आयतों से अ़नाद रखता है।(16) क़रीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊद पर चढ़ाऊँ।(17) बेशक वह सोचा और दिल में कुछ बात ठहराई।(18) तो उस पर लानत हो कैसी ठहराई।(19) फिर उस पर लानत हो कैसी ठहराई।(20) फिर नज़र उठा कर देखा।(21) फिर तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ा।(22) फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया।(23) फिर बोला यह तो वही जादू है अगलों से सीखा।(24) यह नहीं मगर आदमी का कलाम।(25) (फ़ा17) कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूं।(26) और तुमने

(फ़ा1) सूरह मुद्दस्सिर मक्की है इस में दो रुकूअ़ 56 आयतें 255 कलिमे 1010 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यह ख़िताब हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को है शाने नुज़ूल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं कोहे हिरा पर था कि मुझे निदा की गई या मुहम्मदु इन्न–क रसूलुल्लाह मैंने अपने दायें बायें देखा कुछ न पाया ऊपर देखा एक शख़्स आसमान ज़मीन के दर्मियान बैठा है (यानी वही फ़रिश्ता जिसने निदा की थी) यह देख कर मुझ पर रोअ़ब हुआ और मैं ख़दीजा के पास आया और मैंने कहा कि मुझे बाला पोश उढ़ाओ उन्होंने उढ़ा दिया तो जिबरील आये और उन्होंने कहा या अय्युहल् मुद्दस्सिरु (फ़ा3) अपनी ख़्वाबगाह से। (फ़ा4) क़ौमको अ़ज़ाबे इलाही **(बक़िया सफ़हा 945 पर)**

أَدْرٰكَ مَا سَقَرُ ۝٢٧ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۝٢٨ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝٢٩ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝٣٠ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ إِلَّا

هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝٣١ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝٣٢ وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ۝٣٣ وَالصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ۝٣٤ إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ۝٣٥ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ أَنْ

يَّتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝٣٧ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝٣٨ إِلَّا أَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝٣٩ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٤٠ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٤١ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝٤٢ قَالُوْا لَمْ

अद्रा–क मा स–क़र(27)ला तुब्क़ी व ला त–ज़र(28)लव्वा–हतुल् लिल्ब–शर(29)अ़लैहा तिस्–अ़–त अ़–शर(30)व मा ज–अ़ल्ना अस्हाबन्नारि इल्ला मलाइ–कतंव् व मा जअ़ल्ना अ़िद्–द–तहुम् इल्ला फ़ित्–तल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू लि–यस्तैक़ि–नल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब व यज़्दादल् लज़ी–न आ–मनू ईमानंव् व ला यरताबल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब वल्मुअ्मिनू–न व लि–यकूलल्लज़ी–न फ़ी कुलूबिहिम् म–रजुंव् वल्काफ़िरू–न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म–स–लन् कज़ालि–क युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ व मा यअ्–लमु जुनू–द रब्बि–क इल्ला हु–व व मा हि–य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब–शर(31) कल्ला वल्क़–मरि(32)वल्लैलि इज् अद्ब–र(33)वस्सुब्हि इज़ा अस्फ़–र(34)इन्नहा ल–इह्दल् कुबरि(35)नज़ीरल् लिल्ब–शर(36)लिमन् शा–अ मिन्कुम् अंय्य–त–क़द्–द–म औ य–त–अख़्ख़–र(37)कुल्लु नफ़्सिम् बिमा क–स–बत् रही–नतुन्(38)इल्ला अस्हाबल् यमीन(39)फ़ी जन्नातिन् य–तसा–अलून(40)अ़निल् मुज्रिमीन(41)मा स–ल–ककुम् फ़ी स–क़र(42)क़ालू लम्

क्या जाना दोज़ख़ क्या है।(27) न छोड़े न लगी रखे।(28) (फ़ा18) आदमी की खाल उतार लेती है।(29) (फ़ा19) उस पर उन्नीस दारोग़ा हैं।(30) (फ़ा20) और हमने दोज़ख़ के दारोग़ा न किये मगर फ़रिश्ते और हमने उनकी यह गिनती न रखी मगर काफ़िरों की जाँच को (फ़ा21) इस लिए कि किताब वालों को यक़ीन आए (फ़ा22) और ईमान वालों का ईमान बढ़े (फ़ा23) और किताब वालों और मुसलमानों को कोई शक न रहे और दिल के रोगी (फ़ा24) और काफ़िर कहें इस अचंभे की बात में अल्लाह का क्या मतलब है यूं ही अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता और वह (फ़ा25) तो नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत।(31) (रुकूअ़ 15) हां हां चाँद की क़सम।(32) और रात की जब पीठ फेरे।(33) और सुबह की जब उजाला डाले।(34) (फ़ा26) बेशक दोज़ख़ बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है।(35) आदमियों को डराओ।(36) उसे जो तुम में चाहे कि आगे आए (फ़ा27) या पीछे रहे।(37) (फ़ा28) हर जान अपनी करनी में गिरवी है।(38) मगर दाहिनी तरफ़ वाले।(39) (फ़ा29) बाग़ों में पूछते हैं।(40) मुजरिमों से।(41) तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई।(42) वह बोले हम (फ़ा30)

(फ़ा20) यानी न किसी मुस्तहिके अ़ज़ाब को छोड़े न किसी के जिस्म पर गोश्त पोस्त खाल लगी रहने दे बल्कि मुस्तहिके अ़ज़ाब को गिरिफ़्तार करे और गिरिफ़्तार को जलाए और जब जल जायें फिर वैसे ही कर दिये जायें (फ़ा१६) जलाकर (फ़ा२०) फ़रिश्ते एक मालिक और अट्ठारह उनके साथी। (फ़ा21) कि हिकमते इलाही पर एतेमाद न करके उस तादाद में कलाम करें और कहें उन्नीस क्यों हुए (फ़ा22) यानी यहूद को यह तादाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देख कर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिद्क़ का यक़ीन हासिल हो (फ़ा23) यानी अहले किताब में से जो ईमान लाए उनका एतेक़ाद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ और ज़्यादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वह वहीए इलाही है इस लिए कुतुबे साबिक़ा से मुताबिक़ होती है। (फ़ा24) जिनके दिलों में निफ़ाक़ है। (फ़ा26) यानी जहन्नम और उसकी सिफ़त या आयाते कुरआन। (फ़ा२६) ख़ूब रौशन हो जाए (फ़ा27) ख़ैर या जन्नत की तरफ़ ईमान लाकर (फ़ा28) कुफ़्र इख़्तियार करके और बुराई व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो। (फ़ा29) यानी मोमिनीन वह गिरवी नहीं वह नजात पाने वाले हैं और उन्होंने नेकियां करके अपने आपको आज़ाद करा लिया है वह अपने रब की रहमत से मुन्तफ़ेअ़ हैं। (फ़ा30) दुनिया में

نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا
تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ
مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ
هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

नकु मिनल् मुसल्लीन(43)व लम् नकु नुत्अिमुल् मिस्कीन(44)व कुन्ना नख़ूजु म–अल्ख़ाइज़ीन (45)व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्दीन(46)हत्ता अतानल् यक़ीन(47)फ़मा तन्फ़अुहुम् शफ़ा–अतुश् शाफ़िअीन(48) फ़मा लहुम् अनित् तज़्कि–रति मुअ्रिज़ीन(49)क–अन्नहुम् हुमुरुम् मुस्तन्फ़िरः(50) फ़र्रत् मिन् क़स्–वरः(51)बल् युरीदु कुल्लुम्रिइम् मिन्हुम् अंय्यूअ्ता सुहुफ़म् मुनश्–श–र–तन्(52) कल्ला बल् ला यख़ाफ़ूनल् आख़िरः(53)कल्ला इन्नहू तज़्कि–रतुन्(54)फ़–मन् शा–अ ज़–क– रह(55)व मा यज़्कुरू–न इल्ला अंय्यशा–अल्लाहु हु–व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल् मग़्फ़िरः(56)

नमाज़ न पढ़ते थे।(43) और मिस्कीन को खाना न देते थे।(44) (फ़ा31) और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे।(45) और हम इन्साफ़ के दिन को (फ़ा32) झुठलाते रहे।(46) यहां तक कि हमें मौत आई।(47) तो उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी।(48) (फ़ा33) तो उन्हें क्या हुआ नसीहत से मुँह फेरते हैं।(49) (फ़ा34) गोया वह भड़के हुए गधे हों।(50) कि शेर से भागे हों।(51) (फ़ा35) बल्कि उनमें का हर शख़्स चाहता है कि खुले सहीफ़े उसके हाथ में दे दिये जायें।(52) (फ़ा36) हरगिज़ नहीं बल्कि उनको आख़िरत का डर नहीं।(53) (फ़ा37) हां हां बेशक वह (फ़38) नसीहत है।(54) तो जो चाहे उस से नसीहत ले।(55) और वह क्या नसीहत मानें मगर जब अल्लाह चाहे वही है डरने के लाइक़ और उसी की शान है मग़फ़िरत फ़रमाना।(56) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा31) यानी मसाकीन पर सदक़ा न करते थे। (फ़ा32) जिसमें आमाल का हिसाब होगा और जज़ा दी जाएगी मुराद इससे रोज़े क़ियामत है। (फ़ा33) यानी अम्बिया मलाइका शोहदा सालिहीन जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने शाफ़ेअ़ किया है वह ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे काफ़िरों की शफ़ाअत न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअत भी मुयस्सर न आएगी (फ़ा34) यानी मवाइज़े क़ुरआन से एराज़ करते हैं (फ़ा35) यानी मुशरिकीन नादानी व बेवक़ूफ़ी में गधे की मिस्ल हैं जिस तरह शेर को देख कर वह भागता है उसी तरह यह नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तिलावते क़ुरआन सुनकर भागते हैं (फ़ा36) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि हम हरगिज़ आपका इत्तेबाअ़ न करेंगे जब तक कि हम में हर एक के पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक एक किताब न आए जिसमें लिखा हो कि यह अल्लाह तआ़ला की किताब है फ़ुलां बिन फ़ुलां के नाम हम इसमें तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इत्तेबाअ़ का हुक्म देते हैं (फ़ा37) क्योंकि अगर उन्हें आख़रत का ख़ौफ़ होता तो अदिल्ला क़ाइम होने और मोअ़जेज़ात ज़ाहिर होने के बाद इस क़िस्म की सर कुशाना हीला बाज़ियां न करते। (फ़ा38) क़ुरआन शरीफ़।

(बक़िया सफ़हा 931 का) व बक़ौले फ़र्ज़ था नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब शब को क़ियाम फ़रमाते और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वह तमाम शब क़ियाम में रहते और सुबह तक नमाज़ें पढ़ते इस अन्देशा से कि क़ियामे क़द्र वाजिब से कम न हो जाये यहां तक कि उन हज़रात के पाँव सूज जाते थे फिर यह हुक्म एक साल के बाद मन्सूख़ हो गया और इसका नासिख़ भी इसी सूरत में है फ़क़्रऊ मा त–यस्स–र–मिन्हु (फ़ा6) रिआ़यत वुक़ूफ़ और अदाए मख़ारिज के साथ और हुरूफ़ को मख़ारिज के साथ ता–ब इम्कान सही अदा करना नमाज़ में फ़र्ज़ है। (फ़ा7) यानी निहायत जलील व बा अ़ज़मत मुराद इससे क़ुरआन मजीद है यह भी कहा गया है कि माना यह हैं कि हम आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमायेंगे जिसमें अवामिर नवाही और तकालीफ़ शाक़्क़ा हैं जो मुकल्लिफ़ीन पर भारी होंगे (फ़ा8) सोने के बाद (फ़ा9) ब–निस्बत दिन की नमाज़ के (फ़ा10) क्योंकि वह वक़्त सुकून व इत्मीनान का है शोर व शुग़ब से अमन होती है इख़्लास ताम व कामिल होता है रिया व नुमाइश का मौक़ा नहीं होता (फ़ा11) शब का वक़्त इबादत के लिए ख़ूब फ़राग़त का है (फ़ा12) रात व दिन के जुमला औक़ात में तस्बीह तहलील नमाज़ तिलावत क़ुरआन शरीफ़ दर्से इल्म वग़ैरह के साथ और यह भी कहा गया है कि इसके माना यह हैं कि अपनी क़िराअत की इब्तेदा में बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़ो (फ़ा13) यानी इबादत में इनक़ताअ़ की सिफ़त हो कि दिल अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी की तरफ़ मश्ग़ूल न हो सब इलाक़ा क़तअ़ हो जायें उसी की तरफ़ तवज्जोह रहे (फ़ा14) और अपने काम उसी की तरफ़ तफ़वीज़ करो (फ़ा15) व हाज़ा मन्सूख़ बि–आयते क़िताल (फ़ा16) बद्र तक या रोज़े क़ियामत तक। (फ़ा17) आख़िरत में। (फ़ा18) उनके लिए जिन्होंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब की। (फ़ा19) वह क़ियामत का दिन होगा।

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝١ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝٢ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝٣ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝٤ بَلْ يُرِيْدُ
الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝٥ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝٦ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝٩ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠
كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ۝١٢ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝١٣ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝١٤ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝١٥
لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝١٦ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝١٧ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝١٨ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝١٩ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝٢٠ وَتَذَرُوْنَ

सूरतुल् क़ियामति

(मक्की है इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बियौमिल् क़िया–मति(1)व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल् लव्वामः(2)अ–यह्सबुल् इन्सानु अल्लन् नज्म–अ अ़िज़ामह(3)बला क़ादिरी–न अ़ला अन् नुसव्वि–य बनानह(4)बल् युरीदुल् इन्सानु लियफ़्जु–र अमा–मह(5)यस्अलु अय्या–न यौमुल् क़ियामः(6)फ़इज़ा बरिक़ल् ब–सरु(7) व ख़–स–फ़ल् क़–मरु(8)व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़–मरु(9)यक़ूलुल् इन्सानु यौ–मइज़िन् ऐनल् म–फ़र्रु(10)कल्ला ला व–ज़र(11)इला रब्बि–क यौ–मइज़ि निल्मुस्त–क़र्र(12)युनब्बउल् इन्सानु यौमइज़िम् बिमा क़द्–द–म व अख़्ख़–र(13)बलिल् इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसी–रतुंव्(14)व लौ अल्क़ा मआज़ीरह(15)ला तुहर्रिक् बिही लिसा–न–क लितअ्–ज–ल बिही(16)इन्–न अ़लैना जम्–अ़हू व क़ुर्आ–नहू(17)फ़इज़ा क़रअ्नाहु फ़त्तबिअ् क़ुर्आनः(18)सुम्–म इन्–न अ़लैना बयानः(19)कल्ला बल् तुहिब्बूनल् आ़जि–ल–त(20)व त–ज़रूनल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

रोज़े क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूं।(1) और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे।(2) (फ़ा2) क्या आदमी (फ़ा3) यह समझता है कि हम हरगिज़ उसकी हड्डियां जमा न फ़रमायेंगे।(3) क्यों नहीं हम क़ादिर हैं कि उसके पोर ठीक बना दें।(4) (फ़ा4) बल्कि आदमी चाहता है कि उसकी निगाह के सामने बदी करे।(5) (फ़ा5) पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा।(6) फिर जिस दिन आँख चुंधियाएगी।(7) (फ़ा6) और चाँद गहेगा।(8) (फ़ा7) और सूरज और चाँद मिला दिये जायेंगे।(9) (फ़ा8) उस दिन आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊँ।(10) (फ़ा9) हरगिज़ नहीं कोई पनाह नहीं।(11) उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ जाकर ठहरना है।(12) (फ़ा10) उस दिन आदमी को उसका सब अगला पिछला जता दिया जाएगा।(13) (फ़ा11) बल्कि आदमी ख़ुद ही अपने हाल पर पूरी निगाह रखता है।(14) और अगर उसके पास जितने बहाने हों सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा।(15) तुम याद करने की जल्दी में क़ुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो।(16) (फ़ा12) बेशक उसका महफ़ूज़ करना (फ़ा13) और पढ़ना(17) (फ़ा14) हमारे ज़िम्मा है। तो जब हम उसे पढ़ चुकें (फ़ा15) उस वक़्त उस पढ़े हुए की इत्तेबाअ़ करो।(18) (फ़ा16) फिर बेशक उसकी बारीकियों का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है।(19) कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो तुम पाँव तले की दोस्त रखते हो।(20) (फ़ा17) और आख़िरत को

(फ़ा1) सूरह क़ियामा मक्की है इसमें दो रुकूअ़ चालीस आयतें 199 कलिमे 692 हरफ़ हैं। (फ़ा2) बावजूद मुत्तक़ी व कसीरुत्ताअ़त होने के कि तुम मरने के बाद ज़रूर उठाए जाओगे। (फ़ा3) यहां आदमी से मुराद काफ़िर मुन्किरे बअ़्स है **शाने नुज़ूलः** यह आयत अ़दी बिन रबीआ़ के हक़ में नाज़िल हुई जिसने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि अगर मैं क़ियामत का दिन देख भी लूं जब भी मैं न मानूं और आप पर ईमान न लाऊँ क्या अल्लाह तआ़ला बिखरी हुई हड्डियां जमा कर देगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई जिसके माना यह हैं कि क्या उस काफ़िर का यह गुमान है कि हड्डियां बिखरने और गलने और रेज़ा रेज़ा होकर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ मक़ामात में मुन्तशिर हो **(बक़िया सफ़हा 946 पर)**

الْاٰخِرَةَ ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿۲۲﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿۲۳﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿۲۵﴾ كَلَّاۤ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿۲۶﴾

وَقِيْلَ مَنْ ٚ رَاقٍ ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿۲۸﴾ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمَسَاقُ ﴿۳۰﴾ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿۳۱﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۳۲﴾

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿۳۳﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۴﴾ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۵﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿۳۶﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿۳۷﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً

فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿۳۸﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۳۹﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿۴۰﴾

आख़ि–रह(21)वुजूहुंय्यौमइज़िन् नाज़ि–रतुन्(22)इला रब्बिहा नाज़िरः(23)व वुजूहुंय्यौमइज़िम् बासि–रतुन्(24)तज़ुन्नु अंय्युफ़्अ़–ल बिहा फ़ाक़ि–रह(25)कल्ला इज़ा ब–ल–ग़तित् तराक़ि–य (26)व क़ी–ल मन् राक़िंव्(27)व ज़न्–न अन्नहुल् फ़िराक़ु(28)वल्–तफ़्फ़तिस्साक़ु बिस्साक़ि(29)इला रब्बि–क यौमइज़ि निल्मसाक़(30)फ़ला स़द्–द–क़ व ला स़ल्ला(31)व लाकिन् कज़्ज़–ब व त– वल्ला (32)सुम्–म ज़–ह–ब इला अह्लिही य–त–मत़्ता(33)औला ल–क फ़औला(34) सुम्– म औला ल–क फ़औला(35)अ–यह़्सबुल् इन्सानु अंय्युत्र–क सुदा(36)अ–लम् यकु नुत़्फ़–तम् मिम्– मनिय्यिंय्युम्ना(37)सुम्–म का–न अ़–ल–क़–तन् फ़–ख़–ल–क़ फ़–सव्वा(38)फ़–ज–अ़–ल मिन्हुज़् ज़ौजैनिज़् ज़–क–र वल् उन्सा(39)अलै–स ज़ालि–क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह़्यि–यल् मौता(40)

छोड़े बैठे हो।(21) कुछ मुँह उस दिन (फ़ा18) तरो ताज़ा होंगे।(22) (फ़ा19) अपने रब को देखते।(23) (फ़ा20) और कुछ मुँह उस दिन बिगड़े हुए होंगे।(24) (फ़ा21) समझते होंगे कि उनके साथ वह की जाएगी जो कमर तोड़ दे।(25) (फ़ा22) हां हां जब जान गले को पहुंच जाएगी।(26) (फ़ा23) और कहेंगे (फ़ा24) कि है कोई झाड़ फूंक करे।(27) (फ़ा25) और वह (फ़ा26) समझ लेगा कि यह जुदाई की घड़ी है।(28) (फ़ा27) और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी।(29) (फ़ा28) उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ हांकना है।(30) (फ़ा29) (रुकूअ़ 17) तो उसने (फ़ा30) न तो सच माना (फ़ा31) और न नमाज़ पढ़ी।(31) हां झुठलाया और मुँह फेरा।(32) (फ़ा32) फिर अपने घर को अकड़ता चला।(33) (फ़ा33) तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी।(34) फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी।(35) (फ़ा34) क्या आदमी इस घमंड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा।(36) (फ़ा35) क्या वह एक बूंद न था उस मनी का कि गिराई जाए।(37) (फ़ा36) फिर ख़ून की फुटक हुआ तो उसने पैदा फ़रमाया (फ़ा37) फिर ठीक बनाया।(38) (फ़ा38) तो उससे (फ़ा39) दो जोड़े बनाए (फ़ा40) मर्द और औरत।(39) क्या जिस ने यह कुछ किया वह मुर्दे न जिला सकेगा।(40) (रुकूअ़ 18)

(फ़ा18) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा19) अल्लाह तआ़ला के निअ़मत व करम पर मसरूर चेहरों से अनवारे ताबाँ यह मोमिनीन का हाल है। (फ़ा20) उन्हें दीदारे इलाही की निअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। मसला इस आयत से साबित हुआ कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा यही अहले सुन्नत का अ़क़ीदा क़ुरआन व हदीस व इज्माअ़ के दलाइले कसीरा इस पर क़ाइम हैं और यह दीदार बे कैफ़ और बेजहत होगा। (फ़ा21) सियाह तारीक ग़मज़दा मायूस यह कुफ़्फ़ार का हाल है। (फ़ा22) यानी वह शिद्दते अ़ज़ाब और हौलनाक मसाइब में गिरिफ़्तार किये जायेंगे। (फ़ा23) वक़्ते मौत (फ़ा24) जो उसके क़रीब होंगे (फ़ा25) ताकि उसको शिफ़ा हासिल हो (फ़ा26) यानी मरने वाला (फ़ा27) कि अहले मक्का और दुनिया सब से जुदाई होती है (फ़ा28) यानी मौत की कर्ब व सख़्ती से पाँव बाहम लिपट जायेंगे या यह माना हैं कि दोनों पाँव कफ़न में लपेटे जायेंगे या यह माना हैं कि शिद्दत पर शिद्दत होगी एक दुनिया की जुदाई की सख़्ती उसके साथ मौत की कर्ब या एक मौत की सख़्ती और उसके साथ आख़िरत की सख़्तियां (फ़ा29) यानी बन्दों का रुजूअ़ उसी की तरफ़ है वही उनमें फ़ैसला फ़रमाएगा (फ़ा30) यानी इन्सान ने मुराद इससे अबू जहल है। (फ़ा31) रिसालत और क़ुरआन को। (फ़ा32) ईमान लाने से (फ़ा33) मुतकब्बिराना शान से अब उससे ख़िताब फ़रमाया जाता है (फ़ा34) जब यह आयत नाज़िल हुई नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बतहा में अबू जहल के कपड़े पकड़ कर उससे फ़रमाया औला ल–क फ़औला सुम्–म औला ल–क फ़औला यानी तेरी ख़राबी आ लगी फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी तो अबू जहल ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) क्या तुम मुझे धमकाते हो तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते मक्का के पहाड़ों के दर्मियान में सब से ज़्यादा क़वी ज़ोर आवर साहब शौकत व क़ुव्वत हूं मगर क़ुरआनी ख़बर ज़रूर पूरी होनी थी और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान ज़रूर पूरा होने वाला था चुनान्चे **(बक़िया सफ़हा 946 पर)**

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝١ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝٢ اِنَّا هَدَيْنٰهُ
السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝٣ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝٤ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝٥ عَيْنًا
يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝٦ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٧ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا
وَّاَسِيْرًا ۝٨ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝٩ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝١٠ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

सूरतुद दह्रि

(मक्की है इसमें 31 आयतें और 2 रुकूअ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता अ़–लल् इन्सानि हीनुम् मिनद् दह्रि लम् यकुन् शैअम् मज़्कूरा(1)इन्ना ख़–लक़्नल् इन्सा–न मिन् नुत्–फ़तिन् अम्शाजिन् नब्–तलीहि फ़–ज–अ़ल्नाहु समीअ़म् बसीरा(2)इन्ना हदैनाहुस् सबी–ल इम्मा शाकिरंव् व इम्मा कफ़ूरा(3)इन्ना अअ़्तदना लिल्काफ़िरी–न सलासि–ल व अग्लालंव् व सअ़ीरा(4)इन्नल् अब्रा–र यश्–रबू–न मिन् कअ्सिन् का–न मिज़ाजुहा काफ़ूरा(5) अ़ैनंय्यश्–रबु बिहा अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू–नहा तफ़्जीरा(6)यूफ़ू–न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू–न यौमन् का–न शर्रुहू मुस्ततीरा(7)व युत्अ़िमू–नत् तआ़–म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव् व यतीमंव् व असीरा(8)इन्नमा नुत्अ़िमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव् व ला शुकूरा(9)इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्तरीरा(10)फ़–वक़ाहुमुल्लाहु शर्–र ज़ालिकल् यौमि

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

बेशक आदमी पर (फ़2) एक वक़्त वह गुज़रा कि कहीं उसका नाम भी न था।(1) (फ़3) बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से (फ़4) कि वह उसे जांचें (फ़5) तो उसे सुनता देखता कर दिया।(2) (फ़6) बेशक हमने उसे राह बताई (फ़7) या हक़ मानता (फ़8) या नाशुक्री करता।(3) (फ़9) बेशक हमने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखी हैं ज़ंजीरें (फ़10) और तौक़ (फ़11) और भड़कती आग।(4) (फ़12) बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से जिस की मिलूनी काफ़ूर है। वह काफ़ूर क्या?एक चश्मा है(5) (फ़13) जिसमें से अल्लाह के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने महलों में उसे जहां चाहें बहा कर ले जायेंगे।(6) (फ़14) अपनी मन्नतें पूरी करते हैं (फ़15) और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई (फ़16) फैली हुई है।(7) (फ़17) और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर (फ़18) मिस्कीन और यतीम और असीर को।(8) उनसे कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिए खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।(9) बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है।(10) (फ़19) तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन के शर से बचा लिया

(फ़1) सूरह दहर इसका नाम सूरए इन्सान भी है मुजाहिद व क़तादा और जम्हूर के नज़दीक यह सूरत मदनी है बाज़ ने इसको मक्की कहा है इसमें दो रुकूअ़ 31 आयतें 240 कलिमे और 1054 हरफ़ हैं (फ़2) यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर नफ़ख़े रूह से पहले चालीस साल का (फ़3) क्योंकि वह एक मिट्टी का ख़मीर था न कहीं उसका ज़िक्र था न उसको कोई जानता था न किसी को उसकी पैदाइश की हिकमतें मालूम थीं इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उसके हमल में रहने का ज़माना (फ़4) मर्द व औरत की (फ़5) मुकल्लफ़ करके अपने अमर व नही से (फ़6) ताकि दलाइल का मुशाहिदा और आयात का इस्तेमाअ़ कर सके (फ़7) दलाइल क़ाइम करके रसूल भेज कर किताबें नाज़िल फ़रमा कर ताकि हो (फ़8) यानी मोमिन सईद (फ़9) काफ़िर शक़ी (फ़10) जिन्हें बांध कर दोज़ख़ की तरफ़ घसीटे जायेंगे (फ़11) जो गलों में डाले जायेंगे (फ़12) जिसमें जलाए जायेंगे (फ़13) जन्नत में (फ़14) अबरार के सवाब बयान फ़रमाने के बाद उनके आमाल का ज़िक्र फ़रमाया जाता है जो इस सवाब का सबब हुए (फ़15) **(बक़िया सफ़हा 947 पर)**

وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝۱۱ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝۱۲ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝۱۳ وَدَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝۱۴ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۝۱۵ قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا
تَقْدِيْرًا ۝۱۶ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝۱۷ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝۱۸ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝۱۹ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۝۲۰ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّحُلُّوْا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ
رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝۲۱ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝۲۲ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۝۲۳ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ

व लक़्क़ाहुम् नज़्–रतंव् व सुरूरा(11)व जज़ाहुम् बिमा स़–बरू जन्नतंव् व ह़रीरम्(12) मुत्तकिई–न
फ़ीहा अ़लल् अराइकि ला यरौ–न फ़ीहा शम्संव् व ला ज़म्–हरीरा(13)व दानि–य–तन् अ़लैहिम्
ज़िलालुहा व ज़ुल्लि–लत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला(14)व युत़ाफ़ु अ़लैहिम् बिआनि–यतिम् मिन् फ़िज़्ज़तिंव्
व अक्वाबिन् कानत् क़वारीर(15)क़वारी–र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्–दरूहा तक़्दीरा(16)व युस्क़ौ–न
फ़ीहा कअ्सन् का–न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला(17)अ़ैनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्सबीला(18)व यतूफ़ु
अ़लैहिम् विल्दानुम् मुख़ल्लदू–न इज़ा रऐ–तहुम् ह़सिब्–तहुम् लुअ्लुअम् मन्सूरा(19)व इज़ा रऐ–
त सम्–म रऐ–त नअ़ीमंव् व मुल्कन् कबीरा(20)आ़लि–यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव् व इस्तब्–
रक़ुंव् व हुल्लू असावि–र मिन् फ़िज़्ज़तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् त़हूरा(21)इन्–न हाज़ा
का–न लकुम् जज़ाअंव् व का–न सअ़्युकुम् मश्कूरा(22)इन्ना नह़्नु नज़्ज़ल्ना अ़लैकल् क़ुरआ–न
तन्ज़ीला(23)फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि–क व ला तुतिअ्

और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी।(11) और उनके सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में
दिये।(12) जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे न उसमें धूप देखेंगे न ठिठुर।(13) (फ़ा20) और उसके
(फ़ा21) साए उन पर झुके होंगे और उसके गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे।(14) (फ़ा22) और
उन पर चाँदी के बर्तनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे।(15) कैसे शीशे चाँदी
के (फ़ा23) साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़ा पर रखा होगा।(16) (फ़ा24) और उसमें वह जाम पिलाए जायेंगे
(फ़ा25) जिसकी मिलूनी अदरक होगी।(17) (फ़ा26) वह अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे
सलसबील कहते हैं।(18) (फ़ा27) और उनके आसपास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के (फ़ा28)
जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए।(19) (फ़ा29) और जब तू उधर नज़र उठाए
एक चैन देखे (फ़ा30) और बड़ी सल्तनत।(20) (फ़ा31) उनके बदन पर हैं करेब के सब्ज़ कपड़े (फ़ा32)
और क़नादीज़ के (फ़ा33) और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए गए (फ़ा34) और उन्हें उनके रब ने सुथरी
शराब पिलाई।(21) (फ़ा35) उनसे फ़रमाया जाएगा यह तुम्हारा सिला है (फ़ा36) और तुम्हारी मेहनत
ठिकाने लगी।(22) (फ़ा37) (रुकूअ़ 19) बेशक हमने तुम पर (फ़ा38) कुरआन ब-तदरीज उतारा।(23)
(फ़ा39) तो अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो (फ़ा40) और उनमें किसी

(फ़ा20) यानी गर्मी या सर्दी की कोई तकलीफ़ वहां न होगी (फ़ा21) यानी बहिश्ती दरख़्तों के (फ़ा22) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में ख़ोशे ब-आसानी ले सकें (फ़ा23) जन्नती बर्तन चांदी के होंगे और चांदी के रंग और उसके हुस्न के साथ मिस्ले आबगीना के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि उनमें जो चीज़ पी जायेगी वह बाहर से नज़र आएगी। (फ़ा24) यानी पीने वालों की रग़बत की क़दर न इससे कम न ज़्यादा यह सलीक़ा जन्नती ख़ुद्दाम के साथ ख़ास है दुनिया के साक़ियों को मुयस्सर नहीं (फ़ा25) शराबे तहूर के। (फ़ा26) इसकी आमेज़िश से शराब की लज़्ज़त और ज़्यादा हो जाएगी (फ़ा27) मुक़र्रबीन तो ख़ालिस इसी को पियेंगे और बाक़ी अहले जन्नत के शराबों में इसकी आमेज़िश होगी यह चश्मा ज़ेरे अ़र्श से जन्नते अ़दन होता हुआ तमाम जन्नतों में गुज़रता है (फ़ा28) जो न कभी मरेंगे न बूढ़े होंगे न उन में कोई तग़य्युर आएगा न ख़िदमत से उकतायेंगे उनके हुस्न का यह आ़लम होगा (फ़ा29) यानी जिस तरह फ़र्शे मुसफ़्फ़ा पर गौहरे आबदार ग़लताँ हो उस हुस्न व सफ़ा के साथ जन्नती ग़िल्मान मश्ग़ूले ख़िदमत होंगे। (फ़ा30) जिसका वस्फ़ बयान में नहीं आ सकता। (फ़ा31) जिसकी हद व निहायत नहीं न उसको ज़वाल न जन्नती को वहां से इन्तेक़ाल वुसअ़त का यह आलम कि अदना मर्तबा का जन्नती जब अपने मुल्क में नज़र करेगा तो हज़ार बरस की राह तक ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की जगह देखता **(बक़िया सफ़हा 940 पर)**

مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَ
يَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ
اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा(24)वज़्कुरिस्–म रब्बि–क बुक्र–तंव् व असीला(25)व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला(26)इन्–न हाउलाइ युहिब्बूनल् आजि–ल–त व य–ज़रू–न वरा–अहुम् यौमन् सक़ीला(27)नह्नु ख़–लक़्नाहुम् व श–दद्ना अस्–रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सा–लहुम् तब्दीला(28)इन्–न हाज़िही तज़्कि–रतुन् फ़–मन् शाअत् त–ख़–ज़ इला रब्बिही सबीला(29)व मा तशाऊ–न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु इन्नल्ला–ह का–न अलीमन् हकीमंय्–(30)–युद्खिलु मंय्यशाउ फ़ी रह्मतिही वज़्ज़ालिमी–न अ–अद्–द लहुम् अज़ाबन् अलीमा(31)

गुनहगार या नाशुक्रे की बात न सुनो।(24) (फ़ा41) और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो।(25) (फ़ा42) और कुछ रात में उसे सज्दा करो (फ़ा43) और बड़ी रात तक उसकी पाकी बोलो।(26) (फ़ा44) बेशक यह लोग (फ़ा45) पाँव तले की अ़ज़ीज़ रखते हैं (फ़ा46) और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़े बैठे हैं।(27) (फ़ा47) हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़ बन्द मज़बूत किये और हम जब चाहें (फ़ा48) उन जैसे और बदल दें।(28) (फ़ा49) बेशक यह नसीहत है (फ़ा50) तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले।(29) (फ़ा51) और तुम क्या चाहो मगर यह कि अल्लाह चाहे (फ़ा52) बेशक वह इल्म व हिकमत वाला है।(30) अपनी रहमत में लेता है (फ़ा53) जिसे चाहे (फ़ा54) और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(31) (फ़ा55) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा41) **शाने नुज़ूलः** उतबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन मुग़ीरा यह दोनों नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे आप इस काम से बाज़ आईये यानी दीन से उतबा ने कहा कि आप ऐसा करें तो मैं अपनी बेटी आपको ब्याह दूं और बग़ैर महर के आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूं वलीद ने कहा कि मैं आपको इतना माल दे दूं कि आप राज़ी हो जायें इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा42) नमाज़ में सुबह के ज़िक्र से नमाज़े फ़ज्र और शाम के ज़िक्र से ज़ुहर और अ़स्र मुराद हैं (फ़ा43) यानी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो इस आयत में पांचों नमाज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया (फ़ा44) यानी फ़राइज़ के बाद नवाफ़िल पढ़ते रहो इसमें नमाज़े तहज्जुद आगई बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मुराद ज़िक्रे लिसानी है मक़सूद यह है कि रोज़ा व शब के तमाम औक़ात में दिल और ज़बान से ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहो (फ़ा45) यानी कुफ़्फ़ार (फ़ा46) यानी मुहब्बते दुनिया में गिरिफ़्तार हैं (फ़ा47) यानी रोज़े क़ियामत को जिसके शदाइद कुफ़्फ़ार पर बहुत भारी होंगे न उस पर ईमान लाते हैं न उस दिन के लिए अ़मल करते हैं (फ़ा48) उन्हें हलाक कर दें और बजाए उनके (फ़ा49) जो इताअ़त शेआ़र हों (फ़ा50) मख़्लूक़ के लिए (फ़ा51) उसकी ताअ़त बजा लाकर और उसके रसूल का इत्तेबाअ़ करके (फ़ा52) क्योंकि जो कुछ होता है उसी की मशीयत से होता है (फ़ा53) यानी जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है। (फ़ा54) ईमान अ़ता फ़रमा कर (फ़ा55) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं।

(बक़िया सफ़्हा 939 का) हो शौकत व शिकोह यह होगा कि मलाइका बे इजाज़त न आयेंगे। (फ़ा32) यानी बारीक रेशम के। (फ़ा33) यानी दबीज़ रेशम के। (फ़ा34) हज़रत इब्ने मुसैइब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हर एक जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे एक चांदी का एक सोन का एक मोती का। (फ़ा35) जो निहायत पाक साफ़ न उसे किसी का हाथ लगा न किसी ने छुआ न वह पीने के बाद शराबे दुनिया की तरह जिसके के अन्दर सड़ कर बोल बने बल्कि उसकी सफ़ाई का यह आ़लम है कि जिस्म के अन्दर उतर कर पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर जिस्म से निकलती है अहले जन्नत को खाने के बाद शराब पेश की जाएगी उसको पीने से उनके पेट साफ़ हो जायेंगे और जो उन्होंने खाया है वह पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर उनके जिस्मों से निकलेगा और उनकी ख़्वाहिश और रग़बतें फिर ताज़ा हो जाएंगी (फ़ा36) यानी तुम्हारी इताअ़त व फ़रमांबरदारी का। (फ़ा37) कि तुम से तुम्हारा रब राज़ी हुआ और उसने तुम्हें सवाबे अज़ीम अ़ता फ़रमाया। (फ़ा38) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा39) आयत आयत करके और उसमें अल्लाह तआ़ला की बड़ी हिकमतें हैं। (फ़ा40) रिसालत की तबलीग़ फ़रमा कर और उसमें मशक़्क़तें उठा कर और दुश्मनाने दीन की ईज़ायें बरदाश्त करके।

سُورَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۝ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۝
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ

सूरतुल् मुर्सलाति

(मक्की है इसमें 50 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्मुर्सलाति अुर्फ़न्(1)फ़ल्आसिफ़ाति अ़स्फ़न्(2)वन्नाशिराति नश्रन्(3)फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न्(4) फ़ल्मुल्क़ियाति ज़िक्रन्(5)अुज़्रन् औ नुज़्रन्(6)इन्नमा तू–अ़दू–न लवाक़ि–अ़(7)फ़–इज़न्नुजूमु तुमि–सत्(8)व इज़स्समाउ फ़ुरिजत्(9)व इज़ल् जिबालु नुसिफ़त्(10)व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत्(11) लिअय्यि यौमिन् उज्जिलत्(12)लियौमिल् फ़स्लि(13)व मा अदरा–क मा यौमुल् फ़स्–ल(14) वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(15)अ–लम् नुह्लिकिल् अव्वलीन(16)सुम्–म नुत्बिअुहुमुल् आख़िरीन(17)कज़ालि–क नफ़्अ़लु बिल्मुज्रिमीन(18)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(19) अ–लम् नख़्लुक़्कुम् मिम् माइम् महीन(20)फ़–ज–अ़ल्नाहु फ़ी क़रारिम् मकीन(21)इला क़–दरिम् मअ़्लूम(22)फ़–क़–दर्ना फ़निअ़्–मल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम उनकी जो भेजी जाती हैं लगातार।(1) (फ़ा2) फिर ज़ोर से झोंका देने वालियां।(2) फिर उभार कर उठाने वालियां।(3) (फ़ा3) फिर हक़ नाहक़ को ख़ूब जुदा करने वालियां।(4) फिर उनकी क़सम जो ज़िक्र का इल्क़ा करती हैं।(5) (फ़ा4) हुज्जत तमाम करने या डराने को।(6) बेशक जिस बात का तुम वादा दिये जाते हो (फ़ा5) ज़रूर होनी है।(7) (फ़ा6) फिर जब तारे मह्व कर दिये जायें।(8) और जब आसमान में रख़ने पड़ें।(9) और जब पहाड़ ग़ुबार करके उड़ा दिये जायें।(10) और जब रसूलों का वक़्त आए।(11) (फ़ा7) किस दिन के लिए ठहराए गए थे।(12) रोज़े फ़ैसला के लिए।(13) और तू क्या जाने वह रोज़े फ़ैसला कैसा है।(14) (फ़ा8) झुठलाने वालों की उस दिन ख़राबी।(15) (फ़ा9) क्या हमने अगलों को हलाक न फ़रमाया।(16) (फ़ा10) फिर पिछलों को उनके पीछे पहुंचायेंगे।(17) (फ़ा11) मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।(18) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(19) क्या हमने तुम्हें एक बे-क़दर पानी से पैदा न फ़रमाया।(20) (फ़ा12) फिर उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा।(21) (फ़ा13) एक मालूम अन्दाज़ा तक।(22) (फ़ा14) फिर हमने अन्दाज़ा फ़रमाया तो हम

(फ़ा1) सूरह मुरसलात मक्की है इसमें दो रुकूअ़ 50 आयतें 180 कलिमे 816 हरफ़ हैं शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वलमुरसलात शबे जिन में नाज़िल हुई हम सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रकाबे सआ़दत में थे जब मिना की ग़ार में पहुंचे वलमुरसलात नाज़िल हुई हम हुज़ूर से इसको पढ़ते थे और हुज़ूर उसकी तिलावत फ़रमाते थे अचानक एक सांप ने जस्त की हम उसको मारने के लिए लपके वह भाग गया हुज़ूर ने फ़रमाया तुम इसकी बुराई से बचाए गए वह तुम्हारी बुराई से यह ग़ार मिना में ग़ार वलमुरसलात के नामसे मशहूर है। (फ़ा2) इन आयतों में जो क़स्में मज़कूर हैं वह पांच सिफ़ात है जिनके मौसूफ़ात ज़ाहिर में मज़कूर नहीं इसी लिए मुफ़स्सिरीन ने इनकी तफ़सीर में बहुत वुजूह ज़िक्र किये हैं बाज़ ने यह पांचों सिफ़तें हवाओं की क़रार दी हैं बाज़ ने मलाइका की बाज़ ने आयाते क़ुरआन की बाज़ ने नुफ़ूसे कामिला की जो इस्तिकमाल के लिए अबदान की तरफ़ भेजे जाते हैं फिर वह रियाज़तों के झोंकों से मा सिवाए हक़ को उड़ा देते हैं फिर तमाम आज़ा में इस असर को फैलाते है। फिर हक़ बिज़्ज़ात और बातिल फ़ी नफ़सेही में फ़र्क़ करते हैं और ज़ाते इलाही के सिवा हर शय को हालक देखते हैं फिर ज़िक्र का इल्क़ा **(बक़िया सफ़हा 947 पर)**

الْقٰدِرُوْنَ ۝23 وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝24 اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝25 اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝26 وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً
فُرَاتًا ۝27 وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝28 اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝29 اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝30 لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ
مِنَ اللَّهَبِ ۝31 اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝32 كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝33 وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝34 هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝35 وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝36
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝37 هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝38 فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ۝39 وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝40
اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۝41 وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝42 كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝43 اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝44
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝45 كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ۝46 وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝47 وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا
لَا يَرْكَعُوْنَ ۝48 وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝49 فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝50

क़ादिरून(23)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(24)अ–लम् नजअलिल् अर्–ज़ किफ़ातन्(25)
अह्याअंव् व अम्वातंव्(26)व जअल्ना फ़ीहा रवासि–य शामिख़ातिंव् व अस्क़ैनाकुम् माअन् फ़ुराता
(27)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(28)इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून(29)
इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि शु–अबिल्(30)ला ज़लीलिंव् व ला युग़्नी मिनल्ल–हब(31)
इन्नहा तर्मी बि–श–ररिन् कल्क़स्रि(32)क–अन्नहू जिमा–लतुन् सुफ़्र(33)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–
कज़्ज़िबीन(34)हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून(35)व ला युअ्ज़नु लहुम् फ़–यअ्–तज़िरून(36) वैलुंय्यौमइज़िल्
–लिल्मु–कज़्ज़िबीन(37)हाज़ा यौमुल् फ़स्लि ज–मअ्नाकुम् वल्–अव्वलीन(38)फ़इन् का–न
लकुम् कैदुन् फ़कीदून(39)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(40)इन्नल्मुत्तक़ी–न फ़ी ज़िलालिंव् व अुयून
(41)व फ़वाकि–ह मिम्मा यश्–तहून(42)कुलू वश्–रबू हनीअम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून(43)इन्ना कज़ालि
–क नज्ज़िल्मुह्सिनीन(44)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(45)कुलू व त–मत्तअू क़लीलन्
इन्नकुम् मुज्रिमून(46)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(47)व इज़ा क़ी–ल लहुमुर्–कअू. ला
यर्–कअून(48)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(49)फ़बि–अय्यि हदीसिम् बअ्–दहू युअ्मिनून(50)

क्या ही अच्छे क़ादिर।(23) (फ़ा15) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(24) क्या हमने ज़मीन को जमा करने वाली न किया।(25) तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों की।(26) (फ़ा16) और हमने उस में ऊँचे-ऊँचे लंगर डाले (फ़ा17) और हमने तुम्हें ख़ूब मीठा पानी पिलाया।(27) (फ़ा18) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(28) (फ़ा19) चलो उसकी तरफ़ (फ़ा20) जिसे झुठलाते थे।(29) चलो उस धुंयें के साए की तरफ़ जिसकी तीन शाखें।(30) (फ़ा21) न साया दे (फ़ा22) न लपट से बचाए।(31) (फ़ा23) बेशक दोज़ख़ चिंगारियां उड़ाती है (फ़ा24) जैसे ऊँचे महल(32) गोया वह ज़र्द रंग के ऊँट हैं।(33) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(34) यह दिन है कि वह न बोल सकेंगे।(35) (फ़ा25) और न उन्हें इजाज़त मिले कि उज़्र करें।(36) (फ़ा26) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(37) यह है फ़ैसले का दिन हमने तुम्हें जमा किया (फ़ा27) और सब अगलों को।(38) (फ़ा28) अब अगर तुम्हारा कोई दाँव हो तो मुझ पर चल लो।(39) (फ़ा29) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(40) (रुकूअ़ 21) बेशक डर वाले (फ़ा30) सायों और चश्मों में हैं।(41) और मेवों में जो उनका जी चाहे।(42) (फ़ा31) खाओ और पियो रचता हुआ (फ़ा32) अपने आमाल का सिला।(43) (फ़ा33) बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।(44) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(44) (फ़ा34) कुछ दिन खालो और बरत लो (फ़ा35) ज़रूर तुम मुजरिम हो।(46) (फ़ा36) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(47) और जब उनसे कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नहीं पढ़ते।(48) उस दिन झुठलाने वालो की ख़राबी।(49) फिर उस (फ़ा37) के बाद कौन सी बात पर ईमान लायेंगे।(50) (फ़ा38) (रुकूअ़ 22)

(फ़ा15) अन्दाज़ा फ़रमाने पर (जुमल) (फ़ा16) कि ज़िन्दे उसकी पुश्त पर जमा रहते हैं और मुर्दे उसके **(बक़िया सफ़हा 947 पर)**

(बक़िया सफ़हा 914 का) तो कवाकिब से शोले और चिंगारियां निकलें जिनसे उन्हें मारा जाए। (फ़ा12) यानी शयातीन के। (फ़ा13) आख़िरत में। (फ़ा14) ख़्वाह वह इन्सानों मेंसे हों या जिन्नों में से। (फ़ा15) मालिक और उनके आवान बतरीक़े तौबीख़।

(बक़िया सफ़हा 917 का) हर ऐब से ज़ाते आली सिफ़ात को पाक रखा इसमें कुफ़्फ़ार के उस मक़ूला का रद् है जो उन्होंने कहा था या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिज़्-ज़िक्रु इन्न-क ल-मजनून° (फ़ा5) तबलीग़े रिसालत व इज़हारे नबुव्वत और ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत देने और कुफ़्फ़ार की इन बेहूदा बातों और इफ़्तेराओं और तअ़नों पर सब्र करने का (फ़ा6) हज़रत उम्मुलमोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से दरियाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ख़ुल्क़ कुरआन है हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व महासिने अफ़आ़ल की तकमील व ततमीम के लिए मबऊस फ़रमाया। (फ़ा7) यानी अहले मक्का भी जब उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा। (फ़ा8) दीन के मुआमला में उनकी रिआ़यत करके (फ़ा9) कि झूठी और बातिल बातों पर क़स्में खाने में दिलेर है मुराद इस से या वलीद बिन मुग़ीरा है या असवद बिन यग़ूस या अख़नस बिन शरीक़ आगे उसकी सिफ़्तों का बयान होता है (फ़ा10) ताकि लोगों के दर्मियान फ़साद डाले (फ़ा11) बख़ील न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इसके माना में यह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से मक़सूद इस्लाम से रोकना है क्योंकि वलीद बिन मुग़ीरा अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इस्लाम में दाख़िल हुआ तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा (फ़ा12) फ़ाजिर बदकार (फ़ा13) बद मिज़ाज बद ज़बान (फ़ा14) यानी बद गौहर तो उससे अफ़आ़ले ख़बीसा का सुदूर का क्या अजब मरवी है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरा ने अपनी मां से जाकर कहा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने मेरे हक़ में दस बातें फ़रमाई हैं नौ को तो मैं जानता हूं कि मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं बात असल में ख़ता होने की उसका हाल मुझे मालूम नहीं या तो मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गर्दन मार दूंगा इस पर उसकी मां ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था मुझे अन्देशा हुआ कि वह मर जाएगा तो उसका माल ग़ैर ले जायेंगे तो मैंने एक चरवाहे को बुला लिया तू उससे है फ़ाइदा वलीद ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में एक झूठा कलिमा कहा था मजनून उसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने उसके दस वाक़ई उयूब ज़ाहिर फ़रमा दिये उससे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत और शाने महबूबियत मालूम होती है। (फ़ा15) यानी कुरआन मजीद। (फ़ा16) और इससे उसकी मुराद यह होती है कि झूठ है और उसका यह कहना उसका नतीजा है कि हमने उसको माल और औलाद दी। (फ़ा17) यानी उसका चेहरा बिगाड़ देंगे और उसकी बद बातिनी की अ़लामत उसके चेहरे पर नुमूदार कर देंगे ताकि उसके लिए सबबे आ़र हो आख़िरत में तो यह सब कुछ होगा ही मगर दुनिया में भी यह ख़बर पूरी होकर रही और उसकी नाक दग़ीली हो गई कहते हैं कि ब्रद में उसकी नाक कट गई। (क़ज़ा क़ी-ल ख़ाज़िन् व मदारिक व जलालैन व एतेअ़रा.जुन् अ़लैहि बि-अन्-न वलीदन् का-न मिनल्-मुस्तहज़िई-नल्-लज़ी-न मा तू क़ब्-ल बदरिन्) (फ़ा18) यानी अहले मक्का को नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से जो आपने फ़रमाई थी कि या रब इन्हें ऐसी क़हत साली में मुब्तला कर जैसी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माना में हुई थी चुनान्चे अहले मक्का क़हत की ऐसी मुसीबत में मुब्तला किये गए कि वह भूख की शिद्दत में मुर्दार हड्डियां तक खा गए और इस तरह आज़माइश में डाले गए। (फ़ा19) उस बाग़ का नाम ज़रदान थ यह बाग़ सनआए यमन से दो फ़रसंग के फ़ासला पर सरे राह था उसका मालिक एक मर्दे सालेह था जो बाग़ के मेवे कसरत से फ़ुक़रा को देता था जब बाग़ में जाता फ़ुक़रा को बुला लेता तमाम गिरे पड़े मेवे फ़ुक़रा ले लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वह भी फ़ुक़रा को दे दिये जाते और जो ख़ालिस अपना हिस्सा होता इससे भी दसवाँ हिस्सा फ़ुक़रा को दे देता इसी तरह खेती काटते वक़्त भी उसने फ़ुक़रा के हुक़ूक़ बहुत ज़्यादा मुक़र्रर किये थे उसके बाद उसके तीन बेटे वारिस हुए उन्होंने बाहम मशवरा किया कि माल क़लील है कुम्बा बहुत है अगर वालिद की तरह हम भी ख़ैरात जारी रखें तो तंगदस्त हो जायेंगे आपस में मिल कर क़स्में खायें कि सुबह तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चलकर मेवे तोड़ लें चुनांचे इरशाद होता है (फ़ा20) ताकि मिस्कीनों को ख़बर न हो (फ़ा21) यह लोग तो क़स्में खा कर सो गए।

(बक़िया सफ़हा 918 का) आओ यह तो दुनिया की मार है। (फ़ा35) अ़ज़ाबे आख़िरत को और उससे बचने के लिए अल्लाह तआ़ला और रसूल की फ़रमांबरदारी करते। (फ़ा36) यानी आख़िरत में। (फ़ा37) **शाने नुज़ूलः** मुशरिकीन ने मुसलमानों से कहा था कि अगर मरने के बाद फिर हम उठाए भी गए तो वहां भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दर्जा बुलन्द होगा जैसे कि दुनिया में हमें आसाइश है इस पर यह आयत नाज़िल हुई जो आगे आती है (फ़ा38) और उन मुख़लिस फ़रमांबरदारों को उन मुआनदीन बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे हमारी निस्बत ऐसा गुमान फ़ासिद (फ़ा39) जहालत से

(बक़िया सफ़हा 919 का) (फ़ा43) कि आख़िरत में उन्हें मुसलमानों से बेहतर या उनके बराबर मिलेगा। (फ़ा44) जो इस दावे में उनकी मुवाफ़क़त करें और ज़िम्मेदार बनें (फ़ा45) हक़ीक़त में वह बातिल पर हैं न उनके पास कोई किताब जिसमें यह मज़कूर हो जो वह कहते हैं न अल्लाह तआ़ला का कोई अहद न कोई उनका ज़ामिन न मुवाफ़िक़। (फ़ा46) जम्हूर के नज़दीक कशफ़े साक़ शिद्दत व सऊबते अमर से इबारत है जो रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिए पेश आएगी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि क़ियामत में वह बड़ा सख़्त वक़्त है सल्फ़ का यही तरीक़ा है कि वह उसके माना में कलाम नहीं करते और यह फ़रमाते हैं कि हम उस पर ईमान लाते हैं और इससे जो मुराद है वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ तफ़वीज़ करते हैं (फ़ा47) यानी कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन बतरीक़े इम्तेहान व तौबीख़। (फ़ा48) उनकी पुश्तें तांबे के तख़्ते की तरह सख़्त हो जायेंगी। (फ़ा49) कि उन पर ज़िल्लत व नदामत छाई हुई होगी। (फ़ा50) और अज़ानों और तक्बीरों में हय्य अलस्सलाह हय्य अलल फ़लाह

के साथ उन्हें नमाज़ व सज्दे की दावत दी जाती थी। (फ़51) बावजूद इसके सजदे न करते थे उसी का नतीजा है जो यहां सज्दे से महरूम रहे। (फ़52) यानी कुरआन मजीद को (फ़53) मैं उसको सज़ा दूंगा (फ़54) अपने अ़ज़ाब की तरफ़ इस तरह कि बावजूद मअ़सीयतों और नाफ़रमानियों के उन्हें सेहत व रिज़्क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम ब-दम अ़ज़ाब क़रीब होता जाएगा। (फ़55) मेरा अ़ज़ाब शदीद है। (फ़56) रिसालत की तबलीग़ पर (फ़57) और तावान का उन पर ऐसा बारे गिराँ है जिसकी वजह से ईमान नहीं लाते (फ़58) ग़ैब से मुराद यहां लौहे महफ़ूज़ है। (फ़59) उससे जो कुछ कहते हैं (फ़60) जो वह उनके हक़ में फ़रमाए और चन्दे उनकी ईज़ाओं पर सब्र करो (क़ी-ल इन्नहू मन्सूख़ुन् बिआ-यतिस्सैफ़ि) (फ़61) क़ौम पर तअ़जील ग़ज़ब में और मछली वाले से मुराद हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम हैं (फ़62) मछली के पेट में ग़म से। (फ़63) और अल्लाह तआ़ला उनके उज़्र व दुआ़ व क़बूल फ़रमा कर उन पर इनाम न फ़रमाता (फ़64) लेकिन अल्लाह तआ़ला ने रहमत फ़रमाई। (फ़65) और बुग़्ज़ व अ़दावत की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं **शाने नुज़ूलः** मन्क़ूल है कि अरब में बाज़ लोग नज़र लगाने में शोहरए आफ़ाक़ थे और यह हालत थी कि दावा कर करके नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्होंने गज़न्द पहुंचाने के इरादे से देखा देखते ही हलाक हो गई ऐसे बहुत वाक़िआ़त उनके तजर्बा में आ चुके थे कुफ़्फ़ार ने उनसे कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नज़र लगायें तो उन लोगों ने हुजूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हमने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उनका किसी चीज़ को देख कर हैरत करना ही सितम होता था लेकिन उनकी यह तमाम जिद्दो जिहद कभी मिस्ल उनके और मकाइद के जो रात दिन वह करते रहते थे बेकार गई और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उनके शर से महफ़ूज़ रखा और यह आयत नाज़िल हुई। हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जिसको नज़र लगे उस पर यह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए। (फ़66) बराहे हसद व इनाद और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में जब आपको कुरआने करीम पढ़ते देखते हैं। (फ़67) यानी कुरआन शरीफ़ या सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़68) जिन्नों के लिए भी और इन्सानों के लिए भी या ज़िक्र बमाना फ़ज़्ल व शरफ़ के है इस तक़दीर पर माना यह हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम जहानों के लिए शरफ़ हैं उनकी तरफ़ जुनून की निस्बत करना कोर बातिनी है। (मदारिक)

सफ़हा 920 का) अ़लैहिस्सलाम। (फ़16) और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को और उनके साथ वालों को जो उन पर ईमान लाये थे नजात दी और बाक़ियों को ग़र्क़ किया। (फ़17) यानी मोमिनीन को नजात देने और काफ़िरों के हलाक फ़रमाने को (फ़18) कि सबबे इबरत व नसीहत हो (फ़19) काम की बातों को ताकि उनसे नफ़ा उठाये।

(बक़िया सफ़हा 921 का) इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इससे उसकी मुराद यह होगी कि दुनिया में जो हुज्जतें मैं किया करता था वह सब बातिल हो गईं अब अल्लाह तआ़ला जहन्नम के ख़ाज़िनों को हुक्म देगा। (फ़33) इस तरह कि उसके हाथ उसकी गर्दन से मिला कर तौक़ में बांध दो। (फ़34) फ़रिश्तों के हाथ से। (फ़35) यानी वह ज़न्जीर उसमें इस तरह दाख़िल कर दो जैसे किसी चीज़ में डोरा पिरोया जाता है। उसकी अ़ज़मत व वहदानियत का मोअ़तक़िद न था।

(बक़िया सफ़हा 923 का) नुज़ूल है (फ़6) वह रोज़े क़ियामत है जिसके शदाइद काफ़िरों की निस्बत तो इतने दराज़ होंगे और मोमिन के लिए एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी सुबुक तर होगा। (फ़7) यानी अ़ज़ाब को। (फ़8) और यह ख़्याल करते हैं कि वाक़ेअ़ होने वाला ही नहीं। (फ़9) कि ज़रूर होने वाला है। (फ़10) और हवा में उड़ते फिरेंगे (फ़11) हर एक को अपनी ही पड़ी होगी (फ़12) कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने हाल में ऐसे मुब्तला होंगे कि न उनसे हाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे। (फ़13) यानी काफ़िर। (फ़14) यह कुछ उसके काम न आएगा और किसी तरह वह अ़ज़ाब से बच न सकेगा। (फ़15) नाम ले लेकर कि ऐ काफ़िर मेरे पास आ ऐ मुनाफ़िक़ मेरे पास आ (फ़16) हक़ के क़बूल करने और ईमान लाने से। (फ़17) माल को और उसके हुक़ूक़े वाजिब अदा न किये।

(बक़िया सफ़हा 924 का) कमज़ोर पर तरजीह देते हैं न किसी साहबे हक़ का तलफ़े हक़ गवारा करते हैं। (फ़30) नमाज़ का ज़िक्र मुकर्रर फ़रमाया गया इसमें यह इज़्हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या यह एक जगह फ़रायज़ मुराद हैं दूसरी जगह नवाफ़िल और हिफ़ाज़त से मुराद यह है कि उस के अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहब्बात को कामिल तौर पर अदा करते हैं। (फ़31) बहिश्त के। (फ़32) **शाने नुज़ूलः** यह आयत कुफ़्फ़ार की इस जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के गिर्द हलक़े बांध कर गरोह के गरोह जमा होते थे और आपका कलामे मुबारक सुनते और उसको झुठलाते और इस्तेहज़ा करते और कहते कि अगर यह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर उन से पहले उसमें दाख़िल होंगे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि उन काफ़िरों का क्या हाल है कि आप के पास बैठते भी हैं और गर्दनें उठा उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आपसे सुनते हैं उससे नफ़ा नहीं उठाते (फ़33) ईमान वालों की तरह

(बक़िया सफ़हा 926 का) और उनकी औरतों को बांझ कर दिया चालीस साल तक उनके माल हलाक हो गए जानवर मर गए जब यह हाल हुआ तो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया। (फ़20) कुफ़्र व शिर्क से और ईमान लाकर मग़फ़िरत तलब करो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम पर अपनी रहमतों के दरवाज़े खोले क्योंक ताआ़त में मश्ग़ूल होना ख़ैरो बरकत और वुसअ़ते रिज़्क़ का सबब होता है। (फ़21) तौबा करने वालों को अगर तुम ईमान लाये और तुमने तौबा की तो वह

(बक़िया सफ़हा 927 का) (27) (फ़ा46) ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को (फ़ा47) और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही।(28) (फ़ा48) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा22) माल व औलाद ब-कसरत अ़ता फ़रमाएगा। (फ़ा23) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है एक शख़्स आपके पास आया और उसने क़िल्लते बारिश की शिकायत की आपने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया दूसरा आया उसने तंगदस्ती की शिकायत की उसे भी यही हुक्म फ़रमाया फिर तीसरा आया उसने क़िल्लते नस्ल की शिकायत की उससे भी यही फ़रमाया फिर चौथा आया उसने अपनी ज़मीन की क़िल्लत पैदावार की शिकायत की उससे भी यही फ़रमाया रबीअ़ बिन सबीह जो हाज़िर थे उन्होंने अर्ज़ किया चन्द लोग आये क़िस्म क़िस्म की हाजतें उन्होंने पेश कीं आपने सब को एक ही जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो तो आपने यह आयत पढ़ी (इन हवाइज के लिए यह कुरआनी अ़मल है) (फ़ा24) इस तरह कि उस पर ईमान लाओ (फ़ा25) कभी नुत्फ़ा कभी अ़ल्क़ा कभी मुज़ग़ा यहां तक कि तुम्हारी ख़िलक़त कामिल की उसकी आफ़रीनश में नज़र करना उसकी ख़ालक़ियत व क़ुदरत और उसकी वहदानियत पर ईमान लाने को वाजिब करता है (फ़ा26) हज़रत इब्ने अ़ब्बास व इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मरवी है कि आफ़ताब व माहताब के चेहरे तो आसमानों की तरफ़ हैं और हर एक की पुश्त ज़मीन की तरफ़ तो आसमानों की लताफ़त के बाइस उनकी रौशनी तमाम आसमानों में पहुंचती है अगरचे चांद आसमाने दुनिया में है (फ़ा27) कि दुनिया को रौशन करता है और उसकी रौशनी चांद के नूर से क़वी तर है और आफ़ताब चौथे आसमान में है। (फ़ा28) तुम्हारे बाप हज़रत आदम को इससे पैदा करके (फ़ा29) मौत के बाद (फ़ा30) इससे रोज़े क़ियामत (फ़ा31) और मैंने जो ईमान व इस्तिग़फ़ार का हुक्म दियाथा उसको उन्होंने न माना (फ़ा32) उनके अवाम ग़ुरबा और छोटे लोग सरकश रुऊसा और असहाबे अमवाल व औलाद के ताबेअ़ हुए। (फ़ा33) और वह ग़ुरूर माल में मस्त होकर कुफ़्र व तुग़ियान में बढ़ता रहा। (फ़ा34) वह रुऊसा। (फ़ा35) कि उन्होंने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की और उन्हें और उनके मुत्तबेईन को ईज़ायें पहुंचायें। (फ़ा36) रुऊसा कुफ़्फ़ार अपने अवाम से (फ़ा37) यानी उनकी इबादत तर्क न करना। (फ़ा38) यह उनके बुतों के नाम है। जिन्हें वह पूजते थे बुत तो उनके बहुत थे मगर यह पांच उनके नज़दीक बड़ी अ़ज़मत वाले थे वद्द तो मर्द की सूरत पर था और सवाअ़ औरत की सूरत पर और यग़ूस शेर की शक्ल और यऊक़ घोड़े की और नसर करगस की यह बुत क़ौमे नूह से मुन्तक़िल होकर अ़रब में पहुंचे और मुशरिकीन के क़बाइल से एक एक ने एक एक को अपने लिए ख़ास कर लिया (फ़ा39) यानी **यह बुत** बहुत से लोगों के लिए गुमराही का सबब हुए या यह माना हैं कि रुऊसा क़ौम ने बुतों की इबादत का हुक्म करके बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया। (फ़ा40) जो बुतों पूजते हैं। (फ़ा41) यह हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ है जब उन्हें वही से मालूम हुआ कि जो लोग ईमान ला चुके क़ौम में उनके सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आपने यह दुआ़ की। (फ़ा42) तूफ़ान में (फ़ा43) बाद ग़र्क़ होने के (फ़ा44) जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता (फ़ा45) और हलाक न फ़रमाएगा (फ़ा46) यह हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को वही से मालूम हो चुका था और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपने और अपने वालदैन और मोमिनीन और मोमिनात के लिए दुआ़ फ़रमाई (फ़ा47) कि वह दोनों मोमिन थे। (फ़ा48) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उनकी क़ौम के तमाम कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया।

(बक़िया सफ़हा 929 का) कि वह कैसी शुक्र गुज़ारी करते हैं। (फ़ा35) क़ुरआन से या तौहीद या इबादत से। (फ़ा36) जिसकी शिद्दत दम बदम बढ़ेगी। (फ़ा37) यानी वह मकान जो नमाज़ के लिए बनाए गए। (फ़ा38) जैसा कि यहूद व नसारा का तरीक़ा था कि वह अपने गिरजाओं और इबादत ख़ानों में शिर्क करते थे (फ़ा39) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बतने नख़ला में वक़्ते फ़ज्र। (फ़ा40) यानी नमाज़ पढ़ने (फ़ा41) क्योंकि उन्हें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ल की इबादत व तिलावत और आपके असहाब की इक़्तेदा निहायत अ़जीब और पसन्दीदा मालूम हुई इससे पहले उन्होंने कभी ऐसा मन्ज़र न देखा था और ऐसा बे मिस्ल कलाम न सुना था।

(बक़िया सफ़हा 933 का) का ईमान न लाने पर। (फ़ा5) जब यह आयत नाज़िल हुई तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाहु अक्बर फ़रमाया। हज़रत ख़दीजा ने भी हुज़ूर की तकबीर सुन कर तकबीर कही और ख़ुश हुईं और उन्हें यक़ीन हुआ कि वही आई। (फ़ा6) हर तरह की नजासत से क्योंकि नमाज़ के लिए तहारत ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और हालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या यह माना हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये ऐसे दराज़ न हों जैसी कि अरबों की आदत है क्योंकि बहुत ज़्यादा दराज़ होने से चलने फिरने में नजिस होने का एहतेमाल रहता है। (फ़ा7) यानी जैसे कि दुनिया में हदिये और न्योते देने का दस्तूर है कि देने वाला यह ख़्याल करता है कि जिसको मैंने दिया है वह उससे ज़्यादा मुझे दे देगा इस क़िस्म के न्योते और हदिये शरअ़न जाइज़ हैं मगर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इससे मना फ़रमाया गया क्यों कि शाने नबुव्वत बहुत अरफ़अ़ व आला है और इस मन्सबे आली के लाइक़ यही है कि जिसको जो दें वह महज़ करम हो उससे लेने या नफ़ा हासिल करने की नीयत न हो (फ़ा8) अवामिर व नवाही और उन ईज़ाओं पर जो दीन की ख़ातिर आपको बरदाश्त करनी पड़ीं। (फ़ा9) मुराद इससे बक़ौल सही नफ़ख़ए सानिया है। (फ़ा10) इसमें इशारा है कि वह दिन बफ़ज़्ले इलाही मोमिनीन पर आसान होगा (फ़ा11) उसकी मां के पेट में बग़ैर माल व औलाद के **शाने नुज़ूलः** यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा मख़ज़ूमी के हक़ में नाज़िल हुई वह अपनी क़ौम में वहीद के लक़ब से मुलक़्क़ब था (फ़ा12) खेतियां और कसीर मवेशी और

तिजारतें मुजाहिद से मन्कूल है कि वह एक लाख दीनार नक्द की हैसियत रखता था और ताइफ़ में उसका ऐसा बड़ा बाग़ था जो साल के किसी वक़्त फलों से ख़ाली न होता था (फ़ा13) जिनकी तादाद दस थी और चूंकि मालदार थे उन्हें कस्बे मआश के लिए सफ़र की हाजत न थी इस लिए सब बाप के सामने रहते उनमें से तीन मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हुए ख़ालिद और हिशाम और वलीद बिन वलीद (फ़ा14) जाह भी दिया और रियासत भी अ़ता फ़रमाई ऐश भी दिया और तूले उम्र भी (फ़ा15) बावजूद नाशुक्री के (फ़ा16) यह न होगा चुनान्चे इस आयत के नुज़ूल के बाद वलीद के माल व औलाद व जाह में कमी शुरू हुई यहां तक कि हलाक हो गया। (फ़ा17) **शाने नुज़ूलः** जब हाम्-मीम् तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम° नाज़िल हुई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिद में तिलावत फ़रमाई वलीद ने सुना और उस क़ौम मजलिस में आकर उसने कहा कि ख़ुदा की क़सम मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से अभी एक कलाम सुना न वह आदमी का न जिन्न का बख़ुदा उसमें अ़जीब शीरीनी और ताज़गी और फ़वाइद व दिल कशी है वह कलाम सब पर ग़ालिब रहेगा कुरैश को उसकी इन बातों से बहुत ग़म हुआ और उन में मशहूर हो गया कि वलीद आबाई दीन से बरगश्ता हो गया अबू जहल ने वलीद को हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उसके पास आकर बहुत ग़मज़दा सूरत बना कर बैठ गया वलीद ने कहा क्या ग़म है अबू जहल ने कह ग़म कैसे न हो तू बूढ़ा हो गया है क़ुरैश तेरे ख़र्च के लिए रुपया जमा करेंगे उन्हें ख़्याल है कि तूने मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के कलाम की तारीफ़ इस लिए की है कि तुझे उकने दस्तरख़्वान का बचा खाना मिल जाये इस पर उसे बहुत तैश आया और कहने लगा क्या क़ुरैश को मेरे माल व दौलत का हाल मालूम नहीं है और क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और उनके असहाब ने कभी सैर होकर खाना भी खाया है उनके दस्तरख़्वान पर क्या बचेगा फिर अबू जहल के साथ उठा और क़ौम में आकर कहने लगा तुम्हें ख़्याल है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मजनून हैं क्या तुमने उनमें कभी दीवानगी की कोई बात देखी सब ने कहा हरगिज़ नहीं कहने लगा तुम उनहें काहिन समझते हो क्या तुमने उन्हें कभी कहानत करते देखा सबने कहा नहीं कहा तुम उनहें शायर गुमान करते हो क्या तुमने कभी उन्हें शेअ़र कहते पाया सब ने कहा नहीं, कहने लगा तुम उन्हें कज़्ज़ाब कहते हो क्या तुम्हारे तजर्बा में कभी उन्होंने झूठ बोला सबने कहा नहीं और क़ुरैश में आपका सिद्क़ व दियानत ऐसा मशहूर था कि क़ुरैश आपको अमीन कहा करते थे यह सुनकर क़ुरैश ने कहा फिर बात क्या है तो वलीद सोच कर बोला कि बात ग्रह है कि वह जादूगर हैं तुमने देखा होगा कि उनकी बदौलत रिश्तेदार रिशतेदार से बाप बेटे से जुदा हो जाते हैं बस यही जादूगर का काम है और जो कुरआन वह पढ़ते हैं वह दिल में असर कर जाता है इस का बाइस यह है कि वह जादू है इस आयते करीमा में इसका ज़िक्र फ़रमाया गया

(बक़िया सफ़हा 936 का) जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उनका जमा करना काफ़िर हमारी क़ुदरत से बाहर समझता है यह ख़्याले फ़ासिद उसके दिल में क्यों आया और उसने क्यों नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वह मरने के बाद दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। (फ़ा4) यानी उसकी अंगुलियां जैसी थीं बग़ैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दीं और उनकी हड्डियां उनके मौक़ा पर पहुंचा दीं जब छोटी छोटी हड्डियां इस तरह तरतीब दे दी जायें तो बड़ी का क्या कहना। (फ़ा5) इन्सान का इन्कारे बअ़्स इश्तेबाह और अ़दमे दलील के बाइस नहीं है बल्कि हाल यह है कि वह बहाले सवाल भी अपने फ़ुजूर पर क़ाइम रहना चाहता है कि बतरीक़े इस्तेहज़ा पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा (जुमल) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इस आयत के माना में फ़रमाया कि आदमी बअ़्स व हिसाब को झुठलाता है जो उसके सामने है सईद बिन जुबैर ने कहा आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबा को मुअख़्ख़र यही कहता रहता है अब तौबा करूंगा अब अ़मल करूंगा यहां तक कि मौत आ जाती है और वह अपनी बदियों में मुब्तला होता है। (फ़ा6) और हैरत दामनगीर होगी। (फ़ा7) तारीक हो जाएगा और रौशनी ज़ाइल हो जाएगी (फ़ा8) यह मिला देना या तुलूअ़ में होगा दोनों मग़रिब से तुलूअ़ करेंगे या बे नूर होने में (फ़ा9) जो इस हाल व दहशत से रिहाई मिले (फ़ा10) तमाम ख़ल्क़ उसके हुज़ूर हाज़िर होगी हिसाब किया जाएगा जज़ा दी जाएगी जिसे चाहेगा अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेगा जिसे चाहेगा अपने अ़द्ल से जहन्नम में डालेगा (फ़ा11) जो उसने किया है (फ़ा12) **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिबरील अमीन के वही पहुंचा कर फ़ारिग़ होने से क़बल याद फ़रमाने की सई फ़रमाते थे और जल्द जल्द पढ़ते और ज़बाने अक़्दस को हरकत देते अल्लाह तआ़ला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मशक़्क़त गवारा न फ़रमाई और क़ुरआने करीम का सीनए पाक में महफ़ूज़ करना और ज़बाने अक़्दस पर जारी फ़रमाना अपने ज़िम्मए करम पर लिया और यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमा कर हुज़ूर को मुतमइन फ़रमा दिया (फ़ा13) आपके सीनए पाक में (फ़ा14) आपका (फ़ा15) यानी आपके पास वही आ चुके। (फ़ा16) इस आयत के नाज़िल होने के बाद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वही को बइत्मीनान सुनते और जब वही तमाम हो जाती तब पढ़ते थे। (फ़ा17) यानी तुम्हें दुनिया की चाहत है।

(बक़िया सफ़हा 937 का)ऐसा ही हुआ और जंगे बद्र में अबू जहल ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ बुरी तरह मारा गया नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत में एक फ़िरऔ़न होता है मेरी उम्मत का फ़िरऔ़न अबू जहल है इस आयत में उसकी ख़राबी का ज़िक्र चार मर्तबा फ़रमाया गया पहली ख़राबी बे ईमानी की हालत में ज़िल्लत की मौत दूसरी ख़राबी क़ब्र की सख़्तियां और वहां की शिद्दतें तीसरी ख़राबी मरने के बाद उठने के वक़्त गिरिफ़्तारे मसाइब होना चौथी ख़राबी अ़ज़ाबे जहन्नम। (फ़ा35) कि न उस पर अमर व नही वग़ैरह के अहकाम न हों वह मरने के बाद उठाया जाये न उससे आमाल का हिसाब लिया जाए न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाये ऐसा नहीं। (फ़ा36) रहम में तो जो ऐसे गन्दे पानी से पैदा किया गया उसका

तकब्बुर करना इतराना और पैदा करने वाले की नाफ़रमानी करना निहायत बेजा है। (फ़ा37) इन्सान बनाया। (फ़ा38) इसके आज़ा को कामिल किया उसमें रूह डाली। (फ़ा39) यानी मनी से या इन्सान से। (फ़ा40) दो सिफ़तें पैदा कीं।

(बक़िया सफ़हा 938 का) मन्नत यह है कि जो चीज़ आदमी पर वाजिब नहीं है वह किसी शर्त से अपने ऊपर वाजिब करे मसलन यह कहे कि अगर मेरा मरीज़ अच्छा हो या मेरा मुसाफ़िर बख़ैर वापस आयते तो मैं राहे ख़ुदा में इस क़दर सदक़ा दूंगा या इतनी रकअ़तें नमाज़ पढूंगा इस नज़र की वफ़ा वाजिब होती है माना यह हैं कि वह लोग ताअ़त व इबादत और शरअ़ के वाजिबात के आ़मिल हैं हत्ता कि जो ताआ़त ग़ैर वाजिबा अपने ऊपर नज़र से वाजिब कर लेते हैं उसको भी अदा करते हैं (फ़ा16) यानी शिद्दत और सख़्ती। (फ़ा17) क़तादा ने कहा कि उस दिन की शिद्दत इस क़दर फैली हुई है कि आसमान फट जायेंगे सितारे गिर पड़ेंगे चांद सूरज बे नूर हो जायेंगे पहाड़ रेज़ रेज़ा हो जायेंगे कोई इमारत बाक़ी न रहेगी इसके बाद यह बताया जाता है कि उनके आमाल रिया व नुमाइश से ख़ाली हैं। (फ़ा18) यानी ऐसी हालत में जबकि ख़ुद उन्हें खाने की हाजत व ख़्वाहिश हो और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसके यह माना लिये हैं कि अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में खिलाते हैं **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उनकी कनीज़ फ़िज़्ज़ा के हक़ में नाज़िल हुई हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बीमार हुए उन हज़रात ने उनकी सेहत पर तीन रोज़ों की नज़र मानी अल्लाह तआ़ला ने सेहत दी नज़र की वफ़ा का वक़्त आया सब साहिबों ने रोज़े रखे हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक यहूदी से तीन साअ़ (साअ़ एक पैमाना है) जौ लाए हज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन एक रोज़ यतीम एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ यह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार करके अगला रोज़ा रख लिया गया। (फ़ा19) लिहाज़ा हम अपने अ़मल की जज़ा या शुक्र गुज़ारी तुम से नहीं चाहते यह अ़मल इस लिए है कि हम उस दिन अमन में ख़ौफ़ से रहें

(बक़िया सफ़हा 941 का) करते हैं इस तरह कि दिलों में और ज़बानों पर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र ही होता है और एक वजह यह ज़िक्र की है कि पहली तीन सिफ़तों से हवायें मुराद हैं और बाक़ी दो से फ़रिश्ते इस तक़दीर पर माना यह हैं कि क़सम उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं फिर ज़ोर से झोंके देती हैं उनसे मुराद अ़ज़ाब की हवायें हैं (ख़ाज़िन व जुमल वग़ैरह) (फ़ा3) यानी वह रहमत की हवायें जो बादलों को उठाती हैं उसके बाद जो सिफ़तें मज़कूर हैं वह क़ौले अख़ीर पर जमाअ़ात मलाइका की हैं इब्ने कसीर ने कहा कि फ़ारक़ात व मलक़ियात से जमाअ़ाते मलाइका मुराद होने पर इज्माअ़ है (फ़ा4) अम्बिया व मुरसलीन के पास वही लाकर (फ़ा5) यानी बअ़्स व अ़ज़ाब और क़ियामत के आने का (फ़ा6) कि उसके होने में कुछ भी शक नहीं। (फ़ा7) कि वह उम्मतों पर गवाही देने के लिए जमा किये जायें। (फ़ा8) और उसके हौल व शिद्दत का क्या आ़लम है। (फ़ा9) जो दुनिया में तौहीद व नबुव्वत और रोज़े आख़िरत और बअ़्स व हिसाब के मुन्किर थे (फ़ा10) दुनिया में अ़ज़ाब नाज़िल करके जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया। (फ़ा11) यानी जो पहली उम्मतों के मुकज़्ज़बीन की राह इख़्तियार करके सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करते हैं उन्हें भी पहलों की तरह हलाक फ़रमायेंगे (फ़ा12) यानी नुत्फ़ा से (फ़ा13) यानी रेहम में (फ़ा14) वक़्ते विलादत तक जिसको अल्लाह तआ़ला जानता है।

(बक़िया सफ़हा 942 का) बतन में। (फ़ा17) बुलन्द पहाड़ों के (फ़ा18) ज़मीन में चश्मे और मम्बअ़ पैदा करके यह तमाम बातें मुर्दो को ज़िन्दा करने से ज़्यादा अ़जीब हैं। (फ़ा19) और रोज़े क़ियामत काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिस आग का तुम इन्कार करते थे उसकी तरफ़ जाओ। (फ़ा20) यानी उस अ़ज़ाब की तरफ़। (फ़ा21) इससे जहन्नम का धुआं मुराद है जो ऊँचा होकर तीन शाख़ें हो जाएगा एक कुफ़्फ़ार के सरों पर एक उनके दायें और उनके बायें और हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उनहें इसी धुयें में रहने का हुक्म होगा जबकि अल्लाह तआ़ला के प्यारे बन्दे उसके अर्श के साया में होंगे उसके बाद जहन्नम के धुयें की शान बयान फ़रमाई जाती है कि वह ऐसा है कि (फ़ा22) जिससे उस दिन की गर्मी से कुछ अमन पा सकें। (फ़ा23) आतिशे जहन्नम की। (फ़ा24) इतनी इतनी बड़ी। (फ़ा25) न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़ा होंगे बाज़ में कलाम करें बाज़ में कुछ बोल न सकेंगे (फ़ा26) और दर हक़ीक़त उनके पास कोई उज़्र ही न होगा क्योंकि दुनिया में हुज्जतें तमाम कर दी गईं और आख़िरत के लिए कोई जाये उज़्र बाक़ी नहीं रखी गई अलबत्ता उन्हें यह ख़्याले फ़ासिद आएगा कि कुछ हीले बहाने बनायें यह हीले पेश करने की इजाज़त न होगी जुनैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि उसको उज़्र ही क्या है जिसने निअ़मत देने वाले से रूगरदानी की उसकी निअ़मतों को झुठलाया उसके एहसानों की ना-सपासी की। (फ़ा27) ऐ सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करने वालो (फ़ा28) जो तुम से पहले अम्बिया की तकज़ीब करते थे तुम्हारा उनका सब का हिसाब किया जाएगा और तुम्हें उन्हीं सब को अ़ज़ाब किया जाएगा। (फ़ा29) और किसी तरह अपने आपको अ़ज़ाब से बचा सको तो बचा लो यह इन्तेहा दर्जा की तौबीख़ है क्योंकि यह तो यक़ीनी जानते होंगे कि न आज कोई मक्र चल सकता है न कोई हीला काम दे सकता है। (फ़ा30) जो अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ रखते थे जन्नती दरख़्तों के। (फ़ा31) उससे लज़्ज़त उठाते हैं इस आयत से साबित हुआ कि अहले जन्नत को उनके हस्बे मर्ज़ी निअ़मतें मिलेंगी बख़िलाफ़ दुनिया के कि यहां आदमी को जो मुयस्सर आता है उसी पर राज़ी होना पड़ता है और अहले जन्नत से कहा जाएगा (फ़ा32) लज़ीज़ ख़ालिस जिसमें ज़रा तनग़ुस का शायबा नहीं। (फ़ा33) उन ताआ़त का जो तुम दुनिया में बजा लाये थे। (फ़ा34) इसके बाद तहदीद केतौर पर कुफ़्फ़ार को ख़िताब किया जाता है कि ऐ दुनिया में तकज़ीब करने वालो तुम दुनिया में। (फ़ा35) अपनी मौत के वक़्त तक। (फ़ा36) काफ़िर हो दायमी हो अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो। (फ़ा37) क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा38) यानी क़ुरआन शरीफ़ क़ुतुबे इलाहिया में सब से आख़िर किताब है और बहुत ज़ाहिर मोअ़्जेज़ा है इस पर ईमान न लाये तो फिर ईमान लाने की कोई सूरत नहीं।

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ؕ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ○ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۙ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ
وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۪ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۪ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۙ
لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۙ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ؕ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۙ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ
سَرَابًا ؕ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۙ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۙ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَاۤ اَحْقَابًا ۚ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۙ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۙ جَزَآءً وِّفَاقًا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

सूरतुन्नबइ

(मक्की है इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अ़म्–म य–तसा–अलून(1)अ़निन् न–बइल् अ़ज़ीम(2)अ़ल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून(3)कल्ला स–यअ़्लमू–न(4)सुम्–म कल्ला स–यअ़्–लमून(5)अलम् नज्अ़लिल् अर्–ज़ मिहादंव्(6) वल्जिबा–ल औतादंव्(7)व ख़–लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्(8)व ज–अ़ल्ना नौ–मकुम् सुबातंव्(9)व ज–अ़ल्नल् लै–ल लिबासंव्(10) व ज–अ़ल्नन् नहा–र मआ़शंव्(11)व बनैना फ़ौ–क़कुम् सब्–अ़न् शिदादंव्(12)व ज–अ़ल्ना सिराजंव् वह्हाजंव्(13)व अन्ज़ल्ना मिनल् मुअ़्सिराति माअन् सज्जाजल्(14)लिनुख़्रि–ज बिही ह़ब्बंव् व नबातंव्(15) व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा(16)इन्–न यौमल्फ़स्लि का–न मीक़ातंय्(17) यौ–म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़–तअ्तू–न अफ़्वाजंव्(18)व फ़ुति–ह़तिस् समाउ फ़कानत् अब्वाबंव्(19) व सुय्यि–रतिल् जिबालु फ़कानत् सराबा(20) इन्–न जहन्न–म कानत् मिर्साादल्(21) लित्ताग़ी–न मआबल्(22)लाबिसी–न फ़ीहा अह़्क़ाबा(23)ला यज़ूक़ू–न फ़ीहा बर्दंव् व ला शराबन्(24)इल्ला ह़मीमंव् व ग़स्साक़न्(25)जज़ाअंव् विफ़ाक़ा(26)इन्नहुम् कानू ला यर्जू–न

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

यह (फ़ा2) आपस में काहे की पूछ गछ कर रहे हैं।(1) (फ़ा3) बड़ी ख़बर की।(2) (फ़ा4) जिस में वह कई राह हैं।(3) (फ़ा5) हां हां अब जान जायेंगे।(4) फिर हां हां जान जायेंगे।(5) (फ़ा6) क्या हमने ज़मीन को बिछौना न किया।(6) (फ़ा7) और पहाड़ों को मेख़ें।(7) (फ़ा8) और तुम्हें जोड़े बनाया।(8) (फ़ा9) और तुम्हारी नींद को आराम किया।(9) (फ़ा10) और रात को पर्दा पोश किया।(10) (फ़ा11) और दिन को रोज़गार के लिए बनाया।(11) (फ़ा12) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत चुनाईयां चुनीं।(12) (फ़ा13) और उनमें एक निहायत चमकता चराग़ रखा।(13) (फ़ा14) और फिर बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा।(14) कि उससे पैदा फ़रमायें अनाज और सब्ज़ा।(15) और घने बाग़।(16) (फ़ा15) बेशक फ़ैसला के दिन का (फ़ा16) ठहरा हुआ है।(17) जिस दिन सूर फूंका जाएगा (फ़ा17) तो तुम चले आओगे (फ़ा18) फ़ौजों की फ़ौजें।(18) और आसमान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएगा।(19) (फ़ा19) और पहाड़ चलाए जायेंगे कि हो जायेंगे जैसे चमकता रेता दूर से पानी का धोखा देता।(20) बेशक जहन्नम ताक में है।(21) सरकशों का ठिकाना।(22) उस में क़रनों (मुद्दतों) रहेंगे।(23) (फ़ा20) उसमें किसी तरह की ठंडक का मज़ा न पायेंगे और न कुछ पीने को।(24) मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप।(25) जैसे को तैसा बदला।(26) (फ़ा21) बेशक उन्हें हिसाब का

(फ़ा1) सूरए नबा इसको सूरए तसाउल और सूरह अ़म्-म य-तसा-अलू-न भी कहते हैं यह सूरत मक्की है इसमें दो रुकूअ़ चालीस या इकतालीस आयतें एक सौ तिहत्तर कलिमे नौ सौ सत्तर हरफ़ हैं। (फ़ा2) कुफ़्फ़ारे कुरैश (फ़ा3) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अहले मक्का को तौहीद की दावत दी और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी और कुरआने करीम की तिलावत फ़रमा कर उन्हें सुनाया तो उनमें बाहम गुफ़्तगूयें शुरू हुईं और एक दूसरे से पूछने लगे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या दीन लाये हैं इस आयत में उनकी गुफ़्तगूओं का बयान है और तफ़ख़ीमे शान के लिए **(बक़िया सफ़्हा 979 पर)**

حِسَابًا ۝ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۝ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ۝ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ۝ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ۝ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ۝ وَّكَاْسًا

دِهَاقًا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ۝ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۝ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُوْنَ

اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝

हिसाबंव्(27)व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा(28)व कुल्–ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन्(29)
फ़ज़ूकू फ़–लन् नज़ी–दकुम् इल्ला अ़ज़ाबा(30)इन्–न लिल्–मुत्तक़ी–न मफ़ाज़न्(31)ह़दाइ– क़
व अअ्नाबंव्(32)व कवाअ़ि–ब अत्राबंव्(33)व कअ्सन् दिहाक़ा(34)ला यस्मअू–न फ़ीहा लग्वंव्
व ला किज़्ज़ाबा(35)जज़ाअम् मिर्रब्बि–क अ़ताअन् हिसाबर्(36)रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा
बै–नहुमर्रह़्मानि ला यम्लिकू–न मिन्हु ख़िताबा(37)यौ–म यक़ूमुर्रूहु वल्मलाइ–कतु सफ़्फ़ल् ला
य–त–कल्लमू–न इल्ला मन् अज़ि–न लहुर्रह़्मानु व क़ा–ल सवाबा(38)ज़ालिकल् यौमुल्हक़्क़ु फ़–
मन् शाअत् त–ख़–ज़ इला रब्बिही मआबा(39)इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अ़ज़ाबन् क़रीबंय् यौ–म यन्ज़ुरुल्
मरउ मा क़द्–द–मत् यदाहु व यक़ूलुल् काफ़िरु यालै–तनी कुन्तु तुराबा(40)

ख़ौफ़ न था।(27)(फ़ा22)और हमारी आयतें हद भर झुठलाईं।(28) और हमने (फ़ा23) हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है।(29)(फ़ा24)अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ायेंगे मगर अ़ज़ाब।(30) (रुकूअ़ 1) बेशक डर वालों को कामयाबी की जगह है।(31) (फ़ा25) बाग़ हैं (फ़ा26) और अंगूर।(32) और उठते जोबन वालियां एक उम्र की।(33) और छलकता जाम।(34) (फ़ा27) जिसमें न कोई बेहूदा बात सुनें न झुठलाना।(35) (फ़ा28)सिला तुम्हारे रब की तरफ़ से (फ़ा29) निहायत काफ़ी अ़ता।(36)वह जो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है रहमान कि उससे बात करने का इख़्तियार न रखेंगे।(37) (फ़ा30) जिस दिन जिब्रईल खड़ा होगा और सब फ़रिश्ते परा बांधे (सफ़ बनाए) कोई न बोल सकेगा (फ़ा31)मगर जिसे रहमान ने इज़्न दिया (फ़ा32) और उसने ठीक बात कही। (38) (फ़ा33)वह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह बना ले।(39) (फ़ा34) हम तुम्हें (फ़ा35) एक अ़ज़ाब से डराते हैं कि नज़दीक आ गया (फ़ा36) जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा(फ़ा37)और काफ़िर कहेगा हाय मैं किसी तरह ख़ाक हो जाता।(40) (फ़ा38) (रुकूअ़ 2)

(फ़ा22) क्योंकि वह मरने के बाद उठने के मुन्किर थे (फ़ा23) लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा24) उनके तमाम नेक व बद आमाल हमारे इल्म में हैं हम उन पर जज़ा देंगे और आख़िरत में वक़्ते अ़ज़ाब उनसे कहा जाएगा। (फ़ा25) जन्नत में जहां उन्हें अ़ज़ाब से नजात होगी और हर मुराद हासिल होगी। (फ़ा26) जिनमें क़िस्म क़िस्म के नफ़ीस फलों वाले दरख़्त (फ़ा27) शराबे नफ़ीस का। (फ़ा28) यानी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी न वहां कोई किसी को झुठलाएगा। (फ़ा29) तुम्हारे आमाल का। (फ़ा30) ब-सबब उसके ख़ौफ़ के। (फ़ा31) उसके रोब व जलाल से। (फ़ा32) कलाम या शफ़ाअ़त का (फ़ा33) दुनिया में और उसी के मुताबिक़ अ़मल किया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलिमए तय्येबा ला इला-ह इल्लल्लाह मुराद है। (फ़ा34) अ़मले सालेह करके ताकि अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहे। (फ़ा35) ऐ काफ़िरो (फ़ा36) मुराद इससे अ़ज़ाबे आख़रत है। (फ़ा37) यानी हर नेकी बदी उसके नामए आमाल में दर्ज होगी जिसको वह रोज़े क़ियामत देखेगा। (फ़ा38) ताकि अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहता हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत जब जानवरों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिया जाएगा अगर सींग वाले ने बे सींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिया जाएगा इसके बाद वह सब ख़ाक कर दिये जायेंगे यह देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश मैं भी ख़ाक कर दिया जाता बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उसके यह माना बयान किये हैं कि मोमिनीन पर अल्लाह तआ़ला के इनाम देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश वह दुनिया में ख़ाक होता यानी मुतवाज़ेअ़ होता मुतकब्बिर व सरकश न होता एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि काफ़िर से मुराद इबलीस है जिसने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर तअ़्ना किया था वह मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आग से पैदा किये जाने पर इफ़्तेख़ार किया था जब वह हज़रत आदम और उनकी ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आपको शिद्दते अ़ज़ाब में मुब्तला पाएगा तो कहेगा काश मैं मिट्टी होता यानी हज़रत आदम की तरह मिट्टी से पैदा किया हुआ होता।

(बक़िया सफ़हा 956 का) के क़रीब पहुंचते हैं दरवाज़ा बन्द हो जाता है बार बार ऐसा ही होता है काफ़िरों की यह हालत देख कर मुसलमान उनसे हंसी करते हैं और मुसलमानों का हाल यह है कि वह जन्नत में जवाहरात के (फ़ा39) कुफ़्फ़ार की ज़िल्लत व रुसवाई और शिद्दते अ़ज़ाब को और उस पर हंसते हैं (फ़ा40) यानी उन आमाल का जो उन्होंने दुनिया में किये थे

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝١ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٢ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝٣ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝٤ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٥ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٦ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝٧ قُلُوْبٌ
يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٨ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝٩ يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۝١٠ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٢ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣
فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝١٤ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝١٥ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٦ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝١٧ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۝١٨
وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝١٩ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝٢٠ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝٢١ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۝٢٢ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝٢٣ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۝٢٤ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ

सूरतुन् नाज़िआति

(मक्की है इसमें 46 आयतें और 2 रुकूअ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नाज़िआति ग़रक़ंव्(1)वन्नाशिताति नश्तंव्(2)वस्साबिहाति सब्हन्(3)फ़स्साबिक़ाति सब्क़न्(4)फ़ल्मु–दब्बिराति अम्रा(5)यौ–म तर्जुफ़ुर्राजि–फ़तु(6)तत्बअुहर् रादिफ़:(7)क़ुलूबुंय् यौ–मइज़िंव् वाजि–फ़तुन् (8)अब्सारुहा ख़ाशिअ:(9)यक़ूलू–न अ–इन्ना ल–मर्दूदू–न फ़िल् हाफ़िर:(10) अ–इज़ा कुन्ना अ़िज़ामन् नख़िर:(11)क़ालू तिल्–क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिर:(12)फ़–इन्नमा हि–य ज़ज्–रतुंव् वाहि–दतुन्(13) फ़इज़ा हुम् बिस्साहिर:(14)हल् अता–क हदीसु मूसा(15)इज् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल् मुक़द्दसि तुवा (16)इज़्हब् इला फ़िर्औ–न इन्नहू तग़ा(17)फ़क़ुल् हल् ल–क इला अन् त–ज़क्का(18)व अह्दि–य–क इला रब्बि–क फ़–तख़्शा(19)फ़–अराहुल् आ–य–तल् कुब्रा(20)फ़–कज़्ज़–ब व अ़सा(21)सुम्–म अद्ब–र यस्आ(22)फ़–ह–श–र फ़नादा(23) फ़क़ा–ल अना रब्बुकुमुल् अअ्ला(24)फ़–अ–ख़–ज़हुल्लाहु नकालल् आख़ि–रति

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम उनकी (फ़ा2) कि सख़्ती से जान खींचें।(1) (फ़ा3) और नर्मी से बन्द खोलें।(2) (फ़ा4) और आसानी से पैरें।(3) (फ़ा5) फिर आगे बढ़ कर जल्द पहुंचें।(4) (फ़ा6) फिर काम की तदबीर करें(5) (फ़ा7) कि काफ़िरों पर ज़रूर अ़ज़ाब होगा।(6) जिस दिन थरथराएगी थरथराने वाली। (फ़ा8) उसके पीछे आएगी पीछे आने वाली।(7) (फ़ा9) कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे।(8) आँख ऊपर न उठा सकेंगे।(9) (फ़ा10) काफ़िर (फ़ा11) कहते हैं क्या हम फिर उलटे पाँव पलटेंगे।(10) (फ़ा12) क्या जब हम गली हड्डियां हो जायेंगे।(11) (फ़ा13) बोले यूं तो यह पलटना तो निरा नुक़सान है।(12) (फ़ा14) तो वह (फ़ा15) नहीं मगर एक झिड़की।(13)(फ़ा16)जभी वह खुले मैदान में आ पड़े होंगे।(14)(फ़ा17) क्या तुम्हें मूसा की ख़बर आई।(15)(फ़ा18) जब उसे उसके रब ने पाक जंगल तोवा में (फ़ा19) निदा फ़रमाई।(16) कि फ़िरऔन के पास जा उसने सर उठाया।(17) (फ़ा20) उससे कह क्या तुझे रग़बत इस तरफ़ है कि सुथरा हो।(18) (फ़ा21) और तुझे तेरे रब की तरफ़ (फ़ा22) राह बताऊँ कि तू डरे।(19) (फ़ा23) फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी दिखाई।(20) (फ़ा24) इस पर उसने झुठलाया(21) (फ़ा25) और नाफ़रमानी की। फिर पीठ दी (फ़ा26) अपनी कोशिश में लगा।(22) (फ़ा27) तो लोगों को जमा किया(23) (फ़ा28) फिर पुकारा। फिर बोला मैं तुम्हारा सब से ऊँचा रब हूं।(24) (फ़ा29) तो अल्लाह ने उसे दुनिया व आख़रत दोनों के

(फ़ा1) सूरह वन्नाज़िआ़त मक्की है इसमें दो रुकूअ़ छियालीस आयतें 197 कलिमे 753 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी उन फ़रिश्तों की (फ़ा3) काफ़िरों की (फ़ा4) यानी मोमिनीन की जाने नर्मी के साथ क़ब्ज़ करें। (फ़ा5) जिस्म के अन्दर या आसमान व ज़मीन के दर्मियान मोमिनीन की रूहें लेकर (कमा रुवी–य अ़न अली रज़ियल्लाहु अन्हु) (फ़ा6) अपनी ख़िदमत पर जिसके मामूर हैं (रूहुल बयान) (फ़ा7) यानी उमूरे दुनियवीया के इन्तेज़ाम जो उनसे मुतअ़ल्लिक़ हैं उनके सर अन्जाम करें यह क़सम उस पर है। (फ़ा8) ज़मीन और पहाड़ और हर चीज़ नफ़ख़ए ऊला से इज़्तेराब में आ जाएगी और तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी। (फ़ा9) यानी नफ़ख़ए सानिया होगा जिससे हर शय बइज़्ने इलाही ज़िन्दा कर दी जाएगी इन दोनों नफ़ख़ों (बक़िया सफ़हा 974 पर)

وَالْأُولَىٰ ۝٢٥ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ۝٢٦ ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ۝٢٧ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ۝٢٨ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝٢٩ وَالْأَرْضَ بَعْدَ
ذَٰلِكَ دَحَاهَا ۝٣٠ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۝٣١ وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۝٣٢ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝٣٣ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ۝٣٤ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ۝٣٥ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ
لِمَن يَرَىٰ ۝٣٦ فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ۝٣٧ وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝٣٨ فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝٣٩ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۝٤٠ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝٤١ يَسْأَلُونَكَ
عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۝٤٢ فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ۝٤٣ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ۝٤٤ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا ۝٤٥ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۝٤٦

वल्ऊला(25)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लअ़िब्–रतल् लिमंय्यख़्शा(26)अ–अन्तुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अमिस्समाउ बनाहा(27)र–फ़–अ़ सम्कहा फ़–सव्वाहा(28)व अग़्त़–श लै–लहा व अख़्र–ज ज़ुहाहा(29)वल्अर्–ज़ बअ़्–द ज़ालि–क दहाहा(30)अख़्र–ज मिन्हा मा–अहा व मरआहा(31) वल्जिबा–ल अर्साहा(32)मताअ़ल् लकुम् व लि–अन्आ़मिकुम्(33)फ़इज़ा जा–अतित् त़ाम्मतुल् कुब्रा(34)यौ–म य–त–ज़क्करुल् इन्सानु मा सआ़(35)व बुर्रि–ज़तिल्जहीमु लिमंय्यरा(36) फ़–अम्मा मन् त़ग़ा(37)व आ–स़रल् ह़यातद्दुन्या(38)फ़–इन्नल् जही–म हियल् मअ्वा(39)व अम्मा मन् ख़ा–फ़ मक़ा–म रब्बिही व न–हन्नफ़्–स अ़निल् हवा(40)फ़इन्नल् जन्न–त हियल् मअ्वा(41) यस्अलू–न–क अ़निस्सा–अ़ति अय्या–न मुर्साहा(42)फ़ी–म अन्–त मिन् ज़िक्राहा(43) इला रब्बि–क मुन्तहाहा(44)इन्नमा अन्–त मुन्ज़िरु मंय्यख़्शाहा(45) क–अन्नहुम् यौ–म यरौ–नहा लम् यल्बसू इल्ला अ़शिय्य–तन् औ ज़ुहाहा(46)

अ़ज़ाब में पकड़ा।(25) (फ़ा30)बेशक इसमें सीख मिलता है उसे जो डरे।(26) (फ़ा31) (रुकूअ़ 3) क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक़ तुम्हारा बनाना (फ़ा32) मुश्किल या आसमान का अल्लाह ने उसे बनाया।(27) उसकी छत ऊँची की (फ़ा33) फिर उसे ठीक किया।(28) (फ़ा34) और उसकी रात अंधेरी की और उसकी रौशनी चमकाई।(29) (फ़ा35) और उसके बाद ज़मीन फैलाई।(30) (फ़ा36) उसमें से (फ़ा37) उसका पानी और चारा निकाला।(31) (फ़ा38) और पहाड़ों को जमाया।(32) (फ़ा39) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाइदा को।(33) फिर जब आएगी वह आ़म मुसीबत सबसे बड़ी।(34) (फ़ा40) उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी।(35) (फ़ा41) और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी।(36) (फ़ा42) तो वह जिसने सरकशी की।(37) (फ़ा43) और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी।(38) (फ़ा44) तो बेशक जहन्नम ही उसका ठिकाना है।(39) और वह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा (फ़ा45) और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका।(40) (फ़ा46) तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।(41) (फ़ा47) तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वह कब के लिए ठहरी हुई है।(42) तुम्हें उसके बयान से क्या तअ़ल्लुक़।(43) (फ़ा48) तुम्हारे रब ही तक उसकी इन्तिहा है।(44) तुम तो फ़क़त उसे डराने वाले हो जो उससे डरे।(45) गोया जिस दिन वह उसे देखेंगे (फ़ा49) दुनिया में न रहे थे मगर एक शाम या उसके दिन चढ़े।(46) (रुकूअ़ 4)

(फ़ा30) दुनिया में ग़र्क़ किया और आख़िरत में दोज़ख़ दाख़िल फ़रमाएगा। (फ़ा31) अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से उसके बाद मुन्किरीने बअ़्स को अ़ताब फ़रमाया जाता है (फ़ा32) तुम्हारे मरने के बाद। (फ़ा33) बग़ैर सुतून के। (फ़ा34) ऐसा कि उसमें कहीं कोई ख़लल नहीं। (फ़ा35) नूरे आफ़ताब को ज़ाहिर फ़रमा कर। (फ़ा36) जो पैदा तो आसमान से पहले फ़रमाई गई थी मगर फैलाई न गई थी। (फ़ा37) चश्मे जारी फ़रमा कर। (फ़ा38) जिसे जानदार खाते हैं। (फ़ा39) रूए ज़मीन पर ताकि उसको सुकून हो (फ़ा40) यानी नफ़्ख़ए सानिया होगा जिसमें मुर्दे उठाए जायेंगे। (फ़ा41) दुनिया में नेक या बद (फ़ा42) और तमाम ख़ल्क़ उसको देखे (फ़ा43) हद से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया (फ़ा44) आख़िरत पर और शहवात का ताबेअ़् हुआ (फ़ा45) और उसने जाना कि उसे रोज़े क़ियामत अपने रब के हुज़ूर हिसाब के लिए हाज़िर होना है (फ़ा46) हराम चीज़ों की। (फ़ा47) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का के काफ़िर (फ़ा48) और उसका वक़्त बताने से क्या ग़रज़। (फ़ा49) यानी काफ़िर क़ियामत को जिसका इन्कार करते हैं तो उसके हौल व दहशत से अपनी ज़िन्दगानी की मुद्दत भूल जायेंगे और ख़्याल करेंगे कि।

(बक़िया सफ़हा 971 का) में। (फ़ा11) इख़्लास के साथ शिर्क व निफ़ाक़ से दूर रह कर। (फ़ा12) यानी तमाम दीनों को छोड़ कर ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ़् होकर (फ़ा13) और उनके इताअ़त व इख़्लास से (फ़ा14) और उसके करम व अ़ता से। (फ़ा15) और उसकी नाफ़रमानी से बचे।

سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

عَبَسَ وَتَوَلّٰىۙ ۝١ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰىؕ ۝٢ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىۙ ۝٣ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰىؕ ۝٤ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰىۙ ۝٥ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰىؕ ۝٦ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰىؕ ۝٧ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ
يَسْعٰىۙ ۝٨ وَهُوَ يَخْشٰىۙ ۝٩ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰىۚ ۝١٠ كَلَّاۤ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌۚ ۝١١ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗۘ ۝١٢ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍۙ ۝١٣ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۭۙ ۝١٤ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍۙ ۝١٥ كِرَامٍۭ بَرَرَةٍؕ ۝١٦ قُتِلَ الْاِنْسَانُ
مَاۤ اَكْفَرَهٗؕ ۝١٧ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗؕ ۝١٨ مِنْ نُّطْفَةٍؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗۙ ۝١٩ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗۙ ۝٢٠ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗۙ ۝٢١ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗؕ ۝٢٢ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَاۤ اَمَرَهٗؕ ۝٢٣ فَلْيَنْظُرِ
الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤۙ ۝٢٤ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّاۙ ۝٢٥ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّاۙ ۝٢٦ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّاۙ ۝٢٧ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًاۙ ۝٢٨ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًاۙ ۝٢٩ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًاۙ ۝٣٠ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّاۙ ۝٣١
مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْؕ ۝٣٢ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ٘ ۝٣٣ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِۙ ۝٣٤ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِۙ ۝٣٥ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِؕ ۝٣٦ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِؕ ۝٣٧
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌۙ ۝٣٨ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌۚ ۝٣٩ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌۙ ۝٤٠ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌؕ ۝٤١ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝٤٢

सूरतु अ़-ब-स

(मक्की है इसमें 42 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़-ब-स व त-वल्ला(1)अन् जा-अहुल् अअ़्मा(2)व मा युदरी-क ल-अ़ल्लहू यज़्ज़क्का(3)औ
यज़्ज़क्करु फ़तन्फ़-अहुज़् ज़िक्रा(4)अम्मा मनिस्तग़्ना(5)फ़-अन्-त लहू त-सद्दा(6)व मा अ़लै-क
अल्ला यज़्ज़क्का(7)व अम्मा मन् जाअ-क यस्आ(8)व हु-व यख़्शा(9)फ़-अन्-त अ़न्हु त-लह्हा
(10)कल्ला इन्नहा तज़्कि-रतुन्(11)फ़-मन् शा-अ ज़-क-र:(12)फ़ी सुहुफ़िम् मुकर्र-मतिम्
(13)मर्फ़ू-अ़तिम् मु-तह-ह-रतिम्(14)बिऐदी स-फ़-रतिन्(15)किरामिम् ब-र-र:(16)कुतिलल्
इन्सानु मा अक्फ़र:(17)मिन् अय्यि शैइन् ख़-ल-क़:(18)मिन् नुत्-फ़तिन् ख़-ल-क़हू फ़- क़द्-द
-रहू(19)सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू(20)सुम्-म अमा-तहू फ़-अक़्ब-रहू(21)सुम्-म इज़ा शा-अ
अन्शर:(22)कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ-म-र:(23)फ़ल्-यन्ज़ुरिल् इन्सानु इला तआ़मिही(24)
अन्ना स-बब्नल् मा-अ सब्बन्(25)सुम्-म श-क़क़्नल् अर्-ज़ शक़्क़न्(26)फ़-अम्बत्ना
फ़ीहा हब्बंव्(27)व अ़ि-न-बंव् व क़ज़्बंव्(28)व ज़ैतूनंव् व नख़्लंव्(29) व हदाइ-क़ ग़ुल्बंव्(30)
व फ़ाकि-हतंव् व अब्बम्(31)मताअ़ल् लकुम् व लि-अन्आ़मिकुम्(32)फ़इज़ा जा-अतिस् साख़्-ख़
(33)यौ-म यफ़िर्रुल् मरउ मिन् अख़ीहि(34)व उम्मिही व अबीहि(35)व साहि-बतिही व बनीह
(36)लि-कुल्लिम्-रिइम् मिन्हुम् यौ-मइज़िन् शअ्नुंय्युग़्नीह(37)वुजूहुंय्यौ-मइज़िम् मुस्फ़ि-रतुन्
(38)ज़ाहि-कतुम् मुस्तब्शि-रतुन्(39)व वुजूहुंय्यौ-मइज़िन् अ़लैहा ग़-ब-रतुन्(40)तर्हक़ुहा
क़-त-र:(41)उलाइ-क हुमुल्-क-फ़-रतुल् फ़-ज-र:(42)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)
तेवरी चढ़ाई और मुँह फेरा।(1) (फ़2) इस पर कि उसके पास वह नाबीना हाज़िर हुआ।(2) (फ़3) और तुम्हें क्या मालूम शायद वह सुथरा हो।(3) (फ़4) या नसीहत ले तो उसे नसीहत फ़ाइदा दे।(4) वह जो बे-परवाह बनता है।(5) (फ़5) तुम उसके तो पीछे पड़ते हो।(6) (फ़6) और तुम्हारा कुछ ज़ियाँ नहीं इसमें कि वह सुथरा न हो।(7) (फ़7) और वह जो तुम्हारे हुजूर मलकता (नाज़ से दौड़ता हुआ) आया।(8) (फ़8) और वह डर रहा है।(9) (फ़9) तो उसे छोड़ कर और तरफ़ मश्गूल होते हो।(10) यूं नहीं (फ़10) यह तो समझाना है।(11) (फ़11) तो जो चाहे उसे याद करे।(12) (फ़12) उन सहीफ़ों में कि इज़्ज़त वाले हैं।(13) (फ़13) बुलन्दी वाले (फ़14) पाकी वाले।(14) (फ़15) ऐसों के हाथ लिखे हुए।(15) जो करम वाले निकोई वाले।(16) (फ़16) आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्र है।(17) (फ़17) **(बक़िया सफ़्हा 970 पर)**

سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝٢ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧ وَإِذَا
الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝٨ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝٩ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝١١ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝١٣ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ۝١٤ فَلَا
أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝١٧ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝١٩ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝٢٠ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝٢١
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۝٢٢ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝٢٣ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝٢٤ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝٢٥ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝٢٦ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝٢٧
لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝٢٨ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝٢٩

सूरतुत् तक्वीर

(मक्की है इस सूरह में 29 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इजश्शम्सु कुव्विरत्(1)व इज़न्नुजूमुन्–क–दरत्(2)व इज़ल् जिबालु सुय्यिरत्(3)व इज़ल्अिशारु अुत्तिलत्(4)व इज़ल्वुहूशु हुशि–रत्(5)व इज़ल्बिहारु सुज्जि–रत्(6)व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत्(7)व इज़ल्मौऊ–दतु सुइलत्(8)बिअय्यि ज़म्बिन् कुतिलत्(9)व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत्(10)व इज़स्समाउ कुशितत्(11)व इज़ल् जहीमु सुअ़्अिरत्(12)व इज़ल्जन्नतु उज़्लिफ़त्(13)अ़लिमत् नफ़्सुम् मा अह्ज़–रत्(14)फ़ला उक़्सिमु बिल्खुन्नसिल्(15)जवारिल्कुन्नस(16)वल्लैलि इज़ा अ़स्–अ़स(17)वस्सुब्हि इज़ा त–नफ़्फ़स(18)इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीमिन्(19)ज़ी कुव्वतिन् अ़िन्–द ज़िल्अ़र्शि मकीनिम्(20)मुताअ़िन् सम्–म अमीन(21)व मा साहिबुकुम् बि–मज्नून(22)व लक़द् रआहु बिल्उफ़ुक़िल् मुबीन(23)व मा हु–व अ़लल्ग़ैबि बि–ज़नीन(24)व मा हु–व बिक़ौलि शैतानिर्रजीम(25)फ़ऐ–न तज़्हबून(26)इन् हु–व इल्ला ज़िक्रुल् लिल्आ़–लमीन(27)लिमन् शा–अ मिन्कुम् अंय्यस्तक़ीम(28)व मा तशाऊ–न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु रब्बुल् आ़–लमीन(29)

अल्लाह के नाम शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

जब धूप लपेटी जाए।(1) (फ़2) और जब तारे झड़ पड़ें।(2) (फ़3) और जब पहाड़ चलाए जायें।(3) (फ़4) और जब थलकी (गाभन) ऊँटनियां (फ़5) छूटी फिरें।(4) (फ़6) और जब वहशी जानवर जमा किये जायें।(5) (फ़7) और जब समुन्दर सुलगाए जायें।(6) (फ़8) और जब जानों के जोड़ बनें।(7) (फ़9) और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए।(8) (फ़10) किस ख़ता पर मारी गई।(9) (फ़11) और जब नामए आमाल खोले जायें।(10) और जब आसमान जगह से खींच लिया जाए।(11) (फ़12) और जब जहन्नम भड़काया जाए।(12) (फ़13) और जब जन्नत पास लाई जाए।(13) (फ़14) हर जान को मालूम हो जाएगा जो हाज़िर लाई।(14) (फ़15) तो क़सम है उन (फ़16) की जो उलटे फिरें।(15) सीधे चलें थम रहें।(16) (फ़17) और रात की जब पीठ दे।(17) (फ़18) और सुबह की जब दम ले।(18) (फ़19) बेशक यह (फ़20) इ़ज़्ज़त वाले रसूल (फ़21) का पढ़ना है।(19) जो कुव्वत वाला है मालिके अ़र्श के हुज़ूर इ़ज़्ज़त वाला।(20) वहां उसका हुक्म माना जाता है (फ़22) अमानतदार है।(21) (फ़23) और तुम्हारे साहिब (फ़24) मजनून नहीं।(22) (फ़25) और बेशक उन्होंने उसे (फ़26) रौशन किनारा पर देखा।(23) (फ़27) और यह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।(24) और कुरआन मरदूद शैतान का पढ़ा हुआ नहीं।(25) फिर किधर जाते हो।(26) (फ़28) वह तो नसीहत ही है सारे जहान के लिए।(27) उसके लिए जो तुम में सीधा होना चाहे।(28) (फ़29) और तुम क्या चाहो मगर यह कि चाहे अल्लाह सारे जहान का रब।(29) (रुकूअ़ 6)

(फ़1) सूरह कुव्विरत मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 29 आयतें 104 कलिमे 530 हरफ़ हैं हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि रोज़े क़ियामत को ऐसा देखे गोया कि वह नज़र **(बक़िया सफ़हा 973 पर)**

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

सूरतुल् इन्फ़िितारि

(मक्की है इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़स्समाउन्फ़–त–रत्(1)व इज़ल्–कवाकिबुन्–त–स़–रत्(2)व इज़ल्बिहारु फुज्जिरत्(3)व इज़ल्कुबूरु बुअ़सिरत्(4)अलिमत् नफ़्सुम् मा क़द्–द–मत् व अख़्ख़–रत्(5)या अय्युहल् इन्सानु मा ग़र्र–क बिरब्बिकल्करीम(6)अल्लज़ी ख़–ल–क़–क फ़–सव्वा–क फ़–अ–द–लक(7) फ़ी अय्यि सू–रतिम् मा शा–अ रक्क–बक(8)कल्ला बल् तु–कज़्ज़िबू–न बिद्दीनि(9)व इन्–न अलैकुम् लहाफ़िज़ीन(10)किरामन् कातिबीन(11)यअ़्–लमू–न मा तफ़्–अ़लून(12)इन्नल् अब्रा–र लफ़ी नईम(13)व इन्नल्फ़ुज्जा–र लफ़ी जहीमिंय्(14)यस्लौ–नहा यौ–मद्दीन(15)व मा हुम् अन्हा बिग़ाइबीन(16)व मा अद्रा–क मा यौमुद्दीन(17)सुम्–म मा अद्रा–क मा यौमुद्दीन(18)यौ–म ला तम्लिकु नफ़्सुल् लिनफ़्सिन् शैअन् वल्अम्रु यौ–मइज़िल् लिल्लाह(19)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब आसमान फट पड़े।(1) और जब तारे झड़ पड़ें।(2) और जब समुन्दर बहा दिये जायें।(3) (फ़ा2) और जब क़ब्रें कुरेदी जायें।(4) (फ़ा3) हर जान, जान लेगी जो उसने आगे भेजा (फ़ा4) और जो पीछे।(5) (फ़ा5) ऐ आदमी तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से।(6) (फ़ा6) जिस ने तुझे पैदा किया (फ़ा7) फिर ठीक बनाया (फ़ा8) फिर हमवार फ़रमाया।(7) (फ़ा9) जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया।(8) (फ़ा10) कोई नहीं (फ़ा11) बल्कि तुम इन्साफ़ होने को झुठलाते हो।(9) (फ़ा12) और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं।(10) (फ़ा13) मोअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले।(11) (फ़ा14) कि जानते हैं जो कुछ तुम करो।(12) (फ़ा15) बेशक नेकोकार (फ़ा16) ज़रूर चैन में हैं।(13) (फ़ा17) और बेशक बदकार (फ़ा18) ज़रूर दोज़ख़ में हैं।(14) इन्साफ़ के दिन उसमें जायेंगे।(15) और उससे कहीं छुप न सकेंगे।(16) और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन।(17) फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन।(18) जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी (फ़ा19) और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है।(19) (रुकूअ़ 7)

(फ़ा1) सूरए इन्फ़ितार मक्की है इस में एक रुकूअ़ 19 आयतें 80 कलिमे 327 हरफ़ हैं। (फ़ा2) और शीरीं व शोर सब मिल कर एक हो जायें। (फ़ा3) और उनके मुर्दे ज़िन्दा करके निकाले जायें। (फ़ा4) अ़मल नेक या बद (फ़ा5) छोड़ी नेकी या बदी और एक क़ौल यह है कि जो आगे भेजा उससे सदक़ात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उससे मीरास। (फ़ा6) कि तूने बावजूद इसके निअ़्मत व करम के उसका हक़ न पहचाना और उसकी नाफ़रमानी की। (फ़ा7) और नेस्त से हस्त किया। (फ़ा8) सालिमुल आज़ा सुनता देखता (फ़ा9) आज़ा में मुनासबत रखी। (फ़ा10) लम्बा या ठिगना ख़ूब-रू या कम-रू गोरा या काला मर्द या औरत। (फ़ा11) तुम्हें अपने रब के करम पर मग़रूर न होना चाहिए। (फ़ा12) और रोज़े जज़ा के मुन्किर हो। (फ़ा13) तुम्हारे आमाल व अक़वाल के और वह फ़रिश्ते हैं (फ़ा14) तुम्हारे अ़मलों के। (फ़ा15) नेकी या बदी उनसे तुम्हारा कोई अमल छुपा नहीं। (फ़ा16) यानी मोमिनीन सादिक़ुल ईमान। (फ़ा17) जन्नत में (फ़ा18) काफ़िर (फ़ा19) यानी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़ा न पहुंचा सकेगा। (ख़ाज़िन)

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۝ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝
يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝ كِتٰبٌ

सूरतुल् मुतफ़्फ़िफ़ीन

(मक्की है इसमें 36 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल् लिल्मु–तफ़्फ़िफ़ीन(1)अल्लज़ी–न इजक्तालू अ़लन्नासि यस्तौफ़ून(2)व इज़ा कालू हुम् अव्व–ज़नू हुम् युख़्सिरून(3)अला यज़ुन्नु उलाइ–क अन्नहुम् मब्अूसून(4)लियौमिन् अ़ज़ीम(5)यौ–म यक़ूमुन्नासु लि–रब्बिल् आ़–लमीन(6)कल्ला इन्–न किताबल् फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन(7)व मा अद्रा–क मा सिज्जीन(8)किताबुम् मर्क़ूम(9)वैलुंय्यौ–मइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(10) अल्लज़ी–न युकज़्ज़िबू–न बियौमिद्दीन(11)व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ्तदिन् असीम(12)इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा–ल असातीरुल् अव्वलीन(13)कल्ला बल् रा–न अ़ला क़ुलूबिहिम् मा कानू यक्सिबून(14)कल्ला इन्नहुम् अ़र्रब्बिहिम् यौ– मइज़िल् ल–मह्जूबून(15)सुम्–म इन्नहुम् लसालुल् जहीम(16)सुम्–म युक़ालु हाजल्लज़ी कुन्तुम् बिही तु–कज़्ज़िबून(17)कल्ला इन्–न किताबल् अब्रारि लफ़ी अ़िल्लिय्यीन(18)व मा अद्रा–क मा अ़िल्लिय्यून(19)किताबुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

कम तोलने वालों की ख़राबी है।(1) वह कि जब औरों से माप लें पूरा लें।(2) और जब उन्हें माप तोल कर दें कम कर दें।(3) क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें उठना है।(4) एक अ़ज़मत वाले दिन के लिए।(5) (फ़ा2) जिस दिन सब लोग (फ़ा3) रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।(6) बेशक काफ़िरों की लिखत (फ़ा4) सब से नीची जगह सिज्जीन में है।(7) (फ़ा5) और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है।(8) (फ़ा6) वह लिखत एक मुहर किया नविश्ता है।(9) (फ़ा7) उस दिन (फ़ा8) झुठलाने वालों की ख़राबी है।(10) जो इन्साफ़ के दिन को झुठलाते हैं।(11) (फ़ा9) और उसे न झुठलाएगा मगर हर सरकश गुनाहगार।(12) (फ़ा10) जब उस पर हामरी आयतें पढ़ी जायें कहे (फ़ा11) अगलों की कहानियां हैं।(13) कोई नहीं (फ़ा12) बल्कि उनके दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उनकी कमाइयों ने।(14) (फ़ा13) हां हां बेशक वह उस दिन (फ़ा14) अपने रब के दीदार से महरूम हैं।(15) (फ़ा15) फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना।(16) फिर कहा जाएगा यह है वह (फ़ा16) जिसे तुम झुठलाते थे।(17) (फ़ा17) हां हां बेशक नेकों की लिखत (फ़ा18) सब से ऊँचे महल इल्लीय्यीन में है।(18) (फ़ा19) और तू क्या जाने इल्लीय्यीन कैसी है।(19) (फ़ा20) वह लिखत

(फ़ा1) सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन एक क़ौल में मक्की है और एक में मदनी और एक क़ौल यह है कि ज़मानए हिजरत में मक्का मुकर्रमा व मदीना तय्येबा के दर्मियान नाज़िल हुई इस सूरत में एक रुकूअ़ 36 आयतें 139 कलिमे और 730 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मदीना तय्येबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहां के लोग पैमाना में ख़ियानत करते थे बिलख़ुसूस एक शख़्स अबू जुहैना ऐसा था कि वह दो पैमाने रखता था लेने का और देने का और उन लोगों के हक़ में यह आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें पैमाने में अ़द्ल करने का हुक्म दिया गया। (फ़ा2) यानी रोज़े क़ियामत उस रोज़ ज़र्रा ज़र्रा का हिसाब किया जाएगा (फ़ा3) अपनी क़ब्रों से उठ कर। (फ़ा4) यानी उनके आमाल नामे (फ़ा5) सिज्जीन सातवें ज़मीन के असफ़ल में एक मकाम है जो इबलीस और उसके लश्करों का महल है (फ़ा6) यानी वह निहायत ही हौल व हैबत का मक़ाम ! (फ़ा7) जो न मिट सकता है न बदल सकता है। (फ़ा8) जबकि वह नविश्ता **(बक़िया सफ़हा 984 पर)**

مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ
ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾
وَاِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ
يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

मरक़ूमुंय्(20)यशहदुहुल् मुक़र्रबून(21)इन्नल् अब्रा–र लफ़ी नओ़म(22)अ़लल् अराइकि यन्ज़ुरून(23) तअ़रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्र–तन् नओ़म(24)युस्क़ौ–न मिर्रहीक़िम् मख़्तूम(25)ख़ितामुहू मिस्कुन् व फ़ी ज़ालि–क फ़ल्य–तना–फ़सिल् मु–तनाफ़िसून(26)व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम(27)अ़ैनंय्यश्रबु बिहल् मुक़र्रबून(28)इन्नल्लज़ी–न अज्‌रमू कानू मिनल्लज़ी–न आ–मनू यज़्–हकून(29)व इज़ा मर्रू बिहिम् य–तग़ा मज़ून(30)व इज़न्क़–लबू इला अह्लिहिमुन्क़–लबू फ़किहीन(31)व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्–न हाउलाइ लज़ाल्लून(32)व मा उर्सिलू अ़लैहिम् हाफ़िज़ीन(33)फ़ल्यौमल् लज़ी–न आ–मनू मिनल् कुफ़्फ़ारि यज़्–हकून(34)अ़लल् अराइकि यन्ज़ुरून(35)हल् सुव्विबल् कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्–अ़लून(36)

एक मुहर किया नविश्ता है।(20) (फ़ा21) कि मुक़र्रब (फ़ा22) जिसकी ज़ियारत करते हैं।(21) बेशक नेकोकार ज़रूर चैन में हैं।(22) तख़्तों पर देखते हैं।(23) (फ़ा23) तू उनके चेहरों में चैन की ताज़गी पहचाने।(24) (फ़ा24) निथरी शराब पिलाए जायेंगे जो मुहर की हुई रखी है।(25) (फ़ा25) उसकी मुहर मुश्क पर है और इसी पर चाहिये कि ललचायें ललचाने वाले।(26) (फ़ा26) और उसकी मिलोनी तस्नीम से है।(27) (फ़ा27) वह चश्मा जिस से मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं।(28) (फ़ा28) बेशक मुजरिम लोग (फ़ा29) ईमान वालों से (फ़ा30) हंसा करते थे।(29) और जब वह (फ़ा31) इन पर गुज़रते तो यह आपस में उन पर आँखों से इशारे करते।(30) (फ़ा32) और जब (फ़ा33) अपने घर पलटते ख़ुशियाँ करते पलटते।(31) (फ़ा34) और जब मुसलमानों को देखते कहते बेशक यह लोग बहके हुए हैं।(32) और यह (फ़ा35) कुछ उन पर निगहबान बना कर न भेजे गए।(33) (फ़ा36)तो आज (फ़ा37) ईमान वाले काफ़िरों से हंसते हैं।(34) (फ़ा38) तख़्तों पर बैठे देखते हैं।(35) (फ़ा39) क्यों कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का।(36) (फ़ा40) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा21) फ़रिश्ते (फ़ा22) अल्लाह तआ़ला के इकराम और उसकी निअ़मतों को जो उसने उन्हें अ़ता फ़रमाईं और अपने दुश्मनों को जो तरह तरह के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं (फ़ा23) कि वह ख़ुशी से चमकते दमकते होंगे और सुरूरे क़ल्ब के आसार उन चेहरों पर नुमायां होंगे (फ़ा24) कि अबरार ही उसकी मुहर तोड़ेंगे। (फ़ा25) ताअ़ात की तरफ़ सबक़त करके और बुराईयों से बाज़ रह कर (फ़ा26) जो जन्नत की शराबों में आला है (फ़ा27) यानी मुक़र्रबीन ख़ालिस शराबे तस्नीम पीते हैं और बाक़ी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है (फ़ा28) मिस्ल अबू जहल और वलीद बिन मुग़ीरा और आ़स बिन वाइल वग़ैरह रुऊसाए कुफ़्फ़ार के (फ़ा29) मिस्ल हज़रत अ़म्मार व ख़ब्बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरह फ़ुक़राए मोमिनीन के। (फ़ा30) मोमिनीन (फ़ा31) बतरीक़े तअ़्न व ऐब के। **शाने नुज़ूलः** मन्क़ूल है कि हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुसलमानों की एक जमाअ़त में तशरीफ़ ले जा रहे थे मुनाफ़िक़ीन ने उन्हें देख कर आँखों से इशारे किये और मस्ख़रगी से हंसे और आपस में उन हज़रात के हक़ में बेहूदा कलिमात कहे तो इससे पहले कि अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचें यह आयतें नाज़िल हुईं। (फ़ा32) कुफ़्फ़ार (फ़ा33) यानी मुसलमानों को बुरा कह कर आपस में उनकी हंसी बनाते और ख़ुश होते हुए (फ़ा34) कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाये और दुनिया की लज़्ज़तों को आख़िरत की उम्मीदों पर छोड़ दिया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा35) कुफ़्फ़ार (फ़ा36) कि उनके अहवाल व आमाल पर गिरिफ़्त करें बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह का हुक्म दिया गया है वह अपना हाल दुरुस्त करें दूसरों को बेवक़ूफ़ बताने और उनकी हंसी उड़ाने से क्या फ़ाइदा उठा सकते हैं (फ़ा37) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा38) जैसा काफ़िर दुनिया में मुसलमानों की ग़ुरबत व मेहनत पर हंसते थे यहां मुआ़मला बर-अक्स है मोमिन दाइमी ऐश व राहत में हैं और काफ़िर ज़िल्लत व ख़्वारी के दाइमी अ़ज़ाब में जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है काफ़िर उससे निकलने के लिए दरवाज़े की तरफ़ दौड़ते हैं जब दरवाज़ा **(बक़िया सफ़हा 949 पर)**

سُورَةُ الْانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۝١ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٢ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝٣ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝٤ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٥ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝٦ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝٧ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝٨ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝٩ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝١٠ فَسَوْفَ
يَدْعُو ثُبُورًا ۝١١ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝١٢ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝١٣ إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ۝١٤ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝١٥ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٦ وَاللَّيْلِ وَمَا
وَسَقَ ۝١٧ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝١٨ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝١٩ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٢٠ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝٢١ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝٢٢ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝٢٣ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٢٤ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٢٥

सूरतुल् इन्शिक़ाक़ि

(मक्की है इसमें 25 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

***इज़स्समाउन्शक़्क़त्(1)व अज़िनत् लि–रब्बिहा व हुक़्क़त्(2)व इज़ल्अर्ज़ु मुद्दत्(3)व अल्क़त्
मा फ़ीहा व त–ख़ल्लत्(4)व अज़िनत् लि–रब्बिहा व हुक़्क़त्(5)या अय्युहल् इन्सानु इन्न–क कादिहुन्
इला रब्बि–क कद्ह़न् फ़मुलाक़ीहि(6)फ़–अम्मा मन् ऊति–य किता–बहू बि–यमीनिही(7) फ़सौ–फ़
युहा–सबु हिसाबंय् यसीरा(8)व यन्क़लिबु इला अह्लिही मस्रूरा(9)व अम्मा मन् ऊति–य किता–बहू
वरा–अ ज़ह्रिही(10)फ़सौ–फ़ यद्अू सुबूरा(11)व यस्ला सअ़ीरा(12)इन्नहू का–न फ़ी अह्लिही मस्रूरा
(13)इन्नहू ज़न्–न अल्लंय्यहू–र(14)बला इन्–न रब्बहू का–न बिही बसीरा(15)फ़ला उक़्सिमु बिश्श–
फ़क़ि(16)वल्लैलि व मा व–स–क़्(17)वल्क़–मरि इज़त् त–स–क़्(18)ल–तर् कबुन्–न त–ब–क़न्
अ़न् त–बक़्(19)फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून(20)व इज़ा क़ुरि–अ अ़लैहिमुल् क़ुर्आनु ला यस्जुदून(21)
बलिल्लज़ी–न क–फ़रू यु–कज़्ज़िबून(22)वल्लाहु अअ्–लमु बिमा यूअ़ून(23)फ़–बश्शिर्हुम् बि–
अ़ज़ाबिन् अलीम(24)इल्लल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून(25)***

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
जब आसमान शक़ हो।(1) (फ़ा2) और अपने रब का हुक्म सुने (फ़ा3) और उसे सज़ावार ही यह है।(2)
और जब ज़मीन दराज़ की जाए।(3) (फ़ा4) और जो कुछ इसमें है (फ़ा5) डाल दे और ख़ाली हो
जाए।(4) और अपने रब का हुक्म सुने (फ़ा6) और उसे सज़ावार ही यह है।(5) (फ़ा7) ऐ आदमी बेशक
तुझे अपने रब की तरफ़ (फ़ा8) ज़रूर दौड़ना है फिर उससे मिलना।(6) (फ़ा9) तो वह जो अपना नामए
आमाल दाहिने हाथ में दिया जाए।(7) (फ़ा10) उससे अ़न्क़रीब सह्ल ह़िसाब लिया जाएगा।(8) (फ़ा11)
और अपने घर वालों की तरफ़ (फ़ा12) शाद शाद पलटेगा।(9) (फ़ा13) और वह जिसका नामए आमाल
उसकी पीठ के पीछे दिया जाए।(10) (फ़ा14) वह अ़न्क़रीब मौत मांगेगा।(11) (फ़ा15) और भड़कती
आग में जाएगा।(12) बेशक वह अपने घर में (फ़ा16) खुश था।(13) (फ़ा17) वह समझा कि उसे फिरना
नहीं।(14) (फ़ा18) हां क्यों नहीं (फ़ा19) बेशक उस का रब उसे देख रहा है।(15) तो मुझे क़सम है
शाम के उजाले की।(16) (फ़ा20) और रात की और जो चीज़ें उसमें जमा होती हैं।(17) (फ़ा21) और
चाँद कि जब पूरा हो।(18) (फ़ा22) ज़रूर तुम मंज़िल ब मंज़िल चढ़ोगे।(19) (फ़ा23) तो क्या हुआ ईमान
नहीं लाते।(20) (फ़ा24) और जब कुरआन पढ़ा जाए सजदा नहीं करते।(21) (फ़ा25) बल्कि काफ़िर
झुठला रहे हैं।(22) (फ़ा26) और अल्लाह ख़ूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं।(23) (फ़ा27) तो
तुम उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की बशारत दो।(24) (फ़ा28) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये
उनके लिए वह सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा।(25) (रुकूअ़ 9) **(बक़िया सफ़हा 978 पर)**

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝ اِنَّ

بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۝ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۝ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۝ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝

सूरतुल् बुरूजि

(मक्की है इसमें 22 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्समाइ ज़ातिल्बुरूजि(1)वल्यौमिल् मौऊ़दि(2)व शाहिदिंव् व मश्हूद(3)कुति–ल अस्हाबुल् उख़्दूदि(4)न्नारि जातिल्वकूदि(5)इज् हुम् अ़लैहा कुऊ़दुंव्(6)व हुम् अ़ला मा यफ़्अ़लू–न बिल्मुअ्मिनी–न शुहूद(7)व मा न–क़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् हमीद(8)अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(9)इन्नल्लज़ी–न फ़–तनुल्मुअ्मिनी–न वल्मुअ्मिनाति सुम्–म लम् यतूबू फ़–लहुम् अ़ज़ाबु ज–हन्न–म व लहुम् अ़ज़ाबुल् ह़रीक़(10) इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् कबीर(11)इन्–न बत्–श रब्बि–क ल–शदीद(12)इन्नहू हु–व युब्दिउ व युईद(13)व हुवल् ग़फ़ूरुल् वदूद(14)ज़ुल्अ़र्शिल् मजीद(15)फ़अ़्आलुल् लिमा युरीद(16)हल् अता–क हदीसुल् जुनूद(17) फ़िर्औ़–न व समूद(18)बलिल्लज़ी–न क–फ़रू फ़ी तक्ज़ीबिंव्(19)वल्लाहु मिंव्वराइहिम् मुहीत(20) बल् हु–व कुरआनुम् मजीद(21)फ़ी लौहिम् मह्फ़ूज़(22)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम आसमान की जिस में बुर्ज हैं।(1) (फ़ा2) और उस दिन की जिस का वादा है।(2) (फ़ा3) और उस दिन की जो गवाह है।(3) (फ़ा4) और उस दिन की जिस में हाज़िर होते हैं(4) (फ़ा5) खाई वालों पर लानत हो।(5) (फ़ा6) उस भड़कती आग वाले। जब वह उसके किनारों पर बैठे थे।(6) (फ़ा7) और वह ख़ुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे।(7) (फ़ा8) और उन्हें मुसलमानों का क्या बुरा लगा यही न कि वह ईमान लाए अल्लाह इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे पर।(8) कि उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।(9) बेशक जिन्होंने ईज़ा दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को (फ़ा9) फिर तौबा न की (फ़ा10) उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है (फ़ा11) और उनके लिए आग का अ़ज़ाब।(10) (फ़ा12) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिए बाग़ है जिनके नीचे नहरें रवाँ यही बड़ी कामयाबी है।(11) बेशक तेरे रब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है।(12) (फ़ा13) बेशक वह पहले करे और फिर करे।(13) (फ़ा14) और वही बख़्शने वाला अपने नेक बन्दों पर प्यारा।(14) इज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक।(15) हमेशा जो चाहे कर लेने वाला।(16) क्या तुम्हारे पास लश्करों की बात आई।(17) (फ़ा15) वह लश्कर कौन फ़िरऔ़न और समूद।(18) (फ़ा16) बल्कि (फ़ा17) काफ़िर झुठलाने में हैं।(19) (फ़ा18) और अल्लाह उनके पीछे से उन्हें घेरे हुए है।(20) (फ़ा19) बल्कि वह कमाले शरफ़ वाला क़ुरआन है।(21) लौहे महफ़ूज़ में।(22) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा1) सूरह बुरूज मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 22 आयतें 109 कलिमे 465 हरफ़ हैं (फ़ा2) जिनकी **(बक़िया सफ़हा 985 पर)**

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿۱﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿۲﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿۳﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿۴﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿۵﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿۶﴾ يَّخْرُجُ مِنْۢ
بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿۷﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ﴿۸﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿۹﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ﴿۱۰﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿۱۱﴾ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ
فَصْلٌ ﴿۱۳﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿۱۴﴾ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿۱۵﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿۱۶﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿۱۷﴾

सूरतुत् तारिक़

(मक्की है इसमें 17 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्समाइ वत्तारिक़ि(1)व मा अद्रा–क मत्तारिक़ु(2)न्नज्मुस् साक़िबु(3)इन् कुल्लु नफ़्सिल् लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़(4)फ़ल्यन्ज़ुरिल् इन्सानु मिम्–म ख़ुलि–क़(5)ख़ुलि–क़ मिम् माइन् दाफ़िक़िंय्(6)यख़्रुजु मिम् बैनिस्सुल्बि वत्तराइब(7)इन्नहू अ़ला रज्अ़िही लक़ादिर(8)यौ–म तुब्–लस्सराइरु(9)फ़मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव् व ला नासिर(10)वस्समाइ ज़ातिर् रज्अ़(11)वल्अर्ज़ि ज़ातिस्सद्अ़(12)इन्नहू लक़ौलुन् फ़स्लुंव्(13)व मा हु–व बिल्हज़्लि(14)इन्नहुम् यकीदू–न कैदंव्(15) व अकीदु कैदन्(16)फ़–महहिलिल्काफ़िरी–न अम्हिल्हुम् रुवैदा(17)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

आसमान की क़सम और रात को आने वाले की।(1) (फ़ा2) और कुछ तुम ने जाना वह रात को आने वाला क्या है।(2) ख़ूब चमकता तारा।(3) कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो।(4) (फ़ा3) तो चाहिये कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया।(5) (फ़ा4) जस्त करते (उछलते हुए) पानी से।(6) (फ़ा5) जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से।(7) (फ़ा6) बेशक अल्लाह उसके वापस कर देने पर (फ़ा7) क़ादिर है।(8) जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी।(9) (फ़ा8) तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न कोई मददगार।(10) (फ़ा9) आसमान की क़सम जिस से मेंह उतरता है।(11) (फ़ा10) और ज़मीन की जो उससे खिलती है।(12) (फ़ा11) बेशक क़ुरआन ज़रूर फ़ैसला की बात है।(13) (फ़ा12) और कोई हंसी की बात नहीं।(14) (फ़ा13) बेशक काफ़िर अपना सा दाँव चलते हैं।(15) (फ़ा14) और मैं अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाता हूं।(16) (फ़ा15) तो तुम काफ़िरों को ढील दो (फ़ा16) उन्हें कुछ थोड़ी मुहलत दो।(17) (फ़ा17) (रुकूअ़ 11)

(फ़ा1) सूरह अत्तारिक़ मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 17 आयतें 61 कलिमे 239 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी सितारे की जो रात को चमकता है। **शाने नुज़ूलः** एक शब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अबू तालिब कुछ हदिया लाए हुज़ूर उसको तनावुल फ़रमा रहे थे उस दर्मियान में एक तारा टूटा और तमाम फ़ज़ा आग से भर गई अबू तालिब घबरा कर कहने लगे यह क्या है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह सितारा है जिससे शयातीन मारे जाते हैं और यह क़ुदरते इलाही की निशानियों में से है अबू तालिब को इससे तअ़ज्जुब हुआ और यह सूरत नाज़िल हुई। (फ़ा3) उसके रब की तरफ़ से जो उसके आमाल की निगहबानी करे और उसकी नेकी बदी सब लिख ले हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे फ़रिश्ते हैं। (फ़ा4) ताकि वह जाने कि उसका पैदा करने वाला उसको बाद मौत जज़ा के लिए ज़िन्दा करने पर क़ादिर है पस उसको रोज़े जज़ा के लिए अमल करना चाहिये (फ़ा5) यानी मर्द व औरत के नुत्फ़ों से जो रेहम में मिल कर एक हो जाते हैं। (फ़ा6) यानी मर्द की पुश्त से और औरत के सीना के मक़ाम से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया सीना के उस मक़ाम से जहां हार पहना जाता है और उन्हीं से मन्क़ूल है कि औरत की दोनों छातियों के दर्मियान से यह भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम आज़ा से बर आमद होती है और उसका ज़्यादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पुश्त में आता है और औरत के बदन के अगले हिस्सा की बहुत सी रगों में जो सीना के मक़ाम पर हैं नाज़िल होता है इसी लिए इन दोनों मक़ामों का ज़िक्र ख़ुसूसियत से फ़रमाया गया। (फ़ा7) यानी मौत के बाद ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा देने पर (फ़ा8) छुपी बातों से मुराद अ़क़ाइद और नीयतें और वह आमाल हैं जिनको आदमी छुपाता है रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला उन सब को ज़ाहिर कर देगा (फ़ा9) यानी जो आदमी मुन्किरे बअ़स है न उसको ऐसी क़ुव्वत होगी जिससे अ़ज़ाब को रोक सके न उसका कोई **(बक़िया सफ़हा 967 पर)**

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى ۝١ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝٢ وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۝٣ وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝٤ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۝٥ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۝٦ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ
يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝٧ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝٨ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝٩ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝١٠ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١١ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝١٢ ثُمَّ
لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝١٣ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝١٤ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝١٥ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝١٦ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝١٧ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ
الْاُوْلٰى ۝١٨ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝١٩

सूरतुल् अअ्ला

(मक्की है इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ् है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्बिहिस्-म रब्बिकल् अअ्ला(1)अल्लज़ी ख़-ल-क़ फ़सव्वा(2)वल्लज़ी क़द्-द-र फ़-हदा(3)वल्लज़ी अख़्-रजल् मरआ(4)फ़-ज-अ-लहू ग़ुसाअन् अह़्वा(5)सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा(6)इल्ला मा शा-अल्लाहु इन्नहू यअ्-लमुल् जह्-र व मा यख़्फ़ा(7)व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा(8)फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अतिज़् ज़िक्रा(9)स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा(10)व य-त-जन्नबुहल् अश्क़(11)-ल्लज़ी यस्लन्नारल् कुब्रा(12)सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या(13)क़द् अफ़्ल-ह मन् तज़क्का(14)व ज़-करस्-म रब्बिही फ़सल्ला(15)बल् तुअसिरू-नल् ह़यातद् दुन्या(16)वल्आख़ि-रतु ख़ैरुंव् व अब्क़ा(17)इन्-न हाज़ा लफ़िस् सुहुफ़िल् ऊला(18)सुहुफ़ि इब्राही-म व मूसा(19)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बुलन्द है।(1) (फ़ा2) जिस ने बना कर ठीक किया।(2) (फ़ा3) और जिसने अन्दाज़ा पर रख कर राह दी।(3) (फ़ा4) और जिस ने चारा निकाला।(4) फिर उसे खुश्क सियाह कर दिया।(5) अब हम तुम्हें पढ़ायेंगे कि तुम न भूलोगे।(6) (फ़ा5) मगर जो अल्लाह चाहे (फ़ा6) बेशक वह जानता है हर खुले और छुपे को।(7) और हम तुम्हारे लिए आसानी का सामान कर देंगे(8) (फ़ा7) तो तुम नसीहत फ़रमाओ (फ़ा8) अगर नसीहत काम दे।(9) (फ़ा9) अ्न्क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है।(10) (फ़ा10) और इस (फ़ा11) से वह बड़ा बद-बख़्त दूर रहेगा।(11) जो सब से बड़ी आग में जाएगा।(12) (फ़ा12) फिर न उसमें मरे (फ़ा13) और न जिये।(13) (फ़ा14) बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुआ।(14) (फ़ा15) और अपने रब का नाम लेकर (फ़ा16) नमाज़ पढ़ी।(15) (फ़ा17) बल्कि तुम जीती दुनिया को तरजीह देते हो।(16) (फ़ा18) और आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली।(17) बेशक यह (फ़ा19) अगले सहीफ़ों में है।(18) (फ़ा20) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।(19) (रुकूअ् 12)

(फ़ा1) सूरतुल अअ्ला मक्की है इसमें एक रुकूअ् 19 आयतें 72 कलिमे 291 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी इसका ज़िक्र अ्ज़मत व एहतेराम के साथ करो हदीस में है जब यह आयत नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने सज्दा में दाख़िल करो यानी सज्दा में सुब्हा-न रब्बि-यल् अअ्ला कहो (अबू दाऊद) (फ़ा3) यानी हर चीज़ की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़रमाई जो पैदा करने वाले के इल्म व हिकमत पर दलालत करती है। (फ़ा4) यानी उमूर को अज़ल में मुक़द्दर किया और उसकी तरफ़ राह दी या यह माना हैं कि रोज़ियां मुक़द्दर कीं और उनके तरीक़े कस्ब की राह बताई। (फ़ा5) यह अल्लाह तआ्ला की तरफ़ से अपने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बशारत है कि आपको हिफ़्ज़े क़ुरआन की निअ्मत बे मेहनत अ्ता हुई और यह आपका मोअजेज़ा है कि इतनी बड़ी किताबे अ्ज़ीम बग़ैर मेहनत व मशक़्क़त और बग़ैर तकरार व दौर के आपको हिफ़्ज़ हो गई। (जुमल) (फ़ा6) मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह इस्तिसना वाक़ेअ् न हुआ और अल्लाह तआ्ला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें। (ख़ाज़िन) (फ़ा7) कि वही तुम्हें बे मेहनत याद रहेगी मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह है कि आसानी के सामान से शरीअ्ते इस्लाम मुराद है जो निहायत सहल व आसान है। (फ़ा8) इस क़ुरआन मजीद से (फ़ा9) और कुछ लोग इससे मुनतफ़ेअ् हों **(बक़िया सफ़हा 972 पर)**

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝٦ لَّا يُسْمِنُ
وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝٧ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝١١ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۝١٣
وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝١٤ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝١٥ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۝١٦ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝١٧ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ
نُصِبَتْ ۝١٩ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝٢٠ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۝٢٣ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۝٢٤
اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۝٢٥ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝٢٦

सूरतुल् ग़ाशियति

(मक्की है इसमें 26 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

हल् अता–क ह़दीसुल् ग़ाशियः(1)वुजूहुंय्यौ–मइजिन् ख़ाशि–अ़तुन्(2)आमि–लतुन् नासि–बतुन्(3)
तस्ला नारन् ह़ामि–य–तन्(4)तुस्क़ा मिन् अ़ैनिन् आनियः(5)लै–स लहुम् त़आमुन् इल्ला मिन्
ज़रीअ़िल्(6)ला युस्मिनु व ला युग्नी मिन् जू–अ़्(7)वुजूहुंय्यौ–मइज़िन् नाअ़ि–मतुल्(8) लिसअ़्यिहा
राज़ि–यतुन्(9)फ़ी जन्नतिन् आ़लि–यतिल्(10)ला तस्मअ़ु फ़ीहा लाग़ियः(11)फ़ीहा अ़ैनुन् जारियः(12)फ़ीहा
सुरुरुम् मर्फ़ूअ़तुंव्(13)व अक्वाबुम् मौज़ू–अ़तुंव्(14)व नमारिक़ु मस्फ़ू–फ़तुंव्(15) व ज़राबिय्यु
मब्सूसः(16)अ–फ़ला यन्ज़ुरू–न इलल् इबिलि कै–फ़ ख़ुलिक़त्(17)व इलस्समाइ कै–फ़ रुफ़ि–अ़त्(18)व
इलल् जिबालि कै–फ़ नुसिबत्(19)व इलल् अर्ज़ि कै–फ़ सुतिह़त्(20)फ़–ज़क्किर् इन्नमा अन्–त
मुज़क्किर(21)लस्–त अ़लैहिम् बिमुसैतिरिन्(22)इल्ला मन् त–वल्ला व क–फ़र(23)फ़यु– अ़ज़्ज़ि
–बुहुल्लाहुल् अ़ज़ाबल् अक्बर(24)इन्–न इलैना इया–बहुम्(25) सुम्–म इन्–न अ़लैना ह़िसा– बहुम्(26)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

बेशक तुम्हारे पास (फ़ा2) उस मुसीबत की ख़बर आई जो छा जाएगी।(1) (फ़ा3) कितने ही मुँह उस दिन ज़लील होंगे।(2) काम करें मशक़्क़त झेले जायें।(3) भड़कती आग में(4) (फ़ा4) निहायत जलते चश्मा का पानी पिलाए जायें।(5) उनके लिए कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे।(6) (फ़ा5) कि न फ़रबही लायें और न भूक में काम दें।(7) (फ़ा6) कितने ही मुँह उस दिन चैन में हैं।(8) (फ़ा7) अपनी कोशिश पर राज़ी।(9) (फ़ा8) बुलन्द बाग़ में।(10) कि उसमें कोई बेहूदा बात न सुनेंगे।(11) उसमें रवाँ चश्मा है।(12) उसमें बुलन्द तख़्त है।(13) और चुने हुए कूज़े।(14) (फ़ा9) और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन।(15) और फैली हुई चाँदनियां।(16) (फ़ा10) तो क्या ऊँट को नहीं देखते कैसा बनाया गया।(17) और आसमान को कैसा ऊँचा किया गया।(18) (फ़ा11) और पहाड़ों को कैसे क़ाइम किये गए।(19) और ज़मीन को कैसे बिछाई गई।(20) तो तुम नसीहत सुनाओ (फ़ा12) तुम तो यही नसीहत सुनाने वाले हो।(21) तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा नहीं।(22) (फ़ा13) हां जो मुंह फेरे (फ़ा14) और कुफ़्र करे।(23) (फ़ा15) तो उसे अल्लाह बड़ा अ़ज़ाब देगा।(24) (फ़ा16) बेशक हमारी ही तरफ़ उनका फिरना है।(25) (फ़ा17) फिर बेशक हमारी ही तरफ़ उनका ह़िसाब है।(26) (रुकूअ़ 13)

(फ़ा1) सूरह ग़ाशियः मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 26 आयतें 92 कलिमे 381 हरफ़ हैं। (फ़ा2) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा3) ख़ल्क़ पर मुराद इससे क़ियामत है जिसके शदाइद व अहवाल हर चीज़ पर छा जायेंगे। (फ़ा4) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया इससे वह लोग मुराद हैं जो दीने इस्लाम पर न थे बुत परस्त थे या किताबी काफ़िर मिस्ल राहिबों और पुजारियों के उन्होंने मेहनतें भी उठाईं मशक़्क़तें भी झेलीं और नतीजा यह हुआ कि जहन्नम में गए। (फ़ा5) अ़ज़ाब तरह तरह का होगा और जो लोग अ़ज़ाब दिये जायेंगे उनके बहुत तब्क़े होंगे बाज़ को **(बक़िया सफ़हा 968 पर)**

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْفَجْرِ ۙ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۙ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۙ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۚ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۗ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۙ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۙ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ
مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۙ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۙ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ۙ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۙ فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۙ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ۚ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۗ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۗ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ
اَهَانَنِ ۚ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۙ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۗ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ۙ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۗ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۚ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۙ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۗ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۙ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۚ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۙ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ

सूरतुल् फ़ज्रि

(मक्की है इसमें 26 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल्फ़ज्रि(1)व लयालिन् अ़श्रिंव्(2)वश्शफ़्अ़ि वल्वत्रि(3)वल्लैलि इज़ा यस्रि(4)हल् फ़ी ज़ालि–क क़–समुल् लिज़ी हिज्र(5)अलम् त–र कै–फ़ फ़–अ़–ल रब्बु–क बिआ़दिन्(6)इ–र–म ज़ातिल् अ़िमादि (7)ल्लती लम् युख़्लक़् मिस्लुहा फ़िल् बिलाद(8)व समूदल्लज़ी–न जाबुस् सख़्–र बिल्वादि(9)व फ़िरऔ़–न ज़िल्औतादि(10)–ल्लज़ी–न तग़ौ फ़िल्बिलादि(11)फ़–अक्सरू फ़ीहल्फ़साद(12) फ़–सब्–ब अ़लैहिम् रब्बु–क सौ–त अ़ज़ाब(13)इन्–न रब्ब–क लबिल् मिर्साद(14)फ़–अम्मल् इन्सानु इज़ा मब्–तलाहु रब्बुहू फ़–अक्र–महू व नअ़्–अ़–महू फ़–यकूलु रब्बी अक्र–मन्(15)व अम्मा इज़ा मब्–तलाहु फ़–क़–द–र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़–यकूलु रब्बी अहानन्(16)कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल् यती–म(17)व ला तहाज़्ज़ू–न अ़ला तआ़मिल् मिस्कीन(18)व तअ्कुलू–नत्तुरा–स अक्लल् लम्मंव्(19) व तुहिब्बूनल् मा–ल हुब्बन् जम्मा(20)कल्ला इज़ा दुक्कतिल् अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्(21)व जा–अ रब्बु–क वल्म–लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा(22)व जी–अ यौ–मइज़िम् बि–जहन्न–म यौ–मइज़िंय्–त–ज़क्करुल् इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िक्रा(23)यकूलु यालै–तनी क़द्दम्तु लि–हयाती(24)फ़यौ– मइज़िल् ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ा–बहू अ–हदुंव्(25)व ला यूसिक़ु व–सा–क़हू अ–हद(26)या अय्युहन् नफ़्सुल्–मुत्मइन्नतु(27)–र्जिअ़ी इला रब्बिकि राज़ि–य–तम् मर्ज़िय्यतन्(28)फ़द्ख़ुली फ़ी अ़िबादी (29)वद्ख़ुली जन्नती(30)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

उस सुबह की क़सम।(1) (फ़ा2) और दस रातों की।(2) (फ़ा3) और जुफ़्त और ताक़ की।(3) (फ़ा4) और रात की जब चल दे।(4) (फ़ा5) क्यों उसमें अ़क़्लमन्द के लिए क़सम हुई।(5) (फ़ा6) क्या तुमने न देखा (फ़ा7) तुम्हारे रब ने आ़द के साथ कैसा किया।(6) वह इरम हद से ज़्यादा तूल वाले।(7) (फ़ा8) कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुआ।(8) (फ़ा9) और समूद जिन्होंने वादी में (फ़ा10) पत्थर की चट्टानें काटीं।(9) (फ़ा11) और फ़िरऔ़न की चौमेख़ा करता।(10) (फ़ा12) जिन्होंने शहरों में सरकशी की।(11) (फ़ा13) फिर उन में बहुत फ़साद फैलाया।(12) (फ़ा14) तो उन पर तुम्हारे रब ने अ़ज़ाब का कोड़ा बक़ुव्वत मारा।(13) बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाइब नहीं।(14) लेकिन आदमी तो जब उसे उसका रब आज़माए कि उसको जाह और निअ़्मत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इ़ज़्ज़त दी।(15) और अगर आज़माए और उसका रिज़्क़ उस पर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ख़्वार किया(16) यूं नहीं। (फ़ा15) बल्कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते।(17) (फ़ा16) और **(बक़िया सफ़हा 988 पर)**

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝١ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝٢ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝٣ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ۝٤ اَیَحْسَبُ اَنْ لَّنْ یَّقْدِرَ عَلَیْهِ اَحَدٌ ۝٥ یَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا
لُّبَدًا ۝٦ اَیَحْسَبُ اَنْ لَّمْ یَرَهٗۤ اَحَدٌ ۝٧ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَیْنَیْنِ ۝٨ وَلِسَانًا وَّشَفَتَیْنِ ۝٩ وَهَدَیْنٰهُ النَّجْدَیْنِ ۝١٠ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝١١ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝١٢
فَكُّ رَقَبَةٍ ۝١٣ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۝١٤ یَّتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝١٥ اَوْ مِسْكِیْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝١٦ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝١٧
اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْمَیْمَنَةِ ۝١٨ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْــَٔمَةِ ۝١٩ عَلَیْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝٢٠

सूरतुल् ब–लदि

(मक्की है इस सूरह में 20 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्ब–लदि(1)व अन्–त ह़िल्लुम् बिहाज़ल् ब–लदि(2)व वालिदिंव् व मा व–लद(3)ल–क़द् ख़–लक़्नल् इन्सा–न फ़ी क–बद(4)अ–यह़्सबु अल्लंय्यक़्दि–र अ़लैहि अ–ह़द(5) यकूलु अह्–लक्तु मालल् लु–बदा(6)अ–यह़्सबु अल्लम् य–रहू अ–ह़द(7)अ–लम् नजअ़ल् लहू अ़ैनैनि(8)व लिसानंव् व श–फ़तैनि(9)व हदैनाहुन् नज्दैनि(10)फ़लक़्त–ह़–मल् अ़–क़–ब–त(11)व मा अद्रा–क मल्–अ़– क़्–बः(12)फ़क्कु र–क़्–बतिन्(13)औ इत़्आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्ग़–बतिंय्(14) यतीमन् ज़ा मक़्र–बतिन्(15)औ मिस्कीनन् ज़ा मत्र–बः(16)सुम्–म का–न मिनल्लज़ी–न आ–मनू व तवास़ौ बिस्सब्रि व तवास़ौ बिल्मर्–ह़–मः(17)उलाइ–क अस्ह़ाबुल् मै–म–नः(18)वल्लज़ी–न क–फ़रू बिआयातिना हुम् अस्ह़ाबुल् मश्–अ–मः(19)अ़लैहिम् नारुम् मुअ्–स़–दः(20)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

मुझे इस शहर की क़सम।(1) (फ़ा2) कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।(2) (फ़ा3) और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उसकी औलाद की कि तुम हो।(3) (फ़ा4) बेशक हमने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया।(4) (फ़ा5) क्या आदमी यह समझता है कि हरगिज़ इस पर कोई क़ुदरत नहीं पाएगा।(5) (फ़ा6) कहता है मैंने ढेरों माल फ़ना कर दिया।(6) (फ़ा7) क्या आदमी यह समझता है कि उसे किसी ने न देखा।(7) (फ़ा8) क्या हमने उसकी दो आँखें न बनाईं।(8) (फ़ा9) और ज़बान (फ़ा10) और दो होंट।(9) (फ़ा11) और उसे दो उभरी चीज़ों की राह बताई।(10) (फ़ा12) फिर बे तअम्मुल घाटी में न कूदा।(11) (फ़ा13) और तूने क्या जाना वह घाटी क्या है।(12) (फ़ा14) किसी बन्दे की गर्दन छुड़ाना।(13) (फ़ा15) या भूक के दिन खाना देना।(14) (फ़ा16) रिश्तेदार यतीम को। (15) या ख़ाक नशीन मिस्कीन को।(16) (फ़ा17) फिर हुआ उनसे जो ईमान लाए (फ़ा18) और उन्होंने आपस में सब्र की वसीयतें कीं (फ़ा19) और आपस में मेहरबानी की वसीयतें कीं।(17) (फ़ा20) यह दाहिनी तरफ़ वाले हैं।(18) (फ़ा21) और जिन्होंने हमारी आयतों से कुफ़्र किया वह बायें तरफ़ वाले।(19) (फ़ा22) उन पर आग है कि उसमें डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई।(20) (फ़ा23) (रुकूअ़ 15)

(फ़ा1) सूरह बलद मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 20 आयतें 82 कलिमे 320 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी मक्का मुकर्रमा की (फ़ा3) इस आयत से मालूम हुआ कि यह अ़ज़मत मक्का मुकर्रमा को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रौनक़ अफ़रोज़ी की बदौलत हासिल हुई। (फ़ा4) एक क़ौल यह भी है कि वालिद से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और औलाद से आपकी उम्मत मुराद है (हुसैनी) (फ़ा5) कि हम्ल में एक तंग व तारीक मकान में रहे विलादत के वक़्त तकलीफ़ उठाए दूध पीने दूध छोड़ने कस्बे मआ़श और हयात व मौत की मशक़्क़तों को बरदाश्त कर ले। (फ़ा6) यह आयत अबुल अशद उसैद बिन कलदा के हक़ में नाज़िल हुई वह निहायत क़वी और ज़ोर आवर था और उसकी ताक़त का यह आलम था कि चमड़ा पाँव के नीचे दबा लेता था दस दस आदमी उसको खींचते और वह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाता मगर जितना उसके पाँव के नीचे होता हरगिज़ न निकल सकता और एक क़ौल यह है कि यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में नाज़िल हुई माना यह हैं कि यह काफ़िर अपनी क़ुव्वत पर मग़रूर मुसलमानों को कमज़ोर समझता है किस गुमान में है अल्लाह क़ादिर बरहक़ की (बक़िया सफ़हा 981 पर)

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۝ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۝ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۝ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝
فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝ اِذِ انْبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ
اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۝ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝

सूरतुश्शम्सि

(मक्की है इस सूरह में 15 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

वश्शम्सि व ज़ुहाहा(1)वल्क़—मरि इज़ा तलाहा(2)वन्नहारि इज़ा जल्लाहा(3)वल्लैलि इज़ा यग़्शाहा(4) वस्समाइ व मा बनाहा(5)वल्अर्ज़ि व मा तहाहा(6)व नफ़्सिंव् व मा सव्वाहा(7)फ़—अल्—ह—महा फ़ुजू—रहा व तक़्वाहा(8)क़द अफ़्ल—ह़ मन् ज़क्काहा(9)व क़द ख़ा—ब मन् दस्साहा(10)कज़्ज़—बत् समूदु बि—तग़्वाहा(11)इज़िम्ब—अ़—स अश्क़ाहा(12)फ़क़ा—ल लहुम् रसूलुल्लाहि ना—क़तल्लाहि व सुक़्याहा (13)फ़—कज़्ज़बूहु फ़—अ़—क़रूहा फ़—दम्द—म अ़लैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़—सव्वाहा(14)व ला यख़ाफ़ु अ़ुक़्बाहा(15)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)

सूरज और उसकी रौशनी की क़सम।(1) और चाँद की जब उसके पीछे आए।(2) (फ़ा2) और दिन की जब उसे चमकाए।(3) (फ़ा3) और रात की जब उसे छुपाए।(4) (फ़ा4) और आसमान और उसके बनाने वाले की क़सम।(5) और ज़मीन और उसके फैलाने वाले की क़सम।(6) और जान की और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया।(7) (फ़ा5) फिर उसकी बदकारी और उसकी परहेज़गारी दिल में डाली।(8) (फ़ा6) बेशक मुराद को पहुंचाया जिसने उसे (फ़ा7) सुथरा किया।(9) (फ़ा8) और नामुराद हुआ जिसने उसे मअ़सियत में छुपाया।(10) समूद ने अपनी सरकशी से झुठलाया।(11) (फ़ा9) जबकि उसका सब से बद बख़्त (फ़ा10) उठ खड़ा हुआ।(12) तो उनसे अल्लाह के रसूल (फ़ा11) ने फ़रमाया अल्लाह के नाक़ा (फ़ा12) और उसकी पीने की बारी से बचो(13) (फ़ा13) तो उन्होंने उसे झुठलाया फिर नाक़ा की कोचें काट दीं तो उन पर उनके रब ने उनके गुनाह के सबब (फ़ा14) तबाही डाल कर वह बस्ती बराबर कर दी।(14) (फ़ा15) और उसके पीछा करने का उसे ख़ौफ़ नहीं।(15) (फ़ा16) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा1) सूरह वशशम्स मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 15 आयतें 54 कलिमे 247 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद तुलूअ़ करे यह क़मरी महीने के पहले पन्द्रह दिन में होता है। (फ़ा3) यानी आफ़ताब को ख़ूब वाज़ेह करे क्योंकि दिन नूरे आफ़ताब का नाम है तो जितना दिन ज़्यादा रौशन होगा उतना ही आफ़ताब का ज़ुहूर ज़्यादा होगा क्योंकि असर की कुव्वत और उसका कमाल मुअस्सिर के कुव्वत व कमाल पर दलालत करता है या यह माना हैं कि जब दिन दुनिया को या ज़मीन को रौशन करे या शब की तारीकी को दूर करे। (फ़ा4) यानी आफ़ताब को और आफ़ाक़ ज़ुल्मत व तारीकी से भर जायें या यह माना कि जब रात दुनिया को छुपाये। (फ़ा5) और कुवाए कसीरा अ़ता फ़रमाए नुत्क़ समअ़ बसर फ़िक्र ख़्याल इल्म फ़हम सब कुछ अ़ता फ़रमाया। (फ़ा6) ख़ैर व शर और ताअ़त व मअ़सियत से उसे बाख़बर कर दिया और नेक व बद बना दिया (फ़ा7) यानी नफ़्स को। (फ़ा8) बुराईयों से। (फ़ा9) अपने रसूल हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को। (फ़ा10) क़िदार बिन सालिफ़ इन सब की मर्ज़ी से नाक़ा की कोचें काटने के लिए। (फ़ा11) हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा12) के दर पय होने। (फ़ा13) यानी जो दिन उसके पीदे का मुक़र्रर है उस रोज़ पानी में तअ़र्रुज़ न करो ताकि तुम पर अ़ज़ाब न आए (फ़ा14) यानी हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब और नाक़ा की कोचें काटने के सबब (फ़ा15) और सब को हलाक कर दिया उनमें से कोई न बचा (फ़ा16) जैसा बादशाहों को होता है क्योंकि वह मालिकुल मुल्क है जो चाहे करे किसी को मजाले दम ज़दन नहीं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसके माना यह भी बयान किये हैं कि हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम को उनमें से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि नुज़ूले अ़ज़ाब के बाद उन्हें ईज़ा पहुंचा सके।

سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٣ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧
وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣
فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ
نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۝١٩ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝٢٠ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝٢١

सूरतुल्लैलि

(मक्की है इस सूरह में 21 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्लैलि इज़ा यग़्शा(1)वन्नहारि इज़ा त–जल्ला(2)व मा ख़–ल–क़ज़्ज़–क–र वल्उन्सा(3) इन्–न सअ्–यकुम् ल–शत्ता(4)फ़–अम्मा मन् अअ्ता वत्तक़ा(5)व स़द्–द–क़ बिल्हुस्ना(6)फ़–सनु–यस्सिरुहु लिल्युस्रा(7)व अम्मा मम् बख़ि–ल वस्तग़्ना(8)व कज़्–ज–ब बिल्हुस्ना(9)फ़–सनु–यस्सिरुहू लिल् अुस्रा(10)व मा युग़्नी अ़न्हु मालुहू इज़ा त–रद्दा(11)इन्–न अ़लैना लल्हुदा (12)व इन्–न लना लल्–आख़ि–र–त वल्ऊला(13)फ़–अन्ज़र्तुकुम् नारन् त–लज़्ज़ा(14)ला यस्लाहा इल्लल् अश्क़(15)–ल्लज़ी कज़्–ज़–ब व त–वल्ला(16)व सयु–जन्नबुहल् अत्क़(17)ल्लज़ी युअ्ती मा–लहू य–त–ज़क्का(18)व मा लि–अ–ह़दिन् अ़िन्दहू मिन् निअ्–मतिन् तुज्ज़ा(19)इल्लबतिग़ा–अ वज्हि रब्बिहिल् अअ्ला(20)व लसौ–फ़ यर्ज़ा(21)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

और रात की क़सम जब छाए।(1) (फ़ा2) और दिन की जब चमके।(2) (फ़ा3) और उस (फ़ा4) की जिसने नर व मादा बनाए।(3) (फ़ा5) बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है।(4) (फ़ा6) तो वह जिसने दिया(फ़ा7)और परहेज़गारी की।(5) (फ़ा8) और सब से अच्छी को सच माना।(6) (फ़ा9) तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे।(7) फ़ा10) और वह जिसने बुख़्ल किया (फ़ा11) और बे-परवाह बना।(8) (फ़ा12) और सब से अच्छी को झुठलाया।(9) (फ़ा13) तो बहुत जल्द हम उसे दुशवारी मुहय्या कर देंगे।(10) (फ़ा14) और उसका माल उसे काम न आएगा जब हलाकत में पड़ेगा।(11) (फ़ा15) बेशक हिदायत फ़रमाना (फ़ा16) हमारे ज़िम्मा है।(12) और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के हम ही मालिक हैं।(13) तो मैं तुम्हें डराता हूं उस आग से जो भड़क रही है।(14) न जाएगा उसमें (फ़ा17) मगर बड़ा बद बख़्त।(15) जिसने झुठलाया(फ़ा18)और मुँह फेरा।(16) (फ़ा19)और बहुत जल्द उससे दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।(17) जो अपना माल देता है कि सुथरा हो।(18) (फ़ा20) और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए।(19) (फ़ा22) सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सबसे बुलन्द है।(20) और बेशक क़रीब है कि वह राज़ी होगा।(21) (फ़ा22)(रुकूअ़ 17)

(फ़ा1) सूरह वल्लैल मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 21 आयतें 71 कलिमे 310 हरफ़ हैं (फ़ा2) जहान पर अपनी तारीकी से कि वह वक़्त है ख़ल्क़ के सुकून का हर जानदार अपने ठिकाने पर आता है और हरकत व इज़्तेराब से साकिन होता है और मक़बूलाने हक़ सिद्क़े नियाज़ से मश्गूले मुनाजात होते हैं। (फ़ा3) और रात के अंधेरे को दूर करे कि वह वक़्त है सोतों के बेदार होने का और जानदारों के हरकत करने का और तलबे मआ़श में मश्गूल होने का। (फ़ा4) क़ादिरे अ़ज़ीमुल कुदरत (फ़ा5) एक ही पानी से। (फ़ा6) यानी तुम्हारे आमाल जुदागाना हैं कोई ताअ़त बजा लाकर जन्नत के लिए अ़मल करता है कोई नाफ़रमानी करके जहन्नम के लिए। (फ़ा7) अपना माल राहे ख़ुदा में और अल्लाह तआ़ला के हक़ को अदा किया। (फ़ा8) ममनूआ़त व मुहर्रमात से बचा। (फ़ा9) यानी मिल्लते इस्लाम को। (फ़ा10) जन्नत के लिए और उसे ऐसी ख़सलत की तौफ़ीक़ देंगे जो उसके लिए सबबे आसानी व राहत हो और वह ऐसे अ़मल करे जिनसे उसका रब राज़ी हो। (फ़ा11) और माल नेक कामों में ख़र्च न किया और अल्लाह तआ़ला के हक़ अदा न किये (फ़ा12) सवाब और निअ़मते (बक़िया सफ़हा 982 पर)

سُورَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالضُّحٰى ۝١ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝٣ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝٤ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝٥ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝٦ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

فَهَدٰى ۝٧ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝٨ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝٩ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝١٠ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝١١

सूरतुज़्ज़ुहा

(मक्की है इस सूरह में 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

वज़्ज़ुहा(1)वल्लैलि इज़ा सजा(2)मा वद्-द अ़-क रब्बु-क व मा क़ला(3)व लल्आख़ि-रतु ख़ैरुल् ल-क मिनल्ऊला(4)व लसौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा(5)अ-लम् यजिद्-क यतीमन् फ़आवा (6)व व-ज-दक ज़ाल्लन् फ़-हदा(7)व व-ज-द-क आ़इलन् फ़-अग्ना(8)फ़-अम्मल् यती-म फ़ला तक़्हर्(9)व अम्मस्साइ-ल फ़ला तन्हर्(10)व अम्मा बिनिअ़्-मति रब्बि-क फ़-ह़द्दिस्(11)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

चाश्त की क़सम।(1) (फ़ा2) और रात की जब पर्दा डाले।(2) (फ़ा3) कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना।(3) और बेशक पिछली तुम्हारे लिए पहली से बेहतर है।(4) (फ़ा4) और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें (फ़ा5) इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।(5) (फ़ा6) क्या उसने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी।(6) (फ़ा7) और तुम्हें अपनी मुहब्बत में खुद-रफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी।(7) (फ़ा8) और तुम्हें हाजतमन्द पाया फिर ग़नी कर दिया।(8) (फ़ा9) तो यतीम पर दबाव न डालो।(9) (फ़ा10) और मांगता को न झिड़को।(10) (फ़ा11) और अपने रब की नेअ़्मत का ख़ूब चर्चा करो।(11) (फ़ा12) (रुकूअ़ 18)

(फ़ा1) सूरह वज़्ज़ुहा मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 11 आयतें 40 कलिमे 172 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** एक मर्तबा ऐसा इत्तेफ़ाक़ हुआ कि चन्द रोज़ वही न आई तो कुफ़्फ़ार ने बतरीक़े तअ़न कहा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उनके रब ने छोड़ दिया और मकरूह जाना इस पर वज़्ज़ुहा नाज़िल हुई (फ़ा2) जिस वक़्त कि आफ़ताब बुलन्द हो क्योंकि यह वक़्त वही है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अपने कलाम से मुशर्रफ़ किया और उसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे मसला चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और उसका वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से क़बल ज़वाल तक है इमाम साहब के नज़दीक चाश्त की नमाज़ दो रकअ़तें हैं या चार एक सलाम के साथ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ज़ुहा से दिन मुराद है (फ़ा3) और उसकी तारीकी आ़म हो जाये इमाम जअ़्फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वह चाश्त है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है नूरे जमाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ और शब किनाया है आपके गेसूए अम्बरीन से (रूहुल बयान) (फ़ा4) यानी आख़िरत दुनिया से बेहतर क्योंकि वहां आपके लिए मक़ामे महमूद व हौज़े मौरूद व ख़ैरे मौऊद और तमाम अम्बिया व रुसुल पर तक़द्दुम और आपकी उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना और आपकी शफ़ाअ़त से मोमिनीन के मर्तबे और दर्जे बुलन्द होना और बे इन्तेहा इज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आतीं और मुफ़स्सिरीन ने उसके यह माना भी बयान फ़रमाये हैं कि आने वाले अहवाल आपके लिए गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि हक़ तआ़ला का वादा है कि वह रोज़ बरोज़ आपके दर्जे बुलन्द करेगा और इज़्ज़त पर इज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़्यादा फ़रमाएगा और साअ़त बसाअ़त आपके मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे। (फ़ा5) दुनिया व आख़िरत में (फ़ा6) अल्लाह तआ़ला का अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह वादए करीमा उन निअ़्मतों को भी शामिल है जो आपको दुनिया अ़ता फ़रमाईं कमाले नफ़्स और उलूमे अव्वलीन व आख़िरीन और ज़ुहूरे अमर और एअ़्लाए दीन और वह .फ़ुतूहात जो अहदे मुबारक में हुईं और अहदे सहाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसलमानों को होती रहेंगी और दावत का आ़म होना और इस्लाम का मशारिक़ व मग़ारिब में फैल जाना और आपकी उम्मत का बेहतरीन उमम होना और आपके वह करामात व कमालात जिनका अल्लाह ही आलिम है और आख़िरत की इज़्ज़त व तकरीम को भी शामिल है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको शफ़ाअ़त आ़म्मा व ख़ास्सा और मक़ामे महमूद वग़ैरह जलील लिअ़्मतें अ़ता फ़रमाईं मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के हक़ में रोकर दुआ़ फ़रमाई और अ़र्ज़ किया अल्लाहुम्-म उम्मती उम्मती अल्लाह तआ़ला ने जिबरील को हुक्म दिया कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि **(बक़िया सफ़हा 989 पर)**

سُوْرَةُ الْاِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

सूरतु अ–लम् नश्रह

(मक्की है इस सूरह में 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलम् नश्रह् ल–क सद्र–क(1)व व–ज़अ़ना अ़न्–क विज़्र–क(2)ल्लज़ी अन्क़–ज़ ज़ह्र–क(3) व र–फ़अ़ना ल–क ज़िक्–रक(4)फ़इन्–न म–अ़ल् अुस्रि युस्रन्(5)इन्–न म–अ़ल् अुस्रि युस्रा(6) फ़–इज़ा फ़–रग़्–त फ़न्सब्(7)व इला रब्बि–क फ़र्ग़ब्(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क्या हमने तुम्हारा सीना कुशादा न किया।(1) (फ़ा2) और तुम पर से तुम्हारा वह बोझ उतार लिया।(2) जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी।(3) (फ़ा3) और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।(4) (फ़ा4) तो बेशक दुशवारी के साथ आसानी है।(5) बेशक दुशवारी के साथ आसानी है।(6) (फ़ा5) तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो दुआ में (फ़ा6) मेहनत करो।(7) (फ़ा7) और अपने रब ही की तरफ़ रग़बत करो।(8) (फ़ा8) (रुकूअ़ 19)

(फ़ा1) सूरह अलम नश्रह मक्की है इसमें एक रुकूअ़ आठ आतयें 27 कलिमे 103 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी हमने आपके सीना को कुशादा और वसीअ़ किया हिदायत व मअ़रेफ़त और मौअ़ेज़त व नबुव्वत और इल्म व हिकमत के लिए यहां तक कि आलमे ग़ैब व शहादत उसकी वुसअ़त में समा गए और अ़लाइक़े जिस्मानिया अनवारे रूहानिया के लिए मानेअ़ न हो सके और उलूमे लदुनिया व हुक्मे इलाहिया व मआ़रिफ़े रब्बानिया व हक़ाइक़े रहमानिया सीनए पाक में जलवा नुमा हुए और ज़ाहिरी शरहे सद्र भी बार बार हुआ इब्तेदाए उम्र शरीफ़ में और इब्तेदाए नुज़ूल वही के वक़्त और शबे मेअ़राज जैसा कि अहादीस में आया है उसकी शक्ल यह थी कि जिबरील अमीन ने सीनए पाक को चाक करके क़लबे मुबारक निकाला और ज़रीं तश्त में आबे ज़मज़म से गुस्ल दिया और नूर व हिकमत से भर कर उसको उसकी जगह रख दिया। (फ़ा3) उस बोझ से मुराद या वह ग़म है जो आपको कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से रहता था या उम्मत के गुनाहों का ग़म जिसमें क़लबे मुबारक मश्गूल रहता था मुराद यह है कि हमने आपको मक़बुलुश्शफ़ाअ़त करके वह बारे ग़म दूर कर दिया। (फ़ा4) हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरील से इस आयत को दरियाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने कहा अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि आपके ज़िक्र की बुलन्दी यह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाये मेरे साथ आपका भी ज़िक्र किया जाये। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मुराद इससे यह है कि अज़ान में तकबीर में तशह्हुद में मिम्बरों पर खुतबों में तो अगर कोई अल्लाह तआ़ला की इबादत करे हर बात में इसकी तस्दीक़ करे और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की गवाही न दे तो यह सब बेकार वह काफ़िर ही रहेगा। क़तादा ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने आपका ज़िक्र दुनिया व आख़िरत में बुलन्द किया हर ख़तीब हर तशह्हुद पढ़ने वाला अश्–हदु अल्–ला–इला–ह इल्लल्लाहु के साथ अश्–हदु अन्–न मुहम्मदर्–रसूलुल्लाहि पुकारता है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आपके ज़िक्र की बुलन्दी यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया से आप पर ईमान लाने का अहद लिया (फ़ा5) यानी जो शिद्दत व सख़्ती कि आप कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला में बरदाश्त फ़रमा रहे हैं उसके साथ ही आसानी है कि हम आपको उन पर ग़लबा अ़ता फ़रमायेंगे (फ़ा6) यानी आख़िरत की (फ़ा7) कि दुआ बाद नमाज़ मक़बूल होती है इस दुआ से मुराद आख़िर नमाज़ की वह दुआ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वह दुआ जो सलाम के बाद हो उसमें इख़्तिलाफ़ है (फ़ा8) उसी के फ़ज़्ल के तालिब रह. और उसी पर तवक्कुल करो

(बक़िया सफ़हा 959 का) ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके (फ़ा10) जो अरज़ी पैदावार नबातात व अश्जार के लिए मिस्ल बाप के है (फ़ा11) और नबातात के लिए मिस्ल मां के है और और यह दोनों अल्लाह तआ़ला की अ़जीब नेअ़मतें हैं और उनमें कुदरते इलाही के बेशुमार आसार नुमूदार हैं जिन में ग़ौर करने से आदमी को बअ़्स बादलमौत के बहुत से दलाइल मिलते हैं। (फ़ा12) कि हक़ व बातिल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ कर देता है (फ़ा13) जो निकम्मी और बेकार हो (फ़ा14) और दीने इलाही के मिटाने और नूरे हक़ को बुझाने और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुंचाने के लिए तरह तरह के दाँव करते हैं (फ़ा15) जिसकी उन्हें ख़बर नहीं (फ़ा16) ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा17) चन्द रोज़ की कि वह अ़न्क़रीब हलाक किये जायेंगे चुनांचे ऐसा ही हुआ और और बद्र में उन्हें अ़ज़ाबे इलाही ने पकड़ा (व नसखुल अमहाल बआयतिस्सैफ़)

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ○ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ○ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ○ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْۤ اَحْسَنِ تَقْوِیْمٍ ○ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِیْنَ ○ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَیْرُ مَمْنُوْنٍ ○ فَمَا یُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّیْنِ ○ اَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِیْنَ ○

सूरतुत्तीन

(मक्की है इस सूरह में 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि(1)व तूरि सीनी–न(2)व हाज़ल् ब–लदिल् अमीन(3)ल–क़द ख़–लक़्नल् इन्सा–न फ़ी अह्सनि तक़्वीम(4)सुम्–म र–ददनाहु अस्फ़–ल साफ़िलीन(5)इल्लल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़– लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून(6)फ़मा यु–कज़्ज़िबु–क बअ़्दु बिद्दीन(7) अलै–सल्लाहु बि–अह्कमिल् हाकिमीन(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
इंजीर की क़सम और ज़ैतून।(1) (फ़ा2) और तूरे सीना।(2) (फ़ा3) और इस अमान वाले शहर की।(3) (फ़ा4) बेशक हमने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया।(4) फिर उसे हर नीची से नीची सी हालत की तरफ़ फेर दिया।(5) (फ़ा5) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें बेहद सवाब है।(6) (फ़ा6) तो अब (फ़ा7) क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुठलाने पर बाइस है।(7) (फ़ा8) क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं।(8) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा1) सूरह वत्तीन मक्की है उसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें चौंतीस कलिमे 105 हरफ़ हैं (फ़ा2) इन्जीर निहायत उम्दा मेवा है जिसमें फ़ुज़ला नहीं सरीउल हज़्म कसीरुन्नफ़ा मुलय्यन मुहल्लिल दाफ़ेअ़ रेग मुफ़्तेह सुदह जिगर बदन का फ़रबा करने वाला बलग़म को छांटने वाला ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है उस का तेल रौशनी के काम में भी लाया जाता है और बजाए सालन के भी खाया जाता है यह वस्फ़ दुनिया के किसी तेल में नहीं इसका दरख़्त ख़ुश्क पहाड़ों पैदा होता है जिनमें दहनियत का नाम व निशान नहीं बग़ैर ख़िदमत के परवरिश पाता है हज़ारों बरस रहता इन चीज़ों में क़ुदरते इलाही के आसार ज़ाहिर हैं। (फ़ा3) यह वह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआ़ला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सीना उस जगह का नाम है जहां यह पहाड़ वाक़ेअ़ है या ब-मअ़नी ख़ुश मन्ज़र के है जहां कसरत से फलदार दरख़्त हों (फ़ा4) यानी मक्का मुकर्रमा की (फ़ा5) यानी बुढ़ापे की तरफ़ जबकि बदन ज़ईफ़ आज़ा नाकारा अक़्ल नाक़िस पुश्त ख़म बाल सफ़ेद हो जाते हैं जिल्द में झुर्रियां पड़ जाती हैं अपने ज़रूरियात अन्जाम देने में मजबूर हो जाता है या यह माना हैं कि जब उसने अच्छी शक्ल व सूरत की शुक्र गुज़ारी न की और नाफ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के असफ़ल तरीन दरकात को हमने उसका ठिकाना कर दिया। (फ़ा6) अगरचे ज़ोफ़े पीरी के बाइस वह जवानी की तरह कसीर ताअ़तें बजा न ला सकें और उनके अ़मल कम हो जायें लेकिन करमे इलाही से उन्हें वही अज्र मिलेगा जो शबाब और क़ुव्वत के ज़माना में अ़मल करने से मिलता था और उतने ही अमल उनके लिखे जायेंगे (फ़ा7) इस बयान क़ातेअ़ बुरहान सातेअ़ के बाद ऐ काफ़िर (फ़ा8) और तू अल्लाह तआ़ला की यह क़ुदरतें देखने के बावजूद क्यों बअ़्स व हिसाब व जज़ा का इंकार करता है।

(बक़िया सफ़हा 961 का) ज़क़्कूम खाने को दिया जाएगा बाज़ को ग़िस्लीन (दोज़ख़ियों की पीप) बाज़ को आग के कांटे। (फ़ा6) यानी उनसे ग़िज़ा का नफ़ा हासिल न होगा क्योंकि ग़िज़ा के दो ही फ़ाइदे हैं एक यह कि भूख की तकलीफ़ रफ़ा करे दूसरे यह कि बदन को फ़रबा करे यह दोनों वस्फ़ जहन्नमियों के खाने में नहीं बल्कि वह शदीद अ़ज़ाब है। (फ़ा7) ऐश व ख़ुशी में और निअ़्मत व करामत में। (फ़ा8) यानी उस अ़मल व ताअ़त पर जो दुनिया में बजा लाये थे। (फ़ा9) चश्मे के किनारों पर जिन के देखने से भी लज़्ज़त हासिल हो और जब पीना चाहें तो वह भरे मिलें। (फ़ा10) इस सूरत में जन्नत की नेअ़्मतों का ज़िक्र सुनकर कुफ़्फ़ार ने तअ़ज्जुब किया और झुठलाया तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अपने अ़जाइबे सनअ़त में नज़र करने की हिदायत फ़रमाता है ताकि वह समझें कि जिस क़ादिरे हकीम ने दुनिया में ऐसी अ़जीब व ग़रीब चीज़ें पैदा की हैं उसकी क़ुदरत से जन्नती निअ़्मतों का पैदा फ़रमाना किस तरह क़ाबिले तअ़ज्जुब व लाइक़े इन्कार हो सकता है चुनांचे इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा11) बग़ैर सुतून के (फ़ा12) अल्लाह तआ़ला की निअ़्मतों और उसके दलाइले क़ुदरत बयान फ़रमा कर (फ़ा13) कि जब्र करो (हाज़िहिल् आयतु नुसिखत् बिआयतिल् क़िताल) (फ़ा14) ईमान लाने से (फ़ा15) बाद नसीहत के (फ़ा16) आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा (फ़ा१७) बाद मौत के

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٣ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ۝٦
اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝٧ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۝٩ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝١٠ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝١٢ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٣
اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝١٤ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝١٧ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝١٨ كَلَّا ۭ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝١٩

सूरतुल् अ़लक़्

(मक्की है इस सूरह में 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल् लज़ी ख़-लक़(1)ख़-ल-क़ल् इन्सा-न मिन् अ़-लक़(2)इक़्रअ् व रब्बुकल् अक्रमु (3)ल्लज़ी अ़ल्ल-म बिल्क़-लमि(4)अ़ल्ल-मल् इन्सा-न मा लम् यअ्लम्(5)कल्ला इन्नल् इन्सा-न ल-यत़्ग़ा(6)अंर्-रआहुस्तग़्ना(7)इन्-न इला रब्बिकर् रुज्आ(8)अ-रऐ-तल् लज़ी यन्हा(9) अ़ब्दन् इज़ा स़ल्ला (10)अ-रऐ-त इन् का-न अ़लल्हुदा(11)औ अ-म-र बित्तक़्वा(12)अ-रऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला(13)अ-लम् यअ्लम् बिअन्नल्ला-ह यरा(14)कल्ला लइल्लम् यन्तहि ल-नस्फ़-अ़म् बिन्नासि-यति(15)नासि-यतिन् काज़ि-बतिन् ख़ातिअ(16)फ़ल्-यद्अु नादियः(17) स-नद्अुज़् ज़बानियः(18)कल्ला ला तुतिअ्हु वस्जुद् वक़्तरिब्(19)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

पढ़ो अपने रब के नाम से (फ़ा2) जिसने पैदा किया।(1) (फ़ा3) आदमी को ख़ून की फुटक से बनाया।(2) पढ़ो (फ़ा4) और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम।(3) जिसने क़लम से लिखना सिखाया।(4) (फ़ा5) आदमी को सिखाया जो न जानता था।(5) (फ़ा6) हां हां बेशक आदमी सरकशी करता है।(6) इस पर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया।(7) (फ़ा7) बेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ फिरना है।(8) (फ़ा8) भला देखो तो जो मना करता है।(9) बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े।(10) (फ़ा9) भला देखो तो अगर वह हिदायत पर होता।(11) या परहेज़गारी बताता तो क्या ख़ूब था।(12) भला देखो तो अगर झुठलाया (फ़ा10) और मुँह फेरा।(13) (फ़ा11) तो क्या हाल होगा क्या न जाना (फ़ा12) कि अल्लाह देख रहा है।(14) (फ़ा13) हां हां अगर बाज़ न आया (फ़ा14) तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खीचेंगे।(15) (फ़ा15) कैसी पेशानी झूठी ख़ताकार।(16) अब पुकारे अपनी मजलिस को।(17) (फ़ा16) अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं।(18) (फ़ा17) हां हां उसकी न सुनो और सजदा करो (फ़ा18) और हम से क़रीब हो जाओ।(19) (रुकूअ़ 21)

(फ़ा1) सूरह इक़रा इसको सूरह अ़लक़ भी कहते हैं यह सूरत मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 19 आयतें 92 कलिमे 280 हरफ़ हैं अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक यह सूरत सब से पहले नाज़िल हुई और इसकी पहली पांच आयतें मा लम् यअ्लम् तक ग़ारे हिरा में नाज़िल हुईं फ़रिश्ते ने आकर हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया इक़्रअ् यानी पढ़िये फ़रमाया हम पढ़े नहीं उसने सीना से लगा कर बहुत ज़ोर से दबाया फिर छोड़ कर इक़्रअ् कहा फिर आपने वही जवाब दिया तीन मर्तबा ऐसा ही हुआ फिर उसके साथ साथ आपने मालम् यअ्लम् तक पढ़ा (फ़ा2) यानी क़िराअत की इब्तेदा अदबन अल्लाह तआ़ला के नाम से हो इस तक़दीर पर आयत से साबित होता है कि क़िराअत की इब्तेदा बिस्मिल्लाह के साथ मुस्तहब है (फ़ा3) तमाम ख़ल्क़ को (फ़ा4) दोबारा क़िराअत के हुक्म से मुराद यह है कि तबलीग़ और उम्मत तालीम के लिए पढ़िये (फ़ा5) इससे किताबत की फ़ज़ीलत साबित हुई और दर हक़ीक़त किताबत में बड़े मुनाफ़ा हैं किताबत ही से उलूम ज़ब्त में आते हैं गुज़रे हुए लोगों की ख़बरें और उनके अहवाल और उनके कलाम महफ़ूज़ रहते हैं किताबत नहीं होती तो दीन व दुनिया के काम क़ाइम न रह सकते (फ़ा6) आदमी से मुराद यहां हज़रत आदम हैं और जो उन्हें सिखाया इससे मुराद इल्म अस्मा और एक क़ौल यह है कि इन्सान से मुराद यहां सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं कि आपको अल्लाह तआ़ला ने जमीअ़ अशिया के उलूम अ़ता फ़रमाये (मुआ़लिम व ख़ाज़िन) (फ़ा7) यानी ग़फ़लत का सबब दुनिया की मुहब्बत और माल पर तकब्बुर है यह आयतें अबू जहल **(बक़िया सफ़हा 975 पर)**

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

सूरतुल् क़दरि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लै–लतिल् क़दरि(1)व मां अद्रा–क मा लै–लतुल् क़द्र(2)लै–लतुल् क़दरि ख़ैरुम् मिन् अल्फ़ि शह्र(3)त–नज़्ज़लुल् मलाइ–कतु वर्रूहु फ़ीहा बि–इज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्(4)सलामुन् हि–य ह़त्ता मत्–लअ़िल् फ़ज्रि(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

बेशक हमने इसे (फ़ा2) शबे क़द्र में उतारा।(1) (फ़ा3) और तुमने क्या जाना क्या शबे क़द्र।(2) शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर।(3) (फ़ा4) उसमें फ़रिश्ते और जिब्रईल उतरते हैं (फ़ा5) अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए।(4) (फ़ा6) वह सलामती है सुबह चमकने तक।(5) (फ़ा7) (रुकूअ़ 22)

(फ़ा1) सूरतुल क़द्र मदनी व बक़ौले मक्की है इसमें एक रुकूअ़ पांच आयतें तीस कलिमे 112 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी क़ुरआन मजीद को लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ यकबारगी (फ़ा3) शबे क़द्र शरफ़ व बरकत वाली रात है इसको शबे क़द्र इस लिए कहते हैं कि इस शब में साल भर के अहकाम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाइका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है यह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइस इसको शबे क़द्र कहते हैं और यह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में आमाले सालिहा मन्क़ूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उनकी क़द्र की जाती है इस लिए इसको शबे क़द्र कहते हैं अहादीस में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जिसने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी करके इबादत की अल्लाह तआ़ला उसके साल भर के गुनाह बख़्श देता है आदमी को चाहिए कि इस शब में कसरत से इस्तिग़फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे साल भर में शबे क़द्र एक मर्तबा आती है और रिवायाते कसीरा से साबित है कि वह रमज़ानुल मुबारक के अ़शरए अख़ीरा में होती है और अक्सर इसकी भी ताक़ रातों में से किसी रात में बाज़ उलमा के नज़दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है यही हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है इस रात के फ़ज़ाइले अ़ज़ीमा अगली आयतों में इरशाद फ़रमाये जाते हैं (फ़ा4) जो शबे क़द्र से ख़ाली हों उस एक रात में नेक अ़मल करना हज़ार रातों के अ़मल से बेहतर है हदीस शरीफ़ में है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मे गुज़श्ता के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो तमाम रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था इस तरह उसने हज़ार महीने गुज़ारे थे मुसलमानों को इससे तअ़ज्जुब हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने आपको शबे क़द्र अ़ता फ़रमाई और यह आयत नाज़िल की कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है (अख़रजा इब्ने जरीर अ़न तरीक़े मुजाहिद) यह अल्लाह तआ़ला का अपने हबीब पर करम है कि आपके उम्मती शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो उनका सवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इबादत करने वालों से ज़्यादा हो (फ़ा5) ज़मीन की तरफ़ और जो बन्दा खड़ा या बैठा यादे इलाही में मश्ग़ूल होता है उसको सलाम करते हैं और उसके हक़ में दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करते हैं (फ़ा6) जो अल्लाह तआ़ला ने उस साल के लिए मुक़द्दर फ़रमाया (फ़ा7) बलाओं और आफ़तों से।

(बक़िया सफ़हा 970 पर) उसे काहे से बनाया।(18) पानी की बूंद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे तरह तरह के अन्दाज़ों पर रखा।(19) (फ़ा18) फिर उसे रास्ता आसान किया।(20) (फ़ा19) फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में रखवाया।(21) (फ़ा20) फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला।(22) (फ़ा21) कोई नहीं उसने अब तक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुआ था।(23) (फ़ा22) तो आदमी को चाहिये अपने खानों को देखे।(24) (फ़ा23) कि हमने अच्छी तरह पानी डाला।(25) (फ़ा24) फिर ज़मीन को ख़ूब चीरा।(26) तो उसमें उगाया अनाज।(27) और अंगूर और चारा।(28) और ज़ैतून और खजूर।(29) और घने बाग़ीचे।(30) और मेवे और दूब (घास)।(31) तुम्हारे फ़ाइदे को और तुम्हारे चौपायों के।(32) फिर जब आएगी वह कान फाड़ने वाली चिंघाड़।(33) (फ़ा25) उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई।(34) और माँ और बाप(35) और जोरू और बेटों से।(36) (फ़ा26) उनमें से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वही उसे बस है।(37) (फ़ा27) कितने मुंह उस दिन रौशन होंगे।(38) (फ़ा28) **(बक़िया सफ़हा 976 पर)**

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ

كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝ جَزَاۗؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝

सूरतुल् बय्यिनति

(मक्की है इस सूरह में 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लम् यकुनिल् लज़ी–न क–फ़रू मिन् अह्लिल् किताबि वल्मुश्रिकी–न मुन्फ़क्की–न ह़त्ता तअ्ति –यहुमुल् बय्यिनः(1)रसूलुम् मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म् मुतह्–ह–र–तन्(2)फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमः(3) व मा त–फ़र्रक़ल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब इल्ला मिम् बअ्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनः(4)व मा उमिरू इल्ला लियअ्बुदुल्ला–ह मुख़्लिसी–न लहुद्दी–न हु–नफ़ा–अ व युक़ीमुस्सला–त व यूअ्तुज़्ज़का–त व ज़ालि–क दीनुल् क़य्यिमः(5)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् अह्लिल्किताबि वल्मुश्रिकी–न फ़ी नारि जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा उलाइ–क हुम् शर्रुल् बरिय्यः(6)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अमिलुस्सालिहाति उलाइ–क हुम् ख़ैरुल् बरियः(7)जज़ाउहुम् अिन्–द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्ति–हल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ज़ालि–क लिमन् ख़शि–य रब्बः(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

किताबी काफ़िर (फ़ा2) और मुशरिक (फ़ा3) अपना दीन छोड़ने को न थे जब तक उनके पास रौशन दलील न आए।(1) (फ़ा4) वह कौन वह अल्लाह का रसूल (फ़ा5) कि पाक सहीफ़े पढ़ता है।(2) (फ़ा6) उन में सीधी बातें लिखी हैं।(3) (फ़ा7) और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बाद इसके कि वह रौशन दलील (फ़ा8) उनके पास तशरीफ़ लाए।(4) (फ़ा9) और उन लोगों को तो (फ़ा10) यही हुक्म हुआ कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अ़क़ीदा लाते (फ़ा11) एक तरफ़ के होकर (फ़ा12) और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और यह सीधा दीन है।(5) बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुशरिक सब जहन्नम की आग में हैं हमेशा उसमें रहेंगे वही तमाम मख़्लूक़ में बदतर हैं।(6) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं।(7) उनका सिला उनके रब के पास बसने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी (फ़ा13) और वह उस से राज़ी (फ़ा14) यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे।(8) (फ़ा15) (रुकूअ़ 23)

(फ़ा1) सूरह लम यकुन् इसको सूरह बय्यिना भी कहते हैं जम्हूर के नज़दीक यह सूरत मदनी है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक रिवायत यह है कि मक्की है इस सूरत में एक रुकूअ् आठ आयतें 94 कलिमे 399 हरफ़ हैं (फ़ा2) यहूद व नसारा (फ़ा3) बुत परस्त (फ़ा4) यानी सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हों क्योंकि हुज़ूरे अक़्दस अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात की तशरीफ़ आवरी से पहले यह तमाम यही कहते थे कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वह नबी मौऊद तशरीफ़ फ़रमा न हों जिनका ज़िक्र तौरेत व इन्जील में है (फ़ा5) यानी सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा6) यानी कुरआन मजीद (फ़ा7) हक़ अ़द्ल की (फ़ा8) यानी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा9) मुराद यह है कि पहले से तो सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे कि जब नबी मौऊद तशरीफ़ लायें तो हम उन पर ईमान लायेंगे लेकिन जब वह नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हुए तो बाज़ तो आप पर ईमान ला[illegible] और बाज़ हसदन व इनादन कुफ़्र इख़्तियार किया (फ़ा10) तौरेत व इन्जील (**बक़िया सफ़हा 951 पर**)

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ○ وَ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ○ وَ قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ○ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ○ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ○ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ
اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ○ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ○ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ○

सूरतुज़् ज़िल्ज़ालि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा ज़ुल्ज़ि–लतिल् अर्ज़ु ज़िल्ज़ा–लहा(1)व अख़्र–जतिल् अर्ज़ु अस्क़ा–लहा(2)व क़ालल् इन्सानु मा लहा(3)यौ–मइज़िन् तुहद्दिसु अख़्बा–रहा(4)बि–अन्–न रब्ब–क औहा लहा(5) यौ–मइज़िंय्यस्दुरुन् नासु अश्तातल् लियुरौ अअ़्मा–लहुम्(6)फ़मंय्यअ़्–मल् मिस्क़ा–ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यरः(7)व मंय्यअ़्मल् मिस्क़ा–ल ज़र्रतिन् शर्रंय्यरः(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब ज़मीन थरथरा दी जाए (फ़ा2) जैसा उसका थरथराना ठहरा है।(1) (फ़ा3) और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे।(2) (फ़ा4) और आदमी कहे इसे क्या हुआ।(3) (फ़ा5) उस दिन वह अपनी ख़बरें बताएगी।(4) (फ़ा6) इस लिए कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा।(5) (फ़ा7) उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे (फ़ा8) कई राह होकर (फ़ा9) ताकि अपना किया(6) (फ़ा10) दिखाये जायें। तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।(7) और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसेदेखेगा।(8) (फ़ा11)(रुकूअ़ 24)

(फ़ा1) सूरह इज़ाज़ुल् ज़िलत जिसको सूरए ज़लज़ला भी कहते हैं मक्की व बक़ौले मदनी है इसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें 35 कलिमे और 139 हरफ़ हैं। (फ़ा2) क़ियामत क़ाइम होने के नज़दीक या रोज़े क़ियामत (फ़ा3) और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई इमारत कोई पहाड़ बाक़ी न रहे हर चीज़ टूट फूट जाए (फ़ा4) यानी ख़ज़ाने और मुर्दे जो इसमें हैं वह सब निकल कर बाहर आ पड़ें (फ़ा5) कि ऐसी मुज़तरिब हुई और इतना शदीद ज़लज़ला आया कि जो कुछ उसके अन्दर था सब बाहर फेंक दिया (फ़ा6) और जो नेकी बदी इस पर की गई सब बयान करेगी हदीस शरीफ़ में है कि हर मर्द व औरत ने जो कुछ इस पर किया उसकी गवाही देगी कहेगी फ़लां रोज़ यह किया फ़लां रोज़ यह (तिर्मिज़ी) (फ़ा7) कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो अ़मल इस पर किये गये हैं उनकी ख़बरें दें (फ़ा8) मौक़फ़ हिसाब से। (फ़ा9) कोई दहनी तरफ़ से होकर जन्नत की तरफ़ जाएगा कोई बायें जानिब से दोज़ख़ की तरफ़ (फ़ा10) यानी अपने आमाल की जज़ा (फ़ा11) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े क़ियामत उसके नेक व बद आमाल दिखाये जायेंगे मोमिन को उसकी नेकियां और बदियां दिखा कर अल्लाह तआ़ला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद् कर दी जायेंगी क्योंकि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उसको अ़ज़ाब किया जाएगा मुहम्मद बिन कअ़ब क़रज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वह उसकी जज़ा दुनिया ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुनिया से निकलेगा तो उसके पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुनिया में पाएगा तो आख़िरत में उसके साथ कोई बदी न होगी इस आयत में तरग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब है कि गुनाह छोटा सा भी वबाल है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह फ़रमाया है कि पहली आयत मोमिनीन के हक़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के।

(बक़िया सफ़हा 960 का) (फ़ा10) अल्लाह तआ़ला से। (फ़ा11) पन्द व नसीहत (फ़ा12) **शाने नुज़ूलः** बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा और उतबा बिन रबीआ़ के हक़ में नाज़िल हुई (फ़ा13) कि मर कर ही अ़ज़ाब से छूट सके (फ़ा14) ऐसा जीना जिससे कुछ भी आराम पाये (फ़ा15) ईमान लाकर या यह माना हैं उसने नमाज़ के लिए तहारत की इस तक़दीर पर आयत से नमाज़ के लिए वुज़ू और गुस्ल साबित होता है (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा16) यानी तकबीर इफ़्तेताह कह कर (फ़ा17) पंजगाना मसलाः इस आयत से तकबीरे इफ़्तेताह साबित हुई और यह भी साबित हुआ कि वह नमाज़ का जुज़्व नहीं है क्योंकि नमाज़ का इस पर अ़तफ़ किया गया है और यह भी साबित हुआ कि इफ़्तेताह नमाज़ का अल्लाह तआ़ला के हर नाम से जाइज़ है इस आयत की तफ़सीर में यह कहा गया कि त-ज़क्का से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ता में तकबीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है (तफ़सीर मदारिक व अहमदी) (फ़ा18) आख़िरत पर इसी लिए वह अमल नहीं करते जो वहां काम आयें (फ़ा19) यानी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आख़िरत का बेहतर होना (फ़ा20) जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए।

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ عَلٰى

ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ

सूरतुल् आदियाति

(मक्की है इस सूरह में 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्आदियाति ज़ब्हन्(1)फ़ल्मूरियाति क़दहन्(2)फ़ल्मुग़ीराति सुब्हन्(3)फ़–अ–सर्–न बिही नक़्अन्
(4)फ़–व–सत्–न बिही जम्अन्(5)इन्नल् इन्सा–न लि–रब्बिही ल–कनूद(6)व इन्नहू अ़ला ज़ालि–
क ल–शहीद(7)व इन्नहू लिहुब्बिल् ख़ैरि ल–शदीद(8)अ–फ़ला यअ्लमु इज़ा बुअ्सि–र मा
फ़िल्कुबूरि(9)व हुस्सि–ल मा फ़िस्सुदूरि(10)इन्–न रब्बहुम् बिहिम् यौ–मइज़िल् ल–ख़बीर(11)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
क़सम उनकी जो दौड़ती हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई।(1) (फ़ा2) फिर पत्थरों से आग निकालते हैं सुम
मार कर।(2) (फ़ा3) फिर सुबह होते ताराज करते हैं।(3) (फ़ा4) फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं।(4) फिर
दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं।(5) बेशक आदमी अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।(6) (फ़ा5) और बेशक
वह उस पर (फ़ा6) खुद गवाह है।(7) और बेशक वह माल की चाहत में ज़रूर कर्रा (तेज़) है।(8) (फ़ा7)
तो क्या नहीं जानता जब उठाए जायेंगे (फ़ा8) जो क़ब्रों में हैं।(9) और खोल दी जाएगी (फ़ा9) जो सीनों में
है।(10) बेशक उनके रब को उस दिन (फ़ा10) उनकी सब ख़बर है।(11) (फ़ा11) (रुकूअ़ 25)

(फ़ा1) सूरए वलआ़दियात बक़ौल हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मक्की है और बक़ौल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा मदनी इसमें एक रुकूअ़ ग्यारह आयतें 40 कलिमे 163 हरफ़ हैं। (फ़ा2) मुराद इन से ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उनके सीनों से आवाज़ें निकलती हैं। (फ़ा3) जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं (फ़ा4) दुश्मन को (फ़ा5) कि उसकी निअ़मतों से मुकर जाता है। (फ़ा6) अपने अ़मल से। (फ़ा7) निहायत क़वी व तवाना है और इबादत के लिए कमज़ोर। (फ़ा8) मुर्दे (फ़ा9) वह हक़ीक़त या वह नेकी व बदी। (फ़ा10) यानी रोज़े क़ियामत जो फ़ैसला का दिन है (फ़ा11) जैसी कि हमेशा है तो उन्हें आमाले नेक व बद का बदला देगा।

(बक़िया सफ़हा 953 का) के सामने है तो चाहिए कि सूरह इ-ज़श्-शम्सु कुव्विरत् और सूरह इज़स्समाउन् फ़-तर-त् और सूरह इ-ज़स्-समाउन् शक़्क़त् पढ़े (तिर्मिज़ी) (फ़ा2) यानी आफ़ताब का नूर ज़ाइल हो जाये (फ़ा3) बारिश की तरह आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाक़ी न रहे। (फ़ा4) और गुबार की तरह हवा में उड़ते फिरें। (फ़ा5) जिनके हमल को दस महीने गुज़र चुके हों और ब्याहने का वक़्त क़रीब आ गया हो। (फ़ा6) न उनका कोई चराने वाला हो न निगराँ उस रोज़ की दहशत का यह आलम हो और लोग अपने हाल में ऐसे मुब्तला हों कि उनकी परवाह करने वाला कोई न हो। (फ़ा7) रोज़े क़ियामत बाद बअ़्स कि एक दूसरे से बदला लें फिर ख़ाक कर दिये जायें। (फ़ा8) फिर वह ख़ाक हो जायें (फ़ा9) इस तरह कि नेक नेकों के साथ हों और बद बदों के साथ या यह माना कि जानें अपने जिस्मों से मिला दी जायें या यह कि अपने अ़मलों से मिला दी जायें या यह कि ईमानदारों की जानें हूरों के और काफ़िरों की जानें शयातीन के साथ मिला दी जायें। (फ़ा10) यानी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़न की गई हो जैसा कि अरब का दस्तूर था कि ज़मानए जाहिलियत में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न कर देते थे। (फ़ा11) यह सवाल क़ातिल की तौबीख़ के लिए है ताकि वह लड़की जवाब दे कि मैं बे गुनाह मारी गई (फ़ा12) जैसे ज़बह की हुई बकरी के जिस्म से खाल खींच ली जाती है (फ़ा13) दुश्मनाने ख़ुदा के लिए (फ़ा14) अल्लाह तआ़ला के प्यारों के (फ़ा15) नेकी या बदी (फ़ा16) सितारों (फ़ा17) यह पांच सितारे हैं जिन्हें ख़मसा मुतहय्यरा कहते हैं ज़ुहल मुश्तरी मिर्रीख़ .ज़ुहरा उतारिद (कज़ा रु वीय अ़न अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु) (फ़ा18) और उसकी तारीकी हलकी पड़े (फ़ा19) और उसकी रौशनी ख़ूब फैले। (फ़ा20) क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा21) हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम (फ़ा22) यानी आसमानों में फ़रिश्ते उसकी इताअ़त करते हैं। (फ़ा23) वहीए इलाही का (फ़ा24) हज़रत मुहम्म मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा25) जैसा कि कुफ़्फ़ारे मक्का कहते हैं (फ़ा26) यानी जिबरील अमीन को उनकी असली सूरत में (फ़ा27) यानी आफ़ताब के जाय तुलूअ़ पर। (फ़ा28) और क्यों क़ुरआन से एराज़ करते हो (फ़ा29) यानी जिस को हक़ का इत्तेबाअ़ और उस पर क़ियाम मन्ज़ूर हो।

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝
فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

सूरतुल् क़ारिअ़ति

(मक्की है इस सूरह में 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्क़ारि–अ़तु(1)मल्क़ारिअ़(2)व मा अद्‌रा–क मल्क़ारिअ़:(3)यौ–म यकूनुन् नासु कल्फ़राशिल् मब्सूसि(4)व तकूनुल्‌जिबालु कल्‌अ़िह्निल् मन्फ़ूश(5)फ़–अम्मा मन् स़कुलत् मवाज़ीनुहू(6) फ़हु–व फ़ी अ़ी–शतिर् राज़ियः(7)व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू(8)फ़–उम्मुहू हावियः(9)व मा अद्‌रा–क मा हियः(10)नारुन् ह़ामियः(11)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
दिल दहलाने वाली।(1) क्या वह दहलाने वाली।(2) और तूने क्या जाना क्या है दहलाने वाली।(3) (फ़ा2) जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतिंगे।(4) (फ़ा3) और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन।(5) (फ़ा4) तो जिस की तोलें भारी हुईं।(6) (फ़ा5) वह तो मन मानते ऐश में हैं।(7) (फ़ा6) और जिसकी तोलें हलकी पड़ें।(8) (फ़ा7) वह नीचा दिखाने वाली गोद में है।(9) (फ़ा8) और तूने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली।(10) एक आग शोले मारती।(11) (फ़ा9) (रुकूअ़ 26)

(फ़ा1) सूरए अलक़ारिअ़ा मक्की है इसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें 36 कलिमे 152 हरफ़ हैं। (फ़ा2) मुराद इससे क़ियामत है जिस की हौल व हैबत से दिल दहलेंगे और क़ारिअ़ा क़ियामत के नामों से एक नाम है। (फ़ा3) यानी जिस तरह पतिंगे शोअ़ला पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उनके लिए कोई एक जिहत मुअ़य्यन नहीं होती हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहत से जाता है यही हाल रोज़े क़ियामत ख़ल्क़ के इन्तेशार का होगा। (फ़ा4) जिसके अजज़ा मुतफ़र्रिक़ होकर उड़ते हैं यही हाल क़ियामत के हौल व दहशत से पहाड़ों का होगा। (फ़ा5) और वज़नदार अमल यानी नेकियां ज़्यादा हुईं। (फ़ा6) यानी जन्नत में मोमिन की नेकियां अच्छी सूरत में लाकर मीज़ान में रखी जायेंगी तो अगर वह ग़ालिब हुईं तो उसके लिए जन्नत है और काफ़िर की बुराईयां बदतरीन सूरत में लाकर मीज़ान में रखी जायेंगी और तौल हलकी पड़ेगी क्योंकि कुफ़्फ़ार के आमाल बातिल हैं उनका कुछ वज़न नहीं तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा (फ़ा7) बसबब इसके कि वह बातिल का इत्तेबाअ़ करता था। (फ़ा8) यानी उसका मस्कन आतिशे दोज़ख़ है (फ़ा9) जिसमें इन्तेहा की सोज़िश व तेज़ी है (अल्लाह तआ़ला उससे पनाह में रखे)।

(बक़िया सफ़हा 950 का) के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला होगा। (फ़ा10) उस दिन की हौल और दहशत से यह हाल कुफ़्फ़ार का होगा। (फ़ा11) जो मरने के बाद उठने के मुन्किर हैं जब उनसे कहा जाता है कि तुम मरने के बाद उठाये जाओगे तो (फ़ा12) यानी मौत के बाद फिर ज़िन्दगी की तरफ़ वापस किये जायेंगे। (फ़ा13) रेज़ा रेज़ा बिखरी हुई फिर भी ज़िन्दा किये जायेंगे। (फ़ा14) यानी अगर मौत के बाद ज़िन्दा किया जाना सही है और हम मरने के बाद उठाए गए तो उसमें हमारा बड़ा नुक़सान है क्योंकि हम दुनिया में उसकी तकज़ीब करते रहे यह मक़ूला उनका बतरीक़े इस्तेहज़ा था इस पर उन्हें बताया गया कि तुम मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को यह न समझो कि अल्लाह तआ़ला के लिए कुछ दुशवार है क्योंकि क़ादिरे बरहक़ पर कुछ भी दुशवार नहीं। (फ़ा15) नफ़ख़ए अख़ीरा (फ़ा16) जिससे सब जमा कर लिये जायेंगे और जब नफ़ख़ए अख़ीरा होगा। (फ़ा17) ज़िन्दा होकर। (फ़ा18) यह ख़िताब है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब क़ौम का तकज़ीब करना आपको शाक़ और नागवार गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने आपकी तस्कीन के लिए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने अपनी क़ौम से बहुत तकलीफ़ें पाई थीं मुराद यह है कि अम्बिया को यह बातें पेश आती रहती हैं आप उससे ग़मगीन न हों। (फ़ा19) जो मुल्के शाम में तूर के क़रीब है (फ़ा20) और वह कुफ़्र व फ़साद में हद से गुज़र गया। (फ़ा21) कुफ़्र व शिर्क और मअ़सियत व नाफ़रमानी से (फ़ा22) यानी उसकी ज़ात व सिफ़ात की मअ़रेफ़त की तरफ़ (फ़ा23) उसके अ़ज़ाब से। (फ़ा24) यदे बैज़ा और अ़सा। (फ़ा25) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को (फ़ा26) यानी ईमान से एराज़ किया। (फ़ा27) फ़साद अंगेज़ी की। (फ़ा28) यानी जादूगरों को और अपने लश्करों को। (फ़ा29) यानी मेरे ऊपर और कोई रब नहीं।

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝

सूरतुत्तकासुरि

(मक्की है इस सूरह में 17 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हाकुमुत्तकासुरु(1)हत्ता ज़ुर्तुमुल् मक़ाबिर्(2)कल्ला सौ–फ़ तअ्–लमून(3)सुम्–म कल्ला सौ–फ़ तअ्–लमून(4)कल्ला लौ तअ्–लमू–न अ़िल्मल् यक़ीन(5)ल–त–र–वुन्नल् जहीम(6)सुम्–म ल–त–र–वुन्नहा ऐनल् यक़ीन(7)सुम्–म लतुस्–अलुन्–न यौ–मइज़िन् अनिन् नअ़ीम(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम्हें ग़ाफ़िल रखा।(1) (फ़ा2) माल की ज़्यादा तलबी ने। (फ़ा3) यहां तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा।(2) (फ़ा4) हां हां जल्द जान जाओगे।(3) (फ़ा5) फिर हां हां जल्द जान जाओगे।(4) (फ़ा6) हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मुहब्बत न रखते।(5) (फ़ा7) बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे।(6) (फ़ा8) फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखोगे।(7) फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेअ़मतों से पुरसिश होगी।(8) (फ़ा9) (रुकूअ़ 27)

(फ़ा1) सूरह तकासुरु मक्की है इसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें 28 कलिमे 120 हरफ़ हैं (फ़ा2) अल्लाह तआ़ला की ताआ़त से (फ़ा3) इससे मालूम हुआ कि कसरते माल की हिर्स और इस पर मफ़ाख़रत मज़मूम है और इसमें मुब्तला होकर आदमी सआ़दते उख़रविया से महरूम रह जाता है। (फ़ा4) यानी मौत के वक़्त तक हिर्स तुम्हारे दामनगीर ख़ातिर रही हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुर्दे के साथ तीन होते हैं दो लौट आते हैं एक उस के साथ रह जाता है एक माल एक उसके अहल व अक़ारिब एक उसका अ़मल अ़मल साथ रह जाता है बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं। (बुख़ारी) (फ़ा5)नज़अ़ के वक़्त अपने इस हाल के नतीजए बद को (फ़ा6) क़ब्रों में (फ़ा7) और हिर्से माल में मुब्तला होकर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते (फ़ा8) मरने के बाद (फ़ा9) जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अ़ता फ़रमाई थीं सेहत व फ़राग़ व अमन व ऐश व माल वग़ैरह जिन से दुनिया में लज़्ज़तें उठाते थे पूछा जाएगा यह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं उनका क्या शुक्र अदा किया और तर्के शुक्र पर अज़ाब किया जाएगा।

(बक़िया सफ़हा 969 का) के हक़ में नाज़िल हुईं उसको कुछ माल हाथ आ गया था तो उस ने लिबास और सवारी और खाने पीने में तकल्लुफ़ात शुरू किये और उसका गुरूर और तकब्बुर बहुत बढ़ गया (फ़ा8) यानी इन्सान को यह बात पेशे नज़र रखनी चाहिए और समझना चाहिए कि उसे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करना है तो सरकशी व तुग़ियान और गुरूर व तकब्बुर का अन्जाम अ़ज़ाब होगा (फ़ा9) **शाने नुज़ूलः** यह आयत भी अबू जहल के हक़ में नाज़िल हुई उसने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ने से मना किया था और लोगों से कहा कि अगर मैं उन्हें ऐसा करता देखूंगा तो (मआ़ज़ल्लाह) गर्दन पाँव से कुचल डालूंगा और चेहरा ख़ाक में मिला दूंगा फिर वह इसी इरादए फ़ासिदा से हुज़ूर के नमाज़ पढ़ते में आया और हुज़ूर के क़रीब पहुंच कर उलटे पाँव पीछे भागा हाथ आगे बढ़ाए हुए जैसे कोई किसी मुसीबत को रोकने के लिए हाथ आगे बढ़ाता है चेहरा का रंग उड़ गया आज़ा कांपने लगे लोगों ने कहा क्या हाल है कहने लगा मेरे और मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दर्मियान एक ख़न्दक़ है जिसमें आग भरी हुई है और दहशतनाक परिन्द बाजू फैलाए हुए हैं सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर वह मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उसका उज़्व उज़्व जुदा कर डालते (फ़ा10) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (फ़ा11) ईमान लाने से (फ़ा12) अबू जहल ने (फ़ा13) उसके फ़ेअ़ल को पस जज़ा देगा (फ़ा14) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईज़ा और आपकी तकज़ीब से (फ़ा15) और उसको जहन्नम में डालेंगे। (फ़ा16) **शाने नुज़ूलः** जब अबू जहल ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ से मना किया तो हुज़ूर ने उसको सख़्ती से झिड़क दिया इस पर उसने कहा कि आप मुझे झिड़कते हैं ख़ुदा की क़सम मैं आपके मुक़ाबिल नौजवान सवारों और पैदलों से उस जंगल को भर दूंगा आप जानते हैं कि मक्का मुकर्रमा में मुझ से ज़्यादा बड़े जत्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है। (फ़ा17) यानी अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को हदीस शरीफ़ में है कि अगर वह अपनी मजलिस को बुलाता तो फ़रिश्ते उसको बिलएलान गिरिफ़्तार करते (फ़ा18) यानी नमाज़ पढ़ते रहो।

سُوۡرَةُ الۡعَصۡرِ مَكِّيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝

وَالۡعَصۡرِ ۝ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِیۡ خُسۡرٍ ۝ اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوۡا بِالۡحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوۡا بِالصَّبۡرِ ۝

सूरतुल् अ़स्रि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

वल्अ़स्रि(1)इन्नल्इन्सा–न लफ़ी ख़ुस्र(2)इल्लल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति व तवासौ बिल्ह़क़्क़ि व तवासौ बिस्सब्रि(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

उस ज़मानए महबूब की क़सम।(1) (फ़ा2) बेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है।(2) (फ़ा3) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की (फ़ा4) और एक दूसरे को सब्र की वसीयत की।(3) (फ़ा5) (रुकूअ़ 28)

(फ़ा1) सूरए वलअ़स्र जम्हूर के नज़दीक मक्की है इसमें एक रुकूअ़ तीन आयतें चौदह कलिमे 68 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अ़स्र ज़माना को कहते हैं और ज़माना चूंकि अ़जाइबात पर मुश्तमिल है इसमें अहवाल का तग़य्युर व तबद्दुल नाज़िर के लिए इबरत का सबब होता है और यह चीज़ें ख़ालिक़े हकीम की कुदरत व हिकमत और उसकी वहदानियत पर दलालत करती हैं इस लिए हो सकता है कि ज़माना की क़सम मुराद हो और अ़स्र उस वक़्त को भी कहते हैं जो गुरूब से क़बल होता है हो सकता है कि ख़ासिर के हक़ में उस वक़्त की क़सम याद फ़रमाई जाये जैसा कि राबेह के हक़ में ज़ुहा यानी चाश्त की क़सम ज़िक्र फ़रमाई गई और एक क़ौल यह भी है कि अ़स्र से नमाज़े अ़स्र मुराद हो सकती है जो दिन की इबादतों में सब से पिछली इबादत है और सब से लज़ीज़ व राजेह तफ़सीर वहीं है जो हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माना से मख़्सूस ज़माना सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुराद है जो बड़ी ख़ैर व बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सब से ज़्यादा फ़ज़ीलत व शरफ़ वाला है अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर के ज़मानए मुबारक की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि ला उक़्सिमु बि–हाज़ल् ब–लदि में हुज़ूर के मस्कन व मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि ल–अ़म्रु–क में आपकी उमर शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और उसमें शाने महबूबियत का इज़्हार है (फ़ा3) कि उसकी उम्र जो उसका रासुल माल है और असल पूंजी है वह हर दम घट रही है। (फ़ा4) यानी ईमान व अ़मले सालेह की (फ़ा5) इन तकलीफ़ों और मुशक़्क़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं यह लोग बफ़ज़्ले इलाही टोटे में नहीं हैं क्योंकि उनकी जितनी उम्र गुज़री नेकी और ताअ़त में गुज़री तो वह नफ़ा पाने वाले हैं।

(बक़िया सफ़हा 970 का) हंसते ख़ुशियां मनाते।(39) (फ़ा29) और कितने मुँहों पर उस दिन गर्द पड़ी होगी।(40) उन पर सियाही चढ़ रही है।(41) (फ़ा30) यह वही हैं काफ़िर बदकार।(42) (रुकूअ़ 5)

(फ़ा1) सूरह अ़बस मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 42 आयतें 130 कलिमे 533 हरफ़ हैं। (फ़ा2) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (फ़ा3) यानी अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम। **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उतबा बिन रबीआ़ अबू जहल बिन हिशाम और अ़ब्बास बिन अ़ब्दुलमुत्तलिब और उबय बिन ख़लफ़ और उमैया बिन ख़लफ़ अशराफ़े क़ुरैश को इस्लाम की दावत फ़रमा रहे थे इस दर्मियान में अ़ब्दुल्लाह उम्मे मकतूम नाबीना हाज़िर हुए और उन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बार बार निदा करके अ़र्ज़ किया कि जो अल्लाह तआ़ला ने आपको सिखाया है मुझे तालीम फ़रमाइये इब्ने उम्मे मकतूम ने यह न समझा कि हुज़ूर दूसरों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं इससे क़तओ़ कलाम होगा यह बात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गिराँ गुज़री और आसार नागवारी चेहरए अक़्दस पर नुमायां हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी दौलत सराए अक़्दस की तरफ़ वापस हुए इस पर यह आयात नाज़िल हुईं और नाबीना फ़रमाने में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम की मअ़्ज़ूरी की तरफ़ इशारा है कि क़तओ़ कलाम उनसे इस वजह से वाक़ेअ़ हुआ इस आयत के नुज़ूल के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम का इकराम फ़रमाते थे। (फ़ा4) गुनाहों से आपका इरशाद सुन कर (फ़ा5) अल्लाह तआ़ला से और ईमान लाने से ब–सबब अपने माल के (फ़ा6) और उसके ईमान लाने की तमअ़ में उसके दरपै होते हो। (फ़ा7) ईमान लाकर और हिदायत पाकर क्योंकि आपके ज़िम्मा दावत देना और पयामे इलाही पहुंचा देना है (फ़ा8) यानी इब्ने उम्मे मकतूम (फ़ा9) अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से (फ़ा10) ऐसा न कीजिये (फ़ा11) यानी आयाते क़ुरआन मख़्लूक़ के लिए नसीहत हैं (फ़ा12) और उससे पन्द पेज़ीर हो (फ़ा13) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (फ़ा14) रफ़ीउल क़द्र (फ़ा15) कि उन्हें पाकों के सिवा कुछ न छूए। (फ़ा16) अल्लाह तआ़ला के फ़रमांबरदार और वह फ़रिश्ते हैं जो उसको लौहे महफ़ूज़ से नक़ल करते हैं। (फ़ा17) **(बक़िया सफ़हा 977 पर)**

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝ يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

सूरतुल् हु-मज़ति

(मक्की है इस सूरह में 9 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रहूमानिर्रहीम

वैलुल् लिकुल्लि हु-म-ज़तिल् लु-मज़ति-नि(1)ल्लज़ी ज-म-अ़मालंव् व अ़द्-द-दहू(2)यह्सबु अन् न मा लहू अख़्-ल-दः(3)कल्ला लयुम्ब-ज़न्-न फ़िल्हु-त़-मति(4)व मा अद्रा-क मल्हु-त-मः(5)नारुल्लाहिल् मू-क़्-दतु(6)ल्लती तत्तलिअु अ़लल् अफ़्-इदः(7)इन्नहा अ़लैहिम् मुअ्-स-दतुन्(8)फ़ी अ़-मदिम् मु-मद्-द-दः(9)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ख़राबी है उसे के लिए जो लोगों के मुँह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे।(1) (फ़ा2) जिसने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा।(2) क्या यह समझता है कि उसका माल उसे दुनिया में हमेशा रखेगा।(3) (फ़ा3) हरगिज़ नहीं ज़रूर ज़रूर वह रौंदने वाली में फेंका जाएगा।(4) (फ़ा4) और तूने क्या जाना क्या रौंदने वाली।(5) अल्लाह की आग कि भड़क रही है।(6) (फ़ा5) वह जो दिलों पर चढ़ जाएगी।(7) (फ़ा6) बेशक वह उन पर बन्द कर दी जाएगी।(8) (फ़ा7) लम्बे लम्बे सुतूनों में।(9) (फ़ा8) (रुकूअ़ 29)

(फ़ा1) सूरह हमज़ा मक्की है इसमें एक रुकूअ़ नौ आयतें तीस कलिमे 130 हरफ़ हैं (फ़ा2) यह आयतें उन कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुईं जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके असहाब पर ज़बाने तअ़न खोलते थे और उन हज़रात की ग़ीबत करते थे मिस्ल अख़नस बिन शरीक़ व उमय्या बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा वग़ैरहुम के और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिए आ़म है (फ़ा3) मरने न देगा जो वह माल की मुहब्बत में मस्त है और अ़मले सालेह की तरफ़ इल्तेफ़ात नहीं करता। (फ़ा4) यानी जहन्नम के इस दरका में जहां आग हड्डियां पसलियां तोड़ डालेगी। (फ़ा5) और कभी सर्द नहीं होती हदीस शरीफ़ में है जहन्नम की आग हज़ार बरस धूंकी गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई फिर हज़ार बरस धूंकी गई ता आंकि सफ़ेद हो गई फिर हज़ार बरस धूंकी गई हत्ता कि सियाह हो गई तो वह सियाह है अंधेरी (तिर्मिज़ी) (फ़ा6) यानी ज़ाहिर जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी दिल ऐसी चीज़ हैं जिनको ज़रा सी भी गर्मी की ताब नहीं तो जब आतिशे जहन्नम का उन पर इस्तीला हेगा और मौत आएगी नहीं तो क्या हाल होगा दिलों को जलाना इस लिए है कि वह मक़ाम हैं कुफ़्र और अक़ाइदे बातिला व निय्याते फ़ासिदा के। (फ़ा7) यानी आग में डाल कर दरवाज़े बन्द कर दिये जायेंगे। (फ़ा8) यानी दरवाज़ों की बन्दिश आतशीं लोहे के सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह माना बयान किये हैं कि दरवाज़े बन्द करके आतशीं सुतूनों से उनके हाथ पाँव बांध दिये जायेंगे।

(बक़िया सफ़हा 976 का) कि अल्लाह तअ़ाला की कसीर निअ़मतों और बे निहायत एहसानों के बावजूद कुफ़्र करता है। (फ़ा18) कभी नुत्फ़ा की शक्ल में कभी अ़लक़ा की सूरत में कभी मुज़ग़ा की शान में तकमीले आफ़रीनश तक। (फ़ा19) मां के पेट से बर-आमद होने का। (फ़ा20) कि बाद मौत बे इज़्ज़त न हो। (फ़ा21) यानी बाद मौत हिसाब व जज़ा के लिए फिर उसके वास्ते ज़िन्दगानी मुक़र्रर की। (फ़ा22) उसके रब का यानी काफ़िर ईमान लाकर हुक्मे इलाही को बजा न लाया। (फ़ा23) जिन्हें खाता है और उसकी हयात का सबब हैं कि उनमें उसके रब की क़ुदरत ज़ाहिर है किस तरह जुज़्वे बदन होते हैं और किस निज़ामे अ़जीब से काम में आते हैं और किस तरह रब्बे अ़ज़्ज़ व जल्ल अ़ता फ़रमाता है उन हिकमतों का बयान फ़रमाया जाता है। (फ़ा24) बादल से। (फ़ा25) यानी क़ियामत के नफ़ख़ए सानिया की हौलनाक आवाज़ जो मख़्लूक़ को बहरा कर देगी। (फ़ा26) उनमें से किसी की तरफ़ मुल्तफ़ित न होगा अपनी ही पड़ी होगी। (फ़ा27) क़ियामत का हाल और उसके अहवाल बयान फ़रमाने के बाद मुकल्लिफ़ीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वह दो क़िस्म हैं सईद और शक़ी जो सईद हैं उनका हाल इरशाद होता है। (फ़ा28) नूरे ईमान से या शब की इबादतों से या वुज़ू के आसार से। (फ़ा29) अल्लाह तअ़ाला की निअ़मत व करम और उसकी रज़ा पर उसके बाद अशक़िया का हाल बयान फ़रमाया जाता है। (फ़ा30) ज़लील हाल वहशत ज़दा सूरत।

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

सूरतुल् फ़ीलि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अ–लम् त–र कै–फ़ फ़–अ़–ल रब्बु–क बि–अस्ह़ाबिल्फ़ील(1)अ–लम् यज्–अ़ल् कै–दहुम् फ़ी तज़्लीलिंव्(2)व अर्स–ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील(3)तरमीहिम् बिह़िजा–रतिम् मिन् सिज्जीलिन्(4) फ़–ज–अ़–लहुम् क–अ़स्फ़िम् मअ्कूल(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ महबूब क्या तुमने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया।(1) (फ़ा2) क्या उनका दाँव तबाही में न डाला।(2) और उन पर परिन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं।(3) (फ़ा3) कि उन्हें कंकर के पत्थरों से मारते।(4) (फ़ा4) तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)(5) (फ़ा5) (रुकूअ़ 30)

(फ़ा1) सूरतुल फ़ील मक्की है इसमें एक रुकूअ़ पांच आयतें बीस कलिमे 96 हरफ़ हैं (फ़ा2) हाथी वालों से मुराद अब्रहा और उसका लश्कर है अब्रहा यमन व हबशा का बादशाह था उसने सनआ़ में एक कनीसा (इबादत ख़ाना) बनाया था और चाहता था कि हज करने वाले बजाए मक्का मुकर्रमा के यहीं आयें और उसी कनीसा का तवाफ़ करें अरब के लोगों को यह बात बहुत शाक़ थी क़बीला बनी कनाना के एक शख़्स ने मौक़ा पाकर उस कनीसा में क़ज़ाए हाजत की और उसको नजासत से आलूदा कर दिया इस पर अब्रहा को बहुत तैश आया और उसने कअ़बा को ढाने की क़सम खाई और इस इरादे से अपना लश्कर लेकर जिसमें बहुत से हाथी थे और उनका पेश रौ एक बड़ा अ़ज़ीमुल जुस्सा कोहे पैकर हाथी था जिसका नाम महमूद था अब्रहा ने मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर अहले मक्का के जानवर क़ैद कर लिये उनमें दो सौ ऊँट अब्दुल मुत्तलिब के भी थे अब्दुल मुत्तलिब अब्रहा के पास आये थे बहुत जसीम व बा शिकोह अब्रहा ने उनकी ताज़ीम की और अपने पास बिठाया और मतलब दरियाफ़्त किया आपने फ़रमाया मेरा मतलब यह है कि मेरे ऊँट वापस किये जायें अब्रहा ने कहा मुझे बहुत तअ़ज्जुब होता है कि मैं ख़ानए कअ़बा को ढाने के लिए आया हूं और वह तुम्हारा तुम्हारे बाप दादा का मुअ़ज़्ज़म व मुहतरम मक़ाम है तुम उसके लिए तो कुछ नहीं कहते अपने ऊँटों के लिए कहते हो आपने फ़रमाया मैं ऊँटों ही का मालिक हूं उनही के लिए कहता हूं और कअ़बा का जो मालिक है वह ख़ुद उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा अब्रहा ने आपके ऊँट वापस कर दिये अब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश को हाल सुनाया और उन्हें मशवरा दिया कि वह पहाड़ों की घाटियों और चोटियों में पनाहगुज़ीन हों चुनांचे क़ुरैश ने ऐसा ही किया और अब्दुल मुत्तलिब ने दरवाज़ए कअ़बा पर पहुंच कर बारगाहे इलाही में कअ़बा की हिफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ होकर आप अपनी क़ौम की तरफ़ चले गए अब्रहा ने सुबह तड़के अपने लश्करों को तैयारी का हुक्म दिया और हाथियों को तैयार किया लेकिन महमूद हाथी न उठा और कअ़बा की तरफ़ न चला जिस तरफ़ चलाते थे चलता था जब कअ़बा की तरफ़ उसका रुख़ करते थे बैठ जाता था अल्लाह तआ़ला ने छोटे छोटे परिन्द उन पर भेजे जो छोटे छोटे संगरेज़े गिराते थे जिनसे वह हलाक हो जाते थे (फ़ा3) जो समुन्दर की जानिब से फ़ौज आईं हर एक के पास तीन कंकरियां थीं दो दोनों पाँवों में एक मिनक़ार में (फ़ा4) जिस पर वह परिन्द संगरेज़ा छोड़ते वह संगरेज़ा उसके ख़ौद को तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीर कर हाथी में से गुज़र कर ज़मीन पर पहुंचता हर संगरेज़ा पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस संगरेज़ा से हलाक किया गया (फ़ा5) जिस साल यह वाक़िआ़ हुआ उसी साल इस वाक़िआ़ से पचास रोज़ के बाद सय्यदे आलम हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत हुई।

(बक़िया सफ़हा 957 का) (फ़ा1) सूरह इनशक़्क़त जिसको सूरह इन्शिक़ाक़ भी कहते हैं मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 25 आयतें 107 कलिमात 430 हरफ़ हैं (फ़ा2) क़ियामत क़ाइम होने के वक़्त (फ़ा3) अपने शक़ होने के मुतअ़ल्लिक़ और उसकी इताअ़त करे (फ़ा4) और उस पर कोई इमारत और पहाड़ बाक़ी न रहे। (फ़ा5) यानी उसके बतन में ख़ज़ाने और मुर्दे सब को बाहर (फ़ा6) अपने अन्दर की चीज़ें बाहर फेंक देने के मुतअ़ल्लिक़ और उसकी इताअ़त करे (फ़ा7) उस वक़्त इन्सान अपने अमल के नताइज देखेगा। (फ़ा8) यानी उसके हुज़ूर हाज़िरी के लिए मुराद इससे मौत है (मदारिक) (फ़ा9) और अपने अ़मल की जज़ा पाना (फ़ा10) और वह मोमिन है (फ़ा11) सहल हिसाब यह है कि इस पर उसके आमाल पेश किये जायें वह अपनी ताअ़त व मअ़सीयत को पहचाने फिर ताअ़त पर सवाब दिया जाये और मअ़सियत से तजावुज़ फ़रमाया जाये यह सहल हिसाब है न इसमें शिद्दते मुनाक़शा न यह कहा जाये कि ऐसा क्यों किया न उज़्र की **(बक़िया सफ़हा 980 पर)**

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۬ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

सूरतु कुरैशिन

(मक्की है इस सूरह में 4 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लिईलाफ़ि कुरैशिन्(1)ईलाफ़िहिम् रिह्‌ल-तश् शिताइ वस्सैफ़(2)फ़ल्यअ्‌बुदू रब्-ब हाज़ल्बैति (3)ल्लज़ी अत्-अ-महुम् मिन् जूअिंव् व आ-म-नहुम् मिन् ख़ौफ़्(4)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
इस लिए कि कुरैश को मैल दिलाया।(1) उनके जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मैल दिलाया।(2) (फ़ा2) तो उन्हें चाहिये इस घर के (फ़ा3) रब की बन्दगी करें।(3) जिसने उन्हें भूक में (फ़ा4) खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा।(4) (फ़ा5) (रुकूअ़ 31)

(फ़ा1) सूरतुल कुरैश बक़ौले असह मक्की है इसमें एक रुकूअ़ चार आयतें सत्तरह कलिमे तिहत्तर हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी अल्लाह तआ़ला की निअ़मतें बेशुमार हैं उनमें से एक निअ़मते ज़ाहिरा यह है कि उसने कुरैश को हर साल में दो सफ़रों की तरफ़ रग़बत दिलाई उनकी मुहब्बत उनमें डाली जाड़े के मौसम में यमन का सफ़र और गर्मी के मौसम में शाम का कि कुरैश तिजारत के लिए इन मौसमों में यह सफ़र करते थे और हर जगह के लोग उन्हें अहले हरम कहते थे और उनकी इज़्ज़त व हुरमत करते थे यह अमन के साथ तिजारतें करते और फ़ाइदे उठाते और मक्का मुकर्रमा में इक़ामत करने के लिए सरमाया बहम पहुंचाते जहां न खेती है न और अस्बाबे मआश अल्लाह तआ़ला की यह निअ़मत ज़ाहिर है और इससे फ़ाइदा उठाते हैं (फ़ा3) यानी कअ़बा शरीफ़ के (फ़ा4) जिसमें इन सफ़रों से पहले अपने वतन में खेती न होने के बाइस मुब्तला थे उन सफ़रों के ज़रीया से (फ़ा5) बसबबे हरम शरीफ़ के और ब-सबब अहले मक्का होने के कोई उनसे तअ़र्रुज़ नहीं करता बावजूदे कि अतराफ़ व हवाली में क़त्ल व ग़ारत होते रहते हैं क़ाफ़िले लुटते हैं मुसाफ़िर मारे जाते हैं या यह माना हैं कि उन्हें जज़ाम से अमन दी कि उनके शहर में उन्हें कभी जज़ाम न होगा या यह मुराद कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत से उन्हें ख़ौफ़े अ़ज़ीम से अमान अता फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 948 का) इस्तिफ़हाम के पैराया में बयान फ़रमाया यानी वह क्या अ़ज़ीमुश्शान बात है जिस में यह लोग एक दूसरे से पूछ गछ कर रहे हैं इसके बाद वह बात बयान फ़रमाई जाती है (फ़ा4) बड़ी ख़बर से मुराद या कुरआन है या सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और आपका दीन या मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का मसला। (फ़ा5) कि बाज़े तो क़त्तई इन्कार करते हैं बाज़े शक में हैं और कुरआने करीम को उन में से कोई तो सेहर कहता है कोई शेअ़्र कोई कहानत और कोई और कुछ इसी तरह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई साहिर कहता कोई शायर कोई काहिन। (फ़ा6) इस तकज़ीब व इन्कार के नतीजा को इसके बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़जाइबे कुदरत में से चन्द चीज़ें ज़िक्र फ़रमाईं ताकि यह लोग उनकी दलालत से अल्लाह तआ़ला की तौहीद को जानें और यह समझें कि अल्लाह तआ़ला आलम को पैदा करने और उसके बाद उसको फ़ना करने और बाद फ़ना फिर हिसाब व जज़ा के लिए पैदा करने पर क़ादिर है। (फ़ा7) कि तुम इसमें रहो और वह तुम्हारी क़रारगाह हो (फ़ा8) जिनसे ज़मीन साबित व क़ाइम रहे (फ़ा9) मर्द व औरत (फ़ा10) तुम्हारे जिस्मों के लिए ताकि उससे कोफ़्त और तकान दूर हो और राहत हासिल हो। (फ़ा11) जो अपनी तारीकी से हर चीज़ को छुपाती है (फ़ा12) कि तुम इसमें अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और अपनी रोज़ी तलाश करो। (फ़ा13) जिन पर ज़माना गुज़रने का असर नहीं होता और कहंगी व बोसीदगी उन तक राह नहीं पाती मुराद उन चुनाईयों से सात आसमान हैं। (फ़ा14) यानी आफ़ताब जिसमें रौशनी भी है और गर्मी भी (फ़ा15) तो जिसने इतनी चीज़ें पैदा कर दीं वह इन्सान को मरने के बाद ज़िन्दा करे तो क्या तअ़ज्जुब नीज़ उन अशिया का पैदा करना हकीम का फ़ेअ़्ल है और हकीम का फ़ेअ़्ल हरगिज़ अ़बस और बेकार नहीं होता और मरने के बाद उठने और सज़ा व जज़ा के इन्कार से लाज़िम आता है मुन्किर के नज़दीक तमाम अफ़आ़ल अ़बस हों और अ़बस होना बातिल तो बअ़्स व जज़ा का इन्कार भी बातिल इस बुरहाने क़वी से साबित हो गया कि मरने के बाद उठना और हिसाब व जज़ा ज़रूर है इसमें शक नहीं। (फ़ा16) सवाब व अ़ज़ाब के लिए (फ़ा17) मुराद इससे नफ़ख़ए अख़ीरा है (फ़ा18) अपनी क़ब्रों से हिसाब के लिए मौक़फ़ की तरफ़ (फ़ा19) और उसमें राहें बन जायेंगी उन से मलायका उतरेंगे (फ़ा20) जिन की निहायत नहीं यानी हमेशा रहेंगे। (फ़ा21) जैसे अ़मल वैसी जज़ा यानी जैसा कुफ़्र बद तरीन जुर्म है वैसा ही सख़्त तरीन अ़ज़ाब उनको होगा

سُوۡرَةُ المَاعُونِ مَكِّيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

اَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ يُكَذِّبُ بِالدِّيۡنِ ۞ فَذٰلِكَ الَّذِىۡ يَدُعُّ الۡيَتِيۡمَ ۞ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الۡمِسۡكِيۡنِ ۞ فَوَيۡلٌ لِّلۡمُصَلِّيۡنَ ۞ الَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلَاتِهِمۡ سَاهُوۡنَ ۞
الَّذِيۡنَ هُمۡ يُرَآءُوۡنَ ۞ وَيَمۡنَعُوۡنَ الۡمَاعُوۡنَ ۞

सूरतुल् माऊनि

(मक्की है इस सूरह में 7 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ-रऐ-तल् लजी यु-कज़्ज़िबु बिद्दीन(1)फ़-ज़लिकल् लज़ी यदुअ्-उल् यतीम(2)व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल् मिस्कीन(3)फ़वैलुल् लिल्मुसल्लीन(4)अल्लज़ी-न हुम् अ़न् सलातिहिम् साहून(5) अल्लज़ी-न हुम् युराऊ-न(6)व यम्-नऊ़नल् माऊ़न(7)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
भला देखो तो जो दीन को झुठलाता है।(1) (फ़ा2) फिर वह, वह है जो यतीम को धक्के देता है।(2) (फ़ा3) और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता।(3) (फ़ा4) तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है। (4) जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।(5) (फ़ा5) वह जो दिखावा करते हैं।(6) (फ़ा6) और बरतने की चीज़ (फ़ा7) मांगे नहीं देते।(7) (फ़ा8) (रुकूअ़ 32)

(फ़ा1) सूरतुल माऊन मक्की है और यह भी कहा गया है कि निस्फ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई आ़स बिन वाइल के बारे में और निस्फ़ मदीना तय्येबा में अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल मुनाफ़िक़ के हक़ में इसमें एक रुकूअ़ सात आयतें 25 कलिमे 125 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी हिसाब व जज़ा का इन्कार करता है बावजूद दलाइल वाज़ेह होने **शाने नुज़ूलः** यह आयतें आ़स बिन वाइल सहमी या वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में नाज़िल हुईं (फ़ा3) और इस पर शिद्दत व सख़्ती करता है और उसका हक़ नहीं देता (फ़ा4) यानी न ख़ुद देता है न दूसरे से दिलाता है इन्तेहा दर्जे का बख़ील है (फ़ा5) मुराद इससे मुनाफ़िक़ीन हैं तो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्योंकि उसके मोअ़तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आपको नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिए उठ बैठ लेते हैं और हक़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। (फ़ा6) इबादतों में आगे उनके बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है (फ़ा7) मिस्ल सूई व हांडी व प्याले के (फ़ा8) **मसलाः** उलमा ने फ़रमाया कि मुस्तहब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी हाजत से ज़्यादा रखे जिनकी हमसायों की हाजत होती है और उन्हें आ़रियतन दिया करे।

(बक़िया सफ़हा 978 का) तलब हो न उस पर हुज्जत क़ाइम की जाये क्योंकि जिससे मुतालबा किया गया उसे कोई उज़्र हाथ न आएगा और वह कोई हुज्जत न पायेगा रुसवा होगा (अल्लाह तआ़ला मुनाक़शए हिसाब से पनाह दे) (फ़ा12) घर वालों से जन्नती घर वाले मुराद हैं ख़्वाह वह हूरों में से हों या इन्सानों में से (फ़ा13) अपनी इस कामयाबी पर (फ़ा14) और वह काफ़िर है जिसका दाहिना हाथ तो उसकी गर्दन के साथ मिला कर तौक़ में बांध दिया जाएगा और बायां हाथ पसे पुश्त कर दिया जाएगा इसमें उसका नामए आमाल दिया जाएगा इस हाल को देख कर वह जान लेगा कि वह अहले नार में से है तो (फ़ा15) और या सुबूराह कहेगा सुबूर के माना हलाकत के हैं (फ़ा16) दुनिया के अन्दर (फ़ा17) अपनी ख़्वाहिशों और शह्वतों में और मुतकब्बिर व मग़रूर (फ़ा18) अपने रब की तरफ़ और वह मरने के बाद उठाया न जाएगा। (फ़ा19) ज़रूर अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करेगा और मरने के बाद उठाया जाएगा और हिसाब किया जाएगा। (फ़ा20) जो सुर्ख़ी के बाद नुमूदार होता है और जिसके ग़ाइब होने पर इमाम साहब के नज़दीक वक़्ते इशा शुरू होता है यही क़ौल है कसीर सहाबा का और बाज़ उलमा शफ़क़ से सुर्ख़ी मुराद लेते हैं। (फ़ा21) मिस्ल जानवरों के जो दिन में मुन्तशिर होते हैं और शब में अपने आशियानों और ठिकानों की तरफ़ चले आते हैं और मिस्ल तारीकी के और सितारों और उनके आमाल के जो शब में किये जाते हैं मिस्ल तहज्जुद के (फ़ा22) और उसका नूर कामिल हो जाए और यह अय्यामे बैज़ यानी तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं तारीख़ों में होता है। (फ़ा23) यह ख़िताब या तो इन्सानों को है इस तक़दीर पर माना यह हैं कि तुम्हें हाल के बाद हाल पेश आएगा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि मोत के शदाइद व अहवाल फिर मरने के बाद उठना फिर मौक़िफ़ हिसाब में पेश होना और यह भी कहा गया है कि इन्सान के हालात में तदरीज है एक वक़्त दूध पीता बच्चा होता है फिर दूध छूटता है फिर लड़कपन का ज़माना आता है फिर जवान होता है फिर जवानी ढलती है फिर बूढ़ा होता है और एक क़ौल यह है कि यह ख़िताब नबीए करीम **(बक़िया सफ़हा 983 पर)**

سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِنَّا أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ○ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ○ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ○

सूरतुल् कौ–सरि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अअ़्तैनाकल् कौसर(1)फ़–स़ल्लि लि–रब्बि–क वन्हर(2)इन्–न शानि–अ–क हुवल् अब्तर(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ महबूब बेशक हमने तुम्हें बेशुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं।(1) (फ़ा2) तो तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो (फ़ा3) और कुरबानी करो।(2) (फ़ा4) बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर ख़ैर से महरूम है।(3) (फ़ा5) (रुकूअ़ 33)

(फ़ा1) सूरतुल कौसर जम्हूर के नज़दीक मदनी है इसमें एक रुकूअ़ तीन आयतें दस कलिमे बयालीस हरफ़ हैं। (फ़ा2) और फ़ज़ाइल कसीरा इनायत करके तमाम ख़ल्क़ पर अफ़ज़ल किया हुस्ने ज़ाहिर भी दिया हुस्ने बातिन भी नसब आली भी नबुव्वत भी किताब भी हिकमत भी इल्म भी शफ़ाअ़त भी हौज़े कौसर भी मक़ामे महमूद भी कसरते उम्मत भी आदाए दीन पर ग़लबा भी कसरते फ़ुतूह भी और बेशुमार निअ़मतें और फ़ज़ीलतें जिनकी निहायत नहीं। (फ़ा3) जिसने तुम्हें इ़ज़्ज़त व शराफ़त दी (फ़ा4) उसके लिए उसके नाम पर बख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़बह करते है। इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है। (फ़ा5) न आप क्योंकि आपका सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा आपकी औलाद में भी कसरत होगी और आपके मुत्तबेईन से दुनिया भर जाएगी आपका ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा क़ियामत तक पैदा होने वाले आलिम और वाइज़ अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के साथ आपका ज़िक्र करते रहेंगे बे नाम व निशान और हर भलाई से महरूम तो आपके दुश्मन हैं **शाने नुज़ूलः** जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रज़न्द हज़रत क़ासिम का विसाल हआ तो कुफ़्फ़ार ने आपको अबतर यानी मुनक़तउन् नस्ल कहा और यह कहा कि अब उनकी नस्ल नहीं रही उनके बाद अब उनका ज़िक्र भी न रहेगा यह सब चर्चा ख़त्म हो जाएगा इस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तकज़ीब की और उनका बालिग़ रद् फ़रमाया।

(बक़िया सफ़हा 963 का) क़ुदरत को नहीं जानता इसके बाद उसका मक़ूला नक़्ल फ़रमाया। (फ़ा7) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अ़दावत में लोगों को रिशवतें दे देकर ताकि हुज़ूर को आज़ार पहुंचायें। (फ़ा8) यानी इसका यह गुमान है कि उसे अल्लाह तआ़ला ने नहीं देखा और अल्लाह तआ़ला उससे नहीं सवाल करेगा कि उसने यह माल कहां से हासिल किया किस काम में ख़र्च किया उसके बाद अल्लाह तआ़ला अपनी नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि उसको इबरत हासिल करने का मौक़ा मिले (फ़ा9) जिनसे देखता है। (फ़ा10) जिससे बोलता है और अपने दिल की बात बयान में लाता है। (फ़ा11) जिनसे मुंह को बन्द करता है और बात करने और खाने और पीने और फूंकने में उनसे काम लेता है। (फ़ा12) यानी छातियों की कि पैदा होने के बाद उन से दूध पीता और ग़िज़ा हासिल करता रहा मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला की निअ़मतें ज़ाहिर व वाफ़िर हैं उनका शुक्र लाज़िम। (फ़ा13) यानी आमाल सालेहा बजा लाकर उन जलील नेअ़मतों का शुक्र अदा न किया उसको घाटी में कूदने से तअ़बीर फ़रमाया इस मुनासबत से कि उस राह में चलना नफ़्स पर शाक़ है। (अबुस्सऊद) (फ़ा14) और इसमें कूदना क्या यानी इससे उसके ज़ाहिरी मानी मुराद नहीं बल्कि उसकी तफ़सीर वह है जो अगली आयतों में इरशाद होती है। (फ़ा15) गुलामी से ख़्वाह इस तरह हो कि किसी गुलाम को आज़ाद कर दे या इस तरह कि मकातिब को इतना माल दे जिससे वह आज़ादी हासिल कर सके या किसी गुलाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या मदयून के रिहा कराने में इआ़नत करे और यह माना भी हो सकते हैं कि आमाले सालेहा इख़्तियार करके अपनी गर्दन अ़ज़ाबे आख़िरत से छुड़ाये (रूहुल बयान) ((फ़ा16) यानी क़हत व गिरानी के वक़्त कि उस वक़्त माल निकालना नफ़्स पर बहुत शाक़ और अज्रे अ़ज़ीम का मूजिब होता है (फ़ा17) जो निहायत तंगदस्त और दरमांदा न उसके पास ओढ़ने को हो न बिछाने को हदीस शरीफ़ में है यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला जिहाद में सई करने वाले और बे तकान शब बेदारी करने वाले और मदाम रोज़ा रखने वाले की मिस्ल है। (फ़ा18) यानी यह तमाम अ़मल जब मक़बूल हैं कि अ़मल करने वाला ईमानदार हो और जब ही उसको कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं सब अ़मल बेकार (फ़ा19) मअ़सियतों से बाज़ रहने और ताअ़तों के बजा लाने और उन मशक़्क़तों के बरदाश्त करने पर जिन में मोमिन मुब्तला हो। (फ़ा20) कि मोमिनी एक दूसरे के साथ शफ़क़त व मुहब्बत का बरताव करें (फ़ा21) जिन्हें उनके नामए आमाल दाहिने हाथ में दिये जायेंगे और अ़र्श के दाहिने जानिब से जन्नत में दाख़िल होंगे (फ़ा22) कि उन्हें उनके नामए आमाल बायें हाथ में दिये जायेंगे और अ़र्श के बायें जानिब से जहन्नम में दाख़िल किये जायेंगे (फ़ा23) कि न इसमें बाहर से हवा आ सके न अन्दर से धुंआँ बाहर जा सके।

سُوۡرَةُ الۡكٰفِرُوۡنَ مَكِّيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ۙ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۚ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ

सूरतुल् काफ़िरून

(मक्की है इस सूरह में 6 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् या अय्युहल् काफ़िरून(1)ला अअ्बुदु मा तअ्बुदून(2)व ला अन्तुम् आबिदू–न मा अअ्बुद (3)व ला अना आबिदुम् मा अ–बत्तुम्(4)व ला अन्तुम् आबिदू–न मा अअ्बुद(5)लकुम् दीनुकुम् व लि–य दीन(6)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो।(1) (फ़ा2) न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो।(2) और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं।(3) और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न मैं पूजूंगा जो तुमने पूजा।(4) और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूं।(5) तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन।(6) (फ़ा3) (रुकूअ़ 34)

(फ़ा1) सूरतुल काफ़िरून मक्की है इसमें एक रुकूअ़ छः आयतें 26 कलिमे 94 हरफ़ हैं शाने नुज़ूलः कुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि आप हमारे दीन का इत्तेबाअ़ कीजिये हम आपके दीन का इत्तेबाअ़ करेंगे एक साल आप हमारे मअ़बूदों की इबादत करें एक साल हम आपके मअ़बूद की इबादत करेंगे सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की पनाह कि मैं उसके साथ ग़ैर को शरीक करूं कहने लगे तो आप हमारे किसी मअ़बूद को हाथ ही लगा दीजिये हम आपकी तस्दीक़ कर देंगे और आपके मअ़बूद की इबादत करेंगे इस पर यह सूरह शरीफ़ा नाज़िल हुई और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए वहां कुरैश की वह जमाअ़त मौजूद थी हुज़ूर ने यह सूरत उन्हें पढ़कर सुनाई तो वह मायूस हो गए और हुज़ूर के और हुज़ूर के असहाब के दरपै ईज़ा हुए (फ़ा2) मुख़ातिब यहां मख़्सूस काफ़िर हैं जो इल्मे इलाही में ईमान से महरूम हैं (फ़ा3) यानी तुम्हारे लिए तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिए मेरी तौहीद और मेरा इख़्लास और मक़सूद इससे तहदीद है (व हाज़िहिल् आयतु मन्सूख़तुम बि–आयातिलकिताल)

(बक़िया सफ़हा 965 का) आख़िरत से। (फ़ा13) यानी मिल्लते इस्लाम को (फ़ा14) यानी ऐसी ख़सलत जो उसके लिए दुशवारी व शिद्दत का सबब हो और उसे जहन्नम में पहुंचाए शाने नुज़ूलः यह आयतें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उमय्या बिन ख़लफ़ के हक में नाज़िल हुईं जिनमें से एक हज़रत सिद्दीक़ अतक़ा हैं और दूसरा उमय्या अशक़ा उमय्या बिन ख़लफ़ हज़रत बिलाल को जो उसकी मिल्क में थे दीन से मुनहरिफ़ करने के लिए तरह तरह की तकलीफ़ें देता था और इन्तेहाई ज़ुल्म और सख़्तियां करता था एक रोज़ हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि कि उमय्या ने हज़रत बिलाल को गरम ज़मीन पर डाल कर तपते हुए पत्थर उनके सीना पर रखे हैं और इस हाल में कलिमए ईमान उनकी ज़बान पर जारी है आपने उमय्या से फ़रमाया ऐ बद नसीब एक ख़ुदा परस्त पर यह सख़्तियां उसने कहा आपको इसकी तकलीफ़ नागवार हो तो ख़रीद लीजिये आपने गिराँ क़ीमत पर उनको ख़रीद कर आज़ाद कर दिया इस पर यह सूरत नाज़िल हुई इसमें बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की कोशिश और उमय्या की और हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु रज़ाए इलाही के तालिब हैं उमय्या हक़ की दुश्मनी में अन्धा (फ़ा15) मर कर गोर में जाएगा या क़अ़रे जहन्नम में पहुंचेगा (फ़ा16) यानी हक और बातिल की राहों को वाज़ेह कर देना और हक पर दलाइल क़ाइम करनी और अहकाम बयान फ़रमाना (फ़ा17) बतरीक़े लुज़ूम व दवाम (फ़ा18) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को (फ़ा19) ईमान से (फ़ा20) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यानी उसका ख़र्च करना रिया व नुमाइश से पाक है (फ़ा21) शाने नुज़ूलः जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत बिलाल को बहुत गिराँ क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसा क्यों किया शायद बिलाल का उन पर कोई एहसान होगा जो उन्होंने इतनी गिराँ क़ीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़ेअ़ल महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए है किसी के एहसान का बदला नहीं और न उन पर हज़रत बिलाल वग़ैरह का कोई एहसान है हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत से लोगों को उनके इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया (फ़ा22) इस नेअ़मत व करम से जो अल्लाह तआ़ला उनको जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा।

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝

सूरतुन्नस्रि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा–अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु(1)व रऐ–तन्ना–स यद्खुलू–न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा(2)फ़–सब्बिह् बि–हम्दि रब्बि–क वस्तग़्फ़िर्हु इन्नहू का–न तव्वाबा(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब अल्लाह की मदद और फ़तह आए।(1) (फ़ा2) और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं।(2) (फ़ा3) तो अपने रब की सना करते हुए उसकी पाकी बोलो और उससे बख़्शिश चाहो (फ़ा4) बेशक वह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।(3) (फ़ा5) (रुकूअ़ 35)

(फ़ा1) सूरह नस्र मदनी है इसमें एक रुकूअ़ तीन आयतें 17 कलिमे 77 हरफ़ हैं (फ़ा2) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए दुश्मनों के मुक़ाबला में इससे या आ़म फ़ुतूहाते इस्लाम मुराद हैं या ख़ास फ़तहे मक्का। (फ़ा3) जैसा कि बादे फ़तहे मक्का हुआ कि लोग अक़तारे अर्ज़ से शौक़े गुलामी में चले आते थे और शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ होते थे (फ़ा4) उम्मत के लिए (फ़ा5) इस सूरत के नाज़िल होने के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह व अतूबु इलैहि° की बहुत कसरत फ़रमाई हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि यह सूरत हज्जतुल विदाअ़ में ब-मक़ामे मिना नाज़िल हुई इसके बाद आयत अल्-यौमु अक्मल्तु लकुम् दी-नकुम् नाज़िल हुई इसके नाज़िल होने के बाद अस्सी रोज़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया में तशरीफ़ रखी फिर आयत अल्-कला-ल-तः नाज़िल हुई इसके बाद हुज़ूर पचास रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर आयत वत्तक़ू यौमन् तुर्-जऊ-न फ़ीहि इलल्लाहि नाज़िल हुई इसके बाद हुज़ूर इक्कीस रोज़ या सात रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे इस सूरते मुबारका के नाज़िल होने के बाद सहाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब हुज़ूर दुनिया में ज़्यादा तशरीफ़ न रखेंगे चुनान्चे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सूरत सुनकर इसी ख़्याल से रोये इस सूरत के नाज़िल होने के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुतबा में फ़रमाया कि एक बन्दा को अल्लाह तआ़ला ने इख़्तियार दिया चाहे दुनिया में रहे चाहे उसकी लिक़ा क़बूल फ़रमाए उस बन्दा ने लिक़ाए इलाही इख़्तियार की यह सुनकर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया आप पर हमारी जानें हमारे माल हमारे आबा हमारी औलादें सब क़ुरबान।

(बक़िया सफ़हा 980 का) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है कि आप शबे मेअ़राज एक आसमान पर तशरीफ़ ले गए फिर दूसरे पर इसी तरह दर्जा बदर्जा मर्तबए मनाज़िल क़ुर्ब में वासिल हुए बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि इस आयत में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाल बयान फ़रमाया गया है माना यह हैं कि आप को मुशरिकीन पर फ़तह व ज़फ़र हासिल होगी और अन्जाम बहुत बेहतर होगा आप कुफ़्फ़ार की सरकशी और उनकी तकज़ीब से ग़मगीन न हों (फ़ा24) यानी अब ईमान लाने में क्या उज़्र है बावजूद दलाइल ज़ाहिर होने के क्यों ईमान लाते (फ़ा25) मुराद इससे सज्दए तिलावत है शाने नुज़ूलः जब सूरत इक़रा में वस्जुद् वक़्तरिब् नाज़िल हुआ तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ कर सज्दा किया मोमिनीन ने आपके साथ सजदा किया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सजदा न किया उनके इस फ़ेअ़ल की बुराई में यह आयत नाज़िल हुई कि कुफ़्फ़ार पर जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वह सजदए तिलावत नहीं करते मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि सजदए तिलावत वाजिब सुनने वाले पर और हदीस से साबित है कि पढ़ने वाले सुनने वाले दोनों पर सजदा वाजिब हो जाता है क़ुरआने करीम में सजदा की चौदह आयतें हैं जिनको पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है ख़्वाह सुनने वाले ने सुनने का इरादा किया हो या न किया हो मसलाः सजदए तिलावत के लिए भी वही शर्तें हैं जो नमाज़ के लिए मिस्ल तहारत और क़िब्ला रू होने और सतूरे औरत वग़ैरह के मसलाः सजदा के अव्वल व आख़िर अल्लाहु अकबर कहना चाहिए मसलाः इमाम ने आयते सजदा पढ़ी तो उस पर और मुक़तदियों पर और जो शख़्स नमाज़ में न हो और सुन ले उस पर सज्दा वाजिब है मसलाः सजदा की जितनी आयतें पढ़ी जायेंगी उतने ही सजदे वाजिब होंगे अगर एक ही आयत एक मजलिस में बार बार पढ़ी गई तो एक ही सज्दा वाजिब हुआ वत्तफ़सील फ़ी कुतबुलफ़िक़ह (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा26) क़ुरआन को और मरने के बाद उठने को (फ़ा27) कुफ़्र और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तकज़ीब (फ़ा28) उनके कुफ़्र व एनाद पर।

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۞ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۞ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۞ وَّامْرَاَتُهٗ ۚ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۞ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۞

सूरतुल् ल–हबि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तब्बत् यदा अबी ल–हबिंव् व तब्–ब(1)मा अग्ना अ़न्हु मा लुहू व मा क–सब(2)स–यस्ला नारन् ज़ा–त ल–हबिंव्(3)वम्–र–अतुहू ह़म्मा–ल–तल्ह़–त़बि(4)फ़ी जीदिहा ह़ब्लुम् मिम् म–सद(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान व रहम वाला। (फ़1)

तबाह हो जायें अबू लहब के दोनों हाथ और वह तबाह हो ही गया।(1) (फ़2) उसे कुछ काम न आया उसका माल और न जो कमाया।(2) (फ़3) अब धंसता है लपट मारती आग में वह।(3) और उसकी जोरू (फ़4) लकड़ियों का गट्ठा सर पर उठाए।(4) उसके गले में खजूर की छाल का रस्सा।(5) (फ़5) (रुकूअ़ 36)

(फ़1) सूरह अबी लहब मक्की है इसमें एक रुकूअ् पांच आयतें 20 कलिमे 77 हरफ़ हैं **शाने नुजूलः** जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोहे सफ़ा पर अरब के लोगों को दावत दी हर तरफ़ से लोग आये और हुजूर ने उनसे अपने सिद्क़ व अमानत की शहादतें लेने के बाद फ़रमाया इन्नी लकुम् नज़ीरुम्–बै–न यदय् अ़ज़ाबिन् शदीद इस पर अबू लहब ने हुजूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ क्या तुम ने हमें इस लिए जमा किया था इस पर यह सूरते शरीफ़ा नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जवाब दिया (फ़2) अबू लहब का नाम अब्दुल उ़ज़्ज़ा है यह अब्दुलमुत्तलिब का बेटा और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था बहुत गोरा ख़ूबसूरत आदमी था इसी लिए उसकी कुन्नियत अबू लहब है और इसी कुन्नियत से वह मशहूर था दोनों हाथों से मुराद उसकी ज़ात है। (फ़3) यानी उसकी औलाद मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिए अपने माल व औलाद को फ़िदिया कर दूंगा इस आयत में इसका रद्द फ़रमाया गया कि यह ख़्याल ग़लत है उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं (फ़4) उम्मे जमील बिन्ते ह़रब बिन उमैया अबू सुफ़ियान की बहन जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निहायत अ़ेनाद व अ़दावत रखती थी और बावजूदेकि दौलतमन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अ़दावत इन्तेहा को पहुंची थी कि ख़ुद अपने सर पर कांटों का गट्ठा लाकर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ता में डालती ताकि हुजूर को और हुजूर के असहाब को ईज़ा व तकलीफ़ हो और हुजूर की ईज़ा रेसानी उसका इतनी प्यारी थी कि वह उस काम में किसी दूसरे मदद लेना भी गवारा न करती थी (फ़5) जिससे कांटों का गट्ठा बांधती थी एक रोज़ यह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिए एक पत्थर पर बैठ गई एक फ़रिश्ते ने बहुक्मे इलाही उसके पीछे से उस गट्ठे को खींचा वह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वह मर गई

(बक़िया सफ़हा 955 का) निकाला जायेगा। (फ़9) और रोज़े जज़ा यानी क़ियामत के मुन्किर हैं। (फ़10) हद से गुज़रने वाला। (फ़11) उनकी निस्बत कि यह (फ़12) उसका कहना ग़लत है। (फ़13) उन मआ़सी और गुनाहों ने जो वह करते हैं यानी अपने आमाले बद की शामत से उनके दिल ज़ंग ख़ुर्दा और सियाह हो गए हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया जब बन्दा कोई गुनाह करता है उसके दिल में एक नुक़तए सियाह पैदा होता है जब उस गुनाह से बाज़ आता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि तमाम क़ल्ब सियाह हो जाता है और यही रैन यानी वह ज़ंग है जिसका आयत में ज़िक्र हुआ। (तिर्मिज़ी) (फ़14) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़15) जैसा कि दुनिया में उसकी तौहीद से महरूम रहे मसला इस आयत से साबित हुआ कि मोमिनीन को आख़िरत में दीदारे इलाही की निअ़मत मुयस्सर आएगी क्योंकि महरूमी दीदार से कुफ़्फ़ार की वईद में ज़िक्र की गई और जो चीज़ कुफ़्फ़ार के लिए वईद व तहदीद हो वह मुसलमान के हक़ में साबित हो नहीं सकती तो लाज़िम आया कि मोमिनीन के हक़ में यह महरूमी साबित न हो हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब उसने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से महरूम किया तो दोस्तों को अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा (फ़16) अ़ज़ाब (फ़17) दुनिया में (फ़18) यानी मोमिनीन सादिक़ीन के आमाल नामे (फ़19) इल्लीईन सातवें आसमान में ज़ेरे अ़र्श है (फ़20) यानी उसकी शान अ़जीब अ़ज़मत वाली है इल्लीईन में उसमें उनके आमाल लिखे हैं

سُوۡرَةُ الۡاِخۡلَاصِ مَكِّيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۞ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۞ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۞ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۞

सूरतुल् इख़्लासि

(मक्की है इस सूरह में 4 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् हुवल्लाहु अ-हद(1)अल्लाहुस् स-मद(2)लम् यलिद् व लम् यूलद(3)व लम् य-कुल् लहू कुफ़ुवन् अहद(4)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम फ़रमाओ वह अल्लाह है वह एक है।(1) (फ़ा2) अल्लाह बे नियाज़ है।(2) (फ़ा3) न उसकी कोई औलाद (फ़ा4) और न वह किसी से पैदा हुआ।(3) (फ़ा5) और न उसके जोड़ का कोई।(4) (फ़ा6) (रुकूअ़ 37)

(फ़ा1) सूरह इख़्लास मक्की व बक़ौले मदनी है इसमें एक रुकूअ़ चार या पांच आयतें पन्द्रह कलिमे 47 हरफ़ हैं अहादीस में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं उसको तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया है यानी तीन मर्तबा इसको पढ़ा जाये तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले एक शख़्स ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मुहब्बत है फ़रमाया इसकी मुहब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी (तिर्मिज़ी) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अज़्ज़ व उला तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ तरह तरह के सवाल किये कोई कहता था कि अल्लाह का नसब क्या है कोई कहता था कि वह सोने का है या चाँदी का है या लोहे का है या लकड़ी का है किस चीज़ का है किसी ने कहा वह क्या खाता है क्या पीता है रबूबियत उसने किस से ववरसा में पाई और उसका कौन वारिस होगा उनके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ात व सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मअ़रेफ़त की राह वाज़ेह की और जाहिलाना ख़्यालात व औहाम की तारीकियों को जिन में वह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ात व सिफ़ात के अनवार के बयान से मुज़महिल कर दिया। (फ़ा2) रबूबियत व उलूहियत में सिफ़ाते अ़ज़मत व कमाल के साथ मौसूफ़ है मिस्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है उसका कोई शरीक नहीं। (फ़ा3) हर चीज़ से न खाये न पिये हमेशा से है हमेशा रहे। (फ़ा4) क्यों कि कोई उसका मजालिस नहीं। (फ़ा5) क्योंकि वह क़दीम है और पैदा होना हादिस की शान है। (फ़ा6) यानी कोई उसका हमता व अ़दील नहीं इस सूरत की चन्द आयतों में इल्मे इलाहियात के नफ़ीस व आला मतालिब बयान फ़रमा दिये गए जिनकी तफ़सीलात से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने लबरेज़ हो जायें।

(बक़िया सफ़हा 958 का) तादाद बारह है और उनमें अ़जाइब हिकमते इलाही नुमूदार हैं आफ़ताब माहताब और कवाकिब की सैर उनमें मुअ़य्यन अन्दाज़े पर है जिसमें इख़्तिलाफ़ नहीं होता (फ़ा3) वह रोज़े क़ियामत है (फ़ा4) मुराद इससे रोज़े जुमा है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है (फ़ा5) आदमी और फ़रिश्ते मुराद इससे रोज़े अ़रफ़ा है (फ़ा6) मरवी है कि पहले ज़माना में एक बादशाह था जब उसका जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज जिसे मैं जादू सिखा दूं बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया वह जादू सीखने लगा राह में एक राहिब रहता था उसके पास बैठने लगा और उसका कलाम उसके दिलनशीन होता गया अब आते जाते उसने राहिब की सोहबत में बैठना मुक़र्रर कर लिया एक रोज़ रास्ता में एक मुहीब जानवर मिला लड़के ने एक पत्थर हाथ में लेकर यह दुआ की कि या रब अगर राहिब तुझे प्यारा हो तो मेरे पत्थर से उस जानवर को हलाक कर दे वह जानवर उसके पत्थर से मर गया उसके बाद लड़का मुस्तजाबुद्दावात हुआ और उसकी दुआ़ से कोढ़ी और अन्धे अच्छे होने लगे बादशाह का एक मसाहिब नाबीना हो गया था वह आया लड़के ने दुआ की वह अच्छा हो गया और अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा उसने कहा तुझे किसने अच्छा किया कहा मेरे रब ने बादशाह ने कहा मेरे सिवा और भी कोई रब है यह कह कर उसने उस पर सख़्तियां शुरू कीं यहां तक कि उसने लड़के का पता बताया लड़के पर सख़्तियां कीं उसने राहिब का पता बताया राहिब पर सख़्तियां कीं और उससे कहा अपना दीन तर्क कर उसने इन्कार किया तो उसके सर पर आरा रखकर चिरवा दिया फिर मसाहिब को भी चिरवा दिया फिर लड़के को हुक्म दिया कि पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाये सिपाही उसको पहाड़ की चोटी पर ले गए उसने दुआ़ की पहाड़ में ज़लज़ला आया सब गिर कर हलाक हो गए लड़का सही व सलामत चला आया बादशाह ने कहा सिपाही क्या हुए कहा सब को ख़ुदा ने हलाक कर दिया फिर बादशाह ने लड़के को समुन्दर में ग़र्क़ करने के लिए भेजा लड़के ने दुआ़ की कश्ती डूब गई तमाम शाही आदमी डूब गए लड़का सही व सलामत बादशाह के पास आ गया बादशाह ने कहा वह आदमी क्या हुए कहा सबको अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल कर ही नहीं सकता जब तक वह काम न करे जो मैं बताऊँ कहा वह क्या लड़के **(बक़िया सफ़हा 986 पर)**

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۠

सूरतुल् फ़-लक़ि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़-लक़ि(1)मिन् शर्रि मा ख़-लक़(2)व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब(3)व मिन् शर्रिन् नफ़्फ़ासाति फ़िल्-अुक़द(4)व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह़-सद(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम फ़रमाओ मैं उसकी पनाह लेता हूं जो सुबह का पैदा करने वाला है।(1) (फ़ा2) उसकी सब मख़्लूक़ के शर से।(2) (फ़ा3) और अंधेरी डालने वाले के शर से जब वह डूबे।(3) (फ़ा4) और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं।(4) (फ़ा5) और हसद वाले के शर से जब वह मुझ से जले।(5) (फ़ा6) (रुकूअ़ 38)

(फ़ा1) सूरह फ़लक़ मदनी है और एक क़ौल यह है कि मक्की है (वलु-अव्वलु अ-सह्हु) इस सरूत में एक रुकूअ़ पांच आयतें 23 कलिमे 74 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** यह सूरत और सूरत अन्नास जो इसके बाद है जो उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि लुबैद बिन अअ़सम यहूदी और उसकी बेटियों ने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और आज़ाए ज़ाहिरा पर इसका असर हुआ क़ल्ब व अ़क़्ल व एतेक़ाद पर कुछ असर न हुआ चन्द रोज़ के बाद जिबरील आए और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वह फ़लां कूंयें में एक पत्थर के नीचे दाब दिया है हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा उन्होंने कुंयें का पानी निकालने के बाद पत्थर उठाया उसके नीचे से खजूर के गाभे की थैली बरआमद हुई उसमें हुज़ूर के मूए शरीफ़ जो कंघी से बर आमद हुए थे और हुज़ूर की कंघी के चन्द दन्दाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिसमें ग्यारह गिरहें लगी थीं और एक मोम का पुतला जिसमें ग्यारह सूईयां चुभीं थीं यह सब सामान पत्थर के नीचे से निकाला और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किया गया अल्लाह तआ़ला ने यह दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं पांच सूरह फ़लक़ में हर एक आयत के पढ़ने के साथ एक एक गिरह खुलती जाती थी यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए। मसला तावीज़ और अमल जिस में कोई कलिमए कुफ़्र या शिर्क का न हो जाइज़ है ख़ास कर वह अमल जो आयाते कुरआनिया से किये जायें या अहादीस में वारिद हुए हों हदीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते अ़मीस ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जअ़फ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र होती है क्या मुझे इजाज़त है कि उनके लिए अ़मल करूं हुज़ूर ने इजाज़त दी (तिर्मिज़ी)। (फ़ा2) तअ़व्वुज़ में अल्लाह तआ़ला का इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र इस लिए है कि अल्लाह तआ़ला सुबह पैदा करके शब की तारीकी दूर फ़रमाता है तो वह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन हालात से ख़ौफ़ है उनको दूर फ़रमाए नीज़ जिस तरह शबे तार में आदमी तुलूअ़े सुबह का इन्तेज़ार करता है ऐसा ही ख़ाइफ़ अम्न व राहत का मुन्तज़िर रहता है इलावा बरीं सुबह अहले इज़्तेरार व इज़्तेराब की दुआ़ओं का और उनके क़बूल होने का वक़्त है तो मुराद यह हुई कि जिस वक़्त अरबाबे कर्ब व ग़म को कशाइश दी जाती है और दुआ़यें क़बूल की जाती हैं मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूं एक क़ौल यह भी है कि फ़लक़ जहन्नम में एक वादी है। (फ़ा3) जानदार हो या बे जान मुकल्लफ़ हो या ग़ैर मुकल्लफ़ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मख़्लूक़ से मुराद यहां ख़ास इबलीस है जिससे बदतर मख़्लूक़ में कोई नहीं और जादू के अ़मल उसकी और उसके अअ़वाने लश्करों की मदद से पूरे होते हैं। (फ़ा4) हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चांद की तरफ़ नज़र करके उनसे फ़रमाया ऐ आइशा अल्लाह की पनाह लो उसके शर से यह अंधरी डालने वाला है जब डूबे (तिर्मिज़ी) यानी आख़िर माह में जब चांद छुप जाये तो जादू के वह अमल जो बीमार करने के लिए हैं उसी वक़्त में किये जाते हैं। (फ़ा5) यानी जादूगर औरतें जो डोरों में गिरह लगा लगा कर उनमें जादू के मन्त्र पढ़ पढ़ कर फूंकती हैं जैसे कि लबीद की लड़कियां मसला गन्डे बनाना और उन पर गिरह लगाना आयाते क़ुरआन या अस्माए इलाहिया दम करना जायज़ है जम्हूर सहाबा व ताबेईन इसी पर हैं और हदीसे आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा में है कि जब हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहल में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर मऊज़ात पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते। (फ़ा6) हसद वाला वह है जो दूसरे के ज़वाले निअ़मत की तमन्ना करे यहां हासिद से यहूद मुराद हैं जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हसद करते थे या ख़ास लबीद बिन अअ़सम यहूदी हसद बद-तरीन सिफ़त है और यही सब से पहला गुनाह है जो आसमान में इबलीस से सरज़द हुआ और ज़मीन में क़ाबील से

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ

सूरतुन्नासि

(मक्की है इस सूरह में 6 आयतें और 1 रुकूअ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् अऊ.ज़ु बि–रब्बिन्नासि(1)मलिकिन्नासि(2)इलाहिन्नासि(3)मिन् शर्रिल् वस्वासिल् ख़न्नासि(4) ल्लज़ी यु–वस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि(5)मिनल् जिन्नति वन्नास(6)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान व रहम वाला। (फ़ा1)
तुम कहो मैं उसकी पनाह में आया जो सब लोगों का रब।(1) (फ़ा2) सब लोगों का बादशाह।(2) (फ़ा3) सब लोगों का खुदा।(3) (फ़ा4) उसके शर से जो दिल में बुरे ख़तरे डाले (फ़ा5) और दुबक रहे।(4) (फ़ा6) वह जो लोगों के दिलों में वसवसे डालते हैं।(5) जिन्न और आदमी।(6) (फ़ा7) (रुकूअ 39)

(फ़ा1) सूरह अन्नास बक़ौले असह मदनी है इसमें एक रुकूअ़ छः आयतें 20 कलिमे 79 हरफ़ हैं (फ़ा2) सब का ख़ालिक़ मालिक ज़िक्र में इन्सानों की तख़्सीस उनकी तशरीफ़ के लिए है कि उन्हें अशरफुल मख़्लूक़ात किया (फ़ा3) उनके कामों की तदबीर फ़रमाने वाला (फ़ा4) कि इलाह और मअ़बूद होना उसी के साथ ख़ास है (फ़ा5) मुराद इससे शैतान है (फ़ा6) यह उसकी आ़दत ही है कि इन्सान जब ग़ाफ़िल होता है तो उसके दिल में वसवसे डालता है और जब इंसान अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान दुबक रहता है और हट जाता है (फ़ा7) यह ब्यान है वसवसे डालने वाले शैतान का कि वह जिन्नों में से भी होता है और इंसानों में से भी जैसा शयातीन जिन्न इंसानों को वसवसे में डालते हैं ऐसे ही शयातीन इन्स भी नासेह बन कर आदमी के दिल में वसवसे डालते हैं फिर अगर आदमी उन वसवसों को मानता है तो उसका सिलसिला बढ़ जाता है और ख़ूब गुमराह करते हैं अगर उससे मुतनफ़्फ़िर होता है तो हट जाते हैं और दुबक रहते हैं आदमी को चाहिए कि शयातीने जिन्न के शर से भी पनाह मांगे और शयातीने इन्स के शर से भी बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शब को जब बिस्तर मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों दस्ते मुबारक जमा फ़रमा कर उनमें दम करते और सूरह क़ुल् हुवल्लाहु अहद व क़ुल् अऊज़ुबि रब्बिल् फ़लक और क़ुल् अऊज़ुबि रब्बिन्नास पढ़ कर अपने मुबारक हाथों को सरे मुबारक से लेकर तमाम जिस्मे अक़्दस पर फेरते जहां तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते यह अमल तीन मर्तबा फ़रमाते वल्लाहु तआ़ला अअ़्–लमु बिमुरादिही व असरारि किताबिही व आख़िरु दअ़्वाना अनिल् ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल्–आ–लमीन व अफ़्ज़लुस्सलातु वजूकुरुस्सलामु अ़ला ह़बीबिही व सय्यिदि अम्बियाएही व रुसिलिही सय्यिदिना मुहम्मदिन् व आलिही व असहाबिही अज्मअ़ीन°

(बक़िया सफ़्हा 985 का) ने कहा एक मैदान में सब लोगों को जमा कर और मुझे खजूर के ढुन्ड पर सूली दे फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर बिस्मिल्लाह रब्बुलगुलाम कह कर मार ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा बादशाह ने ऐसा ही किया तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा उसने अपना हाथ उस पर रखा और वासिल ब–ह़क़ हो गया यह देख कर तमाम लोग ईमान ले आये इससे बादशाह को और ज़्यादा सदमा हुआ और उसने एक ख़न्दक़ खुदवाई और इसमें आग जलवाई और हुक्म दिया जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो लोग डाले गए यहां तक कि एक औरत आई उसकी गोद में बच्चा था वह ज़रा झिजकी बच्चा ने कहा ऐ मां सब्र कर न झिजक तू सच्चे दीन पर है वह बच्चा और मां भी आग में डाल दिये गए यह हदीस सही है मुस्लिम ने इसकी तख़रीज की इससे औलिया की करामतें साबित होती हैं आयत में इस वाक़िआ़ का ज़िक्र है (फ़ा7) कुर्सियां बिछाए और मुसलमानों को आग में डाल रहे थे। (फ़ा8) शाही लोग बादशाह के पास आकर एक दूसरे के लिए गवाही देते थे उन्होंने तअ़मीले हुक्म में कोताही नहीं की ईमानदारों को आग में डाल दिया मरवी है कि जो मोमिन आग में डाले गए अल्लाह तआ़ला ने उनके आग में पड़ने से क़बल उनकी रूहें क़ब्ज़ फ़रमा कर उन्हें नजात दी और आग ने ख़न्दक़ के किनारों से बाहर निकल कर किनारे पर बैठे हुए कुफ़्फ़ार को जिला दिया फ़ाइदा इस वाक़िआ़ में मोमिनीन को सब्र और अहले मक्का की ईज़ा रेसानियों पर तहम्मुल करने की तरग़ीब फ़रमाई गई (फ़ा9) आग में जला कर (फ़ा10) और अपने कुफ़्र से बाज़ न आए (फ़ा11) आख़िरत में बदला उनके कुफ़्र का (फ़ा12) दुनिया में कि उसी आग ने उन्हें जला डाला यह बदला है मुसलमानों को आग में डालने का (फ़ा13) जब वह ज़ालिमों को अ़ज़ाब में पकड़े। (फ़ा14) यानी पहले दुनिया में पैदा करे फिर क़ियामत में आमाल की ज़ज़ा देने के लिए मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा करे (फ़ा15) जिनको काफ़िर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मुक़ाबिल लाए (फ़ा16) जो अपने कुफ़्र के सबब हलाक किये गए। (फ़ा17) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपकी उम्मत के (फ़ा18) आपको और कुरआन पाक को [illegible]सा कि पहले काफ़िरों का दस्तूर था। (फ़ा19) उससे उन्हें कोई बचाने वाला नहीं।

(बक़िया सफ़हा 962 का) आपस में एक दूसरे को मिस्कीन के खिलाने की रग़बत नहीं देते।(18) और मीरास का माल हप हप खाते हो।(19) (फ़ा17) और माल की निहायत मुहब्बत रखते हो।(20) (फ़ा18) हां हां जब ज़मीन टकरा कर पाश पाश कर दी जाए।(21) (फ़ा19) और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़रिश्ते क़तार क़तार।(22) और उस दिन जहन्नम लाई जाए (फ़ा20) उस दिन आदमी सोचेगा (फ़ा21) और अब उसे सोचने का वक़्त कहां।(23) (फ़ा22) कहेगा हाय किसी तरह मैंने जीते जी नेकी आगे भेजी होती।(24) तो उस दिन उसका सा अ़ज़ाब (फ़ा23) कोई नहीं करता।(25) और उस का सा बांधना कोई नहीं बांधता।(26) ऐ इत्मीनान वाली जान।(27) (फ़ा24) अपने रब की तरफ़ वापस हो यूं कि तू उससे राज़ी वह तुझ से राज़ी।(28) फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो।(29) और मेरी जन्नत में आ।(30) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा1) सूरह वलफ़ज्र मक्की है इस में एक रुकूअ़ 29 या 30 आयतें 139 कलिमे 597 हरफ़ हैं (फ़ा2) मुराद इससे या यकुम मुहर्रम की सुबह है जिससे साल शुरू होता है या यकुम ज़िलहिज्जा की जिस से दस रातें मिली हुई हैं या ईदुल अज़्हा की सुबह और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मुराद इससे हर दिन की सुबह है क्यों कि वह रात के गुज़रने और रौशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के तलबे रिज़्क़ के लिए मुन्तशिर होने का वक़्त है और यह मुर्दों के क़ब्र से उठने के वक़्त के साथ मुशाबहत व मुनासबत रखता है (फ़ा3) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि मुराद इन से ज़िलहिज्जा की पहली दस रातें हैं क्योंकि यह ज़माना आमाले हज में मश्ग़ूल होने का ज़माना है और हदीस शरीफ़ में इस अ़शरा की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं और यह भी मरवी है कि रमज़ान के अ़शरए अख़ीरा की रातें मुराद हैं या मुहर्रम के पहले अ़शरा की। (फ़ा4) हर चीज़ के या उन रातों के या नमाज़ों के और यह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क़ और ताक़ से मुराद अल्लाह तआ़ला है। (फ़ा5) यानी गुज़रे यह पांचवीं क़िस्म है आ़म रात की इससे पहले दस ख़ास रातों की क़िस्म ज़िक्र फ़रमाई गई बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि इससे ख़ास शब मुज़दलफ़ा मुराद है जिसमें बन्दगाने ख़ुदा ताअ़ते इलाही के लिए जमा होते हैं एक क़ौल यह है कि उससे शबे क़दर मुराद है जिसमें रहमत का नुज़ूल होता है और जो कसरत सवाब के लिए मख़्सूस है। (फ़ा6) यानी यह उमूर अरबाबे अक़्ल के नज़दीक ऐसी अ़ज़मत रखते हैं कि ख़बरों को उनके साथ मुअक्किद करना शायाँ है क्योंकि यह ऐसे अ़जाइब व दलाइल पर मुश्तमिल हैं जो अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसकी रबूबियत पर दलालत करते हैं और जवाबे क़िस्म यह है कि काफ़िर ज़रूर अ़ज़ाब किये जायेंगे इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं। (फ़ा7) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा8) जिनके क़द बहुत दराज़ थे उन्हें आ़दे इरम और आ़दे औला कहते हैं मक़सूद इससे अहले मक्का को ख़ौफ़ दिलाना है कि आ़द औला जिनकी उम्रें बहुत ज़्यादा और क़द बहुत तवील और निहायत क़वी व तवाना थे उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया तो यह काफ़िर अपने आपको क्या समझते हैं और अ़ज़ाबे इलाही से क्यों बेख़ौफ़ हैं (फ़ा9) ज़ोर व क़ुव्वत और तूल क़ामत में आ़द के बेटों में से शद्दाद भी है जिसने दुनिया पर बादशाहत की और तमाम बादशाह उसके मुतीअ़ हो गए और उसने जन्नत का ज़िक्र सुनकर बराहे सरकशी दुनिया में जन्नत बनानी चाही और इस इरादा से एक शहर अ़ज़ीम बनाया जिसके महल सोने चांदी की ईंटों से तामीर किये गए और ज़बुरजद और याक़ूत के सुतून उसकी इमारतों में नसब हुए और ऐसे ही फ़र्श मकानों और रस्तों में बनाए गए संगरेज़ों की जगह आबदार मोती बिछाए गए हर महल के गिर्द जवाहरात पर नहरें जारी की गईं क़िस्म क़िस्म के दरख़्त हुस्ने तज़ईन के साथ लगाए गए जब यह शहर मुकम्मल हुआ तो शद्दाद बादशाह अपने अईयाने सल्तनत के साथ उसकी तरफ़ रवाना हुआ जब एक मन्ज़िल फ़ासिला बाक़ी रहा तो आसमान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिससे अल्लाह तआ़ला ने उन सब को हलाक कर दिया हज़रत अमीर मुआ़विया के अहद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़लाबा सहराए अ़दन में अपने गुमे हुए ऊँट को तलाश करते हुए उस शहर में पहुंचे और उसकी तमाम ज़ेब व ज़ीनत देखी और कोई रहने बसने वाला न पाया थोड़े से जवाहरात वहां से लेकर चले आए यह ख़बर अमीर मुआ़विया को मालूम हुई उन्होंने उन्हें बुला कर हाल दरियाफ़्त किया उन्होंने तमाम क़िस्सा सुनाया तो अमीर मुआ़विया ने कअ़ब अहबार को बुलाकर दरियाफ़्त किया कि दुनिया में कोई ऐसा शहर है उन्होंने फ़रमाया हां जिसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में भी आया है यह शहर शद्दाद बिन आ़द ने बनाया था वह सब अ़ज़ाबे इलाही से हलाक हो गए उनमें से कोई बाक़ी न रहा और आपके ज़माना में एक मुसलमान सुर्ख़ रंग कबूद चश्म क़सीरुल क़ामत जिसकी अब्रू व पर एक तिल होगा अपने ऊँट की तलाश में दाख़िल होगा फिर अब्दुल्लाह बिन क़लाबा को देख कर फ़रमाया बख़ुदा वह शख़्स यही है। (फ़ा10) यानी वादीयुल क़ुरा में (फ़ा11) और मकान बनाए उन्हें अल्लाह तआ़ला ने किस तरह हलाक किया (फ़ा12) उसको जिस पर ग़ज़बनाक होता था अब आ़द व समूद व फ़िरऔ़न उन सब की निस्बत इरशाद होता है। (फ़ा13) और मअ़सियत व गुमराही में इन्तेहा को पहुंचे और अ़ब्दियत की हद से गुज़र गए। (फ़ा14) कुफ़्र और क़त्ल और ज़ुल्म करके। (फ़ा15) यानी इज़्ज़त व ज़िल्लत दौलत व फ़क़्र पर नहीं यह उसकी हिकमत है कभी दुश्मन को दौलत देता है कभी बन्दए मुख़लिस को फ़क़्र में मुब्तला करता है इज़्ज़त व ज़िल्लत ताअ़त व मअ़सियत पर है कुफ़्फ़ार इस हक़ीक़त को नहीं समझते। (फ़ा16) और बावजूद दौलतमन्द होने के उनके साथ अच्छे सुलूक नहीं करते और उन्हें उनके हुक़ूक़ नहीं देते जिनके वह वारिस हैं मक़ातिल ने कहा कि उमय्या बिन ख़लफ़ के पास क़दामा बिन मज़ऊन यतीम थे वह उन्हें उनका हक़ नहीं देता था। (फ़ा17) और हलाल व हराम का इम्तियाज़ नहीं करते और औरतों और बच्चों को वरसा नहीं देते उनके

हिस्से ख़ुद खा जाते हो जाहिलियत में यही दस्तूर था। (फ़ा18) उसको ख़र्च करना ही नहीं चाहते (फ़ा19) और उस पर पहाड़ और इमारत किसी चीज़ का नाम व निशानी न रहे। (फ़ा20) जहन्नम की सत्तर हज़ार बागें होंगी हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जमा होकर उसको खीचेंगे और वह जोश व ग़ज़ब में होगी यहां तक कि फ़रिश्ते उसको अ़र्श के बायें जानिब लायेंगे उस रोज़ सब नफ़सी नफ़सी कहते होंगे सिवाए हुज़ूर पुरनूर हबीबे ख़ुदा सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर या रब उम्मती उम्मती फ़रमाते होंगे जहन्नम हुज़ूर से अ़र्ज़ करेगी कि ऐ सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपका मेरा क्या वास्ता अल्लाह तआ़ला ने आपको मुझ पर हराम किया है। (जुमल) (फ़ा21) और अपनी तक़सीर को समझेगा (फ़ा22) उस वक़्त का सोचना समझना कुछ भी मुफ़ीद नहीं (फ़ा23) यानी अल्लाह का सा (फ़ा24) जो ईमान व ईक़ान पर साबित रही और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के हुज़ूर सर ताअ़ते ख़म करती रही यह मोमिन से वक़्ते मौत कहा जाएगा जब दुनिया से उसके सफ़र करने का वक़्त आएगा।

(बक़िया सफ़हा 966 का) वसल्लम) की ख़िदमत में जाकर दरियाफ़्त करो रोने का क्या सबब है बावजूदेकि अल्लाह तआ़ला दाना है जिबरील ने हस्बे हुक्म हाज़िर होकर दरियाफ़्त किया सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तमाम हाल बताया और ग़मे उम्मत का इज़हार फ़रमाया जिबरील अमीन ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि तेरे हबीब यह फ़रमाते हैं बावजूदेकि वह ख़ूब जानने वाला है अल्लाह तआ़ला ने जिबरील को हुक्म दिया कि जाओ और मेरे हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा कि हम आपको आपकी उम्मत के बारे में अ़न्क़रीब राज़ी करेंगे और आपको गिरां ख़ातिर न होने देंगे हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे राज़ी न हूंगा आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला वही करेगा जिसमें रसूल राज़ी हों और अहादीस शफ़ाअ़त से साबित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा इसी में है कि सब गुनहगाराने उम्मत बख़्श दिये जायें तो आयत व अहादीस से क़तई तौर पर यह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर की शफ़ाअ़त मक़बूल और हस्बे मर्ज़ी मुबारक गुनहागाराने उम्मत बख़्शे जायेंगे सुबहानल्लाह क्या रुतबा अ़लिया है कि जिस परवरदिगार को राज़ी करने के लिए तमाम मुक़र्रबीन तकलीफ़ें बरदाश्त करते और मेहनतें उठाते हैं वह उस हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करने के लिए अ़ता आम करता है उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने उन नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया जो आपके इब्तेदाए हाल से आप पर फ़रमाईं (फ़ा7) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी वालिदा माजिदा के बतन में थे हमल दो माह का था कि आपके वालिद साहब ने मदीना शरीफ़ में वफ़ात पाई और न कुछ काल छोड़ा न कोई जगह छोड़ी आपकी ख़िदमत के मुतकफ़्फ़िल आपके दादा अ़ब्दुलमुत्तलिब हुए जब आपकी शरीफ़ चार या छः साल की हुई तो वालिदा साहिबा ने भी वफ़ात पाई जब उम्र शरीफ़ आठ साल की हुई तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने भी वफ़ात पाई उन्होंने अपनी वफ़ात से पहले अपने फ़रज़न्द अबू तालिब को जो आपके हक़ीक़ी चचा थे आपकी ख़िदमत व निगरानी की वसीयत की अबू तालिब आपकी ख़िदमत में सरगरम रहे यहां तक कि आपको अल्लाह तआ़ला नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया इस आयत की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन ने एक माना यह बयान किये हैं कि यतीम बमाना यकता व बे-नज़ीर के है जैसे कि कहा जाता है दुर्रे यतीमा इस तक़दीर पर आयत के माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आपको इज़्ज़ व शरफ़ में यकता व बे-नज़ीर पाया और आपो मक़ामे क़ुर्ब में जगह दी और अपनी हिफ़ाज़त में आपके दुश्मनों के अन्दर आपकी परवरिश फ़रमाई और आपको नबुव्वत व इस्तफ़ा व रिसालत के साथ मुशर्रफ़ किया (ख़ाज़िन व जुमल व रूहुल बयान) (फ़ा8) और ग़ैब के असरार पर आप खोल दिये और उलूमे माका-न व मा यकू-न अता किये अपनी ज़ात व सिफ़ात की मअ़रेफ़त में सब से बुलन्द मर्तबा इनायत किया मुफ़स्सिरीन ने एक माना इस आयत के यह भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऐसा वारफ़्ता पाया कि आप अपने नफ़्स और अपने मरातिब की ख़बर भी नहीं रखते थे तो आपको आपके ज़ात व सिफ़ात और मरातिब व दर्जात की मअ़रेफ़त अ़ता फ़रमाई मसला अम्बिया अ़लैहिस्सलाम सब मअ़सूम होते हैं नबुव्वत से क़बल नबुव्वत से बाद भी और अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसके सिफ़ात के हमेशा से आरिफ़ होते हैं। (फ़ा9) दौलते क़नाअ़त अ़ता फ़रमा कर बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि तवन्गरी फ़सरते माल से हासिल नहीं होती हक़ीक़ी तवन्गरी नफ़्स का बे नियाज़ होना (फ़ा10) जैसा कि अहले जाहिलियत का तरीक़ा था कि यतीमों को दबाते और उन पर ज़्यादती करते थे हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमानों के घरों में वह बहुत अच्छा घर है जिसमें यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और वह बहुत बुरा घर है जिसमें यतीम के साथ बुरा बरताव किया जाता है। (फ़ा11) या कुछ देदो या हुस्ने अख़्लाक़ और नर्मी के साथ उज़्र कर दो यह भी कहा गया है कि साइल से तालिबे इल्म मुराद है उसका इकराम करना चाहिए और जो उसकी हाजत हो उसको पूरा करना और उसके साथ तुर्श रूई व बद ख़ुलक़ी न करना चाहिए। (फ़ा12) नेअ़मतों से मुराद वह निअ़मतें हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अ़ता फ़रमाईं और वह भी जिनका हु.ज़ूर से वादा फ़रमाया निअ़मतों के ज़िक्र का इस लिए हुक्म फ़रमाया कि निअ़मत का बयान करना शुक्रगुज़ारी है।

دعاء ختم القرآن اَللّٰھُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ ۚ اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ ۙ
وَاجْعَلْهُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّھُدًی وَّرَحْمَةً ۚ اَللّٰھُمَّ ذَکِّرْنِیْ مِنْهُ مَا نَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَا
جَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ ۙ وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اٰمِیْن

दुआए ख़त्मे कुरआन

अल्लाहुम्-म आनिस् वह्-शती फ़ी क़ब्री अल्लाहुम्मर्-ह्म्नी बिकुर्आनिल्-अज़ीम वज्अ़ल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्म-तन् अल्लाहुम्-म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अ़ल्हु ली हुज्जयतंय्या रब्बल्-आ़लमीन (आमीन)

तर्जुमा : ऐ अल्लह मेरी क़ब्र से मेरी वहशत और परेशानी को दूर फ़रमा, ख़ुदाया कुरआन अज़ीम की बरकत और रहमत से मुझे नवाज़ दे कुरआन को मेरी लिये रहनुमा और पेशवा बना और साथ ही नूर और सबबे हिदायत और रहमत बना, इलाही इसमें से जो मैं भूल गया हूं मुझे याद दिला दे, और इसमें से जो मैं नहीं जानता वह मुझको सिखा दे और रात दिन मुझे इस की तिलावत नसीब फ़रमा, और क़यामत के रोज़ इस को मेरे लिये दलील बना ऐ सारे आलम के परवरिश करने वाले-आमीन

रुमूज़े औक़ाफ़

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते हैं, ज़्यादा, और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़्ल है, कुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में वाक़ेअ़ हुई है। इसी लिए अहले इल्म ने इसके ठहरने न ठहरने की अलामतें मुक़र्रर कर दी हैं।

() जहां बात पूरी हो जाती है वहां क़ौसैन लिखा गया है। यहां पर ठहरना चाहिए।

(م) यह अ़लामत वक़्फ़े लाज़िम की है। इस पर ज़रूर ठहराना चाहिये। अगर न ठहरा जाए तो एहतेमाल है कि मतलब कुछ का कुछ जा जाए। इसकी मिसाल उर्दू में यूं समझनी चाहिये कि मसलन किसी को यह कहना हो उठो मत बैठो, जिसमें उठने के लिए कहा गया है और बैठने से मना किया गया है तो उठो पर ठहरना लाज़िम है अगर ठहरा न जाएगा तो उठो मत बैठो हो जाएगा यानी उठने के लिए मना किया गया और बैठने को कहा गया और यह क़ाएल के मतलब के ख़िलाफ़ हो जाएगा।

(ط) वक़्फ़े मुतलक़ की अ़लामत है इस पर ठहराना चाहिए मगर यह अलामत वहां होती है जहां मतलब तमाम नहीं होता और बात कहने वाला अभी कुछ और कहना चाहता

है।

(ج) वक़्फ़े जाइज़ की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर है और न ठहरना जाइज़ है।

(ز) अ़लामत वक़्फ़ मुजव्विज़ की है यहां ठहरना बेहतर है।

(ص) अलामत वक़्फ़े मुरख़्ख़िस की है यहां मिलाकर पढ़ना चाहिए लेकिन अगर कोई पढ़कर थक कर ठहर जाए तो रूख़सत है। मालूम रहे कि साद पर मिला कर पढ़ना है।

(ز) की निसबत तरजीह रखता है।

(صلے) अल वसले औला का इख़्तेसार है यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।

(ق) क़ील अलैहिल वक़्फ़ का ख़ुलासा है यहां ठहरना नहीं चाहिए।

(قف) यह लफ़्ज़े क़िफ़ है जिसके मानी हैं ठहर जाओ और यह अलामत वहां इस्तेमाल की जाती है जहां पढ़ने वाले के मिला कर पढ़ने का एहतेमाल हो।

(سكتة) यह सक्ता की अ़लामत है यहां किसी क़दर ठहरना चाहिए लेकिन सांस न टूट पाए।

(وقفه) लम्बे सक्ता की अलामत है यहां सक्ता की निसबत ज़्यादा ठहरना चाहिए लेकिन सांस न तोड़े। सक्ता और वक़्फ़ा में यह फ़र्क़ है कि सक्ता में कम ठहरना होता है वक़्फ़ा में ज़्यादा।

(لا) इसके मानी नहीं के हैं यह अ़लामत कहीं आयत के ऊपर होती है और कहीं इबारत के अन्दर। इबारत के अन्दर हो तो हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिए। आयत ऊपर हो तो इख़्तिलाफ़ है। बाज़ के नज़दीक ठहर जाना चाहिए बाज़ के नज़दीक न ठहरना चाहिए लेकिन ठहरा जाए या न ठहरा जाए इससे मतलब में ख़लल वाक़ेअ़ नहीं होता। वक़्फ़ उस जगह नहीं होना चाहिए जहां इबारत के अन्दर लिखा हो।

(ع) यह रूकूअ़ का निशान है।

(١) यह छोटी मद का निशान है जिस हर्फ़ पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि तीन अलिफ़ के बराबर हो।

(٢) यह बड़ी मद का निशान है जिस हर्फ़ पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि चार अलिफ़ के बराबर हो।

सूरतों की फ़ेहरिस्त

सूरत नम्बर	नाम सूरत	पारा नम्बर	सफ़हा नम्बर	सूरत नम्बर	नाम सूरत	पारा नम्बर	सफ़हा नम्बर	सूरत नम्बर	नाम सूरत	पारा नम्बर	सफ़हा नम्बर
1	सूरह फ़ातिहा	1	1	39	सूरह जुमर	23,24	739	77	सूरह मुरसलात	29	941
2	सूरह बक़रह	1,2,3	3	40	सूरह मुअ्मिन	24	757	78	सूरह नबा	30	948
3	सूरह आलि इम्रान	3,4	89	41	सूरह हामीम सज्दा	25	768	79	सूरह नाज़िआत	30	950
4	सूरह निसा	4,5,6	131	42	सूरह शूरा	25	781	80	सूरह अ़बस	30	952
5	सूरह माइदा	6,7	181	43	सूरह जुख़रफ़	25	787	81	सूरह तकवीर	30	953
6	सूरह अन्आ़म	7,8	214	44	सूरह दुख़ान	25	797	82	सूरह इन्फ़ितार	30	954
7	सूरह अअ्राफ़	8,9	250	45	सूरह जासिया	25	801	83	सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन	30	955
8	सूरह अन्फ़ाल	9,10	287	46	सूरह अहक़ाफ़	26	812	84	सूरह इन्शिक़ाक़	30	957
9	सूरह तौबा	10,11	309	47	सूरह मुहम्मद	26	818	85	सूरह बुरूज	30	958
10	सूरह यूनुस	11	341	48	सूरह फ़तह	26	823	86	सूरह तारिक़	30	959
11	सूरह हूद	11,12	358	49	सूरह हुजुरात	26	829	87	सूरह अअ्ला	30	960
12	सूरह यूसुफ़	12,13	384	50	सूरह क़ाफ़	26	833	88	सूरह ग़ाशिया	30	961
13	सूरह रअ्द	13	409	51	सूरह ज़ारियात	26,27	837	89	सूरह फ़ज्र	30	962
14	सूरह इब्राहीम	13	417	52	सूरह तूर	27	848	90	सूरह बलद	30	963
15	सूरह हिज्र	13,14	425	53	सूरह नज्म	27	851	91	सूरह शम्स	30	964
16	सूरह नहल	14	442	54	सूरह क़मर	27	854	92	सूरह लैल	30	965
17	सूरह बनी इस्राईल	15	463	55	सूरह रहमान	27	858	93	सूरह जुहा	30	966
18	सूरह कहफ़	15,16	477	56	सूरह वाक़िआ़	27	862	94	सूरह अलम नश्रह	30	967
19	सूरह मरयम	16	501	57	सूरह हदीद	28	867	95	सूरह तीन	30	968
20	सूरह ताहा	16	510	58	सूरह मुजादला	28	880	96	सूरह अ़लक़	30	969
21	सूरह अम्बिया	17	531	59	सूरह हशर	28	884	97	सूरह क़द्र	30	970
22	सूरह हज	17	543	60	सूरह मुम्तहिना	28	888	98	सूरह बय्यिना	30	971
23	सूरह मुअ्मिनून	18	560	61	सूरह सफ़	28	891	99	सूरह ज़िलज़ाल	30	972
24	सूरह नूर	18	569	62	सूरह जुमुअः	28	893	100	सूरह आ़दियात	30	973
25	सूरह फ़ुरक़ान	18,19	581	63	सूरह मुनाफ़िक़ून	28	895	101	सूरह क़ारिआ़	30	974
26	सूरह शुअ़रा	19	596	64	सूरह तग़ाबुन	28	897	102	सूरह तकासुर	30	975
27	सूरह नमल	19,20	608	65	सूरह तलाक़	28	900	103	सूरह अ़स्र	30	976
28	सूरह क़सस	20	628	66	सूरह तहरीम	28	903	104	सूरह हुमज़ा	30	977
29	सूरह अ़न्कबूत	20,21	641	67	सूरह मुल्क	29	914	105	सूरह फ़ील	30	978
30	सूरह रूम	21	657	68	सूरह क़लम	29	917	106	सूरह क़ुरैश	30	979
31	सूरह लुक़मान	21	665	69	सूरह हाक़्क़ा	29	920	107	सूरह माऊन	30	980
32	सूरह सज्दा	21	670	70	सूरह मआ़रिज	29	923	108	सूरह कौसर	30	981
33	सूरह अहज़ाब	21,22	674	71	सूरह नूह	29	926	109	सूरह काफ़िरून	30	982
34	सूरह सबा	22	694	72	सूरह जिन्न	29	928	110	सूरह नसर	30	983
35	सूरह फ़ातिर	22	701	73	सूरह मुज़्ज़म्मिल	29	931	111	सूरह लहब	30	984
36	सूरह यासीन	22,23	708	74	सूरह मुदद्स्सिर	29	933	112	सूरह इख़लास	30	985
37	सूरह साफ़्फ़ात	23	725	75	सूरह क़ियामा	29	936	113	सूरह फ़लक़	30	986
38	सूरह साद्	23	733	76	सूरह दहर	29	938	114	सूरह नास	30	987